प्रेमिका

विला केथर

प्रेमिका

विला केथर

MY ANTONIA का अनुवाद

प्रेमिका

विला कैथर

राजपाल एण्ड सन्ज़, कश्मीरी गेट, दिल्ली-६

MY ANTONIA by Willa Cather का अनुवाद

अनुवादक
श्यामू संन्यासी

मूल्य पांच रुपये

विशिष्ट लायब्रेरी संस्करण : मूल्य छः रुपये

प्रकाशक : राजपाल एण्ड सन्ज़, कश्मीरी गेट, दिल्ली–६
मुद्रक : हिन्दी प्रिंटिंग प्रेस, दिल्ली–६

PREMIKA by Willa Cather : NOVEL : 5·00



विला कैथर
1874–1947

परिचय

'प्रेमिका' सुप्रसिद्ध अमरीकी उपन्यास-लेखिका विला कैथर के बहुचर्चित और बहुप्रशंसित उपन्यास 'माई एण्टोनिया' का अविकल हिन्दी अनुवाद है। अमरीकी उपन्यासकारों की पिछली पीढ़ी में और खास तौर पर यथार्थवादी-रोमाण्टिक धारा के कथाकारों में विला कैथर का स्थान बहुत ऊंचा और आदरणीय है।

विला कैथर का जन्म १८७४ में विंचेस्टर, वर्जीनिया में हुआ था। १८८२ में ये अपने माता-पिता के साथ नेब्रास्का के निकट एक फार्म पर रहने के लिए चली गईं और १८९० तक वहीं रहीं। इनकी मां और दादी ने बाइबिल तथा क्लासिक्स का अच्छा अध्ययन किया था और इनकी चाची एक स्कूल की अध्यापिका थीं। उनके सम्पर्क से विला कैथर बचपन में ही अंग्रेजी साहित्य और उसकी पृष्ठभूमि से अच्छी तरह परिचित हो गईं। १८९० में जब ये नेब्रास्का विश्वविद्यालय में पढ़ने के लिए लिंकौन आईं तो एक महत्त्वपूर्ण लेखिका बनने की साहित्यिक महत्त्वाकांक्षा इनके मन में अच्छी तरह जड़ें जमा चुकी थी। कालेज में ये पुरुषों के से कपड़े पहनती थीं और इनके बाल बहुत छोटे कटे होते थे। अपनी प्रतिभा, लगन और परिश्रम करने की असाधारण क्षमता से विला कैथर ने सभीको बहुत प्रभावित किया। शीघ्र हा ये कालेज की अपनी पत्रिका की सम्पादिका और 'यूनियन लिटरेरी सोसाइटी' की मंत्री हो गईं। उधर 'नेब्रास्का स्टेट जरनल' में इन्होंने कुछ नाट्य-आलोचनाएं लिखीं जिनकी खूब सराहना हुई।

कालेज के दिनों में ही ये विलियम जेनिंग्स ब्रायन की, जो उन दिनों लिंकौन में ही था, प्रशंसक हो गई थीं। बाद में उसके राजनीतिक विचारों का भी इनपर काफी प्रभाव पड़ा। पश्चिम में फ्रीलैंड खत्म हो जाने और जबर्दस्त प्रतिस्पर्धा वाली औद्योगिक व्यवस्था में किसान की स्थिति उत्तरो-

त्तर संकटग्रस्त होती जाने से पॉपुलिस्ट आन्दोलन उठा, जो इनके राजनीतिक चिन्तन पर अपनी स्थायी छाप छोड़ गया। पश्चिम के किसानों के जीवन की इन्हें स्वयं भी अच्छी जानकारी थी। इस सबका फल यह हुआ कि ये पॉयनियरों के बीते हुए युग को अमरीका का सबसे गौरवमय युग समझने लगीं और व्यावसायिक व औद्योगिक प्रगति को संदेह की दृष्टि से देखने लगीं। यह प्रवृत्ति बाद में कुछ हद तक एक उपन्यासकार के रूप में इनके विकास को एक निश्चित दिशा भी देती रही।

१८९५ में विश्वविद्यालय की शिक्षा पूरी करने के बाद ये पहले 'कूरियर' की सम्पादिका बनीं, फिर पिट्सबर्ग जाकर 'लीडर' में काम करने लगीं और १९०१ में एलीघेनी हाई स्कूल में अंग्रेज़ी विभाग की अध्यक्ष हो गईं। इस बीच कई साहित्यिक पत्रिकाओं में इनकी कहानियां और कविताएं प्रकाशित होती रहीं। १९०३ में इनका पहला कविता-संग्रह 'एप्रिल ट्वाइ-लाइट्स' और १९०५ में पहला कहानी-संग्रह सामने आया। १९०८ में ये सुप्रसिद्ध साहित्यिक पत्रिका, 'मैक्क्ल्यूर मेगेज़ीन' की प्रबन्ध-सम्पादिका बनीं। १९०८ से १९११ तक की अवधि में इन्होंने, इसी हैसियत से, यूरोप तथा दक्षिण-पश्चिमी राज्यों की खूब यात्रा की और इस प्रकार यूरोप व अमरीका के कला, साहित्य और संगीत-जगत् से इनका अधिकाधिक परिचय होता गया। संगीत में इनकी बचपन से ही गहरी रुचि थी और वेगनेरियन ऑपेरा की इन्हें विशेष रूप से अच्छी समझ थी। संगीत के प्रति इनके उत्साह का परिचय हमें इनके उपन्यास 'द सौंग आव द लार्क' में मिलता है।

१९११ में ये 'मैक्क्ल्यूर मेगेज़ीन' से त्यागपत्र देकर पूर्णतया स्वतन्त्र लेखन में जुट गईं। इनका पहला उपन्यास 'एलेक्ज़ेंडर्स ब्रिज' १९१२ में छपा। १९२२ में इन्हें अपने उपन्यास 'वन आव अवर्स' पर पुलिटज़र पुरस्कार प्रदान किया गया।

पुरानी और नई दुनिया तथा दो पीढ़ियों के पारस्परिक सम्बन्ध और संघर्ष में विला कैथर की गहरी रुचि थी और वह इनकी प्रायः सभी रचनाओं में प्रतिबिम्बित हुई है।

विला कैथर ने उपन्यास तो कई लिखे परन्तु 'माई एण्टोनिया' को बड़ी लोकप्रियता प्राप्त हुई। अपने कथा-तत्त्व, शिल्प-सौष्ठव, रचना-विधान,

प्रकृति-वर्णन और जावन्त चरित्रों के कारण 'माई एण्टोनिया' की गणना अमरीका के क्लासिकल कालजयी उपन्यासों में ही नहीं विश्व के श्रेष्ठतम उपन्यासों में की जाती है। १९१८ में प्रकाशित इस उपन्यास में आज भी वैसी ही ताज़गी है। लेखिका ने मनुष्य की पीड़ा और उसके अभावों का, मानवी कुण्ठाओं और उमंगों का, मनुजोचित संघर्षों और क्षमताओं का और सबसे अधिक मनुष्य को अध:पतित करनेवाले घोर दैन्य-दारिद्रय और उसमें शरद की सुनहली धूप-जैसी करुणा, सहानुभूति और आत्मनिर्भरता का कला-पूर्ण चित्रण किया है वह निश्चय ही सभी देशों और सभी युगों के पाठकों को प्रसन्न, मुग्ध और आन्दोलित करता रहा है और आगे भी करता रहेगा।

उत्तरी अमरीका के पश्चिमोत्तर में है घास का उत्तर-दक्षिण पूरब-पश्चिम मीलों तक फैला हुआ मैदान। अमरीकी भाषा और साहित्य में इस मैदान को 'प्रेरी' की गौरवपूर्ण संज्ञा से अभिहित किया गया है। मनुष्य के अद्‌भुत पराक्रमों और प्रखर प्रेमाभिनयों की यह लीला-भूमि रही है। अपने हाथों अपनी तकदीर को सजाने-संवारने के लिए कटिबद्ध यूरोपीय भूखण्ड के अनेक भाषाओं और अनेक राष्ट्रों के आप्रवासी झुण्ड के झुण्ड प्रेरी में आकर बसते रहे हैं। अमरीका के पूर्वी खण्ड के सम्पन्न नगरों और धन-धान्यपूर्ण धरती पर बसे अनगिनत 'पायोनियर' भी प्रेरी की दुर्निवार पुकार पर नये 'फ्रण्टियरों' की स्थापना के लिए पश्चिम की ओर निरन्तर आते रहे हैं। विभिन्न भाषाओं, जुदा-जुदा रीति-रिवाजों, अनेकविध राष्ट्रीयताओं और नाना संस्कृतियों के हेल-मेल से इस मैदान में एक नई भाषा, एक नई राष्ट्रीयता और एक नूतन संस्कृति का आविर्भाव हुआ है।

प्रेरी की यह प्राकृतिक, सामाजिक और ऐतिहासिक पृष्ठभूमि प्रस्तुत उपन्यास 'प्रेमिका' की कथा-भूमि है। इसमें ओहियो राज्यान्तर्गत नेब्रास्का और उसके चतुर्दिक विस्तार का समस्त जन-जीवन अपने सम्पूर्ण विवरणों के साथ ध्वनित और मुखरित हुआ है। लेखिका परम कौशल से एक नवागन्तुक बालक की दृष्टि से इस रम्य-रोमांचक भूमि की अपने पाठकों को पहली झांकी दिखाती है। मीलों लहराती लम्बी ललछौंही घास में सूरज-मुखी के पौधों की कतार उभरती है जो धर्म-पालन की स्वतन्त्रता के लिए आप्रवर्जन करनेवाले मारमोन्स लोगों की 'स्वाधीनता की सड़क' थी।

'समन्दर के पानी की तरह लहरा रही,' 'सिर तक ऊंची, रूखी, लल-छौंही बीहड़ घास' के इस मैदान में एक-एक कर मानवी बस्तियां और मनुष्य-प्राणी उभरते चले जाते हैं। 'सिर पर रेशमी झालर वाली कलाबत्तू की शाल बांधे' तीखी ठुड्डी और नन्ही-नन्ही आंखों में चतुराई की चमक लिए मिसेज़ शिमरडा धरती के अन्दर के अपने घरौंदे में से निकलती हैं; और उनके साथ दौड़कर आती हुई 'सूरज को प्रतिबिम्बित करती जंगल की दो भूरी तलैयों-जैसी बड़ी-बड़ी प्रकाशपूर्ण आंखों में स्नेह की ऊष्मा भरे' एण्टोनिया, जिसे वे लोग आन्तोनिया कहकर पुकारते थे, दिखाई देती है। चौड़ी पीठ, ठिगने कद, चपटे सिर और चौड़े-चकले चेहरे वाला अम्ब्रोज़ आकर मां के पास खड़ा हो जाता है। पगला मारेक मुंह से भोंड़ी आवाज़ें निकालता चला आता है। और फिर आते हैं लम्बे, छरहरे बदन के लोहित केशों को कपाल से उलटकर पीछे की ओर ओंछे हुए, उदास आंखों और भस्मावृत्त चेहरे वाले शालीन और सौजन्यता की मूर्ति मिस्टर शिमरडा, जिनके गोरे और सुडौल हाथ एक दक्ष बुनकर के हाथ थे और जो इस नये देश में अकेले और उदास रहने लगे और एक दिन मर गए—पता नहीं आत्महत्या करके या क्रापिक के हाथों मारे जाकर!

यह पूरा उपन्यास जिम्मी अथवा जिम बरडन के आत्म-विकास की इन्द्रधनुषी कहानी है। कैशोर्य से लेकर वयःसन्धि और युवावस्था में प्रवेश करने तक की अनुभूतियों का सधा हुआ विवरण विला कैथर ने इस कहानी में प्रस्तुत किया है। जिम के दादा और दादी, प्रेरी कुत्तों की बस्ती, रूसी पवेल और पीटर, जेक और ओटो फुश, जेलीनेक और शिमरडा परिवार इस यात्रा-पथ के पथिक के आरम्भिक सहयात्री हैं।

दूसरी मंजिल में एण्टोनिया तो रहती ही है, हार्लिंग परिवार, लेना लिंगार्ड, अन्धा हब्शी पियानो वादक द' आर्नाल्ट, सूदखोर विक कटर आदि बीसियों जानदार चरित्र साथ हो लेते हैं।

तीसरी मंज़िल में एण्टोनिया का साथ छूट जाता है पर उसकी याद और मन पर पड़ी उसकी छाप नहीं छूटती। इस दौर में लेना लिंगार्ड, साहित्य के शिक्षक क्लेरिक साहब, पोली वायोलिन-शिक्षक, सोने की खोज में जानेवाली टीनी आदि साथ हो लेते हैं।

और अन्त में जिम को फिर मिलती है एण्टोनिया, जो एक बार ठोकर खाकर, एक लड़की की मां बनकर फिर अपना घर-बार बसाकर नये पति कुज़ाक और उसके बाल-बच्चों के साथ सुखपूर्वक रहती है। और उसे देखकर जिम सन्तोष का अनुभव करता है। अपनी बाल्य सखि को किसीकी पत्नी के रूप में देखकर जिम के मन में कोई ईर्ष्या नहीं होती है। जिम के ही शब्दों में, "वह अब पहले-जैसी सुदर्शन तरुणी नहीं थी। समय के क्रूर हाथों ने उसे क्षत-विक्षत कर दिया था, लेकिन दूसरों की कल्पना को अनुप्राणित और मन को उमंगित करने की सामर्थ्य और केवल दृष्टि-निक्षेप अथवा संकेत-मात्र से सामान्य वस्तुओं को विशिष्ट अर्थवत्ता से मण्डित कर देने की क्षमता अभी भी उसमें विद्यमान थी···मानव-जाति के आदि-संस्थापकों की तरह वह प्राण और जीवन-शक्ति का अखूट भण्डार थी और यही कारण था कि उसके बेटे इतने लम्बे, सुडौल, सरल, निश्छल और भले थे।

प्रेम-सम्बन्धों का इतना उदात्त और भव्य चित्रण तो है ही साथ ही श्रम के माध्यम से नारी को नई मर्यादा और प्रतिष्ठा भी इस उपन्यास में दी गई है।

"कस्बों में सम्पन्न परिवारों की लड़कियों का व्यायाम आदि करना अच्छी बात नहीं समझी जाती थी; यह सोचा जाता था कि शारीरिक श्रम से उनकी शोभा और सुन्दरता को क्षति पहुंचेगी···वे सर्दियों-भर ठण्ड के कारण और गर्मियों-भर गर्मी के कारण घर में घुसी बैठी रहती थीं, जिससे उनका अंग-प्रत्यंग जड़ हो गया था···लेकिन देहाती लड़कियों को खुले खेतों के कमर-तोड़ काम ने शक्ति-सम्पन्न कर दिया था। कस्बे में आने का आरम्भिक संकोच मिट जाने पर उनका यह शारीरिक बल, चारित्रिक दृढ़ता, गहन आत्मविश्वास और खुलेपन से व्यवहार करने के रूप में प्रतिष्ठित हुआ···मौज-शौक से उन्हें कोई एतराज़ नहीं था, लेकिन माता-पिता को ऋण-मुक्त करने के अपने कर्तव्य से कभी कोई पराङ्मुख नहीं हुई।"

—अनुवादक

भूमिका

पिछली ग्रीष्म ऋतु में, एक दिन जब भयंकर गर्मी पड़ रही थी, जिम बरडन और मैं इओवा राज्य में साथ-साथ रेल-यात्रा कर रहे थे। हम दोनों पुराने दोस्त हैं, नेब्रास्का के एक ही कस्बे में साथ खेले और साथ बड़े हुए; और जब भी मिलते हैं तो दोनों के पास कहने-सुनने को बहुत कुछ होता है। ट्रेन गेहूं के मीलों लम्बे पके खेतों के बीच से, देहाती कस्बों को पीछे छोड़ती, चटकीले फूलोंवाले चरागाहों को छूती, और धूप में मस्त डोलते बलूत के झुरमुटों में से धड़धड़ाती चली जा रही थी। हम लोग देखनेवाले डिब्बे में बैठे थे, जहां लकड़ी का सब सामान आग की तरह गरम हो गया था और हर चीज़ पर लाल धूल की गहरी परतें जम गई थीं। वह धूल और गरमी और वह लू-लपट-भरी हवा हमें बहुत-सी बातें याद दिला रही थीं। गेहूं और मक्का के खेतों से घिरे एक छोटे कस्बे में बिताए बचपन के दिन; ऋतुओं की उग्रता, आग उगलती गर्मियां; जब आसमान साफ और चमकीला होता है, पेड़-पौधे हरियाली से लदे होते हैं, रंग-बिरंगे फूल अपनी बहार दिखाते हैं, और कहीं फसलों की बोझिल गंध हवा में भरी होती है; और कड़कड़ाते जाड़े, जब बर्फ जम जाती है और सारी धरती नंगी और लोहे की चद्दर की तरह भूरी और बेरौनक लगती है। हम दोनों दोस्त रेल के डिब्बे में बैठे यही बातें कर रहे थे और अन्त में इस नतीजे पर पहुंचे कि जो प्रेरी के छोटे कस्बे में छोटे से बड़ा नहीं हुआ वह उसके मज़ों के बारे में कुछ भी नहीं जान सकता। इसके मज़े तो जिसने लूटे हैं वही जान सकता है।

जिम बरडन और मैं, दोनों ही न्यूयार्क में रहते हैं, लेकिन बहुत कम भेंट हो पाती है। वह एक बड़ी पश्चिमी रेलवे कम्पनी का कानूनी

सलाहकार है और अपने काम की वजह से अक्सर कई-कई हफ्तों तक दफ्तर में नहीं आ पाता। न मिल पाने का एक तो यह कारण है। दूसरा यह कि मुझे उसकी बीवी पसन्द नहीं। वह खूबसूरत है, प्रबन्ध-कुशल है, कर्मठ है, लेकिन न तो उसमें लोगों को प्रभावित करने की क्षमता है और न स्वभाव से वह उत्साही है। अपने पति का निराकुल, शान्त स्वभाव उसे पसन्द नहीं और दोनों की रुचियों में भी मुझे गहरा अन्तर दिखाई देता है। वह प्रगतिशील विचारों के, लेकिन अति सामान्य योग्यतावाले कुछ युवा कवियों और चित्रकारों की संरक्षिका के रूप में अपना मन बहलाया करती है। उसकी अपनी सम्पत्ति है और वह अपने पति से भिन्न जीवन बिताती है। और कोई ऐसी बात है जिसके कारण वह मिसेज़ जेम्स बरडन बनी हुई है।

निराशाएं जिम का कुछ भी नहीं बिगाड़ पाईं; इनके कारण वह ज़रा भी नहीं बदला। उसका रोमांटिक रुझान बचपन में अक्सर उसे दूसरों की हंसी का पात्र बना दिया करता था। लेकिन उसकी वर्तमान सफलता का बहुत कुछ श्रेय उसके इस रोमांटिक रुझान को ही है। जिस विशाल प्रदेश में उसकी रेल कम्पनी की शाखा-प्रशाखाएं हैं, वह प्रदेश उसे जी-जान से प्यारा है। उस प्रदेश में कम्पनी के कारबार को बढ़ाने में उसका इस प्रादेशिक ज्ञान और उसकी प्रदेश-निष्ठा का काफी महत्त्वपूर्ण हाथ रहा है।

उस दिन रेल में यात्रा करते हुए हम लोगों की बातचीत घूम-फिर-कर एक बोहेमी लड़की पर आ जाया करती थी। हम दोनों उसे बचपन से ही जानते थे। बचपन के लोगों में से हमें सबसे अधिक उस लड़की की ही याद थी। हमारे मन पर वह लड़की, हमारा प्रदेश, वहां की परि-स्थितियां और हमारा समूचा घटनापूर्ण बचपन था। मैंने तो उसे इधर कई बरसों से नहीं देखा था, लेकिन जिम ने किसी तरह पता लगा लिया था और नये सिरे से दोस्ती कर ली थी और अब उस दोस्ती का उसके लिए बहुत अधिक महत्त्व था। उस दिन जिम को रह-रहकर उसीके विचार आ रहे थे; और उसने अपनी वर्णन-क्षमता से जैसे उसे मेरे सामने सशरीर प्रत्यक्ष कर दिया और उसके प्रति मेरे पुराने स्नेह को

जगा दिया।

"एण्टोनिया के बारे में मुझे जितना कुछ याद है वह सब मैं पिछले दिनों लिखता रहा हूं।" उसने मुझे बताया और बोला, "लम्बी यात्राओं में इसी तरह लिखकर समय काटता हूं और अपना मनोरंजन भी कर लेता हूं।"

जब मैंने उसके लिखे विवरण को पढ़ने की इच्छा प्रदर्शित की तो उसने कहा कि जब पूरा हो जाए तो ज़रूर पढ़ना।

महीनों बाद, सर्दियों की एक तूफानी तिपहरिया में जिम बगल में बस्ता दबाए मेरे घर आया। बैठके में, अंगीठी के आगे खड़े होकर हाथ गरमाते हुए उसने मुझसे बस्ते की ओर इशारा करके कहा :

"इसमें है एण्टोनिया की कहानी। तुम पढ़ना चाहते थे न ? कल रात ही समाप्त की है। अभी ठीक से जमा नहीं पाया हूं। जो भी याद आता गया, वह सब लिख डाला है। अभी इसका कोई रूप बन नहीं पाया है और न शीर्षक ही दे सका हूं।"

वह दूसरे कमरे में चला गया, जहां मेरी लिखने की मेज़ थी और उसने बस्ते में से फाइल निकालकर उसके आवरण पर 'एण्टोनिया' लिख दिया। थोड़ी देर वह भौंहें सिकोड़े इस शब्द की ओर देखता रहा और फिर कलम उठाकर इसके पहले एक और शब्द लिखकर इसे 'मेरी एण्टोनिया' कर दिया। और तब उसने सन्तोष की सांस ली।

प्रेमिका

पहला भाग

एण्टोनिया के बारे में मैंने पहले-पहल उस समय सुना था जब उत्तर अमरीका के विशाल मध्यवर्ती मैदान से होकर मैं यात्रा कर रहा था। लगता था जैसे उस यात्रा का कभी अन्त ही न होगा। तब मैं सिर्फ दस बरस का था। एक ही साल के अन्दर माता और पिता, दोनों का स्वर्गवास हो गया था। मेरे वरजीनिया वाले रिश्तेदार एक पहाड़ी लड़के, जेक मारपोल की देख-रेख में मुझे दादाजी के यहां, नेब्रास्का भेज रहे थे। जेक पिताजी के ब्लूरिज की तलहटीवाले पुराने खेत पर नौकर था और अब दादाजी के यहीं काम करने के लिए पछांह जा रहा था। मेरी तरह उसे भी दुनिया का कोई अनुभव नहीं था। उस सवेरे जीवन में पहली-पहली बार वह रेलगाड़ी पर सवार हुआ था और हम दोनों साथ ही एक नई दुनिया में तकदीर आज़माने चले जा रहे थे।

वह सारी यात्रा हमने दिनवाले डिब्बों में की थी, इसलिए हर मंजिल पर कालिख और चिपचिपाहट बढ़ती गई। जेक अखबार-विक्रेता लड़कों से जो कुछ भी मिल सकता था, कैंडी (मिठाई), नारंगी, पीतल के कालर-बटन, घड़ी की ज़ंजीर का लटकन आदि खरीदता रहा था। 'जेसी जेम्स की जीवनी' की एक प्रति भी वह मेरे लिए खरीद लाया था। ऐसी बढ़िया किताब मैंने पहले कभी नहीं पढ़ी थी। शिकागो के बाद एक भले यात्री-कण्डक्टर ने हम दोनों के संरक्षण का भार अपने ऊपर ले लिया था। जिस जगह हम जा रहे थे, वहां के बारे में उसे सब कुछ मालूम था। हमारा

विश्वास पाकर बदले में उसने हमें बहुत-सी सलाहें दे डाली थीं। हमें वह लगभग सभी जगह घूमा हुआ, अनुभवी और दुनियादार आदमी लगा। बातचीत के दौरान, दूरस्थ राज्यों और शहरों के नाम, उन्हें ज़रा-सा भी महत्त्व दिए बिना, वह बड़ी आसानी से बोल जाता था। विभिन्न भ्रातृ-संघों की सदस्यता-सूचक बहुत-सी अंगूठियां, पिनें और पदक उसने धारण कर रखे थे। यहां तक कि उसके कफ-बटनों पर भी बीजाक्षर खुदे थे। इन सबके कारण वह किसी मिसरी लिखावटवाले खम्भे की तरह लगता था।

एक बार जब वह बात करने बैठा तो उसने हमें बताया कि आगेवाले आप्रवासी डिब्बे में समुद्र-पार से आया हुआ एक परिवार यात्रा कर रहा है और वे लोग भी वहीं जा रहे हैं जहां हम।

"एक नन्ही लड़की के सिवा उस परिवार के किसी भी सदस्य को अंग्रेज़ी बोलना नहीं आता ; और वह लड़की भी अंग्रेज़ी में सिर्फ इतना कह सकती है कि 'हम लोग ब्लैकहॉक, नेब्रास्का जाते हैं।' बस, तुम्हारी उम्र की होगी, हद से हद बारह या तेरह की समझ लो। और है भी बिलकुल नये चमकीले डालर जैसी। बताओ जिम्मी, है इरादा उसे देखने और उससे मिलने का ? उसकी भूरी आंखें तो भई, कमाल की सुन्दर हैं।"

कण्डक्टर के अन्तिम वाक्य को सुनकर मैं लजा गया था ; सिर हिलाकर मैंने इन्कार कर दिया था और अपना सारा ध्यान 'जेसी जेम्स की जीवनी' पढ़ने में लगा दिया था। जेक ने अपनी गर्दन को झटका देकर मेरे इस आचरण की दाद दी थी और यह भी कहा था कि परदेशियों से बीमारी की छूत लग सकती है।

नेब्रास्का की उस दिन-भर की लम्बी यात्रा की कोई बात, यहां तक कि मिसौरी नदी को पार करना भी मुझे याद नहीं है। मिसौरी से पहले उस दिन इतनी नदियां पार की थीं कि किसीके भी बारे में मन में कोई उत्साह शेष नहीं रह गया था। नेब्रास्का के बारे में सिर्फ यही उल्लेखनीय रहा है कि दिन-भर चलते रहने के बाद भी वह दूर, बहुत दूर था।

ब्लैकहॉक पहुंचने से पहले रेलगाड़ी की लाल प्लश वाली सीट पर गुड़ी-मुड़ी होकर मैं बहुत देर तक सोता रहा था। जेक ने मुझे जगाया और हाथ

थामकर ले चला। हम लड़खड़ाते और ठोकरें खाते हुए लकड़ी के प्लेटफार्म पर उतरे, जहां लोग-बाग लालटेनें लिए इधर से उधर दौड़ रहे थे। न मुझे कोई शहर दिखाई दिया और न दूर-दूर तक रोशनी ही। चारों ओर केवल घुप्प अंधेरा छाया हुआ था। लम्बी दौड़ के बाद इंजिन खड़ा हांफ रहा था। उसकी भट्टी की आग के उजाले में बक्सों और गठरियों से लदे-फदे कुछ लोग प्लेटफार्म पर सिमटे-सिकुड़े-से खड़े थे। देखते ही मैं समझ गया कि यही वह आप्रवासी परिवार होना चाहिए जिसके बारे में कण्डक्टर ने बताया था। औरत ने एक झालरदार दुशाला सिर पर बांध रखा था और उसके हाथों में टीन का सन्दूक इस तरह सीने से सटा था, मानो बच्चा छाती से लगा हो। आदमी बूढ़ा, लम्बा और झुका हुआ था। कुछ बड़ी उम्र के दो लड़के और एक लड़की मोमजामे की गठरियां थामे खड़े थे। एक छोटी लड़की मां के स्कर्ट (साया या लहंगा) से सटी हुई थी। तुरत लालटेन लिए हुए एक आदमी उनके पास आया और ज़ोर से चिल्ला-चिल्लाकर बातें करने लगा। मैंने कान सतर्क किए, क्योंकि किसी विदेशी भाषा को सुनने का वह मेरा पहला ही अवसर था।

फिर दूसरी लालटेन आई। एक हंसोड़ आवाज़ ने पुकारा, "क्यों भई, तुम लोग मिस्टर बरडन के यहीं आए हो न? तब तो मेरा ही इन्तज़ार कर रहे हो! मैं हूं ओटो फश। मिस्टर बरडन के यहां मज़री करता हूं और तुम्हें लेने आया हूं। कहो जिम्मी, इतनी दूर, पछांह में आते डर तो नहीं लगा न?"

लालटेन के उजाले में उस नये चेहरे को मैं कौतूहल से देखने लगा। ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो 'जेसी जेम्स की जीवनी' का कोई पात्र शरीर धारण करके सामने आ गया हो। वह चमड़े की चौड़ी पट्टी और चमकीले बकसुएवाला चौड़े किनारे का नमदे का टोप पहने हुए था। उसकी मूंछें छोटे सींगों की तरह ऊपर की ओर ऐंठी हुई थीं। देखने में वह मुझे जानदार और खंखार लगा; ज़रूर उस आदमी का कोई इतिहास रहा होगा। उसके एक गाल पर घाव का लम्बोतरा निशान था, जिससे मुंह का एक कोना भद्दे ढंग से ऐंठ गया था। उसके बाएं कान का ऊपरी हिस्सा साफ गायब था। और शरीर की चमड़ी का रंग रेड इंडियनों जैसा ललछौंहा-भूरा। अवश्य ही वह एक

दुस्साहसी व्यक्ति का चेहरा था। वह कुछ संक्षिप्त-सा, फुर्तीला, मज़बूत और लचकीला एवं तेज़ी से चलनेवाला व्यक्ति था; और यह बात मुझे उस समय मालूम हुई जब वह हमारे सन्दूकों को देखने के लिए अपने ऊंची एड़ी के जूतों में प्लेटफार्म पर चल रहा था। उसने हमसे कहा कि रास्ता लम्बा है और रात में काफी देर तक चलना पड़ेगा, इसलिए तुरत रवाना हो जाना चाहिए। वह हमें गाड़ियों के सायबान में लाया जहां खेती का माल ढोनेवाली दो घोड़ागाड़ियां (फार्म-वागन) खड़ी थीं। एक गाड़ी में मैंने उस परदेशी परिवार को सवार होते देखा। दूसरी गाड़ी हमारे लिए थी। जेक ओटो फुश के साथ आगेवाली सीट पर बैठा और मैं अन्दर पुआल पर भैंसे की खाल ओढ़कर पड़ रहा। वे आप्रवासी उस सूने अंधकार में खड़खड़ाते हुए आगे-आगे चले और हम उनके पीछे।

मैंने नींद लेने की कोशिश की, लेकिन धचकों के मारे होंठ भिंचे जाते थे और जल्दी ही बदन का पोर-पोर दुखने लग गया। कुट-पिटकर जब पुआल दब गया तो खासा सख्त बिस्तरा तैयार हो गया। अब मैं सावधानी से खिसककर भैंसे की खाल के नीचे से निकल आया और घुटनों के बल बैठकर गाड़ी के बाजू के ऊपर से आंखें गड़ाकर बाहर की ओर देखने लगा। लेकिन खेत, पहाड़, पेड़, बागुड़, पहाड़ियों के बीच का संकीर्ण, समतल मैदान कुछ भी नहीं दिखाई दिया। अगर सड़क रही भी हो तो तारों के उस धुंधलके में वह भी मुझे दिखाई नहीं दे रही थी। वहां सिर्फ ज़मीन थी, प्रदेश कोई था ही नहीं—थी केवल वह सामग्री जिससे प्रदेश बनते हैं। सच ही, सिवा ज़मीन के वहां कुछ भी नहीं था और वह भी समतल नहीं, ऊंची-नीची, क्योंकि उतार में जाते समय पहियों पर ब्रेक चांपे जाने की आवाज़ आती थी और ढाल पर चढ़ते समय पीछे की ओर झुकाव और लड़खड़ाहट महसूस होती थी। मुझे ऐसा लग रहा था मानो दुनिया पीछे छूट गई हो और हम उसके किनारे पर पहुंच गए हों और मनुष्य के अधिकार-क्षेत्र से बाहर निकल आए हों। अभी तक मैंने ऐसा आकाश नहीं देखा था जिसमें परिचित पर्वत-श्रेणियां सिर उठाए खड़ी न हों। लेकिन अब जो देख रहा था वह तो मानो स्वर्ग का समचा गुम्बद ही था, सारे आकाश पर पूरी तरह छाया हुआ। बहुत दूर चला आया था; इतनी दूर कि मृत माता-पिता की आत्माएं भी

पीछे और बहुत पीछे छूट गई थीं। ऊपर आसमान से वे मुझे यहां देख रहे हैं, इसपर तो किसी तरह विश्वास ही नहीं होता था। उनकी आत्माएं अवश्य अभी तक मुझे पहाड़ियों के बीच के संकरे-समतल मैदान में बने भेड़ों के बाड़े में या पहाड़ी चरागाहों को जानेवाली सफेद सड़क पर ही खोज रही होंगी। मैं यहां हूं, इसकी तो उन्हें कल्पना भी न होगी। गाड़ी धचके खाती हुई मुझे न जाने कहां लिए जा रही थी। न घर की याद आ रही थी, न कहीं पहुंच जाने की उत्कण्ठा ही सता रही थी; और न मन में यह चिन्ता ही थी कि अगर कहीं भी नहीं पहुंच पाए तो क्या होगा। उस धरती और आसमान के बीच मेरा सारा अस्तित्व ही जैसे धुल-पुंछकर निःशेष हो गया था। उस रात मैंने प्रार्थना भी नहीं की; यहां तो मुझे ऐसा लग रहा था कि जो होना होगा होकर ही रहेगा।

२

दादाजी के फार्म पर पहुंचने की मुझे ज़रा भी याद नहीं है। मंथर गति से चलनेवाले खेती के उन घोड़ों की गाड़ी में लगभग बीस मील का फासला तय करके हम सूर्योदय से कुछ ही पहले अपनी मंज़िल पर पहुंचे थे। जब जागा तो दोपहर दिन चढ़ आया था। मैं एक छोटे-से कमरे में सो रहा था—इतना छोटा कि जिस पलंग पर सो रहा था उससे वह कमरा कुछ ही बड़ा रहा होगा। सिरहानेवाली खिड़की का पर्दा दुपहर की मन्दोष्ण हवा में हौले-हौले फड़फड़ा रहा था। एक लम्बी-सी औरत मेरी ओर देखती हुई खड़ी थी। उसके बाल काले और भूरी चमड़ी झुर्रियोंदार थी। देखते ही समझ गया कि यह मेरी दादीजी होनी चाहिए। मेरे जागने से पहले वे रो रही थीं, लेकिन जब मैंने आंखें खोलीं तो मुस्करा उठीं। उन्होंने एक बार आकुलता-पूर्वक मेरी ओर देखा और तब मेरे पैताने की ओर बैठ गईं।

"क्यों जिम्मी, नींद तो अच्छी आई न ?" उन्होंने उल्लास-भरे स्वर में कहा, लेकिन दूसरे ही क्षण उनका स्वर बदल गया और वे इस तरह बोलीं,

मानो अपने-आपसे कह रही हों, 'हाय राम, बिलकुल अपने बाप पर पड़े हो !' मुझे याद आ गया कि पिताजी उनके सबसे छोटे बेटे थे और उनके देर तक सोते रहने पर दादीजी अक्सर इसी तरह उन्हें जगाने के लिए आती होंगी। "ये हैं तुम्हारे धुले हुए कपड़े।" मेरे लिहाफ को अपने भूरे हाथों से थपथपाते हुए उन्होंने आगे कहा, "लेकिन पहले तुम मेरे साथ नीचे रसोईघर में चलो और वहां अंगीठी के पीछे गरम पानी से खूब अच्छी तरह नहा लो। अपनी चीज़ें ले लो; वहां कोई भी नहीं है।"

'नीचे रसोईघर में' सुनकर मुझे अजीब-सा लगा। अपने यहां तो हम हमेशा 'बाहर रसोईघर में' कहते थे। मैंने अपने जूते और मोज़े उठा लिए और उनके पीछे-पीछे बैठक से होता हुआ सीढ़ियां उतरकर तलघर में पहुंच गया। तलघर दो हिस्सों में बंटा हुआ था। सीढ़ियों के बाईं ओर खाने का कमरा था और दाहिनी ओर रसोईघर। दोनों कमरों में पलस्तर और सफेदी की हुई थी—सीधे गारे की दीवालों पर ही पलस्तर कर दिया गया था जैसाकि आम तौर पर खन्दकों में बनाए गए सुरक्षा-गृहों में किया रहता है। फर्श सख्त सीमेंट का था। छत लकड़ी के पटाव की थी और उससे सटी हुई छोटी-छोटी अद्धी खिड़कियां रखी गई थीं, जिनमें सफेद पर्दे टंगे थे। खिड़कियों की गहरी सिलों पर जिरेनियम और वांडरिंग-ज्यू की बेल के गमले सजे हुए थे। रसोईघर में जाते ही सोंठ-मिली मीठी रोटी के पकाए जाने की मस्त सोंधी गंध मेरे नथुने में भर गई। अंगीठी बहुत बड़ी थी और उसपर चमकीले निकल की झालर मढ़ी हुई थी। अंगीठी के पीछे दीवाल से लगी लकड़ी की एक लम्बी बेंच थी और था नहाने-धोने का टीन का एक टब, जिसमें दादीजी ने बारी-बारी से गरम और ठण्डा पानी भर दिया था। जब वे साबुन और तौलिया लेकर आईं तो मैंने उन्हें यह कहकर लौटा दिया कि मुझे बिना किसीकी मदद के अपने से नहाने का अभ्यास है।

"अच्छा, तो तुम अपने कान भी धो लेते हो ? अरे, सच ? तब तो जिम्मी, तुम बड़े ही राजा बेटे हो !"

रसोईघर का वातावरण काफी सुहावना था। पश्चिमवाली अद्धी खिड़की की राह सूरज की किरणें मेरे नहाने के पानी में अठखेलियां कर रही थीं। एक बड़ी-सी माल्टीज बिल्ली कहीं से आकर टब से अपना बदन

रगड़ती हुई मुझे साश्चर्य देख रही थी। मैं मल-मलकर नहाता रहा और दादीजी उधर खाने के कमरे में उठा-धरी करती रहीं। सहसा मैं पुकार उठा, "दादी अम्मां, कहीं वे सोंठी केक जल न जाएं।" इसपर वे हंसती और अपने एप्रन को सामने की ओर इस तरह हिलाती हुई रसोईघर में चली आईं, मानो मुर्गियों को 'शू-शू' कर डरा रही हों।

उनकी काठी दुबली-पतली, लम्बी और कुछ झुकी हुई थी। वे अपने सिर को हमेशा इस तरह आगे की ओर बढ़ाए रखती थीं, मानो किसी चीज़ को गौर से देख रही हों, या दूर की किसी आवाज़ को कान लगाकर सुन रही हों। जैसे-जैसे मैं बड़ा हुआ मुझे विश्वास होता चला गया कि इस तरह सिर रखने का कारण केवल यही था कि दादीजी प्रायः सुदूर अतीत की बातें सोचने में तल्लीन रहा करती थीं। उनमें गज़ब की फुर्ती थी और चलती भी बहुत तेज़ थीं। आवाज़ उनकी ऊंची और कुछ-कुछ तीखी थी। वे प्रायः शब्दों पर ज़ोर देकर और उनका रूप-परिवर्तन करके बोला करती थीं, क्योंकि उनकी हार्दिक इच्छा रहती थी कि हर बात मर्यादा और व्यवस्था के अनुसार ही हो। उनकी हंसी भी बुलन्द, कुछ हद तक कर्कश, परन्तु साथ ही बौद्धिक प्राणवत्ता से भरी-पूरी होती थी। उस समय वे पचपन वर्ष की, असामान्य सहिष्णुतावाली और सशक्त महिला थीं।

नहा-धोकर कपड़े पहनने के बाद मैंने रसोईघर के बाज़ूवाले लम्बे सेलर (भू-गर्भीय गोदाम) की जांच-पड़ताल की। उसे मकान के पार्श्व भाग के नीचे की ज़मीन खोदकर बनाया गया था। सीमेण्ट से उसका पलस्तर किया हुआ था। उसमें एक ज़ीना और आदमियों के आने-जाने के लिए बाहर की ओर दरवाज़ा था। एक खिड़की के नीचे, काम से लौटे आदमियों के हाथ-मुंह धोने की जगह बनी हुई थी।

दादीजी उधर शाम के भोजन की तैयारियों में लग गईं और मैं अंगीठी के पीछेवाली बेंच पर बैठा बिल्ली की खूबियां मालूम करता रहा—दादीजी ने बताया कि वह चूहे-चुहियां ही नहीं गोफर (भू-गिलहरी) भी पकड़ लेती थी। धूप का पीला चकत्ता फर्श पर धीरे-धीरे सीढ़ियों की ओर खिसकता गया और हम दादी-पोता बैठे अपनी यात्रा के बारे में बातें करते रहे। हमने नवागन्तुक बोहेमी परिवार के बारे में भी बातें कीं और दादीजी ने बताया कि

वे ही हमारे सबसे नज़दीकी पड़ोसी होंगे। वरजीनिया के फार्म के बारे में, जहां दादीजी कई वर्षों तक रह चुकी थीं, हमने कोई बात नहीं की। लेकिन आदमियों के खेतों से लौट आने पर जब हम सब खाने की मेज़ पर बैठ गए तो वे जेक से उस पुरानी जगह और वहां के मित्रों एवं पड़ोसियों के बारे में पूछताछ करती रहीं।

दादाजी कुछ भी नहीं बोले। जब पहली बार अन्दर आए तो मुझे चूमा, दो-एक स्नेह-पगे शब्द कहे और बस चुप हो गए। उन्हें दिखावा पसंद नहीं था। उनके इस आत्मसंयम, विचारशीलता और गरिमा का मुझपर तुरत प्रभाव पड़ा, और कुछ हद तक उनका रोब भी गालिब हुआ। दर्शक का तुरत ध्यान खींचनेवाली चीज़ थी उनकी बर्फ जैसी सफेद, लहरियादार, सुन्दर दाढ़ी। एक बार मैंने किसी पादरी को कहते सुना था कि जनाब, आपकी दाढ़ी तो अरबी शेख जैसी है। सिर गंजा होने के कारण उनकी वह दाढ़ी और भी भव्य लगती थी।

दादाजी की आंखें बूढ़ों जैसी तो बिलकुल ही नहीं थीं; चटकाले नीले रंगवाली उनकी आंखों में ताज़े तुहिन-कणों जैसी चमक थी। दांत उनके बिलकुल सफेद और एक जैसे थे; मज़बूत इतने कि जीवन में एक बार भी दन्त-चिकित्सक के यहां जाने की ज़रूरत नहीं पड़ी। उनकी त्वचा इतनी कोमल थी कि धूप और आंधी से तुरत खुरदरा जाती। जवानी में उनके सिर के बाल और दाढ़ी का रंग लाल था; भौंहें तो अब भी ताम्रवर्ण थीं।

भोजन करते समय ओटो फुश और मैं आपस में एक-दूसरे को छुपी निगाहों से देखते रहे। ब्यालू की तैयारी करते हुए दादीजी ने मुझे उसके बारे में बता दिया था कि बचपन में कैसे वह अपने देश आस्ट्रिया से यहां आया और सुदूर पश्चिम में खानों के इलाकों और पशुपालकों के बीच साहस-पूर्ण और रोमांचक जीवन बिता चुका था। वहां पहाड़ी निमोनिया हो जाने के कारण उसकी इस्पाती काठी कुछ कमज़ोर हो गई थी, इसलिए वह थोड़े समय के लिए सामान्य जलवायुवाले इस प्रदेश में रहने चला आया था। हमसे उत्तर, बिस्मार्क नामक एक जर्मन बस्ती में उसके कुछ रिश्तेदार रहते थे, लेकिन कोई सालएक-भर से वह दादाजी के यहां काम कर रहा था।

जैसे ही भोजन समाप्त हुआ, ओटो मुझे रसोईघर में ले गया और चुपके

से उस टट्टू के बारे में बताया जो खास मेरे ही लिए खरीदा गया था और जो उस समय नीचे अस्तबल में बंधा था। यह पता लगाने के लिए कि कहीं उसमें कोई ऐब या शैतानी तो नहीं है, ओटो उसपर सवारी भी कर चुका था, लेकिन बेचारा वह टट्टू 'बड़ा ही भलामानस' था और उसका नाम ड्यूड था। फुश ने मुझे, जो भी मैंने पूछा, सभी कुछ बता दिया। कान उसका गला था व्योमिंग की एक बर्फीली आंधी में, जबकि वह बग्घी का कोचवान था। उसने मुझे यह भी बताया कि फंदा फेंककर जानवरों को कैसे फंसाया जाता है। उसने मुझसे वादा भी कर लिया कि कल सूर्यास्त से पहले-पहले फंदे में एक बछड़ा फंसाकर मुझे दिखाएगा। उसने अपनी बांकें और चांदी की ऐड़ें निकालकर मुझे और जेक को दिखाईं। उसने हमें अपने कामदार चरवाही जूते भी दिखाए। बहुत ही बढ़िया थे वे। उनके ऊपरी भाग पर गुलाब के फूलों और दुहरी गांठों की बड़ी-बड़ी डिज़ाइनें और नंगी औरतें कढ़ी हुई थीं। ओटो ने हमें बड़ी गम्भीरता से यह बताया कि वे नंगी औरतें स्वर्ग की देवियां थीं।

रात में सोने से पहले जेक और ओटो की, प्रार्थना करने के लिए, ऊपरवाले बैठके में बुलाहट हुई। दादाजी ने चांदी के फ्रेमवाला चश्मा अपनी आंखों पर चढ़ाया और भजन पढ़ने लगे। उनकी आवाज़ में इतना दर्द और पढ़ने का ढंग इतना अच्छा था कि मैं मुग्ध हो गया और चाहने लगा कि वे 'बुक ऑफ किंग्स' से मेरी पसन्द का कोई अध्याय सुनाते। 'सेलाह' के उनके उच्चारण पर तो मैं लट्टू ही हो गया। 'जेकब को प्यार करनेवाला वह परम पिता हमारे लिए हमारी विरासत का चुनाव करेगा। सेलाह।' इस शब्द का अर्थ मैं नहीं जानता था; शायद दादाजी भी नहीं जानते थे। लेकिन उनके मुंह से सुनकर लगा था मानो यह सब शब्दों से पावन और देववाणी ही हो।

दूसरे दिन बड़े सवेरे मैं अड़ोस-पड़ोस की खोज-खबर लेने के लिए घर से बाहर निकल गया। मुझे यह बात बता दी गई थी कि एक नॉर्वेजियन लोगों की बस्ती को छोड़, जहां लकड़ी के कई मकान थे, ब्लैकहॉक के पश्चिम में अकेला हमारा ही मकान लकड़ी का बना था। हमारे पड़ोसी ज़मीन के अन्दर घरौंदे बनाकर अथवा घास-फूस की गारा-छवी दीवालोंवाले घरों में

रहते थे। इस तरह के मकान आरामदेह तो जरूर होते हैं, लेकिन उनमें जगह की बड़ी कोताही रहती है। हमारा मकान तलघर के ऊपर डेढ़ मंजिला बना हुआ था। उसकी लकड़ियां सफेद रंग से पोती गई थीं। ज़मीन के काफी बड़े टुकड़े के पूर्वी छोर पर यह मकान बनाया गया था। रसोईघर के दरवाजे के ठीक पास में पवन-चक्की थी, जहां से पश्चिम की ओर ज़मीन ढलवां होती हुई नीचे अस्तबल, कोठार और सूअरों के बाड़े तक चली गई थी। ढाल की यह ज़मीन सभी ओर कड़ी थी, और बरसाती पानी के बहाव के कारण इसमें बल खाती हुई नालियां बन गई थीं। कुण्डों से आगे, जहां ढाल खत्म होता था, एक छोटी-सी कीच-भरी तलैया थी, जिसके चारों ओर किरमिजी रंग के बेंत की झाड़ियां उगी हुई थीं। सड़क डाकखाने से सीधे हमारे मकान के दरवाजे तक आती थी, फिर ज़मीन के टुकड़े के बीच से होकर इस तलैया का चक्कर काटती हुई पश्चिम में ढेरों के मैदान के उभार की ओर उठती चली जाती थी। यहां ऊंचाई पर मक्का का एक बहुत बड़ा खेत था। इतना बड़ा खेत मैंने पहले कभी नहीं देखा था। इस खेत के किनारे-किनारे जाती हुई सड़क ऐसी लगती थी मानो आसमान की ओर को मुड़ी हुई चल रही हो। खेती के लिए जोती हुई ज़मीन के नाम पर यहां मक्का का यह खेत और अस्तबल के पासवाला चरी का टुकड़ा, कुल जमा ये दो चीजें ही थीं। बाकी तो जहां तक निगाह जाती, मेरे सिर तक ऊंची, रूखी, ललछौंही झबरी घास ही दिखाई देती थी।

मकान के उत्तर में, आग के फैलाव को रोकने के लिए घास के मैदान के बीच जिन टुकड़ों को हल दिया गया था उनके बाक्स-एल्डर (समुद्र पर्ण) वृक्षों के घने झुरमुट की पांत दूर तक चली गई थी। इनके झुके और उमके हुए पेड़ों की पत्तियां पीली पड़ने लग गई थीं। वृक्षों की यह कतार लगभग चौथाई मील लम्बी होगी, लेकिन फिर भी इसे देख पाने के लिए मुझे काफी यत्न करना पड़ा था। उस लम्बी घास के बीच ये नन्हे पेड़ खो-से गए थे। ऐसा लगता था मानो घास बाक्स-एल्डर के उन पेड़ों पर और घास-फूस की नारा-नड़ी दीवालोंवाले मुर्गीघर के पास बेर वृक्षों का जो झुरमुट था उसपर भी छाई जा रही हो।

मेरे चारों ओर घास समन्दर के पानी की तरह लहरा रही थी। निगाह

के छोर तक दिखाई देता पानी जिस तरह समुद्र होता है ठीक उसी तरह वह प्रदेश मुझे घास के रूप में दिखाई दे रहा था। उस ललछौंही घास ने प्रेरी के समूचे विशाल मैदान को एक ऐसी मटमैली लाली से मढ़ दिया था, जो अंगूरा शराब अथवा लाल रंग की ताज़ा धुली समुद्री घास की रंगत से मिलती-जुलती थी। और वह घास हिल रही थी; और उसकी गति के कारण ऐसा लगता था मानो वह सारा प्रदेश कहीं दौड़ा जा रहा हो।

प्रकृति-पर्यवेक्षण में मैं इतना तल्लीन हो गया था कि न अपनी सुध रही थी, न किसी और की। यहां तक कि दादीजी के अस्तित्व को भी भूल गया था। फिर वे घर से बाहर निकलती हुई दिखाई दीं। धूप से बचाव करने-वाला हैट वे सिर पर पहने हुए थीं। हाथ में उनके अनाज का एक खाली बोरा था। उन्होंने मुझसे पूछा, "क्यों, आलू खोदने के लिए बगीची चलोगे? रसोई में पकाने के लिए आलू चाहिए।"

बगीची घर से कराब चौथाई मील दूर थी। रास्ता एक हलका-सा ढलान उतरकर मवेशियों के बाड़े से होता हुआ जाता था। चलते हुए दादी-जी ने मुझे हिकरी की वह मज़बूत सोटी दिखाई जो उनके कमरबंद में चमड़े की बद्दी के सहारे लटकी हुई थी, और जिसके सिरे पर तांबा मढ़ा हुआ था। वह सांप मारने की सोटी थी। बगीची आते-जाते वे उस सोटी से कई सांप मार चुकी थीं। मुझसे उन्होंने कहा "तुम जब भी बगीची जाओ, कोई मज़बूत लाठी या गंड़ासा ज़रूर ले जाया करो। इधर सांपों का बड़ा उपद्रव है। ब्लैकहॉक सड़क पर रहनेवाली एक नन्ही लड़की के टखने में सांप ने काट खाया तो बेचारी गर्मियों-भर दुःख पाती रही।"

सितम्बर मास के उस सवेरे दादाजी के साथ गाड़ीवाले रास्ते की अस्पष्ट-सी लाकों पर चलते हुए वह प्रदेश जैसा मुझे लगा था उसकी याद आज भी मेरे मन में ठीक वैसी ही बनी हुई है। लम्बी रेल-यात्रा का प्रभाव अब भी मेरे मन पर था, शायद इसीलिए सारी प्रकृति मुझे गतिशील लग रही थी; सवेरे की ताज़ी सहज हवा में गति का बोध हो रहा था और सरसराती हुई लम्बी घास ऐसी लग रही थी मानो धरती पर पड़ी ढीली खाल हो, और उसके नीचे जंगली भैंसों के झुण्ड के झुण्ड बेतहाशा दौड़े जा रहे हों।

अकेले तो मैं बगीची को कभी खोज भी न पाता। वहां बड़े-बड़े पीले कद्दू अपनी मुरझाती हुई बेलों के सहारे खुले और अरक्षित पड़े थे। उस बगीची में ऐसा कुछ भी नहीं था जो मेरे मन और मस्तिष्क को बांध पाता। इसीलिए मेरा मन वहां ज़रा भी नहीं लगा। जी चाह रहा था कि घास के उस मैदान को पार कर दुनिया के छोर पर जा पहुंचूं। जाने क्यों दुनिया का छोर मुझे वहां से बहुत करीब लग रहा था। हलकी हवा जैसे मेरे कान में कह रही थी कि दुनिया का अन्त यहीं हो जाता है, बचे रह जाते हैं सिर्फ धरती और सूरज और आसमान; और यदि थोड़ा आगे चला जाए तो धरती भी नहीं रहेगी, सिर्फ सूरज और आसमान रह जाएंगे और चलनेवाला अधर में उन बाज़ पक्षियों की तरह तिरने लगेगा जो आसमान में हमारे सिर पर उड़ते हुए घास पर छाया की धीमी रेखाएं खींचते जा रहे थे। दादीजी ने कुदाल ले ली, जो आलू की एक पांत में खड़ी थी और उसकी सहायता से आलू खोदने लगीं। मैं भूरी मुलायम मिट्टी में से चुन-चुनकर उन्हें बोरे में रखने लगा; साथ ही ऊपर उड़ते बाज़ों को देखता और यह सोचता जा रहा था कि उनकी तरह मैं भी बड़ी आसानी से उड़ सकता हूं।

जब दादीजी जाने लगीं तो मैंने कुछ समय बगीची में ही रहने की इच्छा प्रकट की।

इसपर मेरी ओर गौर से देखते हुए वे बोलीं, "क्या तुम्हें सांपों से डर नहीं लगता ?"

"लगता तो ज़रूर है," मैंने स्वीकार किया, "लेकिन फिर भी मैं थोड़ी देर यहीं रहना चाहता हूं।"

"अच्छी बात है। अगर सांप दिखाई दे तो उसे छेड़ना मत। बड़े पीले और भूरे सांप तुम्हें कुछ नहीं कहेंगे। वे हानिप्रद भी नहीं होते। खेती को हानि पहुंचानेवाले गोफर आदि जन्तुओं को नष्ट करने में उनसे बड़ी मदद मिलती है। और वहां उस किनारेवाले बिल में कुछ दिखाई दे तो डरना मत। उसमें एक बिज्जू रहता है। काफी बड़ा है वह, ओपोसम के जितना बड़ा और मुंह उसका कबरा है। कभी-कभी दांव लग जाने पर एकाध मुर्गी झपट ले जाता है, फिर भी मैं उसे मारने के पक्ष में नहीं, हालांकि आदमी लोग तो बराबर ज़ोर देते रहते हैं। पड़ा रहे बेचारा, जीवात्मा है, और

फिर नये मुल्क में तो जीव-जन्तुओं की भी सोहबत रहती है। जब मैं यहां काम करती हूं तो वह बिल से निकल आता है और मुझे देखा करता है। उसका इस तरह देखना मुझे अच्छा लगता है और सोहबत भी हो जाती है।"

दादीजी ने आलुओं का बोरा कन्धे पर लिया और बोझ के कारण थोड़ा आगे की ओर झुकी हुई रास्ते पर चल पड़ीं। सड़क घुमावदार थी, इसलिए पहले मोड़ पर पहुंचकर उन्होंने मेरी ओर हाथ हिलाया और तब ओट में हो गईं। मैं हलकेपन और आत्मसन्तोष की नई भावना से भरा वहां अकेला रह गया।

मैं बगीची के बीचोंबीच एक गरमाए हुए पीले कद्दू की टेक लेकर बैठ गया। वहां से मेरी ओर आनेवाला कोई भी सांप अनदेखा नहीं रह सकता था। आलू की पांतों के किनारे-किनारे चिरमोटी (एक प्रकार की छोटी मकोय) के बहुत-से पौधे फलों से लदे खड़े थे। उनपर ढंपे हुए कागज़-जैसे पतले तिकोने खोलों को उलट-उलटकर मैंने कुछ चिरमोटियां खाईं। मेरे चारों ओर सूखी लताओं में बड़े-बड़े टिड्डे तरह-तरह की कलाबाज़ियां दिखा रहे थे। इतने बड़े टिड्डे मैंने अपने जीवन में पहले कभी नहीं देखे थे। गोफर जुती हुई ज़मीन में इधर से उधर दौड़-भाग कर रहे थे। बगीची की निचाई में हवा का बहाव उतना तेज़ नहीं था, परन्तु ऊपर समतल में वह सनसनाती हुई चल रही थी और उसकी सन-सन आवाज़ को मैं सुन और लम्बी घास के लहराने को अपनी जगह से देख भी सकता था। मेरे नीचे की धरती गरम थी और जब मैंने मिट्टी को लेकर अपनी अंगुलियों में मसला तो वह भी मुझे गरम लगी। विचित्र प्रकार के बहुत-से लाल मत्कुण जाने कहां से निकल आए और दल बांधकर मेरे चारों ओर धीमे-धीमे घूमने लगे। उनकी चिकनी सिन्दूरी पीठ पर काले धब्बे पड़े हुए थे। मैं दम साधे बिलकुल खामोश बैठा रहा। कोई खास बात नहीं हुई। कुछ होगा, इसकी मैंने अपेक्षा भी नहीं की थी। कद्दुओं की तरह धूप में पड़ा और गरमी को अनुभव करता हुआ मैं भी एक पदार्थ था और सिर्फ एक पदार्थ ही बना रहना चाहता था, उससे अधिक कुछ भी नहीं। उस स्थिति में मैं परम प्रसन्न था। शायद मर जाने पर हमें ऐसी ही अनुभूति होती है और

हम सूर्य एवं वायु अथवा मंगलमय परम तत्त्व के पूर्णांश हो जाते हैं। जो भी हो, वह आनन्द की अवस्था थी : किसी महत् और परिपूर्ण में लय हो जाने की चिदानन्दावस्था। वह स्थिति जब भी किसीको प्राप्त होती है, तो नींद की भांति सहज, स्वाभाविक रूप से अनायास ही प्राप्त हो जाती है, उसके लिए प्रयास नहीं करना पड़ता।

३

रविवार के दिन सवेरे ओटो फ़ुश हमें घोड़ागाड़ी में बिठाकर हमारे नये बोहेमी पड़ोसियों से मिलाने के लिए ले चला। जहां वे रहते थे वह जगह बिलकुल उजाड़ थी——न तो कोई बगीची थी, न मुर्गीघर; यहां तक कि खेती के लिए तोड़ी हुई ज़मीन भी बहुत कम थी। इसलिए उन्हें देने के लिए हमने कुछ सामान भी अपने साथ रख लिया था। फ़ुश तलघर (सेलार) में से आलू का एक बोरा और सूअर का नमक लगा मांस निकाल लाया। दादीजी ने गाड़ी की घास रखनेवाली पेटी में शनिवार की बनी कुछ रोटियां, मक्खन का एक बरतन और कद्दू की बहुत-सी गुझियां ठीक से जमाकर रख दीं। फिर हम आगेवाली सीट पर बैठ गए और घोड़ागाड़ी खड़खड़ाती हुई चल पड़ी। तलैया का चक्कर लगाते हुए हमारी गाड़ी सड़क-सड़क मक्का के बड़े खेत की ओर चढ़ने लगी।

मैं यह जानने को बेताब हो रहा था कि मक्का के खेत के आगे क्या है। गाड़ी की बैठक काफी ऊंची थी और वहां से काफी दूर तक दिखाई देता था; लेकिन जहां तक निगाह जाती थी, सिवाय लाल घास के और कुछ भी नहीं था। सड़क गहरी घाटियों का चक्कर लगाती और छिछली घाटियों के बीच से होती हुई जाती थी। उसके दोनों ओर सूरजमुखी के पौधे उगे हुए थे। कोई-कोई पौधा तो मामूली पेड़ के इतना बड़ा था। पत्तियां उनकी खुरदरी और कई शाखा-प्रशाखाएं थीं, जिनपर सूरजमुखी के दर्जनों फूल खिल रहे थे। प्रेरी के मैदान में वे फूल सुनहरे फीते की तरह लग रहे थे। कभी कोई

घोड़ा चलते-चलते किसी पौधे पर मुंह मार देता था और फूलोंसहित डण्ठल को उखाड़कर चबाने लगता था। उसकी दुलकी चाल और चबाने के कारण मुंह में लिए पौधे पर के फूल अजीब तरह से हिलने लगते थे।

रास्ते में दादीजी ने बताया कि नवागन्तुक बोहेमी परिवार ने उन्हींके एक देशवासी पीटर क्रायीक का खेत और घर उसकी असली कीमत से कहीं ज़्यादा पैसा देकर खरीदा है। यह सौदा, क्रायीक के चचेरे भाई की मार्फत, जब वे लोग अपने देश में ही थे, पक्का हो गया था। क्रायीक का वह चचेरा भाई श्रीमती शिमरडा का भी रिश्ते में कुछ लगता था। शिमरडा कुटुम्ब देश के इस हिस्से में आकर बसनेवाला पहला बोहेमी परिवार था। अंग्रेज़ी उनमें से किसीको भी नहीं आती थी, इसलिए न किसीसे सलाह ले सकते थे और न अपनी ज़रूरतें ही बता पाते थे। इस सम्बन्ध में वे पूरी तरह क्रायीक पर निर्भर थे, जो उनके दुभाषिए का काम करता और जो चाहता पट्टी पढ़ाया करता। फुश ने बताया था कि उनका एक लड़का काफी बड़ा, हट्टा-कट्टा और खेती का काम करने लायक हो गया था; लेकिन बाप बूढ़ा और कमज़ोर था और उसे खेती-बाड़ी की कोई जानकारी नहीं थी। पेशे से वह बुनकर और पोशिश तथा पर्दे आदि का होशियार कारीगर था। अपने साथ वह अपना बेला भी लेता आया था, जिसे बजाकर देश में वह कुछ कमा लिया करता था, लेकिन जिसका यहां कोई भी उपयोग नहीं हो सकता था।

"क्रायीक की उस खोह में तो उन बेचारों को सर्दियों में बड़ी तकलीफ होगी।" दादीजी ने कहा था, "ढंग का घरौंदा भी नहीं है वह तो; बस, बिज्जू का बिल समझ लो। और सुना है कि उस दुष्ट ने उन लोगों से अपनी पुरानी-धुरानी अंगीठी के बीस डालर वसूल किए हैं, जबकि वह इससे आधे की भी नहीं थी।"

"जी हां!" ओटो ने कहा, "उसने तो अपने बूढ़े बैल और दो मरियल घोड़े भी नये के दाम उन लोगों के गले मढ़ दिए हैं। बूढ़ा थोड़ी-बहुत जर्मन जानता है और घोड़ों के बारे में शायद मैं उसे बता भी देता, परन्तु जानता था कि कोई फायदा न होगा। बोहेमी आस्ट्रियावालों पर कभी भूलकर भी विश्वास नहीं करते।"

दादीजी ने उसकी बात में रस लेते हुए पूछा, "विश्वास क्यों नहीं करते,

ओटो ?"

फ़ुश ने नाक-भौंह सिकोड़ते हुए कहा, "राजनीति के कारण। लेकिन यों बात आपकी समझ में आएगी नहीं ; बताने में काफी समय लग जाएगा।"

ज़मीन पथरीली होती जा रही थी। मुझे बताया गया कि हम लोग स्क्वात्रीक के करीब पहुंच रहे हैं। इस पहाड़ी खड्ड ने शिमरडा परिवार की भूमि के आधे पश्चिमी भाग को इस तरह काट दिया था कि वह खेती के बहुत उपयुक्त नहीं रह गई थी। थोड़ी ही देर में घास से ढके वे टीले और टेकरियां दिखाई दीं जिनके बीच से होकर नाला बहता था। फिर खड्ड के अन्दर उगे हुए चिनार और सागौन आदि वृक्षों की चमकती हुई फुनगियां दिखाई देने लगीं। सागौन के कुछ पेड़ों में तो बहार भी आ चुकी थी और उनकी पीली पत्तियां तथा सफेद चमकीली छाल ऐसी लग रही थीं मानो वे परी-कथा के सोने-चांदी के पेड़ हों।

शिमरडा परिवार के रहने की जगह के पास पहुंच जाने पर भी मुझे बस्ती का कोई चिह्न नहीं दिखाई दिया। वहां भी वही लाल टेकरियां, उभरे और ढलवां किनारोंवाली खाइयां और जहां से मिट्टी खिसक गई थी वहां पर वृक्षों की लम्बी-लम्बी जड़ें लटकी हुई दिखाई दे रही थीं। फिर मैंने एक ढलवान के उभरे हुए किनारे के सहारे लाल घास से छाया एक छप्पर देखा। पास ही पवन-चक्की का एक टूटा-फूटा ढांचा खड़ा था, जिसके पहिये नदारद थे। घोड़ों को बांधने की सहूलियत के विचार से हमने अपनी गाड़ी इस ढांचे के पास ही रोकी। और अब मैंने एक खिड़की और दरवाज़ा देखा, जो ढलवान के किनारे को खोदकर ज़मीन के अन्दर बनाए गए थे। दरवाज़ा खुला हुआ था। उसके अन्दर से एक औरत और चौदह बरस की एक लड़की दौड़ती हुई बाहर आई और हमारी ओर आशा-भरी निगाहों से देखने लगीं। उनके पीछे-पीछे एक छोटी-सी लड़की और बाहर निकली। औरत अपने सिर पर रेशमी झालरवाली कलाबत्तू की वही शाल बांधे हुए थी जिसे मैंने ब्लैकहॉक स्टेशन पर उतरते समय उसके सिर पर बंधा देखा था। वह बूढ़ी नहीं थी, लेकिन जवान भी नहीं थी। उसका चेहरा सतर्क और तेजस्वी था, ठुड्डी तीखी और नन्ही-नन्ही आंखों में चतुराई की चमक थी। उसने बड़ी उमंग के साथ दादीजी से हाथ मिलाया।

"बहोत खुशी, बहोत खुशी !" वह सहसा बोल उठी। फिर जिस गड़हे में से वह निकलकर आई थी तुरत उसकी ओर इशारा करते हुए बोली, "घर अच्छा नहीं, घर अच्छा नहीं।"

दादीजी ने सिर हिलाते हुए दिलासा दी, "थोड़े दिनों में सब ठीक हो जाएगा, मिसेज़ शिमरडा; अच्छा मकान बन जाएगा और आप आराम से रहने लगेंगी।"

दादीजी विदेशियों से हमेशा इतने ज़ोर से बोलती थीं मानो वे बहरे हों। उन्होंने हमारे आने का उद्देश्य श्रीमती शिमरडा को बताया तो वह बोहेमी औरत बहुत प्रसन्न हुई। उसने रोटियों को हाथ में लिया और सूंघ-कर देखा और गुझियों को भी बड़ी उत्सुकता से उलट-पलटकर जांचा और देर तक 'बहुत बढ़िया, बहुत शुक्रिया' कहती हुई दादीजी के हाथ को झक-झोरती रही।

अब सबसे बड़ा लड़का अम्ब्रोज़—वे लोग उसे अम्ब्रोश कहते थे—खोह में से निकलकर बाहर आया और अपनी मां के पास खड़ा हो गया। उसकी पीठ चौड़ी, कद ठिगना और उम्र उन्नीस साल की थी; उसके चपटे सिर के बाल तराशे हुए और चेहरा भी चपटा और चौड़ा था। उसकी नन्ही-नन्ही भूरी-बादामी आंखों में श्रीमती शिमरडा जैसी चतुराई के साथ ही मक्कारी और सन्देह की झलक भी थी। आते ही वह हमारे लाए हुए खाद्य-पदार्थों को अपनी उन आंखों से जैसे निगलने लग गया था। बाद में मुझे पता चला कि पिछले तीन दिनों से पूरा परिवार मक्का की रोटियों और चरी की राब पर गुज़र कर रहा था।

छोटी लड़की खूबसूरत थी; परन्तु एण्टोनिया—वे लोग उसे आन्-तोनिया कहकर पुकारते थे—उससे भी ज़्यादा खूबसूरत थी। ट्रेन के कण्डक्टर ने उसकी आंखों के बारे में जो कुछ कहा था वह मैं भूला नहीं था। उन बड़ी-बड़ी प्रकाशपूर्ण आंखों में स्नेह की ऊष्मा भरी हुई थी, मानो जंगल की दो भूरी तलैयों में सूरज जगमगा रहा हो। उसकी त्वचा का रंग भी भूरा था और गाल गहरी लाली से दमक रहे थे। भूरे रंग के उसके घुंघराले बाल अस्त-व्यस्त हो रहे थे। छोटी बहिन जुल्का, जिसे वे लोग युल्का कहकर पुकारते थे, गोरी थी और स्वभाव से शान्त और आज्ञाकारिणी लगती थी।

उन दोनों लड़कियों की उपस्थिति में मैं मन ही मन असुविधा-सी अनुभव करता हुआ खड़ा था कि इतने में बखारघर की ओर से क्रायीक वहां आया। शिमरडा परिवार का दूसरा लड़का उसके साथ था। वह लड़का कुछ विचित्र और असामान्य था और इस बात का पता दूर से देखकर ही चल जाता था। वह मुंह से भोंडी आवाज़ें निकालता चला आ रहा था। समीप आकर उसने अपने दोनों हाथ उठाकर अंगुलियां दिखाईं जो पंजे के यहां से बत्तख के पांव की तरह मुड़कर टेढ़ी हो गई थीं। मुझे डरकर पीछे हटते देख वह पालतू मुर्गे की तरह खुशी से चिल्लाने लगा, "हू, हू-हू, हू-हू"। उसकी मां के तेवर चढ़ गए और वह घुड़ककर बोली, "मारेक !" फिर उसने बोहेमी भाषा में क्रायीक से जल्दी-जल्दी कुछ कहा।

"श्रीमती बरडन, यह चाहती हैं कि मैं आपसे बता दूं कि यह लड़का किसीको नुकसान नहीं पहुंचाता। जनम से ही यह ऐसा है। दूसरे अच्छे हैं। अम्ब्रोश किसानी काम में कुशल है।" यह कहकर उसने अम्ब्रोश की पीठ ठोकी। और वह लड़का इस तरह मुस्करा दिया मानो आशय समझ गया हो।

इतने में उन लड़कों का बाप भी गड़हे के अन्दर से बाहर आ गया। वह नंगे सिर था और उसके लम्बे लोहित केश कपाल से उलटकर पीछे की ओर इस तरह ओंछे हुए थे कि कान और सिर के पीछे पहुंचकर वे थोड़ा ऊपर की ओर को उठ गए थे। इससे उसकी शक्ल उन व्यक्ति-चित्रों जैसी लग रही थी जिन्हें मैंने वरजीनिया में देखा था। वह लम्बा और छरहरा था और उसके दुबले कन्धे कुछ-कुछ झुके हुए थे। हमारी ओर एक स्नेह-भरी दृष्टि डाल उसने दादीजी का हाथ अपने हाथ में लिया और उसपर झुक गया। उसके हाथ बहुत ही गोरे और सुडौल थे और जाने क्यों मुझे शान्त, स्थिर और दक्ष लग रहे थे। आखें उसकी उदास और भौंहों के नीचे गड़हों में धंसी हुई थीं। चेहरा ऊबड़-खाबड़ था और भस्मावृत-सा लगता था, मानो सारा तेज़ और हीर मर गया हो। उस बूढ़े का सब कुछ उसकी शालीनता के अनुरूप ही था। कपड़े वह साफ-सुथरे और सलीके से पहने हुए था। कोट के नीचे बुना हुआ भूरा वेस्टकोट था और कालर के बदले गहरे हरे रंग का रेशमी रूमाल गांठ मारकर लाल मूंगे की पिन से अटकाया हुआ था।

जब क्रायीक मिस्टर शिमरडा के वक्तव्य का अनुवाद कर रहा था, एण्टोनिया मेरे पास आ गई और उसने बड़े अनुरोध से अपना हाथ मेरी ओर बढ़ा दिया। दूसरे ही क्षण हम दोनों ढलवान के तीखे किनारे पर ऊपर की ओर दौड़े जा रहे थे और युल्का हमारे पीछे भागी आ रही थी।

ऊपर की समतल जगह में पहुंचकर जब मैंने पेड़ों की सुनहरी फुनगियों की ओर इशारा किया तो एण्टोनिया खिलखिला उठी और उसने मेरा हाथ ज़ोर से दबाया, मानो कहना चाह रही हो कि मेरे आने से उसे कितनी खुशी हुई है। वहां से हम ठेठ स्क्वाक्रीक तक दौड़ते चले गए और कगार के किनारे तक पहुंचकर ही रुके। अगर न रुकते तो शायद अगला कदम पेड़ों की फुनगियों पर होता। हमारा दम भर आया था और ज़ोर-ज़ोर से सांस लेते हुए हम कगार के किनारे खड़े नीचे खड्ड में उगे वृक्षों और झाड़ियों को देख रहे थे। वहां हवा इतनी तेज़ थी कि मुझे अपने हैट को हाथ से थामकर रखना पड़ा और लड़कियों के स्कर्ट फूलकर गुब्बारा हो गए। एण्टोनिया बहुत खुश लग रही थी। वह अपनी छोटी बहिन का हाथ पकड़े चिड़िया की भांति चटर-पटर एक ऐसी भाषा में बोले जा रही थी जो लगता था कि मेरी अपनी ज़बान की अपेक्षा बहुत तेज़ी से बोली जाती है। उसने जब मेरी ओर देखा तो जिन बहुत-सी बातों को वह कह नहीं सकती थी वे सब उसकी आंखों में लहक उठी थीं।

"नाम ? क्या नाम ?" उसने मेरा कन्धा छूकर पूछा। मैंने नाम बता दिया तो वह देर तक उसे दुहराती और युल्का से भी कहलाती रही। फिर जिस सुनहरे सागौन की फुनगी के पास हम खड़े थे, उसे दिखलाते हुए उसने पूछा, "क्या नाम ?"

उस लम्बी, लाल घास में एक नीड़-सा बनाकर हम बैठ गए। युल्का नन्हे खरगोश की तरह गुड़ी-मुड़ी होकर एक टिड्डे के साथ खेलने लगी। एण्टोनिया ने उंगली से आकाश दिखाया और फिर प्रश्नसूचक दृष्टि से मेरी ओर देखा। मैंने शब्द बता दिया, पर उसे सन्तोष नहीं हुआ और उसने मेरी आंखों की ओर इशारा किया। मैंने बता दिया, उसने दुहराया परन्तु 'आईज़' के बदले 'आइस' कहा। उसने आकाश की ओर इशारा किया, फिर मेरी आंखों की ओर, और तब फिर आकाश की ओर। वह इतनी तेज़ी से इशारे

कर रही थी कि मैं उलझन में पड़ गया और जान न पाया कि वह क्या चाहती है। वह घुटनों के बल बैठ गई और अपने हाथों को ऐंठने लगी। तब अपनी आंखों की ओर इशारा कर उसने सिर हिलाया और फिर मेरी आंखों की ओर और अन्त में आकाश की ओर इशारा किया। इस बीच वह अपना सिर ज़ोरों से हिलाती भी जा रही थी।

"ओह," मैं कह उठा, "नीला, नीला आकाश।"

ताली बजाकर वह बोली, "नीला आकाश, नीली आंखें।" लगता था जैसे उसे बड़ा मज़ा आ रहा हो। जितनी देर हम वहां हवा से दुबके बैठे रहे, उसने कोई बीसएक नये शब्द सीख लिए। सीखने के मामले में वह बड़ी तेज़ और उत्सुक थी। घास के अन्दर हम इतने गहरे दुबक गए थे कि सिर पर के नीले आकाश और सामनेवाले सुनहरे पेड़ के अतिरिक्त और कुछ भी देख नहीं पाते थे। सब कुछ बहुत ही अच्छा लग रहा था। नये शब्दों को कई बार दुहरा लेने के बाद एण्टोनिया ने मुझे चांदी की वह नक्काशीदार अंगूठी देनी चाही जिसे वह अपनी बीचवाली अंगुली में पहने हुए थी। वह लेने के लिए बराबर आग्रह और अनुरोध करती रही, परन्तु मैंने उसे बुरी तरह झिड़क दिया। एक तो मैं अंगूठी लेना नहीं चाहता था और दूसरे उसका एक अपरिचित लड़के को इस तरह अंगूठी देने का आग्रह मुझे अच्छा भी नहीं लग रहा था। मेरी दृष्टि में यह उसका अविवेक और अदूरदर्शिता ही थी। यदि इन लोगों के यही लक्षण हैं तो क्रायीक इन्हें लूटेगा क्यों नहीं !

अंगूठी को लेकर अभी हमारा विवाद चल ही रहा था कि मैंने किसीको विषादपूर्ण स्वर में पुकारते सुना, "आन्-तोनिया, आन्-तोनिया !" वह तुरत खरगोश की तरह उछलकर खड़ी हो गई। "तातीनेक, तातीनेक !" कहकर वह चिल्लाई और अपने वृद्ध पिता से मिलने के लिए दौड़ी गई। बूढ़ा हमारी ओर ही आ रहा था। एण्टोनिया तुरत अपने पिता के पास पहुंच गई और उसने उनका हाथ अपने हाथ में लेकर चूम लिया। जब मैं उनके पास पहुंचा तो बूढ़े ने अपना हाथ मेरे कन्धे पर रख दिया और देर तक मेरी आंखों में गौर से देखता रहा। मैं थोड़ा सकपका गया, क्योंकि अभी तक मेरे किसी भी बुज़ुर्ग ने मुझे इस तरह नहीं देखा था।

हम मिस्टर शिमरडा के साथ उनके घरौंदे पर लौट आए। दादीजी

वहां मेरा इन्तज़ार कर रही थीं। मेरे गाड़ी में सवार होने से पहले मिस्टर शिमरडा ने अपनी जेब में से एक किताब निकालकर खोली और उसका एक पृष्ठ मुझे दिखलाया : उस पृष्ठ पर अंग्रेज़ी और बोहेमी वर्ण-मालाओं का एक-एक अक्षर बना हुआ था। वह पुस्तक उन्होंने दादीजी के हाथ में दे दी और बड़ी ही अनुनयपूर्ण वाणी में बोले, "प-ढ़ा-एं-गे, मेरी आन्तोनिया को प-ढ़ा-एं-गे !" उनकी उस अनुनयपूर्ण वाणी को मैं कभी भूलूंगा नहीं।

४

उसी रविवार के दिन तीसरे पहर मैंने ओटो की निगरानी में अपने टट्टू पर पहली बार लम्बी सवारी की। उसके बाद मैं ड्यूड पर सवार होकर सप्ताह में दो बार डाकखाने जाने लगा। डाकखाना हमारे घर से छः मील पूरब में था। अपने पड़ोसियों के यहां सन्देश लाने-ले जाने का काम भी मैं ही करने लगा। इससे आदमियों के समय में काफी बचत हो गई। पहले कुछ मांगना- मंगवाना या कहना-कहलाना होता तो फुश खेती-बाड़ी का काम निपटाने के बाद पड़ोसियों के यहां जाया करता था। अब यह काम मैं करने लगा। यदि मदरसे में प्रार्थना रखी जाती तो लोगों को उसकी सूचना देने या पड़ोसियों के यहां से कुछ लाना होता तो भी मैं ही जाता।

शरद के वे शानदार दिन आज भी मुझे ठीक वैसे ही याद हैं। इतने बरसों के बाद भी उनकी याद धुंधली नहीं हुई है। नई धरती का अनन्त विस्तार मेरे सामने होता था, और उन दिनों आज की तरह बागुड़ें नहीं हुआ करती थीं, इसलिए घास के ऊंचे मैदान में, जिधर मेरा जी चाहता, मैं अपने टट्टू पर सवार निकल जाया करता था। भटक जाने का कोई डर मुझे नहीं था, क्योंकि निश्चयपूर्वक जानता था कि किसी भी दिशा में क्यों न जाऊं, टट्टू मुझे घर लौटा ही लाएगा। कभी-कभी उस सड़क पर भी निकल जाया करता था जिसके दोनों ओर सूरजमुखी की कतारें उगी हुई थीं। फुश ने बताया था कि इस प्रदेश में सूरजमुखी का पौधा पहले-पहल

मारमोन्स लोग लाए थे। सताए जाने पर उन्हें मिसौरी छोड़ने के लिए विवश होना पड़ा था। जहां स्वतन्त्रता से अपने धर्म का पालन कर सकें ऐसी जगह की खोज में वे इस बियाबान में निकल आए थे। तब उटाह के मैदान से गुज़रनेवाला उनका पहला दस्ता अपने रास्ते के दोनों ओर सूरजमुखी के फूल बिखेरता गया था। अगली गर्मियों में जब उनके बीवी-बच्चों के काफिले गाड़ियों में लदकर इधर आए तो सूरजमुखी के पौधों ने ही उन्हें रास्ता दिखाया था। मैं जानता हूं कि वनस्पतिशास्त्री फुश की इस कहानी को नहीं मानते; उनके कथनानुसार सूरजमुखी का पौधा इन्हीं मैदानों की प्राकृतिक उपज है। लेकिन फिर भी फुश की यह कहानी मेरे मन में बस गई और उस दिन से मैं सूरजमुखी की कतारोंवाली सड़क को स्वाधीनता का पथ मानता आया हूं।

मक्का के पीले खेतों में, मेड़ों के पासवाली नम जगहों की तलाश में भटकना भी मुझे बहुत अच्छा लगता था। इन नमीवाली जगहों में मक्का के डण्ठल प्रायः तांबे के रंग के हो जाया करते थे और भूरे रंग की पतली पत्तियां छल्ले की तरह लिपटकर तने के फूले हुए हिस्सों के पास सिमट जाती थीं। कभी मैं दक्षिण दिशा की ओर अपने जर्मन पड़ोसियों से मिलने और उनके मालती (कटालपा) कुंज को देखने के लिए चला जाया करता था। और कभी मैं देवदारु के उस विशाल वृक्ष को देखने चला जाता जो गहरे खड्ड में उगा हुआ था और जिसकी टहनियों में बाज़ पक्षी का घोंसला था। इस प्रदेश में पेड़ इतने कम थे और उगने तथा बढ़ने के लिए उन्हें इतना कड़ा संघर्ष करना पड़ता था कि हमें सदैव उनकी चिन्ता लगी रहती थी और हम उन्हें इस तरह देखने के लिए जाया करते थे मानो व्यक्तियों से मिलने जा रहे हों। चटियल होने के कारण उस पिंगल प्रदेश में पेड़-पौधों का हमारे मन में इतना अधिक महत्त्व हो गया था।

कभी मैं उत्तर में प्रेरी-कुत्तों की मांद की ओर चला जाता और वहां भूगर्भवासी भूरे उल्लुओं को सांझ-वेला में ज़मीन के अन्दर बने बिलों में कुत्तों के साथ प्रवेश करते हुए देखा करता था। एण्टोनिया शिमरडा भी प्रायः मेरे साथ चली आती थी। इन भूगर्भवासी पक्षियों के रंग-ढंग देखकर हमें बहुत आश्चर्य होता था। यहां हमें बहुत सतर्क रहना पड़ता, क्योंकि अक्सर

सांप इधर-उधर दुबके रहते थे। ये सांप कुत्ते और उल्लुओं के बिलों में भोजन की तलाश में आते थे। ये दुष्ट उनके बिलों पर बड़ी आसानी से कब्जा कर लेते और कुत्तों के पिल्लों तथा उल्लू के अण्डों को चट कर जाया करते थे। बेचारे कुत्ते और उल्लू उनका कुछ भी नहीं बिगाड़ पाते थे। हमें उल्लुओं पर बड़ी दया आती और उनके लिए अफसोस भी होता था। सूर्यास्त के समय उनका उड़ते हुए आना और ज़मीन में गायब हो जाना देखकर मन दु:खित हो जाया करता था। परन्तु साथ ही पंखवाले जीवों को इस तरह जीवन-यापन करते देख हम उन्हें अध:पतित भी समझते थे। कुत्तों की यह बस्ती किसी भी तालाब अथवा पहाड़ी सोते से काफी दूर थी। ओटो फुश बताता था कि उसने रेगिस्तान में ऐसी कुत्ता-बस्तियां देखी हैं जिनके आस-पास पचास-पचास मील तक पानी नहीं होता; लेकिन साथ ही उसका यह भी कहना था कि वहां ज़मीन के अन्दर पानी होता है और यहां भी दो-ढाई सौ फुट नीचे पानी भरा है और कुछ बिल इतने गहरे हैं कि कुत्ते उनकी राह नीचे तक जाकर पानी पी आते हैं। एण्टोनिया उसकी इस राय से सहमत नहीं थी। उसका खयाल था कि कुत्ते खरगोशों की तरह सवेरे-सवेरे ओस चाटकर अपनी प्यास बुझा लिया करते हैं।

हर मामले में एण्टोनिया की अपनी राय थी और वह उसे अब ज़ाहिर भी करने लगी थी। लगभग रोज़ वह दौड़ती हुई घास के मैदान को पार कर मुझसे अपना पाठ पढ़ने के लिए आया करती थी। श्रीमती शिमरडा को नागवार तो लगता, लेकिन साथ ही वे अपने परिवार के किसी एक जन के अंग्रेज़ी सीखने के महत्त्व को भी स्वीकार करती थीं। पढ़ाई खत्म हो जाने के बाद हम अक्सर बगीची के पीछेवाले तरबूज के खेत में पहुंच जाया करते थे। मैं एक पुरानी छुरी से तरबूजों को चीरता और अंगुलियों से रस चुआते हुए हम उनका गूदा खाने लगते। क्रिस्टमस के सफेद तरबूजों को हम हाथ नहीं लगाते थे; बस, उन्हें देख-देखकर विस्मित हुआ करते। उन्हें बाद में, कड़ा पाला शुरू होने पर चुनकर सर्दियों में खाने के लिए रख लिया जाता था। लम्बी समुद्री यात्रा में शिमरडा परिवार फलों के लिए बुरी तरह तरस गया था। दोनों लड़कियां मुट्ठी-भर चिरमोटियों के लिए मक्का के खेतों के किनारे-किनारे मीलों लम्बी दौड़ लगा आती थीं।

एण्टोनिया को रसोईघर में दादीजी का हाथ बंटाना, और उनसे खाना पकाने तथा घर चलाने की शिक्षा लेना भी खूब सुहाता था। वह घण्टों उनके पास खड़ी उनके हर काम को बारीकी से देखा करती थी। हम यह मान लेने को तैयार थे कि श्रीमती शिमरडा अपने देश में एक बहुत ही प्रबन्ध-कुशल गृहिणी रही होंगी; लेकिन यहां नई परिस्थितियों में वे ठीक से काम नहीं कर पा रही थीं। और यह तो स्वीकार करना ही होगा कि यहां की परिस्थितियां एकदम प्रतिकूल थीं।

जिस तरह की खट्टी और राख जैसी भूरी रोटियां वे अपने परिवार को खिलाती थीं, उन्हें देखकर मेरे तो रोंगटे खड़े हो जाते थे। आटा वे पुराने टीन के एक नाप में मांडती थीं, जिससे क्रायीक बखारघर में नाज जोखा करता था। रोटी पकाने के लिए आटे की लोई ले लेने के बाद भी उस बरतन के किनारों पर बहुत-सा गीला आटा चिपका रह जाता था। साफ करने के बदले वे उस बरतन को वैसा ही अंगीठी के पीछेवाली अलमारी में रख दिया करती थीं। उस आटे में फफूंद पड़ जाती और जब दुबारा रोटी पकानी होती तो खमीर के बदले वे इसी खट्टी-बासी फफूंद को ताज़े आटे में मिला देती थीं।

आरम्भ के कुछ महीने तो शिमरडा परिवार का कोई सदस्य भूले से भी शहर नहीं गया। क्रायीक ने यह डर उनके मन में बिठा दिया था कि ब्लैकहॉक में पांव रखते ही जादू-मन्तर के ज़ोर से उनका सारा पैसा गायब कर दिया जाएगा। क्रायीक से वे नफरत करते थे, परन्तु फिर भी उसका दामन नहीं छोड़ते थे, क्योंकि अकेला वही आदमी था जिससे वे बोल-बतिया सकते थे और जानकारी तथा सूचनाएं प्राप्त कर सकते थे। वह मिस्टर शिमरडा और उनके दोनों लड़कों तथा बैलों के साथ ज़मीन के अन्दर गड़हा खोदकर बनाए हुए बखारघर में सोता था। सांपों को लेकर जो दशा प्रेरी-कुत्तों और उल्लुओं की थी ठीक वही क्रायीक के सम्बन्ध में शिमरडों की भी थी। वे उसे अपने घरौंदे में रखे हुए थे और खाना भी खिलाते थे, क्योंकि उससे पीछा छुड़ाने का कोई उपाय उन्हें मालूम नहीं था।

५

हमारे बोहेमी पड़ोसियों की हालत अच्छी नहीं थी और इस बात को हम भी जानते थे, परन्तु उन दोनों खुशमिज़ाज लड़कियों ने कभी शिकायत नहीं की। घर के कष्टों को भुलाने के लिए वे अक्सर मेरे पास दौड़ी चली आतीं और हम प्रेरी में जाकर खरगोशों को भगाने तथा बटेरों को उड़ाने में लग जाया करते थे।

मुझे एण्टोनिया की उस दिन की उमंग की आज भी याद है जब उसने तीसरे पहर के समय हमारे रसोईघर में आकर कहा था, 'उत्तर में रहने-वाले जो रूसी हैं न, उनसे मेरे बापू की मुलाकात हो गई। कल रात वे मुझे भी अपने साथ ले गए थे। उनकी बहुत-सी बातें मेरी समझ में आ गईं। अच्छे आदमी हैं वे, श्रीमती बरडन ! एक मोटा है, गोलगप्पा और हर घड़ी हंसता रहता है। उसके साथ दूसरे लोग भी हंसे। इधर के मुलुक में आने के बाद मैंने अपने बापू को कल पहली बार हंसते देखा। कित्ती मज़े की बात है !'

तब मैंने उससे पूछा कि क्या तुम्हारा मतलब कुत्तों की उस बड़ी बस्ती के पास रहनेवाले उन दो रूसियों से तो नहीं है ? जब भी मैं टट्टू पर सवार होकर उधर गया हूं, हर बार उनसे मिलने के लिए मेरा मन ललचाता रहा है; लेकिन हिम्मत नहीं पड़ी। उनमें से एक रूसी बड़ा ही डरावना लगता था और उसे दूर से ही देखकर मेरे होश खता हो जाते थे। रूस को मैं दुनिया के सब देशों से, यहां तक कि चीन से भी दूर, ठेठ उत्तरी ध्रुव के पास का देश समझता था। अपने-अपने देशों से उखड़कर जितने भी विदेशी वहां पहले-पहल बसने के लिए आए उनमें ये दोनों रूसी सभी से विचित्र और एकदम अलग-अलग रहनेवाले थे। उनके नामों के अन्तिम हिस्सों का उच्चारण न कर पाने से लोग-बाग उन्हें सिर्फ पवेल और पीटर कहकर पुकारते थे। लोगों से वे सिर्फ इशारों में बातें करते थे और शिमरडों के आने तक उनका कोई दोस्त भी नहीं था। क्रायीक थोड़ा-बहुत उनकी भाषा को समझ लेता था, लेकिन किसी व्यवसाय में उससे ठगे जाने

के बाद वे उससे दूर रहने लगे थे। लमटंगे पवेल के बारे में लोगों का यह खयाल था कि वह अराजकतावादी है; वह खुद तो अपनी राय ज़ाहिर कर नहीं सकता था, इसलिए लोगों ने उसके ऊटपटांग और डरावने इशारों, सहसा उत्तेजित हो उठने की आदत और दुर्विनीत तौर-तरीकों को देखकर शायद यह राय बना ली थी। कभी वह ज़रूर ताकतवर और तगड़ा आदमी रहा होगा, लेकिन अब तो केवल हड्डियों का ढांचा रह गया था। हर जोड़ पर नुकीली हड्डियां निकल आई थीं और सारा मांस गल गया था। गाल गड़्हों में धंस गए थे। सांस खर्राने लगी थी और हर समय खांसा करता था।

उसका साथी पीटर बिलकुल ही दूसरी तरह का था—ठिगना, टेढ़ी टांगोंवाला और एकदम मोटा मक्खन का गोला। सड़क पर जब भी किसीसे मिलता, उसकी बाछें खिल जातीं और स्त्री हो या पुरुष, सभीको टोपी उतारकर मुस्कराते हुए सलाम करने लगता था। दूर से, अपनी गाड़ी में बैठा, वह बूढ़ा लगता था। उसके सिर और दाढ़ी के बाल पटसन की पीताभा लिए हुए थे, जो धूप में सफेद मालूम पड़ते थे। वे इतने घने और घुंघराले थे मानो तूमी हुई ऊन के गुच्छे चिपका दिए हों। इस जटाजूट में उसका बुच्ची नाकवाला गुलाबी चेहरा पत्तियों के झुरमुट में तरबूज की तरह लगता था। लोग-बाग उसे आम तौर पर 'घुंघराला पीटर' या 'रूशी पीटर' कहते थे।

दोनों रूसी खेती-बाड़ी के काम में कुशल थे और गर्मियों में साथ काम करते थे। मैंने अपने पड़ोसियों को हंस-हंसकर यह कहते सुना था कि रात होते ही पीटर अपनी गाय को दुहने के लिए घर लौट जाता है जबकि गाय पालने और उसे दुहने की झंझट से बचने के लिए दूसरे कुंआरे डिब्बों के दूध से काम चला लिया करते हैं। कभी-कभार पीटर मदरसे में प्रार्थना करने के लिए भी चला आता था। गिरजाघर का काम भी हम मदरसे से ही लेते थे। इसकी दीवालें और छप्पर गारा-मढ़े घास-फूंस के थे। पीटर को पहले-पहल मैंने वहीं देखा था। वह दरवाज़े के पास एक नीची बेंच पर, प्लश की टोपी को हाथों में लिए, अपने नंगे पांवों के लिए माफी मांगता-सा और उन्हें बैठक के नीचे खोंसे हुए बैठा था।

रूसियों से भेंट हो जाने के बाद मिस्टर शिमरडा प्रायः प्रतिदिन सांझ को उनके यहां जाने लगे। कभी-कभार वे एण्टोनिया को भी अपने साथ ले जाते थे। यह बात उसीने मुझे बताई थी कि वे रूस के जिस हिस्से के रहनेवाले हैं वहां की भाषा बोहेमी से मिलती-जुलती है; और यदि मैं उनसे मिलने के लिए जाना चाहूं तो वह हम लोगों के बीच दुभाषिये का काम कर देगी। तब, शिशिर का पाला शुरू होने से पहले, एक दिन तीसरे पहर हम दोनों टट्टू पर सवार होकर उनसे मिलने के लिए गए।

दोनों रूसी घासवाले ढाल पर लट्ठों के एक साफ-सुथरे मकान में रहते थे। उनके दरवाज़े से लगा हुआ चर्खीवाला एक कुआं था। ढाल पर चढ़ते हुए हमें तरबूज का एक बड़ा-सा खेत मिला, और एक बगीची, जिसमें कुम्हड़ा और पीली ककड़ियां उगी हुई थीं। तरबूज के खेत का चक्कर लगाकर जब हम ऊपर पहुंचे तो पीटर अपने रसोईघर के पिछवाड़े एक नांद पर झुका कपड़े धो रहा था। वह अपने काम में इतना तल्लीन था कि जब तक हम समीप नहीं पहुंच गए उसे हमारे आने का पता भी नहीं चला। कपड़ा फेंटने में उसका सारा शरीर ऊपर-नीचे हिल रहा था और पीछे की तरफ से उसका झबराला सिर और टेढ़ी टांगें अजब लग रही थीं—देखकर हंसी आ जाती थी। जब वह हमारा अभिवादन करने के लिए सीधा खड़ा हुआ तो नाक पर से पसीने की कई बूंदें उसकी घुंघराली दाढ़ी पर चू पड़ीं। उसने फुर्ती से अपने हाथ पोंछ लिए और लगा जैसे धुलाई से छुटकारा पाकर उसे खुशी हुई। वह हमें अपनी मुर्गियां और फिर पहाड़ी पर चर रही अपनी गाय दिखाने के लिए ले गया। एण्टोनिया को उसने बताया कि उसके अपने मुल्क में तो केवल अमीर लोग ही गाय रख सकते हैं, परन्तु यहां तो जो भी पाल-पोस सके वह हर आदमी गाय रख सकता है। उसने यह भी बताया कि गाय का दूध पवेल के लिए बहुत मुफीद है, जो अक्सर बीमार हो जाया करता है; और वह खट्टी मलाई को लकड़ी के चम्मच से मथकर मक्खन भी बना लिया करता है। पीटर को अपनी गाय से बहुत स्नेह था। उसने प्यार से उसकी पीठ थपथपाई और उसके खूंटे को एक जगह से उखाड़कर नई जगह में गाड़ते हुए वह उससे रूसी भाषा में जाने क्या कहता रहा।

हमें बगीची दिखाने के बाद पीटर ने ढेर सारे तरबूज इकपहिया रेड़ी में लादे और उन्हें ठेलकर ऊपर ले आया। पवेल घर नहीं था। वह कहीं कुआं खुदवाने के लिए गया हुआ था। दो कुंआरों का साथ रहने के लिए वह घर मुझे काफी अच्छा और आरामदेह लगा। रसोईघर के अलावा सोने का एक कमरा भी था, जिसमें दीवाल के सहारे दो व्यक्तियों के सोने लायक काफी चौड़ा एक बिस्तरा लगा था और उसपर नीली जिंगाम की चादरें और तकिये पड़े थे। खिड़कीवाला एक कोठार भी था, जिसमें उन्होंने अपनी बन्दूकें, काठियां, औज़ार, पुराने कोट और बूट जूते रख छोड़े थे। उस दिन फर्श पर बगीची की उपज मक्का, लोभिया, पीली ककड़ियां आदि सर्दियों के लिए सूख रही थीं। घर के दरवाज़ों और खिड़कियों पर न तो पर्दे थे और न झिलमिलियां, और सभी खुले थे, इसलिए धूप के साथ-साथ मक्खियां भी अन्दर घुसी आ रही थीं।

पीटर ने मोमजामा-मढ़ी मेज़ पर तरबूजों को एक कतार में रख दिया और उन्हें एक बड़े-से चाकू से काटता चला गया। तरबूज इतने पक गए थे कि चाकू का फल छूते ही एक मधुर ध्वनि के साथ फटकर दो टुकड़े हो जाते थे। उसने हमें तरबूज खाने के लिए छुरियां दीं, परन्तु प्लेटें नहीं दीं और थोड़ी ही देर में मेज़ पर रस और बीजों की रेलमपेल मच गई। अकेले पीटर ने जितने तरबूज खाए उतने किसी एक आदमी को खाते मैंने पहले कभी नहीं देखा था। उसने यह कहकर हमारी शंकाओं का समाधान कर दिया कि तरबूज सेहत के लिए बहुत मुफीद होता है और दवाई से भी ज़्यादा फायदा पहुंचाता है। उसने यह भी कहा कि इस मौसम में उसके देशवासी तो तरबूज खाकर ही रहते हैं। वह बड़ा ही खुशमिज़ाज और अतिथियों का सत्कार करनेवाला व्यक्ति था। एक बार एण्टोनिया की ओर देखते-देखते उसकी आह निकल गई और बोला कि यदि वह अपने ही देश में रहा होता तो आज उसके भी एक खूबसूरत बेटी होती, जो खाना पकाकर खिलाती और घर की देखभाल करती। उसने हमें यह भी बताया कि एक 'बड़ी मुसीबत' के कारण उसे अपना देश छोड़ना पड़ा था।

हमें उठते देख पीटर परेशान हो गया और हमारा मनोविनोद करने के लिए किसी चीज़ की तलाश में इधर-उधर देखने लगा। फिर वह दौड़कर

कोठार में गया और एक रंगी-फुंगी हारमोनिका उठा लाया। तब एक बेंच पर अपनी मोटी टांगों को खूब फैलाकर बैठ गया और पूरे धूम-धड़ाके से बाजा बजाने लगा। जो भी धुनें उसने बजाईं वे या तो बहुत उल्लासपूर्ण या बहुत ही विषादपूर्ण थीं; और कइयों के साथ तो वह अपना स्वर मिलाकर गाया भी।

जब हम चलने लगे तो उसने श्रीमती शिमरडा के लिए एक थैले में पकी हुई ककड़ियां रख दीं और उन्हें पकाने के लिए चरबी का बरतन पूरा भरकर दूध भी थमा दिया। ककड़ियों को पकाने की बात मैंने आज दिन तक सुनी नहीं थी, पर एण्टोनिया ने बताया कि दूध में वे पकाई जाती हैं और खूब स्वादिष्ट लगती हैं। वहां से हम घर तक पैदल आए, क्योंकि टट्टू पर बैठते तो सारा दूध छलक जाता।

६

एक दिन तीसरे पहर के समय हम घासवाले उस किनारे पर, जहां कबरा बिज्जू रहता था, धूप में बैठे अपना पाठ पढ़ रहे थे। काफी साफ और मुलायम पीली धूप थी, लेकिन साथ ही हवा में आनेवाली सर्दियों की खुनकी भी भरी हुई थी। उस दिन सवेरे घोड़ों के पानी पीनेवाले पोखरे की सतह पर मैंने बर्फ जमी देखी थी, और जब बगीची में गए तो लाल बेरियोंवाली लम्बी शतावरी हरियाली के लोंदे के रूप में ज़मीन पर पड़ी थी।

टोनी के पांव में जूते नहीं थे और वह अपने सूती कपड़ोंवाले लिबास में बुरी तरह कांप रही थी। जब हम धूप-तपी गरम धरती पर बैठ गए और सूरज की तेज़ किरणें हम पर सीधी पड़ने लगीं तब कहीं जाकर उसकी ठण्ड उड़ी। अब वह काफी अच्छी अंग्रेज़ी बोलने और हर विषय पर मुझसे बातें करने लगी थी। उस दिन उसने मुझे बिज्जुओं के बारे में बहुत-सी बातें बताईं। वह सुनाती रही कि उसके देश में बिज्जू की कितनी खातिर-

तवज्जह होती है और किस तरह छोटे पांवोंवाले एक खास किस्म के कुत्ते के द्वारा उसका शिकार किया जाता है। वे कुत्ते बिज्जू के बिल में घुस जाते हैं और तब दोनों ज़मीन के अन्दर बुरी तरह लड़ते हैं और अन्त में बिज्जू मारा जाता है। कुत्ते की चिल्ल-पों और भूंकना बाहर तक सुनाई पड़ता है। अन्त में लहू-लुहान विजयी कुत्ता बिल में से बाहर निकलता है और उसका मालिक उसे प्यार से थपककर शाबाशी और इनाम देता है। उसने एक ऐसे कुत्ते के बारे में भी बताया जिसके गले के पट्टे पर उतने ही तारे अंकित थे जितने बिज्जू उसने मारे थे।

उस दिन खरहों की उछल-कूद भी न जाने क्यों बहुत अधिक बढ़ गई थी। हमारे इर्द-गिर्द वे उछलते हुए दिखाई देते और तब तीर की तरह ढाल में उतर जाते, मानो कोई खेल खेल रहे हों। लेकिन घास में धमा-चौकड़ी मचाए रखनेवाले नन्हे-नन्हे कीड़े सबके सब शान्त थे। सिर्फ एक छोटा-सा पीले और हलके हरे रंग का कीड़ा भैंसा घास में फुदक रहा था। एक बार उसने उछलकर नीलपर्णी के गुच्छे में जाने की कोशिश की, पर सफल न हो सका। वह गिर पड़ा, उसकी ऐंटेना (श्रृंगिकाएं) कांपने लगीं और अपनी लम्बी टांगों में सिर डालकर वह इस तरह बैठ गया मानो किसी-के हाथों अपने मारे जाने की प्रतीक्षा कर रहा हो। टोनी ने उसे उठाकर अपने दोनों हाथों के गरम सम्पुट में ले लिया और बड़े ही लाड़-भरे मधुर स्वर में, बोहेमी भाषा में उससे बातें करने लगी। थोड़ी देर बाद वह कीड़ा अपने धीमे, फटे और बेसुरे स्वर में गाने लगा। टोनी अपने हाथों को कान के पास ले जाकर सुनती और हंसती रही, लेकिन दूसरे ही क्षण सहसा उसकी आंखों में आंसू भर आए। उसे अपने गांव की वह बुढ़िया भिखारिन याद हो आई थी, जो जंगल से जड़ी-बूटियां लाकर बेचा करती थी। यदि उसे घर के अन्दर अंगीठी के पास बिठा दिया जाता तो वह भी इसी तरह फटे स्वर में गा-गाकर बच्चों को पुराने गीत सुनाने लगती थी। 'हाटा बुढ़िया' उसका नाम था और गांव के बच्चे उसे इतना चाहते थे कि अपनी मिठाइयां और केक उसके लिए बचाकर रख लिया करते थे।

ढाल के सामनेवाले किनारे पर जब छाया उतरने लगी तो हम घर जाने के लिए उठ खड़े हुए, क्योंकि उन दिनों सूरज ढलते ही ज़ोर की ठण्ड शुरू

हो जाती थी। और फिर एण्टोनिया के पास मोटे कपड़े भी नहीं थे; वह बहुत ही महीन पोशाक पहने हुए थी। लेकिन अब सवाल यह था कि जिस कीड़े को मौत के मुंह से उबारा है उसका क्या किया जाए? मैंने उसे अपनी जेब में रखना चाहा, लेकिन टोनी इसके लिए राज़ी नहीं हुई। उसने उस हरे कीड़े को बड़ी सावधानी के साथ अपने सिर के बालों में रखा और बड़े रूमाल को हलके से केश-गुच्छों पर बांध लिया। मैंने कहा कि चलो, तुम्हें स्क्वा-क्रीक तक पहुंचा दूं और फिर वहां से मुड़कर अपने घर दौड़ जाऊंगा। ढलती तिपहरिया के उस ऐन्द्रजालिक आलोक में हम परम प्रसन्न और आराम से मटरगश्ती करते हुए चल पड़े।

हिमपात की उस ऋतु में हरएक दिन का तीसरा पहर एक जैसा और बिलकुल ही अपरिवर्तनशील होता था। लेकिन जाने क्यों वे मुझे विषाद-विजड़ित कर देते थे। जहां तक निगाह जाती मीलों फैली ताम्रवर्णी घास डूबते सूरज की लाली में और भी लाल और आग की लपट जैसी मालूम पड़ती थी। मक्का के खेत तपाए सोने जैसे हो जाते थे और लम्बी छायाओं-वाली घास की गंजियां गुलाबी आभा से मंडित। प्रेरी का सारा मैदान ऐसा लगता था मानो कोई झाड़ी आग से लहक उठी हो। दिवस के अवसान के इस क्षण में सदा-सर्वदा विजयोल्लास जैसा, विजय की पूर्णाहुति जैसा किसी वीर के वीरगति पाने जैसा कुछ होता है—मानो अनेकानेक योद्धा अपनी जवानी में ही गौरवपूर्ण ढंग से वीरगति को प्राप्त हुए हों। परिवर्तन इतनी शीघ्रता से होता है मानो दिन को एकदम समेट लिया गया हो।

प्रकृति के उस महत्-विपुल वैभव तले मैंने और एण्टोनिया ने कितनी सांझें प्रेरी के मैदान में साथ-साथ चलते हुए बिताई हैं, उनका कोई हिसाब नहीं। या तो उस ललछौंही घास पर दो लम्बी छायाएं हमारे आगे-आगे चलती रही हैं या दो काले धब्बे हमारा अनुसरण करते रहे हैं।

हम काफी देर से चुप थे; और प्रेरी के सुदूर छोर पर सूरज की कोर धीरे-धीरे धरती में धंसती जा रही थी। तभी हमने घास के एक ऊंचे टुकड़े पर बन्दूक कंधे पर रखे एक मानवाकृति को चलते हुए देखा। वह बहुत धीरे-धीरे चल रही थी, बल्कि कहना चाहिए कि निष्प्रयोजन अपनी टांगों को घसीटे जा रही थी। हम दोनों उसके पास पहुंचने के लिए दौड़ पड़े।

"मेरे बापू बीमार रहने लगे हैं।" दौड़ के कारण टोना ने हांफते हुए कहा, "उनकी सेहत अच्छी नहीं है जिम।"

जैसे ही हम समीप पहुंचने को हुए टोनी ने चिल्लाकर पुकारा और तब मिस्टर शिमरडा ने सिर उठाकर हमारी ओर देखा। टोनी दौड़कर पास पहुंच गई, उनका हाथ पकड़ लिया और उसे अपने गाल से लगा लिया। सारे परिवार में अकेली वही थी जो अपने पिता को जड़ता से जगाकर सजीवन कर दिया करती थी। उन्होंने अपनी कमरपेटी से लटकता शिकारी झोला खोलकर हमें तीन खरगोश दिखाए, जिनका उन्होंने बन्दूक से शिकार किया था। फिर उन्होंने एण्टोनिया की ओर देखते हुए एक मरी-सी मुस्कराहट के साथ बोहेमी भाषा में कुछ कहा।

टोनी खुशी से उछल पड़ी और उसने मेरे लिए अनुवाद किया, "मेरे तातीनेक खरहों के चमड़े से मेरे लिए छोटी-सी एक टोपी बनाएंगे, सर्दियों में पहनने के लिए छोटी-सी एक टोपी। खाने के लिए गोश्त, टोपी के लिए चमड़ा।" उसने अंगुलियों पर गिनाते हुए कहा।

सहसा पिता ने उसके सिर पर हाथ रखा तो उसने बड़ी फुर्ती से उनकी कलाई पकड़कर धीरे से परे हटा दी और अपनी भाषा में जल्दी-जल्दी कुछ कहा। उसने 'हाटा बुढ़िया' का नाम भी लिया। तब पिता ने उसके सिर पर बंधा रूमाल खोल डाला और अपनी अंगुलियों से उसके बालों को इधर-उधर कर उस नन्हे हरे कीड़े की ओर देखने लगे। जब वह मन्द स्वर में चीं-चीं करने लगा तो वे ध्यानमग्न होकर इस तरह सुनने लगे मानो कोई मधुर संगीत हो।

बन्दूक उन्होंने नीचे गिरा दी थी। मैंने उसे उठा लिया। वह उनके देश की बनी छोटी, भारी और विचित्र प्रकार की बन्दूक थी। उसके घोड़े की जगह हिरन का सिर बना था। मुझे बन्दूक का निरीक्षण करते देख उन्होंने अपनी निगाहें मेरी ओर घुमा दीं। वे हमेशा मुझे ऐसी दृष्टि से देखा करते थे मानो मैं किसी गहरे कुएं की पेंदी में पड़ा हूं और वे ऊपर जगत पर खड़े देख रहे हों। उन्होंने स्नेह-भरे गम्भीर स्वर में कुछ कहा। एण्टोनिया ने अनुवाद करके सुनाया :

"तातीनेक कहते हैं कि जब तुम बड़े हो जाओगे तो वे अपनी यह बन्दूक

तुम्हें दे देंगे। बहुत बढ़िया बोहेमी बन्दूक है। बोहेमिया के एक बहुत बड़े मालदार के पास यह बन्दूक थी। वैसा मालदार तुम्हारे यहां तो कोई भी नहीं है। उसके पास बहुत-से खेत, बहुत-से जंगल और कई बड़े-बड़े मकान थे। बापू ने उसकी शादी में बाजा बजाया था। उसने खुश होकर इन्हें यह बन्दूक इनाम दी थी। जब तुम बड़े हो जाओगे तो बापू यह बन्दूक तुम्हें दे देंगे।"

मैंने यह सोचकर छुटकारे की सांस ली कि बन्दूक मुझे आज नहीं भविष्य में मिलनेवाली थी। शिमरडों जैसे लोग मैंने आज तक नहीं देखे थे। वे अपनी हर चीज़ सदा दूसरों को देने के लिए तैयार रहते थे। एण्टोनिया की माताजी भी मुझे हमेशा कुछ न कुछ देती रहती थीं, यद्यपि उनका देना स्वार्थ-प्रेरित होता था और वे बदले में काफी कुछ पाने की आशा से ही देती थीं। हम तीनों वहां देर तक चुप खड़े रहे और एण्टोनिया के बालों में आराम से बैठा कीड़ा मन्द स्वर में चिंचियाता रहा। एण्टोनिया के पिताजी के चेहरे पर ऐसी उदास मुस्कराहट और विषण्णता थी जो सदा के लिए मेरे मन पर अंकित हो गई। धीरे-धीरे पश्चिमाकाश में सूरज डूब गया और ठंड एकदम बढ़ गई और हवा में मिट्टी और सूखी घास की मिली-जुली गन्ध भर गई। एण्टोनिया और उसके पिताजी एक-दूसरे का हाथ पकड़े अपने घर की ओर चल दिए। मैंने भी कोट के बटन बन्द किए और अपने घर की ओर दौड़ पड़ा।

७

यों एण्टोनिया को मैं पसन्द करता था, लेकिन उसका बड़बोलापन और कभी-कभी बड़प्पन बघारने की आदत मुझे ज़रा भी अच्छी नहीं लगती थी। माना कि वह मुझसे उम्र में चार साल बड़ी थी और उसने मुझसे दुनिया भी ज़्यादा देखी थी, लेकिन फिर भी वह लड़की थी और मैं लड़का था और इसीलिए उसका बड़प्पन बघारना और छोटा समझा जाना मुझे ज़रा भी

अच्छा नहीं लगता था; मैं उसके ऐसे व्यवहार का हर कदम पर विरोध करता था। लेकिन उन्हीं सर्दियों में हम दोनों के साथ एक ऐसी घटना घटी जिसके कारण उसने मुझे छोटा और अपने-आपको बड़ा समझना छोड़ दिया और बराबरी का व्यवहार करने लगी।

एक दिन मैं टट्टू पर सवार शिमरडों के यहां पहुंचा तो पता चला कि अम्ब्रोश को कुदाली की ज़रूरत है, और एण्टोनिया रूसी पीटर के यहां से कुदाली लाने पैदल जा रही है। मैंने उसे टट्टू पर बिठाकर ले जाना चाहा। वह तुरत राज़ी होकर मेरे पीछे बैठ गई। पिछली रात बहुत ज़ोर का पाला पड़ा था, इसलिए इस समय हवा काफी तेज़ और साफ थी। ठण्ड और पाले की मार से हफ्ते-भर के अन्दर सैकड़ों मील लम्बी सड़क के किनारे उगे हुए सूरजमुखी के अनगिनत पौधे अपनी पुष्प-शोभा से वंचित निरे डंठल रह गए थे।

हम पहुंचे तो पीटर अपने खेत में आलू खोद रहा था। वह हमें अपने रसोईघर में ले गया। ठण्डी-तेज़ हवा में चलकर आने के बाद अंगीठी का ताप हमें बहुत सुखद लगा। उसके भण्डार-घर में हमने सफेद कुम्हड़ों और क्रिस्टमस तरबूजों के ढेर देखे जो उसने सर्दियों के लिए सहेज रखे थे। कुदाली लेकर हम लौटे तो एण्टोनिया ने कहा कि क्यों न कुत्तों की बस्ती में एक बिल को खोदकर देखा जाए। वह सीधा अन्दर की तरफ जाता है या छछूंदर के बिल की तरह टेढ़ा-तिरछा होता है, यह जानने की उत्सुकता तो हम में कई दिनों से थी ही। हम यह भी पता लगाना चाहते थे कि वे बिल ज़मीन के अन्दर आपस में एक-दूसरे से जुड़े होते हैं या नहीं और उल्लुओं के घोसलों में पंख वगैरह बिछे होते हैं या नहीं। फिर हमें यह आशा भी थी कि किसी बिल में पिल्ले या उल्लू के अण्डे या सांप की केंचुल भी हमारे हाथ लग सकती है।

कुत्तों की वह बस्ती करीब दस एकड़ रकबे में फैली हुई थी। यहां की घास कुतरी हुई थी इसलिए यह टुकड़ा भूरे रंग की मखमल जैसा लगता था, आसपास की लम्बी घास जैसा लाल, रूखा और खुरदरा नहीं। बिल एक-दूसरे से काफी दूर, कई गज़ों के फासले पर बने थे। वे बेतरतीब नहीं सिलसिलेवार थे, मानो सड़कें और गलियां छोड़कर बिलों की सुव्यवस्थित

नगरी बसाई गई हो। समीप पहुंचने पर वहां एक प्रकार की व्यवस्था और सामाजिकता का बोध होता था। ड्यूड को मैंने निचाई में एक जगह बांध दिया और तब हम दोनों ऐसे बिल की तलाश में निकले जिसे आसानी से खोदा जा सके। कुत्ते सदा की तरह, दर्जनों की तादाद में, अपने-अपने घरों के दरवाज़ों पर पिछले पांवों के सहारे बैठे हुए थे। हमें देखा तो वे दुम हिलाकर भौंकने लगे और फिर फुर्ती से बिलों में घुस गए। हरएक बिल के मुंह पर बालू और कंकड़ियों के छोटे-छोटे ढेर लगे थे। हमने सोचा, कुत्तों ने इन्हें ज़मीन के अन्दर से खोदकर निकाला होगा। लेकिन कुछ बड़े-बड़े ढेर बिलों से कई गज़ के फासले पर भी लगे हुए थे। कुत्ते बिल खोदते समय बालू और कंकर ज़मीन के अन्दर से बाहर तो निकाल सकते थे, लेकिन यह समझ में नहीं आया कि वे उस मलबे को अपने बिलों से इतनी दूर उठाकर कैसे ले आए ? मैंने आरम्भ में जिस घटना का उल्लेख किया है वह मलबे के एक ऐसे ही ढेर पर घटी थी।

हम एक बड़े-से बिल को देख रहे थे, जिसमें प्रवेश करने के दो रास्ते थे। हमने देखा कि ज़मीन के अन्दर दोनों रास्ते कुछ तिरछे जाकर नीचे को उतर गए थे। अति उपयोग के कारण वे रास्ते धूल-भरे थे, जैसीकि बहुत चलती हुई सड़कें हुआ करती हैं। मैं झुककर उस बिल के अन्दर देखता हुआ धीरे-धीरे पीछे की ओर खिसक रहा था। तभी एण्टोनिया ज़ोर से चिल्ला उठी। वह मेरे सामने खड़ी थी और मेरी पीठ की ओर इशारा करती हुई बोहेमी भाषा में ज़ोर-ज़ोर से जाने क्या चिल्ला रही थी। मैंने फुर्ती से मुड़कर देखा तो बालू और कंकरियों के सूखे ढेर पर एक बहुत बड़ा सांप दिखाई दिया। रात की ठण्ड के बाद वह धूप खा रहा था और एण्टोनिया के चिल्लाने से पहले शायद सोया हुआ था। जब मैं मुड़ा तो वह अंग्रेज़ी के डब्ल्यू (W) अक्षर की शक्ल में ढीले-ढाले ढंग से लहराया और एण्टोनिया की चिल्लाहट सुनते ही ऐंठकर गेंडुली मारने लगा। उसकी मुटाई और गेंडुली मारने का ढंग देखकर मेरा मन जाने कैसा हो गया। सांप तो क्या, वह अजगर ही था—मेरी पिंडली जितना मोटा, बहुत बड़ा और भयानक। अगर चक्की के दोनों पाट भी पटक देते तो भी उसका कुछ न बिगड़ता। अपना डरावना फन ऊपर उठाकर उसने ज़ोर से दुम फटकारी और फुफ-

कारा। मैं भागा नहीं, क्योंकि उस समय भागने का तो मुझे खयाल ही नहीं आया—क्षण-भर के लिए मैं वहीं का वहीं जड़ होकर रह गया। मैंने देखा कि वह गेंडुली पर गेंडुली मारता जा रहा था; समझते देर न लगी कि अब वह वार करेगा। मैंने दोनों हाथों से कुदाली पकड़ी, उसके फन का निशाना साधा और लपककर जो तुला हुआ हाथ मारा तो वह वहीं ढेर हो गया। कुदाली का फला उसकी गरदन में लगा और वह ऐंठता और बल खाता हुआ मेरे पांवों में पड़ा था। क्रोध और नफरत से भरा मैं लगातार उसकी ठोड़ी पर वार करता रहा। एण्टोनिया नंगे पांव ही थी। वह दौड़कर मेरे पीछे आ खड़ी हुई। ठोड़ी पूरी तरह कुचल जाने पर भी वह देर तक ऐंठता, बल खाता और उछलता-गिरता रहा। तब मैं वहां से हट गया और मुंह मोड़कर खड़ा हो गया। मुझे मतली आने लगी थी।

एण्टोनिया सुबकती हुई मेरे पीछे आई और भर्राये स्वर में बोली, "जिम्मी, उसने तुम्हें काटा तो नहीं? सच, नहीं काटा न? जब मैं चिल्लाई तो तुम वहां से भागे क्यों नहीं?"

"बेवकूफ की तरह बोहेमी में क्यों बकती रही? क्या सीधे से नहीं कह सकती थी कि तेरे पीछे सांप है?" मैंने उसे झिड़क दिया।

"मारे डर के मेरे तो होश ही गुम हो गए थे, जिम! कहती कैसे!" उसने मेरी जेब से रूमाल निकाल लिया और मेरा मुंह पोंछने लगी। मैंने रूमाल उसके हाथ से छीन लिया। उस समय मतली आने जैसा हो रहा था और मैं अपने आपे में नहीं था।

वह सान्त्वना-भरे स्वर में कहे जा रही थी, "मैं नहीं जानती थी जिम, कि तुम इतने बहादुर हो! तुमने तो बड़े आदमियों जैसा काम कर दिखाया। उसके फन उठाते ही तुमने वार कर दिया। क्या तुम्हें ज़रा भी डर नहीं लगा? हम इसे घर ले जाएंगे, और सबको दिखाएंगे। जितना बड़ा सांप तुमने मारा उतना बड़ा तो यहां किसीने देखा भी नहीं होगा।"

वह काफी देर तक इसी तरह बोलती रही। सुनते-सुनते मुझे लगा, मानो मैं इस अवसर की प्रतीक्षा में ही था और तब मेरा मन खुशी से भर उठा। हम सावधानी से चलते हुए फिर सांप के पास आए। वह अब भी उसी तरह ऐंठ रहा था और बल खा रहा था और उसका

घिनौना, गन्दा पेट ऊपर आ गया था। उसके बदन से हलकी बदबू आने लगी थी और कुचली हुई ठोड़ी में से हरे रंग के तरल पदार्थ की पतली-सी धारा बह रही थी।

"देखो टोनी, यह है इसका ज़हर।" मैंने कहा।

एण्टोनिया ने कुदाली से उसके सिर को उठाए रखा और मैंने जेब में से एक लम्बी पतली डोर निकालकर उसे फन्दे में कस दिया। फिर हमने उसे खींचकर लम्बा किया और अपने चाबुक से नापा तो वह करीब साढ़े पांच फुट लम्बा निकला। उसकी दुम में बारह छल्ले थे। शंक्वाकार होने से पहले ये छल्ले टूट गए थे। इससे मैंने अनुमान लगाया कि उसकी दुम में कुल मिलाकर चौबीस छल्ले रहे होंगे। इस अनुमान के आधार पर मैंने एण्टो-निया को समझाया कि इस सांप की उम्र अवश्य चौबीस साल की होनी चाहिए। इसका मतलब यह हुआ कि इस प्रदेश में गोरे आदमियों के आने से पहले भैंसों और इंडियनों के आधिपत्य के समय से वह सांप यहां रहता था। उसकी लम्बाई और उम्र का खयाल कर मेरा मन उसके प्रति आदर और अभिमान से भर गया। वह मुझे आदम और हव्वा को फुसलाकर पाप में प्रवृत्त करनेवाले पुरातन सांप की तरह लगा। इस जाति के सांपों के काले कारनामों की अनगिनत भयावनी स्मृतियां सभी दोपाये, चार पाये प्राणियों के अवचेतन में विभीषिकाओं के रूप में दुबकी पड़ी हैं, इसमें तो कोई सन्देह ही नहीं। जब हम उसे खींचकर निचाई में ले गए तो ड्यूड मारे भय के उछल पड़ा और जहां तक खूंटे की रस्सी जा सकती थी उतना दूर हटकर खड़ा कांपने लगा—हमें वह अपने निकट आने ही नहीं दे रहा था।

अन्त में यह तय पाया कि एण्टोनिया तो टट्टू पर सवार होकर घर चले और मैं पैदल। वह टट्टू पर सवार मन्थर गति से आगे-आगे चली। उसकी नंगी टांगें टट्टू के दोनों ओर झूलती जा रही थीं और वह मुड़-मुड़कर मुझसे कहती जाती थी कि इतना बड़ा सांप देखकर सबके सब लोग किस तरह चकित रह जाएंगे। मैं कन्धे पर कुदाली रखे, मरे सांप को घसीटता हुआ टट्टू के पीछे-पीछे चल रहा था। टोनी का आह्लाद मुझे भी उल्लसित करने लगा। वह विशाल धरती मुझे कभी भी इतनी बड़ी और स्वतन्त्र नहीं लगी थी। वहां की घास में सांप भरे थे तो मुझमें उनसे निपटने की

सामर्थ्य भी थी। लेकिन साथ ही मैं दबी निगाहों से पीछे की ओर देखता जा रहा था कि कहीं इस मारे हुए सांप की इनसे भी बड़ी और बूढ़ी सांपिन अपने नर का बदला लेने के लिए तो नहीं आ रही है!

हमारे अपनी बगीची तक पहुंचते-पहुंचते सूर्य अस्त हो गया और तब हम वहां से नीचान में घर की ओर उतरे। पहला व्यक्ति जो हमें मिला वह ओटो फुश था। पशुओं के पानी पीने के पोखरे के किनारे बैठा वह शाम के भोजन से पहले का पाइप पी रहा था। एण्टोनिया ने पुकारकर कहा, "जल्दी से आकर देखो तो···" एक क्षण तो वह चुप खड़ा अपना सिर खुजलाता और पांव के जूते से सांप को उलट-पलटकर देखता रहा; फिर बोला, "यह तुम्हें मिल कहां गया?"

"कुत्तों की बस्ती में।" मैंने संक्षिप्त-सा उत्तर दिया।

"तुमने खुद मारा? हथियार तुम्हारे पास कहां था?"

"अम्ब्रोश के लिए रूसी पीटर से जो कुदाली मांगने गए थे, वह थी।"

अपने पाइप की राख गिराकर ओटो पंजों के बल बैठ गया और सांप की दुम के छल्ले गिनने लगा। "अपना भाग्य सराहो जिम्मी, कि तुम्हारे पास कुदाली थी।" उसने मुझे आगे के लिए सतर्क करते हुए कहा, "मैं तो बागुड़ का खम्भा हाथ में हुए बिना इसे कभी न छेड़ता। तुम्हारी दादीजी की सांप मारने की लाठी इसके लिए फूलों की छड़ी ही होती। यह तुम्हारे सिर की ऊंचाई के बराबर खड़ा हो सकता था और सीधा चेहरे पर ही फन मारता। ताव-पेच तो बहुत खाए होंगे इसने?"

एण्टोनिया बोली, "गेंडुली मारकर इत्ता ऊंचा हो गया था और जिम्मी के पांवों में लिपटा ही चाहता था। मैंने चिल्लाकर भागने के लिए कहा, मगर इसपर ऐसा जनून सवार हुआ कि कुदाली के वार पर वार करता चला गया। लगता था, जैसे पागल ही हो गया हो।"

ओटो ने मेरी ओर देखकर आंख मारी। जब एण्टोनिया चली गई तो वह बोला, "पहले ही वार में तुमने उसकी गर्दन तोड़कर रख दी। अच्छा ही हुआ कि निशाना सही बैठा।"

हमने उसे पवन-चक्की पर टांग दिया और जब मैं रसोईघर में पहुंचा तो एण्टोनिया कमरे के बीच में खड़ी खूब नमक-मिर्च लगाकर दादीजी को

नाग-मेध का किस्सा सुना रही थी।

छल्लेदार दुमवाले सांपों से आगे जो साबिका पड़ा उससे मैंने यह निष्कर्ष निकाला कि उस पहली मुठभेड़ में केवल भाग्य ने ही मेरा साथ दिया था। वह बड़ा सांप बूढ़ा और आलसी था और उसमें लड़ने की सामर्थ्य नहीं के बराबर बची थी। उस जगह वह कई बरसों से रहता आ रहा था। भूख लगने पर मोटा-ताज़ा प्रेरी-कुत्ता खाने को मिल जाता था। रहने को पंख बिछा उल्लू का सुरक्षित बिल हाज़िर था। और शायद वह इस बात को भूल चुका था कि आदमियों की यह दुनिया सांपों की दुश्मन है और उन्हें ज़िन्दा नहीं छोड़ना चाहती। उतना बड़ा सांप यदि लड़ने पर उतर आता तो उससे निपटना मेरे जैसे छोटे बच्चे के बूते की बात नहीं थी। उस दिन तो कहना चाहिए कि सेंत में ही यश मिल गया, क्योंकि भाग्य बली था, जैसाकि आम तौर पर लोक-कथाओं में दैत्यों का वध करनेवाले नायकों का हुआ करता है। रूसी पीटर की कुदाली से मैं लैस था, सांप बूढ़ा और आलसी था; और पहले सचेत और फिर प्रशंसा करने के लिए एण्टोनिया मेरे साथ थी।

वह सांप कई दिन हमारी पशुशाला की बागुड़ पर टंगा रहा। बहुत-से पड़ोसी उसे देखने आए और सभीने इस बात को स्वीकार किया कि इस प्रदेश में इतना बड़ा सांप इससे पहले किसीने नहीं मारा था। एण्टोनिया के मिज़ाज को ठीक करने के लिए इतना काफी था। उस दिन से वह मुझे और भी स्नेह और मेरा अदब करने लगी और फिर कभी उसने बड़प्पन नहीं जताया। एक बड़े सांप को मारकर मैं उसकी निगाहों में बड़ा हो गया था।

८

पतझड़ का रंग घास के मैदान और मक्का के खेतों पर उतरने लगा था। और उधर हमारे रूसी मित्रों की आर्थिक दशा बिगड़ती गई। पीटर ने मिस्टर शिमरडा को अपना दुखड़ा सुनाया: पहली नवम्बर उसके क़र्ज़

के चुकारे की मियाद थी। मियाद बीत गई और वह चुकारा नहीं कर पाया। कागज़ पलटवाने के लिए उसे भारी नज़राना (बोनस) देना पड़ा और अपने सूअर, घोड़े और दुधारू गाय तक को बन्धक रखना पड़ गया। ब्लैकहॉक का निर्दय साहूकार विक कटर उसका लेनदार था। अपनी सख्ती के कारण वह सारे इलाके में बदनाम हो चुका था। आगे इस सूदखोर के बारे में मैं और भी विस्तार से लिखूंगा। कटर के साथ अपने व्यवहार के बारे में बेचारा पीटर खुलासेवार कुछ बता भी नहीं पाता था। वह केवल इतना जानता था कि सबसे पहले उसने कटर से दो सौ डालर क़र्ज़ लिए थे, उसके बाद सौ और फिर पचास। हर बार मूलधन में अधिलाभ (बोनस) जुड़ता गया और कर्ज़ पीटर की बोई हुई फसलों की अपेक्षा अधिक तेज़ी से बढ़ता गया। अब उसकी हर चीज़ साहूकार के यहां बन्धक थी।

पीटर के नये सिरे से लिखा-पढ़ी कर लेने के बाद पवेल और पीटर दोनों को कर्ज़ चुकाने की चिन्ता ने आ घेरा। बीमार पवेल कमर बांधकर मेहनत-मजूरी में जुट गया। एक नया बखारघर बनाने के लिए उसने लकड़ी के भारी लट्ठे ढोने का काम शुरू किया ही था कि एक दिन छीलनों में गिर पड़ा और उसके मुंह से खून का परनाला बह चला। उसके साथी मज़दूर घबराए कि कहीं वह लट्ठों के ढेर पर ही न मर जाए। वे उसे उठाकर तुरत घर ले आए और बिस्तरे में सुला दिया। बेचारा बिना हिले-डुले पड़ा रहता। उसकी हालत सच में बहुत खराब हो गई थी। दुर्भाग्य किसी अपशकुनी चिड़िया की भांति उनके घर पर आ बैठा था और अपने मनहूस पंखों को फड़फड़ाकर लोगों को डराने लगा था। बेचारे दोनों रूसी इस कदर दुर्भाग्यग्रस्त हो गए थे कि लोग उनसे मिलते ही नहीं, उनका नाम लेते भी डरने लगे थे।

एक दिन दुपहर के बाद एण्टोनिया और उसके पिता हमारे घर छाछ लेने के लिए आए और हमेशा की तरह तिपहरिया ढलने तक हमारे यहीं रहे। अन्त में जब वे लौटने को हुए तो रूसी पीटर अपनी गाड़ी लेकर आ गया। उसने बताया कि पवेल की हालत बहुत खराब है, वह मिस्टर शिमरडा और उनकी लड़की से बात करना चाहता है और इसीलिए वह गाड़ी में उन्हें लिवा जाने के लिए आया है। जब एण्टोनिया और उसके

पिताजी गाड़ी में सवार हो गए तो मैं दादीजी की चिरौरी करने लगा कि मुझे भी उनके साथ जाने की अनुमति दे दीजिए। मैं शाम को भूखा ही रह लूंगा, रात में मिस्टर शिमरडा के बखारघर में सो रहूंगा और सवेरे घर लौट आऊंगा। मेरी बातें दादीजी को मूर्खतापूर्ण तो अवश्य लगी होंगी, लेकिन वे बड़ी ही विशालहृदय थीं और प्राय: दूसरों की इच्छाओं में बाधक नहीं बनती थीं। उन्होंने पीटर से थोड़ी देर रुकने के लिए कहा और रसोईघर से मेरे ब्यालू के लिए सैंडविचें और मिठौरियां ले आईं।

मिस्टर शिमरडा और पीटर आगेवाली सीट पर बैठे; मैं और एण्टोनिया अन्दर पुआल पर, और चलती गाड़ी में साथ-साथ ब्यालू करते गए। जब सूरज डूब गया तो प्रेरी के मैदान में हू-हू करती ठण्डी हवा चलने लगी। अच्छा ही हुआ कि हवा देर से चलने लगी थी। यदि पहले शुरू हो जाती तो दादीजी मुझे कभी न आने देतीं। हम दोनों पुआल में दुबक गए और पास-पास लेटे हुए पश्चिम में छाई लाली को निःशेष होते और स्वच्छ आकाश में तारों का उगना और टिमटिमाना देखते रहे। बाहर की ओर बैठा पीटर बराबर आहें भरता और कराहता जा रहा था। टोनी ने मेरे कान में कहा कि पीटर को यह डर है कि अब पवेल अच्छा नहीं होगा। हम शान्त और मौन पड़े रहे। ऊपर तारों की चमक बहुत निखर आई थी। हम दोनों, टोनी और मैं, अलग-अलग देशों के रहनेवाले थे, लेकिन दोनों ही इस अन्धविश्वास से ग्रस्त थे कि तारा-मण्डल 'जो है और जो न रहेगा' उस सबको प्रभावित करता है। हम लोगों की अपेक्षा और दूर के देश से आनेवाला रूसी पीटर भी अपनी धरती से सम्भवत: इसी विश्वास को लेकर आया था।

पहाड़ी के बाजू पर बना लट्ठों का वह छोटा मकान रात के अंधेरे में इस तरह गुम हो गया था कि ढाल चढ़ते समय भी वह हमें दिखाई नहीं दिया। मकान के अन्दर दीया एक भी नहीं जल रहा था। सिर्फ रसोईघर की अंगीठी का उजाला खिड़कियों में से दीख रहा था; उसीके सहारे हम दरवाज़े तक पहुंच सके।

ज़रा भी शोर-गुल किए बिना बिलकुल शान्ति से हमने अन्दर प्रवेश किया। चौड़े बिस्तरे में लेटा हुआ पवेल शायद सो रहा था। मैं और टोनी

दीवाल के पासवाली बेंच पर बैठे और अपने सामने की मेज़ पर हाथों के बल झुक गए। जिन तराशे हुए खम्भों पर छत टिकी थी उनपर अंगीठी का उजाला पड़ रहा था। पवेल के सांस लेने पर खरखराहट की आवाज़ होती थी, और वह कराह भी रहा था। हम चुप बैठे थे। बाहर हवा सनसनाती हुई चल रही थी। उसका हर झोंका खिड़कियों के शीशों को झनझनाता हुआ निकल जाता था। कभी अन्धड़ का थपेड़ा दरवाज़ों और खिड़कियों पर पड़ता और उन्हें बुरी तरह खड़खड़ा देता था। कभी हवा दीवाल के बड़े-बड़े छेदों में घुसती हुई सीटी बजाती और सूं-सूं करती हुई निकल जाती थी। अन्धड़ का यह उत्पात मुझे ऐसा लगता था मानो थकी-हारी सेनाएं लड़खड़ाती हुई लौट रही हों या रोते-चीखते प्रेत आश्रय पाने के लिए गिरते-पड़ते भागे जाते हों। तभी हवा के थपेड़ों के बीच सहसा भेड़िये चीत्कार कर उठे—पहले एक, फिर दो और तब सभी एकसाथ, मानो कह रहे हों कि सर्दियां आ रही हैं। भेड़ियों के चीत्कार को सुनकर बिस्तरे में पड़ा पवेल सुगबुगाया और क्षीण स्वर में रिरिया उठा। या तो उसने कोई बुरा स्वप्न देखा था या फेफड़ों की असहनीय पीड़ा ने उसकी तन्द्रा भंग कर दी थी। पीटर ने सुना, पर स्थिर बैठा रहा। वह रसोईघर की अंगीठी के पास ज़मीन पर बैठा था। भेड़िये फिर रो उठे—पहले याप-याप-याप और फिर हो-हो-हो! पवेल ने कुछ कहा और उठकर बैठने की कोशिश करने लगा।

"वह भेड़ियों से डरता है।" एण्टोनिया ने मेरे कान में कहा, "उसके देश में बहुत-से भेड़िये हैं और वे आदमी-औरतों को खा जाते हैं।" उसके बाद हम दोनों एक-दूसरे से बिलकुल सटकर बैठ गए।

बिस्तर में पड़े पवेल की ओर से आंखें हटाने की मेरी हिम्मत नहीं हो रही थी। उसकी कमीज़ के बटन खुले हुए थे और सूखी बैठी हुई छाती पर पीले बाल उगे हुए थे और वह धौंकनी की तरह उठ-बैठ रही थी। फिर वह खांसने लगा। पीटर तुरत अपनी जगह से उठा और चाय की केतली में से थोड़ा गरम पानी लेकर उसमें कुछ व्हिस्की मिलाई तो शराब की तेज़ गन्ध सारे कमरे में भर गई।

पवेल ने झपटकर प्याला अपने हाथों में ले लिया और एक ही सांस में

उसे खाली कर दिया। फिर उसने व्हिस्की की बोतल पीटर से लेकर अपने तकिये के नीचे रख ली। अब उसने इस बुरी तरह मुंह बिचकाया मानो किसीको छका रहा हो। अन्त में वह पीटर की ओर देखने लगा—उसकी उन निगाहों में नफरत और दुश्मनी का-सा भाव था, मानो उसे उसके सीधे और भोलेपन पर सख्त एतराज़ हो।

फिर वह बहुत ही क्षीण स्वर में मिस्टर शिमरडा से बातें करने लगा। वह कोई लम्बी कहानी सुना रहा था। एण्टोनिया ने मेरा हाथ कसकर पकड़ लिया और मेज़ पर आगे की ओर झुकी हुई ध्यान से सुनती रही। अपनी बात कहते-कहते पवेल सहसा बहुत उत्तेजित हो गया और बिस्तर के चारों ओर हाथ से इशारे करते हुए जाने क्या दिखलाने लगा। शायद उसे कुछ दिखाई दे रहा था, जिसे वह मिस्टर शिमरडा को भी दिखला देना चाहता था।

"बाप रे! भेड़िये हैं, जिम्मी !" एण्टोनिया ने फुसफुसाकर कहा, "और कैसी डरावनी बातें वह कह रहा है यह !"

पीटर ने गुस्से में भरकर अपनी मुट्ठी तान ली थी। वह शायद अपने साथ दुर्व्यवहार करनेवाले लोगों को धमका और गालियां दे रहा था। जब वह क्रोधोन्मत्त होकर उछलने लगा तो मिस्टर शिमरडा ने उसके कन्धे पकड़ लिए, लेकिन फिर भी उसे थामकर रखा न जा सका। लेकिन तभी खांसी ने उसे निढाल कर दिया। इतने ज़ोर का दौरा उठा कि उसका दम घुटने लगा और वह छटपटा उठा। उसने तकिये के नीचे से एक कपड़ा खींचकर अपने मुंह पर रख लिया। बात की बात में वह कपड़ा खून के कतरों से तर हो गया। इतना लाल चटकीला खून मैंने पहले कभी नहीं देखा था। दौरा शान्त होने के बाद वह दीवार की ओर मुंह करके करवट लेट गया। अब उसका सारा गुस्सा शान्त हो गया था और वह निढाल पड़ा था। सांस लेने में उसे उतनी ही तकलीफ हो रही थी जितनी कण्ठशोथ के रोगी बच्चे को। एण्टोनिया के पिताजी ने उसकी एक दुबली, पतली और लम्बी टांग पर से चादर हटा दी और उसकी पिण्डली को धीरे-धीरे मसलने लगे। उसका शरीर सिर्फ हड्डियों का ढांचा रह गया था। कन्धों और रीढ़ की हड्डियां इस तरह निकल आई थीं मानो कई दिन के मरे बछड़े की खाल-मढ़ी ठठरियों-

वाली लाश खेत में पड़ी हो। उस उभरी हुई रीढ़ के कारण पीठ के बल लेटने में उसे ज़रूर तकलीफ होती होगी।

जब मिस्टर शिमरडा ने हमें इशारे से बतलाया कि पवेल को नींद आ गई है तो हमारे जी में ज़ी आया। मुसीबत की घड़ी शायद बीत चुकी थी। पीटर चुपचाप उठा और उसने लालटेन जला दी। फिर वह हमें घर पहुंचाने के लिए घोड़ों को गाड़ी में जोतने के लिए बाहर चला गया। मिस्टर शिमरडा भी उसके साथ निकल गए। हम चुप और सहमे हुए, नीली चादर से ढकी उसकी लम्बी और झुकी हुई पीठ की ओर देखते रहे। ज़ोर से सांस लेने तक की हमारी हिम्मत नहीं हो रही थी।

घर लौटते समय, गाड़ी की खड़खड़ाहट और धचकों के बीच, पुआल में पड़े-पड़े एण्टोनिया ने उस समय जितनी हो सकी वह कहानी सुनाई, जो पवेल ने मिस्टर शिमरडा से कही थी। जो वह उस समय न सुना सकी उसे उसने बाद में सुनाया। उस रात के बाद कई दिनों तक हम आपस में एक इसी किस्से को कहते-सुनते रहे थे।

जब पवेल और पीटर जवान थे और रूस में रहते थे, उनके एक दोस्त ने उन्हें शहबाला के रूप में अपनी बारात में साथ चलने का न्यौता दिया। वह दोस्त आन गांव की गोरी को ब्याहने जा रहा था। कड़ाके की सर्दियों के दिन थे। पूरी बारात दूल्हे को लेकर स्लेज गाड़ियों में दुल्हिन के गांव चली। पीटर और पवेल दूल्हे के साथ उसकी स्लेज गाड़ी में थे और मित्रों तथा सम्बन्धियों से भरी छः स्लेज गाड़ियां और साथ थीं।

गिरजाघर में शादी की रस्म पूरी हो जाने के बाद बाराती लड़की के पिता द्वारा दिए गए भोज में शरीक हुए। सुबह का खाना तीसरे पहर तक चलता रहा; और फिर रात्रि-भोज और उसके साथ नाच-गान और पीने-पिलाने का दौर चला, जो आधी रात में जाकर खत्म हुआ। उसके बाद माता-पिता ने बेटी की विदाई की रस्म पूरी की। दुल्हिन का मुंह चूमकर उसे आशीर्वाद दिया और तब दूल्हे के हवाले कर दिया। दूल्हा उसे गोद में उठाकर अपनी स्लेज गाड़ी तक लाया और अन्दर बिठाकर अच्छी तरह कम्बलों से ढक दिया। फिर वह स्वयं उसके पास बैठ गया। पवेल और

पीटर (हां, हमारे यही पवेल और पीटर) आगेवाली सीट पर बैठे। पवेल ने घोड़ों की रास थामी और स्लेज गाड़ी को हांक चला। सारे बाराती हंसते-गाते और स्लेज गाड़ी की घंटियां टुनटुनाते चल पड़े। दूल्हे की स्लेज सबसे आगे थी। सभी स्लेज गाड़ियों के कोचवान शराब के नशे में धुत हो रहे थे और दूल्हे को सिवा अपनी दुल्हिन के दीन-दुनिया की खबर न थी।

उन सर्दियों में भेड़ियों का उत्पात अपनी चरम सीमा को पहुंच गया था और सभी इस बात को जानते थे, लेकिन फिर भी जब भेड़ियों की पहली आवाज़ सुनाई दी तो स्लेज गाड़ियों के कोचवानों ने उसपर कोई ध्यान नहीं दिया, और न वे डरे। खूब माल-ताल और बढ़िया शराब से वे छके हुए जो थे! उधर तत्काल ही भेड़ियों की पहली चीखों की गूंज और अनुगूंज सुनाई दी और यह क्रम तेज़ी से और बार-बार दुहराया जाने लगा। भेड़िये गोल बांधकर आ रहे थे। रात अंधेरी थी, लेकिन आसमान साफ था और तारे छिटके हुए थे और धरती पर छाई बर्फ में तारों का प्रतिबिम्ब प्रकाश फैला रहा था। बारात के पीछे-पीछे एक काली कतार पहाड़ी पर चढ़ी चली आ रही थी। इतनी दूर से भेड़िये काले धब्बों जैसे और कुत्तों से भी छोटे दिखाई दे रहे थे, परन्तु वे सैंकड़ों की तादाद में थे।

सबसे आखीरवाली स्लेज का कोचवान शायद बहुत पिए हुए था। वह घोड़ों को अपने कब्ज़े में न रख सका। वे सड़क से एक ओर को हट गए और स्लेज पेड़ों के ठूंठ में फंसकर उलट गई। अन्दर बैठे हुए लोग लुढ़ककर बर्फ पर आ गिरे और तेज़ी से दौड़े आते भेड़ियों की पहली कतार ने उन्हें धर दबोचा। उनकी चीखें सुनीं तो बाकी के सारे बारातियों का नशा हिरन हो गया। कोचवान खड़े होकर अपने घोड़ों पर सटासट कोड़े बरसाने लगे। दूल्हे की स्लेज हल्की भी थी और उसमें सबसे तेज़ घोड़े जुते थे। इसमें कुल जमा चार आदमी थे; बाकियों में छः से एक दर्जन तक।

थोड़ी देर के बाद दूसरे कोचवान के घोड़े बिदके, उसका सन्तुलन गड़बड़ाया और वह स्लेज भी उलट गई। इस बार भेड़ियों का शिकार बननेवाले घोड़ों और स्त्री-पुरुषों का आर्तनाद पहले से कहीं हृदय-विदारक था। भेड़ियों को किसी भी तरह रोका नहीं जा सकता था। यह बताना मुश्किल था कि पीछे क्या हो रहा है। गिरनेवाले हर बार उतने ही ऊंचे स्वर में चीखते

थे और वे चीखें उतनी ही हृदय-विदारक होती थीं जितनी उनसे पहले गिरनेवालों की। दुल्हिन का कलेजा दहल गया और वह अपने दूल्हे से लिपटकर ज़ार-ज़ार रोने लगी। पवेल का सारा ध्यान अपने घोड़ों पर लगा था। सड़क साफ और सफेद थी और दूल्हे की स्लेज गाड़ी के तीनों काले घोड़े हवा से बातें कर रहे थे। ज़रूरत सिर्फ इस बात की थी कि शान्त रहा जाए और रास को मज़बूती से थामकर रखा जाए।

अन्त में, एक लम्बी पहाड़ी को पार करते हुए पीटर ने सावधानी से खड़े होकर पीछे की ओर देखा। "सिर्फ तीन स्लेज गाड़ियां बची हैं।" उसने फुसफुसाकर कहा।

"और भेड़िये ?" पवेल ने पूछा।

"बहुत हैं ! इतने ज़्यादा कि हम सबको चट कर जाएं।"

पवेल अब पहाड़ी की चोटी पर था, लेकिन उसके पीछे सिर्फ दो स्लेज गाड़ियां ही उस पार उतर सकीं। पहाड़ी की चोटी पर से उन्होंने मुड़कर देखा तो काले धब्बों के गोल के गोल बर्फ पर दौड़े चले आ रहे थे। बेचारे दूल्हे की चीख निकल गई। उसने उस स्लेज गाड़ी को उलटते देखा जिसमें उसका पिता, मां और बहिनें बैठी थीं। वह खड़ा होकर कूदने ही जा रहा था कि दुल्हिन चीख़ मारकर उससे लिपट गई। और कूदकर भी वह क्या कर लेता ! उस काली कतार ने सड़क पर पड़े लोगों को दबोच लिया था। एक घोड़ा टूटे साज़ के साथ खेतों में भागा जा रहा था और भेड़ियों का एक दल उसके पीछे लगा था। लेकिन दूल्हे को यों कूदने के लिए तैयार होते देख पवेल के मन में एक विचार बिजली की तरह कौंध गया।

अब वे अपने गांव से कुछ ही मील के फासले पर रह गए थे। छः में से पांच स्लेजें उलट चुकी थीं, और बाकी बची हुई एक उनसे ज़्यादा दूरी पर नहीं थी, और पवेल के बीचवाले घोड़े का पांव लंगड़ाने लगा था। एक बर्फ-जमे तालाब के किनारे वह आखरी स्लेज भी भूखे भेड़ियों के चंगुल में फंस गई। पवेल ने साफ देखा कि तीन बड़े भेड़ियों ने उस स्लेज के घोड़ों को आ मिलाया है और घोड़ें बौखलाकर जो उछले-कूदे तो अपने ही साज़ में फंस गए और स्लेज गाड़ी उलट गई।

जब पीछे की चीख-पुकार शान्त हो गई तो पवेल ने पाया कि उस

परिचित सड़क पर अब अकेले उसीकी स्लेज गाड़ी भाग रही थी।

उसने पीटर से पूछा, "क्या वे अभी भी पीछा कर रहे हैं?"

"हां।"

"कितने होंगे?"

"बीस, तीस—बहुत सारे।"

उसका बीचवाला घोड़ा पूरी तरह बेकार हो गया था और उसके कारण बाकी दोनों घोड़ों की चाल धीमी पड़ती जा रही थी। पवेल ने रास पीटर को थमा दी और आप सावधानी से गाड़ी की पीछेवाली सीट में उतर आया। दुल्हिन की ओर इशारा करते हुए उसने दूल्हे से कहा कि हमें अपना बोझ कुछ हलका करना होगा। दूल्हे ने दुल्हिन को अपने से चिमटा लिया और पवेल को गालियां देने लगा। पवेल दुल्हिन को अपनी ओर खींचने लगा। छीना-झपटी में दूल्हा जैसे ही खड़ा हुआ पवेल ने उसे धक्का देकर नीचे गिरा दिया और दुल्हिन को भी उठाकर उसके पीछे फेंक दिया। न तो पवेल को इस बात की याद है कि उसने यह सब कैसे किया और न यही कि उसके बाद क्या हुआ। पीटर अगली सीट में घोड़ों की रास थामे झुका बैठा था इसलिए पीछे क्या हुआ, कुछ भी देख नहीं पाया। दोनों के होश ही जैसे गुम हो गए थे। पहली बात, जिसकी ओर उनका ध्यान गया सवेरे की साफ हवा में गूंजती हुई एक नई आवाज़ थी—उन्हींके अपने गांव के गिरजाघर की घण्टियां सवेरे की प्रार्थना के लिए बजाई जा रही थीं और जिन्हें इतने ज़ोर से बजाए जाते उन्होंने पहले कभी नहीं सुना था।

पवेल और पीटर गए थे पूरी बारात के साथ, परन्तु गांव में लौटकर आए बिलकुल अकेले। और उसी क्षण से वे अकेले रहने को विवश हुए। गांववालों ने उन्हें बस्ती से बाहर खदेड़ दिया। पवेल की मां ने तो अपने बेटे की ओर आंख उठाकर भी नहीं देखा। वे किसी गांव और बस्ती में टिक नहीं पाते थे। रोज़ नये-नये गांवों की खाक छाना करते; और जहा भी जाते उनकी शोहरत पहले पहुंच जाती थी। उनके गांव का नाम मालूम होते ही लोग-बाग घेरकर पूछना शुरू कर देते थे, "क्यों जी, उन दो आदमियों को भी जानते हो जिन्होंने दुल्हिन भूखे भेड़ियों को खिला दी?" पांच बरस तक पाई-पैसा जोड़कर उन्होंने अमरीका का किराया जमा किया

और यहां चले आए। शिकागो, डेस मोइन्स, फोर्ट वेईन आदि कई जगहों में काम करते रहे, परन्तु दुर्भाग्य ने यहां भी पीछा नहीं छोड़ा। धन, यश और स्थिरता उन्हें कहीं नहीं मिली। जब पवेल की सेहत पूरी तरह चौपट हो गई तो उन्होंने खेती में तकदीर आज़माने का फैसला किया।

मिस्टर शिमरडा के आगे अपने मन का बोझ हलका करने के कुछ दिनों बाद ही पवेल मर गया और उसे नार्वेवासियों के कब्रिस्तान में दफना दिया गया। पीटर ने सब कुछ बेच-बाचकर छुट्टी पाई और यहां से सदा के लिए चलता हुआ। कहीं पर रेल की पटरियां बिछाने का काम चल रहा था और वहां रूसियों के कई गिरोह मजूरी पर लगे हुए थे। पीटर वहां जाकर रसोइया बन गया।

जब उनका सामान नीलाम हुआ तो हमने पीटर की इकपहिया गाड़ी और घोड़ों का कुछ साज़-सामान खरीद लिया। नीलामी के समय वह सिर झुकाए बैठा रहा और एक बार भी आंखें उठाकर किसीकी ओर नहीं देखा। माल कौड़ियों के मोल बिके या पानी के मोल, इसकी जैसे उसे परवाह ही नहीं थी। पीटर के पशुओं को बन्धक रखनेवाला ब्लैकहॉक का सूदखोर महाजन भी बिक्री के समय हाजिर था। उसने उसके सारे पशु आधे दामों में खरीद लिए। लोगों का कहना है कि जब नया मालिक उसकी गाय को लेकर चला तो पीटर गाय के गले लिपटकर फफक उठा था और देर तक उसके माथे को चूमता रहा था। यह तो मैंने नहीं देखा, लेकिन इतना ज़रूर जानता हूं कि जब खरीदार उसका सारा सामान—बिस्तर, मेज़, कुर्सी, अंगीठी, बरतन-भांडे आदि ले जा चुके तो वह सूने मकान के फर्श पर बैठ गया और सर्दियों के लिए बचाकर रखे हुए सारे तरबूजों को चाकू से काट-कर खाने लगा। मिस्टर शिमरडा और क्रायीक अपनी घोड़ागाड़ी में उसे स्टेशन ले जाने के लिए पहुंचे तो उसकी दाढ़ी तरबूजों के रस में सराबोर हो रही थी और वह तरबूजों के छिलकों से घिरा बैठा था।

दोनों दोस्तों का इस तरह चले जाना मिस्टर शिमरडा के लिए ऐसी चोट थी जिससे वे संभल न सके। शिकार खेलते हुए वे अक्सर लट्ठों के उस सूने मकान में जा बैठते और जाने किन विचारों में खो जाया करते। सर्दियों में बर्फ गिरने के कारण जब तक अपनी खोह में बंध नहीं जाना

पड़ा वे उस कुटिया में बराबर जाते रहे। मैं और एण्टोनिया बारात के उस किस्से को कहते-सुनते कभी नहीं अघाते थे। हमने पीटर का वह रहस्य किसीको नहीं बताया; सूम के धन की तरह अपने तक ही सहेजे रहे, मानो हमें एक अभूतपूर्व पीड़ादायी आनन्द प्रदान करने को ही उस रात वे भेड़िये सारी बारात को खाने के लिए जमा हो गए थे। रात में सोने से पहले अपनी कल्पना के जिस क्षेत्र में मैं तीन घोड़ों की स्लेज गाड़ी में सवार सरपट भाग रहा होता था वह प्रदेश मुझे बहुत कुछ नेब्रास्का और वरजीनिया-जैसा लगता था।

९

इस बार बर्फ दिसम्बर के शुरू में ही पड़ने लग गई थी। हिमपात के पहले दिन की आज भी मुझे बहुत अच्छी तरह याद है। मैं सवेरे-सवेरे अंगीठी के पीछे कपड़े पहनता हुआ बैठक की खिड़की की राह बाहर की ओर देखने लगा था। आकाश मानो नीचे झुक आया था और लोहे की चादर जैसा लग रहा था। मक्का के पीले खेत धुंधलके में खो गए थे और सिर्फ एक धब्बे के रूप में दिखाई दे रहे थे। बेंत की झाड़ियों से घिरा पोखर जम गया था। हर तरफ बर्फ गिर रही थी और लाल घास में गायब होती जा रही थी।

पोखर से परे, जो ढाल ऊपर मक्का के खेत की ओर जाता था, वहां घास में एक बड़ा-सा चक्कर बना हुआ था; वह इंडियन लोगों की घुड़दौड़ का चक्कर था। जेक और ओटो की यह निश्चित राय थी कि इंडियन लोग चक्कर के बीचोंबीच अपने बन्दियों को खम्भे से बांध देते थे और चक्कर में घोड़े दौड़ाते हुए उन्हें सताते थे। लेकिन दादाजी उन दोनों की राय से सहमत नहीं थे। उनका कहना था कि वह चक्कर सिर्फ घोड़ों को दौड़ाने और सिखाने के लिए था। सूर्यास्त के समय वह चक्कर छोटी-छोटी घास में एक कुण्डल जैसा लगता था; और उस सवेरे तो बर्फ से ढक जाने के

कारण बिलकुल साफ और उभरा हुआ दिखाई दे रहा था, मानो कैनवास पर खड़िया का सफेद गोला बनाया गया हो। उस पुराने चक्कर को देखकर मैं सहसा ही अभिभूत हो गया और वह मुझे सर्दियों के शुभ शकुन की तरह लगा।

जैसे ही बर्फ कड़ी हुई मैंने एक स्लेज गाड़ी में घूमना-फिरना शुरू कर दिया। ओटो अपने देश में एक बढ़ई का शागिर्द रह चुका था और अब भी बसूला-रूखानी आदि खूब चला लेता था। उसने लड़की के पुराने बक्से जोड़-जाड़कर मेरे लिए एक भौंडी-सी स्लेज गाड़ी बना दी थी। यदि मुझे जल्दी न पड़ी होती और उसे काम करने को कुछ समय और मिल जाता तो वह निश्चय ही बहुत सुन्दर स्लेज गाड़ी बना देता। पहले दिन अपनी स्लेज में बैठकर मैं डाकखाने गया और दूसरे दिन युल्का और एण्टोनिया को स्लेज की सवारी कराने के लिए उनके घर।

उस दिन धूप खिली थी और ठंड तेज़ थी। स्लेज की बक्सेनुमा बैठक में मैंने पुआल और भैंसों के चमड़े के लबादे बिछाए और पुराने कम्बलों में दो गरम ईंटें लपेटकर साथ रख लीं। मैं शिमरडों के घर तक नहीं गया; ऊपर उनके घरौंदे तक जाने के बदले स्लेज को नीचाई में रोककर उसीके भीतर बैठा रहा। फिर मैंने वहीं से आवाज़ देकर एण्टोनिया और युल्का को बुलाया। दोनों बहिनें तुरत बाहर दौड़ी आईं। वे अपने पिताजी की बनाई हुई खरहे के चमड़े की छोटी-छोटी टोपियां पहने थीं। अम्ब्रोश उन्हें मेरी स्लेज गाड़ी के बारे में बता चुका था और वे यह भी जानती थीं कि मैं क्यों आया हूं। दोनों बहिनें उछलकर मेरे पास आ बैठीं और हम एक टूटी सड़क से उत्तर की ओर चल पड़े।

ऊपर चमकीला नीला आसमान था और प्रेरी के मैदान में बिछी बर्फ पर सूरज की किरणें प्रतिबिम्बित होकर आंखों को चौंधिया रही थीं। जैसा कि एण्टोनिया ने कहा था, बर्फ ने सारी दुनिया की शकल ही बदल दी थी। वर्फ के उस मैदान में हमें कोई पुरानी, परिचित चीज़ दिखाई नहीं दे रही थी। स्क्वा क्रीक का गहरा दर्रा बर्फ के ढोकों के बीच एक पतली-सी दरार बनकर रह गया था और झुककर नीचे देखने पर वहां अंधेरा दिखाई देता था। पेड़ों की जो फुनगियां शरद में सोने से मढ़ी हुई थीं वे अब मुड़ी-तुड़ी

और सर्वथा निष्प्राण लग रही थीं। जो देवदार वृक्ष पहले काले-कलूटे और मुर्दार लगते थे वे अब तरो-ताज़ा हरियाली से लहलहा उठे थे। हवा में ताज़े बर्फ का तीखापन था और मेरा नाक और गला इस कदर जलने लगा था, मानो किसीने मुंह के आगे सांभर के सींग के चूर्ण की बोतल खोल दी हो। ठंड के तीखे दंश से एक प्रकार की सुखानुभूति भी होती थी। घोड़े के नथुनों से भाप के बादल उठ रहे थे और जब वह चलते-चलते खड़ा हो जाता तो उसके सारे शरीर से धुआं निकलने लगता था। चौंधियानेवाले प्रकाश में मक्का के खेतों का रंग कुछ निखर आया था और बर्फ की पृष्ठभूमि में सूरज की तिरछी किरणें पड़ने से वे स्वर्ण-खचित-से लगते थे। हमारे चारों ओर बर्फ की परतों पर परतें जमी हुई थीं, जिनके किनारों पर हवा की तेज़ मार के कारण लहरियों जैसे उभार बन गए थे।

दोनों लड़कियां अपनी-अपनी शाल के नीचे सिर्फ सूती कपड़े पहने हुए थीं और इसीलिए भैंसे के चमड़े का लबादा ओढ़ लेने पर भी कांप रही थीं और ठंड से बचने के लिए एक-दूसरे से सटी बैठी थीं। पर वे प्रसन्न थीं, क्योंकि उस गन्दी खोह और अपनी माता की झिड़कियों से उन्हें मुक्ति मिल गई थी और वे मुझसे आगे और आगे ही चलते जाने का बराबर आग्रह कर रही थीं। देर तक घरौंदे की दुःखदायी गर्मी में बन्द रहने के बाद अब खुले विस्तार में आ जाने पर वे अपना आपा ही खो बैठी थीं और इसीलिए कभी अकारण चिल्लाती, कभी खिलखिलाती और इस बात की रट लगाए थीं कि लौटकर कभी घर नहीं जाएंगी। युल्का ने तो पूछ भी लिया कि क्यों न हम रूसी पीटर के मकान में रह जाएं और तुम शहर जाकर घर-गिरस्ती का सामान ले आना।

रूसी पीटर के घर पहुंचने तक हम बहुत प्रसन्न थे और बात-बात पर कहकहे लगाते जाते थे। लेकिन जब चार बजे के करीब लौटे तो हवा तेज़ी से हहराने लगी थी; धूप में अब वह आनन्ददायी गर्मी नहीं रह गई थी, आसमान घिरने लगा था और उसका रंग भूरा हो गया था। मैंने अपना लम्बा ऊनी मफलर खोलकर युल्का के गले में लपेट दिया। उसे इतने ज़ोर की ठंड लग रही थी कि अन्त में हमने उसका सिर भी भैंसे के चमड़े के लबादे के अन्दर कर दिया। लेकिन एण्टोनिया और मैं सीधे बैठे रहे। मुझे

तो घोड़े की रास पकड़े रहने में भी कष्ट हो रहा था। तेज़ हवा के झपट्टे इस बुरी तरह मुंह पर पड़ रहे थे कि आंखों से कुछ दिखाई नहीं देता था। जब शिमरडों के घरौंदे पर पहुंचे तो अंधेरा घिरने लगा था, लेकिन मैं तापकर गरमाने के लिए रुका नहीं। जानता था कि आग के पास जाते ही मेरे हाथ बुरी तरह दर्द करने लगेंगे। युल्का मफलर लौटाना भूल गई और मुझे हवा की सीधी मार में खुले गले से घर लौटना पड़ा। दूसरे ही दिन मुझे कण्ठ-शोथ हो गया और कोई दो सप्ताह घर के अन्दर पड़ा रहना पड़ा।

तलघरवाला रसोईघर उन दिनों बहुत ही सुरक्षित और आरामदेह लगता था, मानो तूफानी समुद्र में चारों ओर से ढकी छोटी-सी नौका हो। मजदूर सारे-सारे दिन खेतों में भुट्टों के ऊपर के पोंख उतारा करते और जब दुपहर में लम्बी कनटोपियों से कान ढके, पांवों में लाल अस्तरवाले बड़े जूते पहने घर लौटते तो मुझे ऐसा लगता था मानो वे हमारे खेती के मज़दूर न होकर उत्तरी ध्रुव के अन्वेषक हों। तीसरे पहर के समय दादीजी आम तौर पर ऊपर की मंज़िल में बैठकर फटे-पुराने कपड़ों की मरम्मत, रफूगिरी या पोंख उतारते समय हाथों में पहनने के दस्ताने बनाया करतीं और मैं उनके पास बैठकर 'दि स्विस फैमिली रॉबिन्सन' ज़ोर से पढ़कर सुनाता। मुझे तो कहानी के स्विस परिवार का जीवन हमारी अपेक्षा अधिक कठोर और आपदाओं से घिरा हुआ नहीं लगता था। मुझे विश्वास हो चला था कि मनुष्य का सबसे प्रबल विरोधी यदि कोई हो सकता है तो वह ठण्ड है। दादीजी बड़े उत्साह और उमंग से हमें गरम रखने, आराम पहुंचाने और भरपेट खिलाने के लिए काम में जुटी रहती थीं, जिसे देखकर मैं उनके प्रति प्रशंसा से नतमस्तक हो जाता था। काम से लौटनेवाले भूखे मज़दूरों के लिए खाना पकाते समय वे मुझे अक्सर इस बात की याद दिलाया करती थीं कि यह प्रदेश वरजीनिया जैसा नहीं है और यहां 'कोई पकाए तो क्या, पकाने की ज़्यादा चीज़ें होतीं भी तो नहीं।' रविवार के दिन वे हमें ठूंस-ठूंसकर मुर्गा खिलाती थीं और सप्ताह के अन्य दिन सूअर का मांस, रान-पुट्ठा या मसालेदार मांस का गुलमा और डबल रोटी। हमारे लिए गुझिया या केक तो वे रोज़ ही बनाती थीं और कभी-कभी मेरा मनपसन्द पुडिंग भी, जिसमें किशमिश पड़ा होता और जिसे

किसी थैली में रखकर उबाला जाता था।

हमारा सारा ध्यान दो-तीन बातों की ही ओर लगा रहता था—अपने-आपको गरम रखना और सुबह-शाम का भोजन। यों कहना चाहिए कि हमारा जीवन ठण्ड से बचाव, भोजन और रात में मज़दूरों का खेत से लौटना, इन तीन बातों पर केन्द्रित हो गया था। यह सोचकर आज भी मुझे आश्चर्य होता है कि दिन-भर खेतों में कड़ी मेहनत के बाद थके-मांदे, ठंड से ठिठुरे और चुटीले हाथ लिए घर लौटने पर घोड़ों का दाना-पानी, गायों का दुहना, सूअरों की देख-भाल आदि सारे काम इतनी अच्छी तरह वे मजूर कर कैसे लेते थे। ब्यालू कर लेने के बाद वे देर तक अंगीठी के पास बैठे अपनी ठण्ड उड़ाया करते, जो उनकी हड्डियों के पोर-पोर में घुसी होती थी। दादाजी ऊपर अखबार पढ़ने चले जाते, दादीजी और मैं तश्तरियां धोने में लग जाते और जेक एवं ओटो अंगीठी के पीछे एक लम्बी बेंच पर बैठे अपने अन्दरवाले जूते सुखाया करते या ठण्ड से फटे हाथों पर चरबी मला करते।

शनिवार की हर रात को हम मक्का भून लिया करते या टॉफी बना लेते और फुश 'मैं चरवाहा, मैंने गुनाह किया' अथवा 'सूने प्रेरी में मुझको मत दफनाना' आदि गीत गाकर सुनाता। अच्छी बुलन्द आवाज़ थी उसकी और वह हमेशा मदरसेवाले गिरजाघर की प्रार्थनाओं में हम सबका गाने में नेतृत्व किया करता था।

उन दोनों की वे सूरतें आज भी मुझे अच्छी तरह याद हैं—तराशे हुए बालोंवाला ओटो और गीले कंघे से अपने झबराले बालों में सामने की ओर सपाट पट्टी काढ़े जेक। दिन-भर की थकावट से चूर, कन्धे झुकाए, चूना-पुती दीवाल के सहारे वे दोनों बेंच पर बैठे रहते थे। कितने भले आदमी थे, दोनों कितना अधिक जानते थे और कितनी सारी बातों में उनका विश्वास था!

फुश कई तरह के काम कर चुका था—चरवाही, कोचवानी, शराब की दुकान पर नौकरी, खानों में मजूरी आदि अनगिनत काम। देश का विशाल पश्चिमी भू-भाग उसका सारा घूमा हुआ था। उसने हर जगह कड़ी मशक्कत की, परन्तु जैसाकि दादीजी कहती थीं, न कहीं फायदा हुआ

न कहीं टिक सका। जेक ओटो के मुकाबले कुछ सुस्त था और मूर्ख भी। पढ़ाई-लिखाई के नाम पर सीफर—किसी तरह गोद-गादकर दस्तखत कर लेता था और टोह-टोहकर घण्टे में एक सतर पढ़ पाता था। गुस्सैल इतना कि अक्सर अपना आपा खो बैठता और निढाल हो जाता और उसकी सेहत पर भी इसका असर होता था। लेकिन साथ ही इतना भोला और कोमल-हृदय था कि कोई भी उसे पट्टी पढ़ा जाता। अगर कभी, उसीके शब्दों में 'औसान भूलकर', दादीजी के सामने गाली बक जाता तो मारे शर्म के सारे दिन सिर न उठाता और बुझा-बुझा रहता था। दोनों न तो सर्दियों के ठिठुरते जाड़ों की परवाह करते थे न चिलचिलाती गर्मियों की; रात हो या दिन हमेशा मुस्तैदी से हर काम के लिए तैयार रहते और कैसी भी मुसीबत क्यों न आ पड़े खम ठोककर तुरत मैदान में आ जाते थे। काम में अपनेको खपा देना उन दोनों के ही मन में गर्व और गौरव की बात थी। लेकिन कहीं टिककर काम करना और निभा ले जाना उनके स्वभाव में नहीं था। एक या दो डालर पर कड़ी से कड़ी मजूरी करते रहना ही जैसे उनका धर्म हो गया था।

उन कड़ाके की ठण्डी, तारों-भरी रातों में हम भोजन, गरमी और सुख देनेवाली अंगीठी को घेरकर बैठे होते कि सहसा पशुओं के बाड़े के पास से भूखे भेड़ियों का हो-हो करता स्वर सुनाई देने लगता था। भेड़ियों के उस रुदन-स्वर को सुनकर जेक और ओटो को राकीज़ के भूरे भेड़ियों और रीछों तथा वरजीनिया के पहाड़ी प्रदेश में रहनेवाले तेंदुओं और बनविलावों के कई किस्से याद आ जाते और वे सुनाना शुरू कर देते थे। कभी फुश का मन होता तो वह अपने परिचित अपराधियों, चोर-लुटेरों और दुस्साहसिकों के किस्से सुनाने लगता था। एक बार उसने अपने साथ घटी ऐसी मज़ेदार घटना सुनाई कि दादीजी हंसते-हंसते लोट-पोट हो गईं और उनकी आंखों में आंसू आ गए। वे चकले पर रोटी बेल रही थीं और हाथ आटे से सने थे इसलिए उन्हें नंगी बांहों से अपने आंसू पोंछने पड़े थे। किस्सा इस प्रकार था :

ओटो जब आस्ट्रिया से अपने देश अमरीका के लिए चला तो किसी रिश्तेदार ने एक औरत का भार उसे सौंप दिया, जो दो बच्चों के साथ उसी

जहाज़ से अपने पति के पास शिकागो जा रही थी। वह गर्भवती थी और रंग-ढंग से लगता था कि जहाज़ पर ही उसके बच्चा हो जाएगा। फुश के कथनानुसार बच्चों से उसकी अच्छी पटरी बैठ गई थी, और मां से भी उसे कोई शिकायत नहीं थी, पर उस भलीमानस ने रास्ते में उस गरीब को खासी मुसीबत में डाल दिया। बीच समन्दर में उसने एक साथ तीन बच्चों को जन्म दे डाला। और चूंकि औरत उसीके साथ यात्रा कर रही थी इसलिए अब जिसे देखो वही फुश को घूर-घूरकर देखने लगा। जहाज़ की नौकरानी उससे नाराज़ और जहाज़ का डाक्टर उसपर खफा, मानो तीन बच्चे उसीकी कारस्तानी से जन्मे हों। जहाज़ के प्रथम श्रेणी के यात्री गाहे-बगाहे ओटो को छेड़ने और रोक-रोककर उससे ज़च्चा-बच्चा की सेहत का हाल पूछने लगे। उन्होंने ज़च्चा को देने के लिए चन्दा करके एक थैली भी जमा की थी। न्यूयार्क में जहाज़ किनारे लगा तो ओटो को ही बच्चों को उठाकर ले जाना पड़ा। वहां से शिकागो तक की यात्रा में तो और भी कष्ट हुआ। रास्ते में बच्चों के लिए दूध जुटाना और उनकी बोतलों की सफाई एक खासी मुसीबत हो गई। एक बच्चा हो तो मां अपने दूध पर पाल ले; तीन-तीन बच्चों के लायक दूध किसी भी औरत की छातियों में कहां से आता? औरत का पति शिकागो के एक फर्नीचर कारखाने में बहुत ही मामूली वेतन पर काम करता था। स्टेशन पर उसने इतना बड़ा परिवार देखा तो बेचारे की जान ही निकल गई। उसने भी इसके लिए फुश को ही दोषी समझा। अन्त में किस्सा खत्म करते हुए ओटो ने कहा, "मुझे इस बात की खुशी है कि उसने अपनी बीवी को बुरा-भला नहीं कहा, लेकिन मेरी ओर देखकर खूब नाक-भौं सिकोड़ता रहा। बताइए मिसेज़ बरडन, ऐसी सांसत तो शायद ही किसी जवान की हुई होगी।"

दादीजी ने उसे दिलासा देते हुए कहा, "भगवान अपने बन्दे के किसी नेक काम को नहीं भूलता। परमात्मा को सब याद है और तुम मुसीबत की इतनी घाटियों से जो सही-सलामत लौट आए हो सो सब उसीकी बदौलत। हमें पता भी नहीं चलता और भगवान हमारी रक्षा करता है।"

१०

उस दिन की स्लेज-यात्रा को हफ्तों बीत गए और मुझे शिमरडों का कोई समाचार नहीं मिला। एक तो कण्ठशोथ के कारण मैं घर से बाहर न निकलने पर मजबूर था और फिर दादीजी को जुकाम हो गया था, जिससे वे अकेले घर का सारा काम संभाल नहीं पाती थीं। पूरे सप्ताह के बाद रविवार के दिन उन्हें कुछ आराम मिला। एक रात भोजन के बाद फुश ने बताया कि कल मैंने मिस्टर शिमरडा को शिकार खेलते देखा था।

"उन्होंने अपने लिए खरहे के चमड़े की एक टोपी और खरहे के ही चमड़े का एक कालर बना लिया है, जिसे वे कोट के बाहर की ओर बटनों से अटकाए हुए थे। सारे घर में सिर्फ एक ओवरकोट है, जिसे वे लोग बारी-बारी पहनते हैं। और ठण्ड से सबके सब इतना अधिक घबराते हैं कि बिज्जू की तरह अपने उस बिल में घुसे बैठे रहते हैं।"

"सिर्फ उस पगले लड़के को छोड़कर।" जेक ने कहा, "वह कोट पहनता ही नहीं। क्रायीक कह रहा था कि उसपर सर्दी-गर्मी किसीका कुछ भी असर नहीं होता। मेरा खयाल है कि उन्होंने इधर के सब खरहे मार खाए हैं। तभी तो कल अम्ब्रोश मक्का के खेत में, जहां मैं काम कर रहा था, आया और मुझे अपने शिकार किए हुए तीन प्रेरी कुत्ते दिखलाकर बोला कि क्या इनका गोश्त खाया जा सकता है? मारे घिन के मैंने थूक दिया और ऐसा मुंह बनाया कि वह डर जाए, परन्तु उस बन्दे ने तो मुंह बिचका दिया, तीनों कुत्तों को झोले के हवाले किया और वहां से चलता बना।"

दादीजी ने सुना तो घबरा गईं और दादाजी से बोलीं, "क्यों जोसिया, क्या क्रायीक उन गरीबों को प्रेरी-कुत्ते खा लेने देगा, रोकेगा नहीं?"

"क्यों न तुम कल जाकर उन्हें देख आओ, इमेलिन?" दादाजी ने गम्भीर स्वर में कहा।

फुश ने वातावरण को हलका करने की गरज़ से कहा, "प्रेरी-कुत्ते बहुत साफ-सुथरे होते हैं और उनका गोश्त खाने में किसीको एतराज़ नहीं होना चाहिए, परन्तु क्या करें बेचारे, उनका वंश आड़े आता है।"

जब मैंने इसका मतलब पूछा तो उसने खीसें निपोरकर कहा, "नाम
ले ही कुत्ता हो, पर हैं तो चूहा वंश।"

दूसरे दिन सवेरे नीचे उतरकर आया तो रसोईघर में दादीजी और
क एक बड़ी-सी डलिया में खाने-पीने का सामान जमा कर रहे थे।

"अच्छा जेक" दादीजी कह रही थीं, "अब ज़रा उस बूढ़े मुर्गे का तो
ता लगाओ, जिसकी कलगी ठण्ड में ठिठुर गई थी। जहां भी मिले, पकड़-
र उसकी गरदन मरोड़ देना। हम उसे भी साथ लेते चलेंगे। मिसेज़
शमरडा यदि चाहतीं तो पिछली शरद में अपने पड़ोसियों से मुर्गियां मांग-
ूंगकर अभी तक तो मज़े से अपना मुर्गीखाना खड़ा कर लेतीं। लेकिन
मझ में नहीं आता कि उन्होंने ऐसा क्यों नहीं किया? शायद उन्हें सूझा
ही नहीं। मैं स्वयं जब इस नये प्रदेश में आई तो किसीको भी नहीं पह-
ानती थी, लेकिन इतना ज़रूर याद रखा कि चाहे कुछ हो या न हो, घर
ं मुर्गियां तो हर सूरत में होनी ही चाहिए।"

"जो हुकुम मेम साहब!" जेक ने कहा, "लेकिन वह क्रायीक का बच्चा
ूढ़े मुर्गे की एक बोटी भी खाए, यह मुझे फूटी आंखों नहीं सुहाता।" और
ह लम्बे डग भरता उस लम्बोतरे 'सेलार' का भारी दरवाज़ा अपने पीछे
धड़ाम से बन्द करता हुआ वहां से चला गया।

नाश्ता करने के बाद मैं, दादीजी और जेक घोड़ागाड़ी की ठण्ड से
ठिठुरी हुई अगली सीट पर बैठकर शिमरडों के घरौंदे की ओर चले। उनके
घर के पास पहुंचे तो पानी का पम्प चलने की आवाज़ सुनाई दी। मुड़कर
देखा तो एण्टोनिया, सिर पर रूमाल बांधे, अपना पूरा ज़ोर लगाकर पम्प के
हत्थे को चला रही थी और उसके कपड़े हवा में फर-फर उड़ रहे थे। गाड़ी
की आवाज़ सुनी तो उसने मुड़कर देखा, पानी का बरतन उठाया और भागकर
घरौंदे के अन्दर चली गई।

जेक ने दादीजी को सहारा देकर उतारा और कहा कि घोड़ों को
कम्बल ओढ़ाने के बाद वह सामान अन्दर पहुंचा देगा। बर्फ-भरे रास्ते पर
संभल-संभलकर चढ़ते हुए हम घरौंदे के दरवाज़े पर पहुंचे। पास ही बर्फ
और घास में एक चिमनी निकली हुई थी, जिसकी राह अंगीठी का नीला
धुआं बाहर आ रहा था और हवा उसे छितरा रही थी।

दस्तक देने से पहले ही मिसेज़ शिमरडा ने किवाड़ खोल दिए और दादीजी का हाथ पकड़ लिया। आज उन्होंने सदा की तरह 'आइए पधारिए' आदि कुछ नहीं कहा। अपने चिथड़े से लिपटे पांवों को आगे कर, अपनी भाषा में फुर्ती से जाने क्या बोलते हुए उन्होंने तो बस एकबारगी रोना ही शुरू कर दिया। मैंने देखा तो उनकी आंखों में सबके लिए कोसना और शिकायत भरी हुई थी।

मिस्टर शिमरडा अंगीठी के पास एक ठूंठ पर इस तरह सिमटे-सिकुड़े बैठे थे, मानो अपने-आपको हमसे छिपाना चाह रहे हों। युल्का अपने पिता के पांवों के पास ज़मीन पर बिलौटे को गोद में लिए बैठी थी। उसने झांक-कर मेरी ओर देखा, मुस्कराई और अपनी मां की ओर देखकर फिर दुबक गई। एण्टोनिया घर के अंधेरे कोने में बरतन धो रही थी। पगला लड़का घर की एकमात्र खिड़की के पास बोरे की पुआल-भरी गादी पर टांगें पसारे पड़ा था। हमारे अन्दर आते ही उसने दरवाज़े के नीचेवाली देहलीज की सेंध को अनाज भरने का एक बोरा फेंककर बन्द कर दिया। घरौंदे के अन्दर दम घोटनेवाली गरमी और काफी अंधेरा था। अंगीठी के ठीक ऊपर एक जलती हुई लालटेन टंगी थी, जिसकी पीली कुम्हलाई हुई रोशनी चारों ओर फैल रही थी।

दरवाज़े के पीछे कपड़ों से ढके दो पीपे रखे थे। श्रीमती शिमरडा ने बारी-बारी से दोनों के मुंह खोलकर हमें दिखलाया। एक में कुछ आलू थे जो ठिठुरन के कारण सड़ने लगे थे और दूसरे में थोड़ा-सा आटा था। दादीजी हलकान हो उठीं और उन्होंने मुंह ही मुंह में कुछ कहा। लेकिन श्रीमती शिमरडा चिड़चिड़े स्वर में अवज्ञा से हंस दीं, और फिर अलमारी में से कॉफी बनाने का खाली बरतन उठाकर हिलाने लगीं। उस समय उनकी आंखों में स्पष्ट ही प्रतिहिंसा की चमक थी।

दादीजी इस प्रकार विनम्रतापूर्वक बातें करती रहीं मानो उन्हें शिमरडों के घोर अभाव अथवा संकट में पड़ोसियों की सहायता न कर पाने की अपनी असावधानी का भान ही न हो। और तब जेक डलिया उठाए अन्दर आया। यह मानो श्रीमती शिमरडा की सारी शिकायतों और उलाहनों का ठोस और सीधा जवाब था। अब तो उस बेचारी की छाती भर आई; वह

अपने पागल बेटे के पास धरती पर घुटनों में मुंह छिपाकर बैठ गई और फूट-फूटकर रोने लगी। दादीजी ने इसे देखकर भी नहीं देखा और एण्टोनिया को डलिया खाली करने में सहायता देने के लिए पुकारा। टोनी बुरी तरह सकुचाती हुई और बेमन से दादीजी के पास आई। मैंने उसे इस तरह लज्जित और अवसन्न होते पहले कभी नहीं देखा था।

गीले हाथों को अपने स्कर्ट से पोंछकर और दादीजी के हाथ से खाने-पीने का सामान लेते हुए उसने फुसफुसाकर कहा, "मेरी मामेंका बेचारी बहुत दुःखी है, मिसेज़ बरडन, आप उसकी बातों का बुरा न मानें।"

पगला खाने-पीने की चीज़ों को देखकर अपना पेट थपथपाने और मुंह से गरगराहट की धीमी आवाज़ करने लगा। सामान रखकर जेक चला गया था, अब वह आलू का बोरा उठाकर अन्दर लाया। दादीजी ने घबराकर एक क्षण अपने चारों ओर देखा और तब बोलीं, "क्यों एण्टोनिया, बाहर कोई खोह या सेलार नहीं है ? यहां तो सब्ज़ियां रखी नहीं जा सकतीं। और हां, तुम्हारे आलू ठिठुर कैसे गए ?"

"हमारे पास आलू थे ही कहां मिसेज़ बरडन ! डाकखानेवाले मिस्टर बुशी के फेंके आलू उठा लाए थे।" टोनी ने सच-सच बता दिया। कहते-कहते वह दुःखित हो उठी थी।

जेक के बाहर निकल जाने के बाद पगला मारेक धरती पर रेंगता हुआ देहलीज़ के पास पहुंचा और उसने वहां की दरार को फिर बन्द कर दिया। तभी मिस्टर शिमरडा छाया की भांति चुपचाप अंगीठी के पीछे से आए और सामने खड़े हो गए। वे अपने सिर के भूरे बालों को इस तरह सहला रहे थे मानो माथे पर घिरे कुहरे को साफ कर रहे हों। वे हमेशा की तरह साफ-सुथरे कपड़े पहने हुए थे और उनका हरा गुलूबन्द मूंगे की पिन से टंका हुआ था। दादीजी की बांह पकड़कर वे उन्हें अंगीठी के पीछे, कमरे के अन्तिम छोर पर ले गए। वहां दीवाल में एक छोटी-सी गुफा थी—तेल के पीपे जैसा एक छोटा-सा गोल गड़हा ज़मीन के अन्दर खुदा हुआ था। स्टूल पर चढ़कर मैंने अन्दर झांका तो वहां दो-एक रज़ाइयां और पुआल का ढेर पड़ा दिखाई दिया। मिस्टर शिमरडा ने लालटेन से दिखलाते हुए कहा, "युल्का," उनकी आवाज़ धीमी और निराशा से भरी हुई थी,

"युल्का, मेरी एण्टोनिया !"

दादीजी वहां से पीछे हट आईं और बोलीं, "आपका मतलब है कि दोनों लड़कियां वहां सोती हैं ?"

मिस्टर शिमरडा ने सिर झुकाकर हामी भरी।

टोनी अपने पिता की बगल में आ खड़ी हुई और बोली, "फर्श तो बहुत ठण्डा हो जाता है, पर वह जगह गरम रहती है—बिज्जू के बिल की तरह। मुझे वहां सोना अच्छा लगता है। बोहेमिया में मामेंका का बहुत बढ़िया बिस्तरा था और अपने ही कलहंसों के परों से भरे हुए तकिये। जिम, यह तुमने देखा ?" उसने दीवाल से लगा वह संकरा चबूतरा दिखलाया जिसे उनके आने से पहले क्रायीक ने अपने सोने के लिए बनाया था।

दादीजी ने लम्बी सांस लेकर कहा, "सोने के लिए दूसरी जगह है ही कहां ? और वह गरम भी रहती है। ठण्ड तो नहीं ही लगती होगी। आगे अच्छा घर भी ज़रूर मिलेगा एण्टोनिया, और तब इन बुरे दिनों की सिर्फ याद रह जाएगी।"

सारे घर में सिर्फ एक कुर्सी थी। मिस्टर शिमरडा ने दादीजी को उसपर बिठा दिया और अपनी पत्नी को पास ही एक स्टूल पर। वे स्वयं एण्टोनिया के कन्धे पर हाथ रखे सामने खड़े हो गए और मन्द स्वर में बातें करने लगे। एण्टोनिया अनुवाद करती जाती थी। मिस्टर शिमरडा के कहने का आशय यह था कि वे लोग भिखारी नहीं हैं, अपने देश में काफी अच्छी कमाई कर लेते थे और वहां उनका परिवार प्रतिष्ठित समझा जाता था। बोहेमिया से चले तो जहाज़ का किराया चुकाने के बाद भी उनके पास पूरे हज़ार डालर थे। लेकिन एक तो न्यूयार्क में भुनवाने में घाटा हो गया और फिर नेब्रास्का तक का रेल किराया भी बहुत ज़्यादा लग गया। यहां क्रायीक को ज़मीन की कीमत, घोड़े, बैल जोड़ी और मशीन तथा औज़ारों के दाम देने पड़े। सब चुकाते-करते काफी पैसा खर्च हो गया। उन्होंने अन्त में दादीजी से यह बात बहुत ज़ोर देकर कही कि हाथ फिर भी रीते नहीं हैं, पास में कुछ पैसा अब भी है। किसी तरह सर्दियां बीत जाएं तो फिर कोई तकलीफ नहीं। वसन्त में तो एक गाय और कुछ मुर्गियां खरीद लेंगे और बगीचा भी लगा लेंगे और सब अमन-चमन हो जाएगा।

अम्ब्रोश और एण्टोनिया खेती-बाड़ी का काम कर सकते हैं और चाहते भी हैं। लेकिन बर्फ और कड़ाके की ठण्ड के मारे कुछ कर नहीं पाते।

एण्टोनिया ने यह भी बताया कि उसके पिताजी का विचार वसन्त में नया मकान बनाने का है। अम्ब्रोश ने लट्ठे काट भी रखे हैं, परन्तु इस समय तो सब दर्रे की बर्फ में दबे पड़े हैं।

उधर दादीजी उनका हौसला बढ़ाती और उन्हें सलाह देती रहीं, इधर मैं फर्श पर युल्का के पास बैठा उसके बिलौटे को देखता रहा। मारेक भी खिसकता हुआ हमारे पास आ गया था और सबकी निगाहें चुराकर हमें अपनी मुड़ी हुई उंगलियां दिखाने लगा था। अगर अपने बड़ों का डर न होता तो वह हमें तरह-तरह की विचित्र आवाज़ें भी सुनाता—उसे कुत्ते की तरह भौंकना और घोड़े की तरह हिनहिना खूब आता था। वह बेचारा अपनी शारीरिक अक्षमता की बात जानता था, इसलिए सदैव लोगों का मनोरंजन कर उनका मन जीतने के प्रयत्न में लगा रहता।

हम चलने को हुए तब तक मिसेज़ शिमरडा काफी शान्त और सुस्थिर हो गई थीं। एण्टोनिया अनुवाद करने लगती तो वे भी अपनी ओर से एक-दो शब्द उसमें जोड़ देती थीं। वे सीखने के मामले में तेज़ थीं और अंग्रेज़ी मुहावरे सुनकर याद कर लेती थीं। जब हम वहां से आने लगे तो उन्होंने लकड़ी के अपने सन्दूक में से एक बड़ा-सा झोला निकाला। वह मुलायम परों के गद्दे का बना हुआ था। उस झोले में कोई चीज़ ठूंस-ठूंसकर भरी हुई थी। पगले ने झोला देखा तो चटखारे लेने लगा। मिसेज़ शिमरडा ने झोले का मुंह खोलकर अन्दर की वस्तु को हाथ से हिलाया तो विभिन्न गन्धोंवाली उस गुफा में मिट्टी की-सी तेज़ नमकीन गन्ध भर गई। फिर उन्होंने झोले में से चाय का एक कप भरा, उसे एक थैली में डालकर मुंह बन्द किया और वह थैली पूरे आडम्बर के साथ दादीजी की नज़र कर दी।

"पकाना," उन्होंने अपनी टूटी-फूटी अंग्रेज़ी में कहा, "अभी थोड़ा, पका भोत ज़्यादा।" उन्होंने इस तरह हाथ फैला दिए मानो कन का मन हो जाएगा। "भोत अच्छा ! आपका इस मुलुक में नहीं होता। मेरा मुलुक में खाने का सब चीज़ अच्छा।"

"हो सकता है मिसेज़ शिमरडा," दादीजी ने कुछ रुखाई से कहा, "मैं

कुछ कह नहीं सकती, परन्तु खुद मुझे तो आपकी रोटी से मेरी अपनी ही रोटी अच्छी लगती है।"

इसपर एण्टोनिया ने सफाई देते हुए कहा, "यह बहुत बढ़िया चीज़ है मिसेज़ बरडन!" कहते-कहते उसने अपने दोनों हाथ बांध लिए, मानो उस वस्तु की श्रेष्ठता का वर्णन करने के लिए शब्द ढूंढ़े नहीं मिल रहे हों—"जैसाकि अम्मां ने कहा, पकाने पर बहुत बढ़ जाती है। खरहा, मुर्गा, अखनी—किसीके भी साथ पकाइए, हर चीज़ स्वादिष्ट हो जाती है।"

वहां से चले तो दादीजी रास्ते-भर जेक से यही कहती रहीं कि अच्छे ईसाई भी इस बात को कितनी आसानी से भूल जाते हैं कि वे अपने भाइयों के संरक्षक और सहायक हैं।

"इस बात को तो मानना ही होगा जेक, कि हमारे कुछ भाई-बहिन ऐसे भी हैं जिनकी मदद करना बड़ा ही मुश्किल काम है। समझ में नहीं आता कि उनकी मदद कैसे की जाए! उन्हें हर चीज़ की कमी है और सबसे अधिक व्यवहार-बुद्धि की। और मेरे खयाल में यह चीज़ उन्हें कोई दे नहीं सकता। जैसे हमारा जिम्मी यहां खेती-बाड़ी करने और रहने के लिए आया है वैसे ही वे भी। उनके लड़के अम्ब्रोश के बारे में तुम्हारा क्या खयाल है जेक? उसमें काम के प्रति लगन और उमंग है या नहीं?"

"लड़का यों तो मेहनती और उमंगवाला है, पर काइयां भी है। इस दुनिया में जीने के लिए कुछ लोगों को छल-प्रपंच भी करना पड़ता है, परन्तु कुछ ज़रूरत से ज़्यादा प्रपंची और काइयां होते हैं। अम्ब्रोश भी ऐसा ही है।"

उस रात जब दादीजी खाना पकाने लगीं तो हमने मिसेज़ शिमरडा की दी हुई थली को खोलकर देखा। किसी जड़ी के महीन छिलकों जैसा भूरे रंग का पदार्थ उसमें भरा हुआ था। वे छिलके चिड़िया के पंखों से भी हलके थे और उनमें से मिट्टा की-सी तेज़ गन्ध आ रही थी। तरह-तरह की अटकलों के बाद भी हम तय नहीं कर पा रहे थे कि वह पदार्थ प्राणि-जन्य है अथवा वनस्पति-जन्य।

"ज़रूर किसी अनजान पशु का सुखाया हुआ मांस होना चाहिए। सुखाई हुई मछलियां तो नहीं हैं जिम; और न कोई लतर या पौधा ही है।

पता नहीं क्या है। जो भी हो, महीनों से पुराने कपड़ों और पंख-भरे तकियों के साथ रखी चीज़ को खाने की गवाही मेरा मन तो नहीं देता।"

और उन्होंने वह थैली अंगीठी के हवाले कर दी। लेकिन मैंने हाथ में लिया हुआ एक टुकड़ा मुंह में डाल लिया था और उसे चबाने लगा था। उस विचित्र स्वाद को मैं आज भी नहीं भूला हूं। और यह बात तो मुझे कई बरसों के बाद मालूम हो सकी कि जिन भूरे छिलकों को मिसेज़ शिमरडा इतनी दूर से लाई थीं और इतनी हिफाज़त से रखे हुए थीं, वे और कुछ नहीं, सुखाए हुए कुकुरमुत्ते थे। सम्भवतः बोहेमिया के किसी घने जंगल में से उन्हें चुनकर इकट्ठा किया गया था···

११

जब क्रिसमस को एक सप्ताह बाकी रह गया तो हमारे घर में जेक का महत्त्व बहुत बढ़ गया था; क्योंकि शहर जाने और क्रिसमस के लिए सौदा-सुलुफ लाने का सारा काम उसीके ज़िम्मे होता था। दिसम्बर की इक्कीस तारीख को बर्फ गिरने लगी। बर्फ की ऐसी झड़ी लगी थी कि बैठक की खिड़कियों से, जहां मैं बैठा था, पवन-चक्की से आगे कुछ भी दिखाई नहीं देता था; और पवन-चक्की का ढांचा भी बहुत धुंधला-सा दीख रहा था। वह सारा दिन और उसके बादवाली सारी रात बर्फ गिरती रही। ठंड तो इतनी अधिक नहीं थी, पर अंधड़ और तूफान का ज़ोर खूब था। लोगों का बखारघर और पशुशाला तक भी जाना मुश्किल हो गया था। दोनों आदमी रविवार की तरह सारा दिन घर में बैठे और समय बिताने के लिए बूट-जूतों में ग्रीज़ लगाना, पतलून की गैटिसों की मरम्मत, कोड़ों की दुरुस्ती आदि काम करते रहे।

बाईस तारीख के सवेरे दादाजी ने नाश्ते के समय अपनी यह राय ज़ाहिर की कि क्रिसमस का सौदा खरीदने के लिए जेक का ब्लैकहॉक जाना असम्भव ही है। जेक का दावा था कि वह घोड़े पर जा सकता है और सारा

सामान खुर्जियों में रखकर ले आएगा। लेकिन दादाजी किसी तरह राज़ी नहीं हुए। उन्होंने कहा कि सड़कों और रास्तों का पता तक नहीं है और जब पुराना आदमी भटक सकता है तो नये के क्या हाल होंगे। और अन्त में बोले, "तुम अपनी जान जोखों में भले ही डालो, मैं अपने किसी घोड़े को मुसीबत में डालना नहीं चाहता।"

अन्त में यह तय रहा कि बाहरी सामान के बिना घरेलू चीज़ों से क्रिसमस मनाया जाए। मैं युल्का और एण्टोनिया को तस्वीरोंवाली किताबें देना चाहता था। अब तो युल्का भी थोड़ा-बहुत पढ़ लेती थी। दादीजी मुझे भंडार में ले गईं। वह बर्फ हो रहा था। वहां उन्होंने ढूंढ़-खोजकर जिंगाम और दूसरी तरह का मोटा कपड़ा निकाला और मुझे किताब बनाने के लिए दे दिया। दादाजी ने कपड़े के चौरस टुकड़े काटे और मैंने उन्हें सीया। फिर हमने पुट्ठों की जिल्द बनाई, जिल्द पर मैंने चमकीला सूती कपड़ा मढ़ा और उसके ऊपर सरकस का एक रंग-बिरंगा दृश्य काटकर चिपका दिया। पूरे दो दिन खाने के कमरे में मेज़ के आगे बैठा मैं तस्वीरें चिपकाता और युल्का के लिए किताब तैयार करता रहा। घर में कई पुरानी पत्र-पत्रिकाएं थीं, जिनमें प्रसिद्ध चित्रों की रंगीन अनुकृतियां प्रकाशित हुई थीं। मुझे इन अनुकृतियों का उपयोग करने की अनुमति मिल गई थी। मुखपृष्ठ की जगह मैंने 'नेपोलियन द्वारा जोसेफिन को तलाक' नामक चित्र लगाया और बाकी पृष्ठों को बाइबिल की रंगीन चित्रावली और विज्ञापन के रंग-बिरंगे कार्डों से सजा दिया। बाइबिल-चित्रावली और विज्ञापन-कार्ड मैं अपने साथ 'पुराने घर' से लाया था। फ़ुश मोमबत्ती बनाने का पुराना सांचा निकाल लाया और उसने चर्बी से (टैलो से) मोमबत्तियां ढाल दीं। दादीजी ने आदमी और मुर्गों की शकल के कई मीठे केक बना लिए। हमने इन्हें शक्कर की भूरी चाशनी और दारचीनी की लाल बुंदकियों से सजा दिया।

क्रिसमस के एक दिन पहले जेक ने शिमरडों के यहां पहुंचाने का सारा सामान घोड़े की खुर्जियों में भरा और दादाजी के भूरे खस्सी पर सवार होकर चला। जब वह घोड़े पर चढ़ा तो मैंने देखा कि वह अपनी कमर में एक छोटा-सा फरसा भी खोंसे हुए था; और जब उसने दादीजी की ओर भेद-भरे ढंग से देखा तो मैं समझ गया कि उसका विचार मुझे छकाने का

है। फिर तो तीसरे पहर तक मैं बैठक की खिड़की में से आंखें फाड़े देखता रहा। अन्त में मुझे पश्चिमवाली पहाड़ी पर, जहां सूरज की हलकी लाली उभर रही थी, बर्फ में आधे डूबे मक्का के खेत के किनारे-किनारे एक काला धब्बा-सा चलता हुआ दिखाई दिया। मैंने टोपी पहनी और जेक से मिलने के लिए भागा। पोखर के किनारे मेरी उससे भेंट हुई। वह घोड़े की काठी पर देवदार का एक छोटा पेड़ रखे चला आ रहा था। वरजीनिया में वह मेरे लिए क्रिसमस पेड़ काटकर लाने के काम में पिताजी का हाथ बंटाया करता था और भूला नहीं था कि मुझे क्रिसमस का पेड़ कितना अच्छा लगता है।

बैठक के एक कोने में क्रिसमस पेड़ को खड़ा करते-कराते क्रिसमस की सांझ हो गई। रात के भोजन के बाद हम सब वहां आ जुटे, यहां तक कि दादाजी भी उसी कमरे में मेज़ के आगे बैठकर अखबार पढ़ते रहे। बीच-बीच में वे अपनी स्नेह-भरी स्निग्ध दृष्टि से उस पेड़ को देखते जाते थे। देवदार का वह पेड़ कोई पांचएक फुट ऊंचा और बहुत ही सुडौल था। हमने उसकी टहनियों में दादीजी के बनाए मानव और पशु-आकृति के केक, भूनी हुई मक्का के दाने आदि लटका दिए और मोमबत्तियां लगा दीं। फुश ने मोमबत्तियां रखने के लिए गत्ते के ठिये पहले ही बना दिए थे। लेकिन उसकी शोभा और सजावट का असली सामान तो वहां से निकला, जिसकी हमें सपने में भी कल्पना नहीं थी। ओटो अपना ट्रंक उठा लाया, जिसमें चरवाही के ज़माने का उसका सामान रखा था। मैंने उस ट्रंक में पुराने बूट-जूतों, ऐड़ों, पिस्तौलों, पीले चमड़े के रस्सों, कारतूसों और जूतों पर लगाने के मोम के सिवा और कुछ भी नहीं देखा था। लेकिन उसी ट्रंक के अस्तर के नीचे से उसने चमकीले, मोटे कागज़ की कई आकृतियां निकालकर ढेर कर दीं। सभी आकृतियां इतनी बड़ी और मोटी थीं कि उन्हें बिना सहारे के खड़ा किया जा सकता था। ये सब चीज़ें साल के साल उसकी बूढ़ी मां उसे आस्ट्रिया से भेजती रही थी। एक तो कागज़ के फीतों का फूल था; लक-दक पोशाक में तीनों राजा, बैल, गदहा और गड़रिये थे; अस्तबल में बाल यीशु और उन्हें घेरकर गाते हुए देवदूतों का पूरा समूह था, ऊंट और चीते थे, जिन्हें तीनों राजाओं के हब्शी गुलाम थामे हुए थे। इन खिलौनों से सजा

दिए जाने पर हमारा क्रिसमस पेड़ परी-कथा का बोलता-बतियाता पेड़ हो गया। उसकी शाखाओं में किस्से और कहानियां पक्षियों की तरह बसेरा किए बैठी थीं। दादीजी को वह इंजिल के पुरातन ज्ञान-वृक्ष की तरह लग रहा था। हमने उसके नीचे बर्फ की जगह कपास बिछा दी। और बीच में जेक का जेबी आइना रखकर जमी हुई झील बना दी।

इतने बरसों के बाद वे आज भी लैम्प की रोशनी में काम करते हुए मेरे मनश्चक्षुओं के आगे ठीक वैसे ही आ खड़े होते हैं : जेक का वह भारी अनगढ़ नाक-नक्शा, जिसके कारण उसकी मुखाकृति कुछ बिगड़ी और अधूरी-सी लगती थी, ओटो का आधा कान कटा हुआ और चेहरे पर घाव का बीभत्स निशान, जिसके कारण मूंछ के नीचे, ऊपर का होंठ इस बुरी तरह ऐंठ गया था कि उस ओर देखते डर लगता था। हर आपद्-विपद् से सर्वथा अरक्षित वे चेहरे थे। अपने अनगढ़पन और हिंसा के ही कारण वे इतने अधिक सुरक्षाहीन हो गए थे। दुनिया की मार से बचने और लोगों को अपने से दूर रखने के लिए उनके पास सभ्य और संस्कृत तौर-तरीकों की कोई ओट या आवरण नहीं था। जूझने के लिए उनके पास थी केवल शारीरिक शक्ति और दो-दो गुठियल हाथ। ओटो अभी से उन माया-ममताहीन मज़दूरों की श्रेणी में पहुंच गया था, जो सदा भटकते रहते हैं, कहीं स्थिर नहीं होते, शादी-ब्याह करके कभी घर नहीं बसाते, न अपने बच्चे पैदा करने की बात सोचते हैं। और फिर भी वह बच्चों से कितना प्यार करता था!

१२

क्रिसमस के सवेरे मैं उतरकर रसोईघर में आया तो दोनों आदमी सवेरे के अपने काम निपटाकर चले ही आ रहे थे। घोड़ों और सूअरों का दाना-पानी रोज़ हमारे नाश्ते से पहले ही हो जाया करता था। जेक और ओटो ने चिल्लाकर मुझसे 'मेरी क्रिसमस' कहा और अंगीठी पर तवों में रोगनी परांठों को पकते देख आपस में आंखें मिचकारने लगे। दादाजी भी नीचे

आ गए। वे सफेद कमीज़ और अपना रविवासरीय (सण्डे) कोट पहने थे। आज सवेरे की प्रार्थना का क्रम रोज़ से कुछ अधिक देर चला। दादाजी ने सन्त मैथ्यू के उन अध्यायों को पढ़कर सुनाया जिनमें ईसा के जन्म का वर्णन है। सुनते-सुनते मुझे लगा जैसे यह अभी हाल की, बस कल की ही घटना हो। दादाजी ने परमात्मा को पहले क्रिसमस के लिए और तब से संसार के लिए उसका जो महत्त्व और उपादेयता रही है उस सबके लिए धन्यवाद दिया। हमारे लिए भोजन और विश्राम के साधन जुटाने के लिए उन्होंने भगवान का आभार माना; और उन्होंने बड़े शहरों में रहनेवाले गरीबों और दुखियों के लिए भी प्रार्थना की, क्योंकि उन्हें जीवन-धारण के लिए हमारी अपेक्षा कहीं कड़ा संघर्ष करना पड़ता है। दादाजी की प्रार्थनाएं प्रायः मनोरंजक हुआ करती थीं। अभिव्यक्ति का उनका ढंग बड़ा ही सरल और प्रभावोत्पादक था। मितभाषी होने के कारण उनके शब्दों में एक खास तरह का ज़ोर होता था—वे निरन्तर उपयोग के कारण घिसे-पिटे और शिथिल शब्दों जैसे नहीं होते थे। प्रार्थनाओं से उनके विचारों और मनःस्थिति का तुरत पता चल जाया करता था; किसी वस्तु के बारे में उनकी क्या राय अथवा क्या दृष्टिकोण है यह भी हम उनकी प्रार्थनाओं से मालूम कर लिया करते थे।

नाश्ते में आज रोगनी परांठे और गुलमे थे। खाते समय जेक ने बताया कि क्रिसमस के उपहार पाकर सारा शिमरडा परिवार कितना खुश हो गया था। यहां तक कि अम्ब्रोश भी नाराज़ी भुलाकर क्रिसमस पेड़ काटने में मदद देने के लिए दर्रे तक उसके साथ आया था। बाहर हलका भूरा धुंधलका छाया हुआ था, आसमान में घने बादलों की धूम मची थी और कभी-कभी हिमपात होने लगता था। छुट्टियों के दिनों आम तौर पर बखार-घर में कुछ न कुछ करने को रहता ही था, सो दोनों आदमी दुपहर होने तक वहीं जुटे रहे। उसके बाद जेक मेरे साथ डोमिनो[१] खेलने लगा और ओटो देश में अपनी मां को चिट्ठी लिखने बैठ गया। उसका कहना था कि क्रिसमस के दिन वह कहीं भी क्यों न रहे और चिट्ठी लिखे कितने ही दिन क्यों न हुए हों, अपनी मां को एक चिट्ठी ज़रूर लिखता है। पूरी दुपहरिया-

१. अट्ठाईस मुहरों से खेला जानेवाला एक अमरीकी खेल।

भर वह खाने के कमरे में बैठा लिखता रहा। थोड़ी देर लिखता फिर मुट्ठियां मेज़ पर रखे मोमजामे के मेज़पोश पर बनी आकृतियों को बैठा घूरा करता। अपनी भाषा में बोलने और लिखने का काम उसे इतना कम पड़ता था कि ज़रूरत होने पर ये दोनों ही काम वह सहज भाव से कर नहीं पाता था। एक-एक शब्द उसे याद करके बोलना अथवा लिखना पड़ता था; और काफी प्रयत्न के बाद ही उसे अपनी भाषा का उपयुक्त शब्द याद हो पाता था।

चार बजे के लगभग मिस्टर शिमरडा हमसे मिलने के लिए आए। वे खरहे की खाल की टोपी, उसीका कालर और अपनी पत्नी द्वारा बुने हुए नये दस्ताने पहने थे। वे हमें धन्यवाद देने के लिए आए थे—उन उपहारों के लिए जो हमने भेजे थे और उस दया-माया के लिए जो दादीजी उनके परिवार के साथ करती रही थीं। जेक और ओटो भी आ गए और हम सब अंगीठी के आगे रसोईघर में बैठ गए और सर्दियों की तिपहरिया का मज़ा लेते हुए गपशप करने लगे। दादाजी के घर के सुखद वातावरण और सुरक्षा की अनुभूति से मिस्टर शिमरडा बहुत अधिक प्रभावित हुए। अपने घरौंदे की भीड़-भाड़ और शोरगुल के कारण मिस्टर शिमरडा का शायद यह विश्वास हो चला था कि इस धरती पर शान्ति और व्यवस्था का नाम भी नहीं बचा है, या यदि कहीं है तो सिर्फ उस पुरानी दुनिया में जिसे वे बहुत पीछे छोड़ आए थे। लकड़ी की झुलनकुर्सी की पीठ से सिर टिकाए, उसके हत्थों पर आराम से हाथ रखे वे निश्चल और निष्क्रिय बैठे रहे। उनके चेहरे पर थकावट और प्रसन्नता का ऐसा मिला-जुला भाव था जो आम तौर पर पीड़ा से मुक्ति पाने के बाद रोगियों के चेहरों पर देखने को मिलता है। दादीजी ने यह कहकर कि आप इतनी दूर ठण्ड में चलकर आए हैं, उन्हें वरजीनिया एपलब्राण्डी का एक गिलास बड़े आग्रह के साथ पिला दिया था। उस मादक पेय से उनके गालों पर हलकी लाली उभर आई थी और नाक-नक्शा ऐसा पारदर्शी लग रहा था मानो सीप तराशकर बनाया गया हो। वे अधिकतर मौन ही रहे और ज़्यादा मुस्कराए भी नहीं—परम प्रसन्न और सन्तुष्ट बैठे रहे।

अंधेरा होते ही और लैम्प लाए जाने से पहले, मैंने क्रिसमस पेड़ की

मोमबत्तियां जलाने के लिए पूछ लिया। उनकी पीली लौ में आस्ट्रिया के वे सारे रंगीन खिलौने जैसे सजीव हो उठे और हरी टहनियों में दुबके बोलने-से लगे। मिस्टर शिमरडा चुपचाप अपनी जगह से उठे, हाथों से सलीब का चिह्न बनाया और क्रिसमस पेड़ के सामने घुटनों के बल बैठकर धीरे से अपना सिर झुका दिया। उनका लम्बा शरीर मुड़कर अंग्रेज़ी के 'एस' (S) अक्षर जैसा हो गया था। मैंने दादीजी की ओर देखा तो वे आशंका से दादा-जी की ओर देख रही थीं। धर्म के मामले में दादाजी बड़े ही अनुदार थे और बेलाग बात कहकर प्रायः लोगों की भावनाओं को चोट पहुंचा दिया करते थे। क्रिसमस पेड़ को लेकर अभी तक तो ऐसी कोई बात हुई नहीं थी—वह सजा-संवरा कमरे के एक कोने में खड़ा था। लेकिन अब एक आदमी उसके आगे झुका हुआ था, बाइबिल की दृश्यावलीवाले खिलौने उसकी टहनियों में सजे हुए थे, मोमबत्तियां जल रही थीं—यह रोमन कैथोलिक वातावरण दादाजी के प्रोटेस्टैण्ट मन को नहीं भी सुहा सकता था। परन्तु आज दादाजी ने अपूर्व संयम और सहिष्णुता का परिचय दिया। उन्होंने अंगुलियों के छोर भौंह से छुआकर अपना रजत-धवल सिर प्रोटेस्टैण्ट ढंग से झुका-भर दिया।

मि० शिमरडा से हमने रात में भोजन करके जाने का आग्रह किया तो वे तुरत राज़ी हो गए। जब मेज़ पर खाने बैठे तो मि० शिमरडा मुदितमन हम लोगों के चेहरों की ओर देखने लगे। जब उनकी गहन दृष्टि मुझपर पड़ी तो लगा जैसे वे वर्तमान को भेदकर मेरे भविष्य को भी देख रहे हों—जीवन के उस भावी पथ को भी जिसका पथिक मुझे बनना था।

नौ बजे मिस्टर शिमरडा अपने घर जाने के लिए उठ खड़े हुए। उन्होंने हमारी एक लालटेन जलाई, अपना ओवरकोट पहना और फरवाली कालर को गले में लगाया। फरवाली टोपी को कांख में दाबे, लालटेन को हाथ में लिए वे गलियारे में खड़े हो गए और बारी-बारी हम सबसे हाथ मिलाने लगे। दादीजी के हाथ पर वे हमेशा की तरह झुक गए और अत्यन्त धीमे स्वर में बोले, "भली औरत !" मेरे ऊपर उन्होंने सलीब का चिह्न बनाया, अपनी टोपी पहनी और रात के अंधेरे में चल दिए। जब हम लौटकर बैठक में आए तो दादाजी ने मेरी ओर गौर से देखते हुए शान्त स्वर में कहा, "अच्छे लोगों की प्रार्थनाएं हमेशा अच्छी ही होती हैं।"

१३

क्रिसमस के बादवाले सप्ताह में बर्फ पिघलने लगी। नया दिन आते-आते तो चारों ओर कीच-कांदों हो गया और पवन-चक्की तथा बखारघर के बीचवाली नाली में मटमैला पानी बहने लगा। सड़क के दोनों किनारों पर मुलायम काली मिट्टी के चकत्ते दिखाई देने लगे। मैंने अपने ज़िम्मे के काम —कोयले और लकड़ी रसोईघर में पहुंचाना एवं पानी भरना आदि—फिर से आरम्भ कर दिए। तीसरे पहर मैं बखारघर चला जाता और वहां जेक को 'हथघूमन' (हैण्ड शेलर) की सहायता से भुट्टे सेमक्का के दाने छुड़ाते देखा करता।

इन्हीं दिनों एक दिन सवेरे एण्टोनिया और उसकी माताजी अपने बूढ़े घोड़े पर सवार होकर हमारे यहां मिलने के लिए आईं। मिसेज़ शिमरडा पहली ही बार हमारे घर आई थीं। उन्होंने हमारे यहां की एक-एक चीज़ गलीचे, परदे, फरनीचर—सभी कुछ छू-छूकर देखा और अपनी बेटी के आगे शिकायत-भरे ईर्ष्यालु स्वर में राय ज़ाहिर करती रहीं। रसोईघर में अंगीठी पर पीछे की ओर लोहे का एक बरतन रखा था। उन्होंने उसे उठा लिया और बोलीं, "आपके पास कई, हमारे पास एक भी नहीं।" और जब दादीजी ने वह बरतन उन्हें दे दिया तो मुझे ज़रा भी अच्छा नहीं लगा। मैं सोचता रहा, मन की ऐसी कमज़ोरी भी किस काम की।

भोजन के बाद तश्तरियों की धुलाई में हाथ बंटाते समय मिसेज़ शिमरडा ने अपने सिर को झटकते हुए कहा, "आपके पास पकाने का भोत सामान। आपके जितना मेरे पास भी हो तो भोत बढ़िया पकाऊं।"

वह बड़ी ही घमण्डिन और शेखीबाज़ औरत थी और इस संकट में भी उसकी अकड़ कम नहीं हुई थी। उसकी मगरूरी ने मुझे इतना नाराज़ कर दिया कि एण्टोनिया तक से जी खट्टा हो गया और जब उसने अपने पिताजी के बीमार होने की बात कही तो मैं उसे दिलासा भी न दे सका, उलटे जी जलानेवाली कड़ी-कड़वी बातें सुना गया।

"मेरे बापू का मन उदास; खोए-खोए, बीमार। अपने वतन के लिए

झुरते हैं। इधर दिलरुबा बजाते ही नहीं। उधर देश में शादियों में, नाच में हर वक्त बजाया करते थे। बजाने को कहती हूं तो माथा हिला देते हैं। कभी दिलरुबा पेटी में से निकालकर गोद में रख लेते हैं और अंगुलियों से टुनटुनाया करते हैं, पर बजाते नहीं। उन्हें यह देश ज़रा भी पसन्द नहीं।"

"जिन्हें यह देश पसन्द नहीं वे अपने देश में ही क्यों नहीं रहते ! हमने तो किसीसे आने को कहा नहीं।" मैंने लताड़ सुनाई।

"वो कब्भी आने को राज़ी नहीं थे।" उसने तमककर कहा, "पर मामेंका हाथ धोकर पीछे पड़ गई। उठते-बैठते एक ही रट, 'अमरीका बड़ा मुलुक; भोत रूपिया, छोरों के लिए भोत ज़मीन, छोरियों के लिए भोत रिश्ते।' पुराने दोस्तों को छोड़ते मेरे बापू की छाती फटी जाती थी ! रमतूला बजानेवाला तो खास जिगरी दोस्त था। साथ खेले, साथ पढ़े, साथ गाया और साथ बजाया। सब वहीं रह गए। बापू के आंसू ही नहीं थमते थे। पर मेरी मामेंका की वही रट, 'अम्ब्रोश अमीर हो, गोल के गोल पशुओं का मालिक हो !' "

"तुम्हारी मां दूसरों की चीज़ें हड़पना चाहती है।" मैंने गुस्सा होकर कहा।

वह भी बिगड़ उठी और तुर्की-ब-तुर्की जवाब दिया, "तुम्हारे दादा अमीर हैं। मेरे बापू की मदद क्यों नहीं करते ? अम्ब्रोश जल्दी ही कमाने लग जाएगा, मालदार हो जाएगा, पाई-पैसा सब चुका देगा। बहुत होशियार है हमारा अम्ब्रोश। उसीके भरोसे तो अम्मां यहां आई हैं।"

वे लोग अम्ब्रोश को जाने क्या समझते थे। हर व्यक्ति उसीके नाम की माला जपा करता। मां-बेटी जब देखो तब उसकी हां में हां मिलाया करतीं। और वह था एक ही पाजी, मां और बहिन से बुरी तरह पेश आता और अपने बाप की ज़रा भी इज़्ज़त नहीं करता था। घर में बूढ़े को कोई पूछता नहीं था। अम्ब्रोश और उसकी मां अपना मनचाहा करते थे। एण्टोनिया ज़रूर अपने पिता को चाहती थी और निस्सन्देह सबसे अधिक, परन्तु वह अपने बड़े भाई से दबती भी थी।

आखिर एण्टोनिया और उसकी माताजी अपने मरियल घोड़े पर सवार होकर विदा हुईं। हमारा लोहे का बरतन वे लेती गईं। जब तक वे पहाड़ी

की ओट न हो गईं, मैं खड़ा देखता रहा। फिर मुड़कर दादीजी से बोला, "मैं तो मनाता हूं कि वह खूसट, चोट्टी, हर जगह नाक घुसेड़नेवाली बुढ़िया हमारे यहां फिर कभी न आए।"

दादीजी ओटो के मोज़े की मरम्मत कर रही थीं। एक छेद के आर-पार चमकीली सुई निकालते हुए उन्होंने 'च-च' की आवाज़ की और बोलीं, "बुढ़िया नहीं है वह बेचारी; हां, तुम्हें बूढ़ी लगती है। उसके न आने का मुझे कोई दुःख न होगा। पर बेटे, तुम नहीं जानते कि गरीबी आदमी से क्या नहीं करवा लेती ! औरत सब कुछ बर्दाश्त कर लेती है, पर अपने पेट के जायों का भूखों मरना और अभावग्रस्त होना उससे नहीं सहा जाता। यह दर्द उससे चोरी, भीख, नोच-खसोट सभी कुछ करवा लेता है। अच्छा, अब ज़रा राजा बेटे की तरह मुझे 'डेविड वंश के राजकुमार' वाला अध्याय तो पढ़कर सुनाओ और उन बोहेमियों को थोड़ी देर के लिए भूल जाओ।"

वैसा खुला मौसम तीनएक सप्ताह तक रहा। बाड़े के जानवर बहुत तेज़ी से मक्का खा-खाकर मुटा रहे थे। दोनों आदमी मक्का के दाने छील भी नहीं पाते थे कि पशु उन्हें चट कर जाते। हमें यही सन्तोष था कि वे जल्दी तैयार हो जाएंगे और बाज़ार में अच्छे दामों पर बिकेंगे। एक दिन सवेरे दो जवान सांड मस्ता उठे। उनमें से एक का नाम ग्लैडस्टन और दूसरे का ब्रिघम यंग था। उन्होंने सोचा कि वसन्त आ गया है, आओ, थोड़ी देर कुलेल कर लें। दोनों को बाड़े में अलग-अलग रखा गया था और बीच में कंटीले तार लगे थे। शुरू उन्होंने किया सींग मिलाने से और जल्दी ही गरमा उठे। बात की बात में गुस्सा आ गया और भिड़न्तें होने लगीं। रंभाते, डकराते, खुरों से मुलायम मिट्टी को खूंदते, आंखों से चिनगारियां बरसाते, दुम उठाए दोनों खटाखट भिट्टियां लड़ाने लगे। वे सिर नीचा किए दूर तक पीछे हटते चले जाते और फिर बिजली की तरह एक-दूसरे की ओर लपकते थे। सिरों की भिड़न्त से खटाक की जो आवाज़ निकलती थी वह हमें सुनाई दे रही थी और उनके डकराने से रसोईघर की अलमारी में रखे बरतन तक खड़खड़ा उठते थे। यदि उनके सींग कटे न होते तो दोनों ने एक-दूसरे को कभी का लहूलुहान कर दिया होता। उनकी देखादेखी बाड़े के दूसरे बछड़े भी आपस में भिट्टियां मारने और सींग लड़ाने लग गए। अब

तो सांडों-बैलों के उस दंगल को रोकना नितान्त आवश्यक हो गया। फुश ने एक डंडा उठाया और बाड़े में गुत्थमगुत्था हो रहे बैलों के बीच में कूद पड़ा। हम किनारे खड़े उसे शाबाशी देते रहे। अन्त में डंडे से मार-मारकर उसने दोनों सांडों को अलग-अलग कर दिया।

२० जनवरी को मेरी ग्यारहवीं वर्षगांठ पड़ी और उसी दिन सर्दियों का बड़ा तूफान शुरू हुआ। सवेरे जब मैं नाश्ते के लिए नीचे आया तो ओटो और जेक सिर से पांव तक बर्फ से सने चले आ रहे थे मानो 'स्नो मेन' हों अथवा आटे के कुठले से निकलकर आए हों। कपड़ों पर की बर्फ झाड़ने के लिए वे हाथों को फटकारते और पांवों को पीटते जा रहे थे। मुझे देखा तो दोनों ही ठठाकर हंस पड़े और चिल्लाकर बोले, "इस बार तुम्हारी सालगिरह पर बढ़िया तोहफा आया है जिम ! खास आर्डर देकर बहुत बड़ा और ज़ोरदार बर्फीला तूफान बुलवाया गया है।"

बर्फ का अन्धड़ सारे दिन चलता रहा। यह कहना गलत होगा कि बर्फ गिरती रही, असल में तो वह आसमान से उलीची जा रही थी, मानो पंख-भरे हज़ारों-हज़ार गदेलों का मुंह एकसाथ खोलकर उलट दिया गया हो। उस दिन दुपहर के बाद दोनों आदमियों ने रसोईघर को बढ़ईखाना ही बना दिया था। देर तक काम करके उन लोगों ने लम्बे हत्थोंवाले काठ के दो बड़े-बड़े बेलचे बना डाले। तूफान के कारण न तो दादीजी घर से बाहर निकल सकीं और न मैं। उस दिन मुर्गियों को दाना डालने का काम जेक ने ही किया और बहुत थोड़े-से अण्डे घर में ला सका।

दूसरे दिन हमारे आदमियों को बखारघर तक पहुंचने के लिए सवेरे से दुपहर तक बर्फ खोदनी पड़ी—और बर्फ तब भी गिरती ही जा रही थी। दादाजी को नेब्रास्का में रहते दस बरस हो गए थे और उनका कहना था कि ऐसा भयंकर तूफान पहले कभी नहीं आया था। भोजन के समय उन्होंने कहा कि हमारे लिए जानवरों के बाड़े तक पहुंचने की कोशिश करना बेकार ही होगा। एक-आध दिन जानवरों को दाना-पानी न भी मिले तो कोई हर्ज नहीं, वे इतने मोटे और पुष्ट हैं कि एक दिन भूखे रह लेंगे। हां, कल ज़रूर उनके सांटे-चारे का बन्दोबस्त करना होगा और हमें उनके नल भी पिघला देना चाहिए जिससे वे पानी पी सकें। जानवरों का बाड़ा हमें दिखाई नहीं

दे रहा था, लेकिन इतना हम जानते थे कि सारे बैल-बछड़े वहीं सिमटे-सिकुड़े खड़े होंगे। वे दोनों मस्त सांड अब तक ज़रूर शान्त हो गए होंगे और गरमी पाने के लिए एक-दूसरे की पीठ से पीठ सटाए खड़े होंगे। "ससुरों की सारी मस्ती झड़ गई होगी।" फ्रुश ने उल्लास-भरे स्वर में कहा था।

दिन दुपहर चढ़े तक भी मुर्गियों की आवाज़ नहीं सुनाई दी थी। भोजन के बाद जेक और ओटो अलसाकर उठे और फिर बर्फ की खुदाई करने में जुट गए। देर तक खुदाई करने के बाद उन्होंने घर से लेकर मुर्गीखाने तक बर्फ के अन्दर एक सुरंग-सी बना दी। उसकी दीवालें इतनी ठोस थीं कि मैं और दादीजी आराम से मुर्गीखाने तक आ-जा सकते थे। जब हम मुर्गीखाने पहुंचे तो सारी मुर्गियां सो रही थीं; उन्हें शायद यह भ्रम हो गया था कि रात हो गई है; सिर्फ एक बड़ा-बूढ़ा मुर्गा जाग रहा था और पानी के बरतन में बर्फ के डले को अपनी चोंच से कुरेद रहा था। जैसे ही हमारी लालटेन की रोशनी मुर्गियों की आंखों पर पड़ी वे जाग गईं और कुड़-कुड़ करती हुई पंख फड़फड़ाकर भागीं, जिससे पूरे मुर्गीघर में उनके डैने बिखर गए। नन्हें सिर-वाली चितकबरी गीनी मुर्गियों को पकड़े जाने से खास चिढ़ थी, इसलिए वे चिंचियाती और अपनी गन्दी चोंच से बर्फ की दीवाल पर ठोंके मारती हुई सुरंग की राह बाहर की ओर भाग चलीं। इस तरह पशु-पक्षियों की देखभाल के काम पांच बजे जाकर खत्म हुए जबकि उन्हें दुबारा शुरू करने का समय हो गया था। ऐसा अनोखा और अस्वाभाविक दिन था वह।

१४

बाईस तारीख के सवेरे भिनसारे की सुखद नींद में मुझे झटका-सा लगा और मैं एकबारगी ही जाग पड़ा। आंखें खोलने से पहले ही यह समझ में आ गया कि ज़रूर कोई बात हुई है। रसोईघर में उत्तेजित स्वर में बातें करने की आवाज मुझे सुनाई दी। दादीजी का तीखा स्वर सुना तो समझते देर

न लगी कि वे अपने आपे में नहीं हैं। किसी नये संकट का आभास पाकर मैं खुशी से भर उठा। जल्दी-जल्दी कपड़े पहनते हुए सोचता जा रहा था कि क्या हो सकता है : बखारघर में आग लग गई, बैल-बछड़े ठंड में ठिठुरकर मर गए या कोई पड़ोसी तूफान में भटक गया ?

नीचे रसोईघर में दादाजी अपने दोनों हाथ पीठ पर बांधे अंगीठी के आगे खड़े थे। जेक और ओटो बूट उतारे अपने गरम मोज़ों को मल रहे थे। उनके कपड़ों और जूतों में से भाप निकल रही थी और वे थके हुए दिखाई देते थे। अंगीठी के पीछेवाली बेंच पर एक आदमी कम्बल ओढ़े सो रहा था। दादीजी ने मुझे खानेवाले कमरे में जाने का संकेत किया। बेमन से आना पड़ा। वे रसोईघर से तश्तरियां लाकर मेज़ पर रख रही थीं। अपने दोनों होंठ ज़ोर से भींचे वे बीच-बीच में 'हे प्रभु, तू ही राखनहार है !' 'तू ही घट-घटवासी है !' जपती जाती थीं।

इतने में दादाजी भी खाने के कमरे में आ गए और मुझसे बोले, "जिम्मी, आज इतना ज़्यादा काम है कि हम सवेरे की प्रार्थना कर नहीं सकेंगे। कल रात मिस्टर शिमरडा मर गए और उनका परिवार मुसीबत में पड़ गया। आधी रात के करीब अम्ब्रोश भागा-भागा आया और जेक तथा ओटो को अपने साथ ले गया। बेचारों की सारी रात खराब हो गई और थक भी गए। अब तुम पूछाताछी करके उन्हें दिक मत करना। उधर बेंच पर अम्ब्रोश सो रहा है।" फिर उन्होंने ज़ोर से पुकारा, "आओ बच्चो, नाश्ता कर लिया जाए।"

कॉफी का एक-एक प्याला पी लेने के बाद जेक और ओटो की ज़बानें खुलीं और वे दादीजी के इशारों को अनदेखा कर उत्तेजित स्वर में बातें करने लगे। मैंने मुंह ज़रूर नहीं खोला, परन्तु कान लगाए उनकी एक-एक बात ध्यान से सुनता रहा।

"जी नहीं;" दादाजी के एक सवाल के जवाब में फुश ने कहा, "बन्दूक चलने की आवाज़ तो किसीने भी नहीं सुनी। अम्ब्रोश बाहर बैलजोड़ी की मदद से रास्ता ठीक कर रहा था। उसकी मां और बहिनें गुफा में बन्द थीं। अम्ब्रोश अंधेरा हो जाने पर लौटा। उसने तो कुछ देखा नहीं, परन्तु एक बैल रस्सी तुड़ाने लगा और गोठ में से साफ भाग गया। रस्सी की

रगड़ से अम्ब्रोश की हथेलियां छिल गईं। फिर वह लालटेन लेकर आया और देखा तो बुढ़ऊ मरे पड़े थे। जिस हालत में उसने देखा था ठीक उसी हालत में हमने भी बुढ़ऊ को पड़े देखा।"

"गरीब, बेचारा!" दादीजी ने हाय-हाय करते हुए कहा, "समझ में नहीं आता कि उसने ऐसा क्यों किया। आदमी बहुत समझदार था और जान-बूझकर किसीको तकलीफ देना नहीं चाहता था। फिर क्यों आपा खो बैठा और हमें अकेले में फंसा गया?"

"इतना तो मैं कह सकता हूं मिसेज़ बरडन कि वह अपने आपे में ही था।" फुश ने कहा, "मुझे तो पागलपन का कोई आसार नज़र नहीं आया। बूढ़ा अपने सारे काम सलीके से करता था और मरा भी पूरे सलीके से। दुपहर के खाने के बाद उसने हजामत बनाई और जब लड़कियां तश्तरियां धो चुकीं तो उसने बाकायदा हाथ-मुंह धोए। फिर उसने साफ कमीज़ और धुले मोज़े पहने, दोनों लड़कियों को चूमा और बन्दूक लेकर यह कहता हुआ बाहर चला गया कि खरहों का शिकार करने जा रहा है। लगता है कि वहां से वह बखारघर में गया और अपने-आपको गोली मार ली। बैलों को बांधने की जगह के पास, दीवाल से लगा हुआ सोने का जो चबूतरा है और जिसपर वह हमेशा सोया करता था, वहीं वह पड़ा था। जब हमने देखा तो सफाई और सलीके में सिर्फ इतनी-सी कसर रह गई थी कि" फुश की भौंहों में बल पड़ गए और वह एक क्षण हिचकिचाया, "मौत के बाद की गन्दगी का शायद उसे पहले से खयाल नहीं हो पाया था। कोट उसका खूंटी पर टंगा था, जूते बिस्तरे के नीचे रखे थे। रेशमी गुलूबन्द को, जिसे वह हमेशा लपेटे रहता था, उसने ढंग से तहाकर रख लिया था और मूंगे की पिन उसमें आर-पार खोंसी हुई थी। उसकी कमीज़ का गला पीछे की ओर मुड़ा हुआ था और बांहें लौटी हुई थीं।"

"मेरी तो समझ में नहीं आता कि उसने यह सब किया कैसे?" दादी-जी बार-बार यही कहे जा रही थीं।

ओटो उनके आशय को ठीक से समझ नहीं पाया और बोल उठा, "करने में लगता ही क्या है जी! करवट के बल लेट रहे, नली दोनों हाथों से पकड़कर मुंह में लगाई और एक पांव ऊपर तक लाकर उसके अंगूठे से

मे–५

घोड़ा दबा दिया। कुल जमा इतनी-सी तो बात है, जिसे उसने बहुत आसानी से कर डाला।"

"पता नहीं, यही किया या और कुछ!" जेक ने निठुरता से कहा, "मुझे तो किसी तरह यकीन नहीं आता।"

"मतलब क्या है तुम्हारा, जेक?" दादीजी ने किंचित् कठोर स्वर में पूछा।

"बात यह है मेम साहब, कि क्रायीक की कुल्हाड़ी मुझे चरनी के नीचे पड़ी मिली। मैंने उठा ली और नापकर देखा तो वह बूढ़े के मुंह पर जो घाव था उसमें बिलकुल फिट बैठती थी। क्रायीक पास ही चोर की तरह दुबका हुआ था। वह एकदम पीला पड़ गया था और कांप रहा था। मुझे घाव और कुल्हाड़ी का मुआयना करते देख रिरिया उठा, 'भगवान के लिए ऐसा मत करो!' जब मैंने यह कहकर डपट दिया कि ज़रा नाप तो लेने दे तो वह चूहे की तरह चिंचियाता, दोनों हाथ मलता और यह कहता हुआ बाहर की ओर भाग गया, 'हाय राम, अब वे मुझे फांसी लटका देंगे, ज़रूर फांसी चढ़ा देंगे।'"

फुश जल्दी से बोल उठा, "क्रायीक का दिमाग फिर गया है और जेक, तेरा भी। क्रायीक के हाथों मारे जाने के लिए बूढ़ा इतनी तैयारियां कभी नहीं करेगा। तेरी बात का असलियत से मेल नहीं बैठता। जब अम्ब्रोश ने देखा तो बन्दूक बूढ़े के पास ही पड़ी थी।"

"क्या क्रायीक बन्दूक को वहां रख नहीं सकता?" जेक ने पूछा।

दादीजी नाराज़ हो उठीं और बोलीं, "आत्महत्या पर हत्या का रंग चढ़ाने की कोशिश मत कर जेक। हम योंही काफी मुसीबत में फंस गए हैं। लगता है, ओटो ने जासूसी कहानियां सुना-सुनाकर तेरा दिमाग खराब कर दिया है!"

दादाजी ने उन्हें शान्त करते हुए कहा, "नाराज़ क्यों होती हो इमेलिन, हकीकत का पता लगाना बहुत आसान है। यदि मिस्टर शिमरडा ने बन्दूक मारकर आत्महत्या की है तो गोली आर-पार निकलनी चाहिए और सिर में भी छेद होगा।"

"हां, मिस्टर बरडन, है।" ओटो ने ज़ोर देकर कहा, "मैंने पास के खम्भों

पर बालों के गुच्छे चिपके देखे थे और छत में पुआल लगा हुआ था। इसमें तो कोई शक नहीं कि वे बन्दूक की गोली से ही उड़कर वहां लगे थे।"

अन्त में दादीजी ने कहा कि मैं भी तुम्हारे साथ शिमरडों के यहां चलूंगी।

"चलकर क्या करोगी? ब्लैकहॉक से जब तक कोरोनर नहीं आ जाता कोई शव को छू भी नहीं सकता। और मौसम का जो हाल है उसे देखते हुए तो उसके यहां पहुंचने में कई दिन लग जाएंगे।"

"कुछ रसद पहुंचा दूंगी और उन बेचारियों को थोड़ा दिलासा दे दूंगी। बड़ी लड़की को वे बहुत प्यार करते थे; और वह भी अपने बाप का दाहिना हाथ थी। अन्त समय भी वे उसीके बारे में सोचते रहे होंगे। हाय, इस निठुर दुनिया में बेचारी को बाप अकेला छोड़ गया।" दादीजी ने अम्ब्रोश की ओर दबी निगाहों से देखते हुए कहा, जो उठ आया था और रसोईघर की मेज़ पर बैठा नाश्ता कर रहा था।

फुश करीब-करीब सारी रात ठण्ड में रहा था, फिर भी पादरी और कोरोनर को बुला लाने के लिए ब्लैकहॉक जाने को तैयार हो गया। दादाजी का भूरा खस्सी हमारा सबसे बढ़िया घोड़ा था। वह उसीपर जा रहा था। सारी सड़कें बिलकुल बन्द पड़ी थीं, लेकिन फुश को विश्वास था कि वह अपना रास्ता खोज ही लेगा।

मोज़े पर मोज़ा चढ़ाते हुए उसने दादीजी से कहा, "आप मेरी ज़रा भी चिन्ता न करें, मिसेज़ बरडन! दिशाओं का अन्दाज़ तो मैं सूंघकर लगा लिया करता हूं और नींद की भी अपने राम को कोई खास ज़रूरत नहीं होती। मुझे फिक्र अगर कोई है तो अपने भूरे घोड़े की। यह मुश्किल मंज़िल बेचारे से बर्दाश्त न होगी और ज़रूर टूट जाएगा।"

"यह समय घोड़े की नहीं, अपनी फिक्र करने का है ओटो। अपनी खूब हिफाज़त करना और स्टीवेन्स की विधवा के यहां खाना खा लेना। वह बेचारी भली औरत है और तुम्हारी अच्छी खातिर करेगी।"

फुश चला गया और मैं अम्ब्रोश के पास रह गया। आज मैंने उसका एक नया ही रूप देखा! उसकी आस्था और भक्ति-भाव देखकर चकित रह गया। बड़े से बड़ा भक्त भी इतनी श्रद्धा और लगन से शायद ही पूजा-

प्रार्थना करता होगा। पूरा सवेरा बीत गया लेकिन वह मुंह से एक शब्द भी नहीं बोला। माला हाथ में लिए, मनकों पर आंखें गड़ाए, कभी बोलकर और कभी मौन वह बराबर प्रार्थना करता रहा। हाथ उसके सिर्फ तभी उठते थे जब वह सलीब का चिह्न बनाता था। कई बार तो बेचारे को नींद के झोंके आ जाते, फिर चौंककर जाग पड़ता और पुनः प्रार्थना करने लग जाता था।

जब तक बर्फ को पीट-पाटकर सड़क नहीं बनाई जाती, शिमरडों के घर तक घोड़ागाड़ी पहुंच नहीं सकती थी। और सड़क बनाना एक पूरे दिन का काम था। इसलिए दादाजी ने घोड़े से ही जाने का फैसला किया। वे अस्तबल से एक बड़े काले घोड़े पर सवार घर तक आए और जेक ने दादीजी को उठाकर उनके पीछे बिठा दिया। सिर पर अपना काला हुड पहनकर उन्होंने कई शाल ओढ़ लिए थे। दादाजी ने अपनी झबराली सफेद दाढ़ी को ओवरकोट में छिपा लिया था। घोड़े पर सवार जब दोनों चले तो मुझे ऐसा लगा मानो बाइबिल के कोई पात्र चले जा रहे हों। एक दूसरे काले घोड़े पर सवार जेक और मेरे टट्टू पर अम्ब्रोश उनके साथ जा रहे थे। वे मिसेज़ शिमरडा के लिए कपड़ों की गठरियां भी लादे हुए थे, जो हमने ढूंढ़-ढांढ़कर इकट्ठा किए थे, पोखर के किनारे से होकर पहाड़ी चढ़ते और मक्का के बर्फ-जमे खेत के पास से गुज़रते हुए मैं उन्हें देखता रहा। वे आंख से ओझल हो गए और मैं सारे घर में बिलकुल अकेला रह गया।

अब सारा घर मेरे अधिकार में और मैं अपने मन का राजा था; और सच ही राजा बेटा बनकर दिखा देना चाहता था। बस मैं तुरत काम में जुट गया। तलघर में से कोयले और लकड़ियां ला-लाकर मैंने दोनों अंगी-ठियां पूरी भर दीं। फिर खयाल आया कि अरे, सवेरे की हड़बोंग में बेचारी मुर्गियों का किसीको ध्यान तक न रहा और न कोई अण्डे लाने गया। सुरंग की राह मैं तुरत मुर्गीघर पहुंचा। वहां मुर्गियों को दाना डाला, उनके पानी पीने के बरतन में जो बर्फ जम गई थी उसे खाली किया और ताज़ा पानी भर दिया। बिल्ली को दूध पिला चुकने के बाद मेरे करने को कोई काम नहीं बचा, तो मैं तापने बैठ गया। सन्नाटा बहुत अच्छा लग रहा था

और घड़ी की टिक्-टिक् एक अच्छे साथी का काम कर रही थी। मैंने 'राबिन्सन क्रूसो' पढ़ने की कोशिश की, लेकिन मन लगा नहीं; अपनी परिस्थितियों के मुकाबले कहानी के एकाकी द्वीप पर का जीवन बहुत ही फीका लग रहा था। किताब से सिर उठाकर मैंने सन्तोष के साथ अपने आरामदेह बैठक को देखा तो सहसा बिजली की तरह यह विचार मेरे मन में कौंध गया कि यदि मिस्टर शिमरडा की आत्मा इसी दुनिया में भटक रही है तो उसे यहां हमारे घर में होना चाहिए, क्योंकि पास-पड़ोस में यही जगह उन्हें सबसे ज़्यादा पसन्द थी। मुझे क्रिसमस का वह दिन याद आ गया जब वे इसी कमरे में प्रसन्न और तुष्ट बैठे हुए थे। यदि वे हमारे साथ रह पाते तो मेरा खयाल है कि ऐसी दुर्घटना कदापि न होती।

इसमें तो कोई सन्देह नहीं कि घर की याद ने ही मिस्टर शिमरडा के के प्राण लिए थे। मैं बहुत देर तक सोचता रहा कि क्या उनकी आत्मा अपने देश का रास्ता खोज लेगी ? यहां से शिकागो, फिर वरजीनिया, तब बाल्टीमोर और उसके आगे सर्दियों का ठिठुरता महासागर—काफी लम्बा रास्ता था वह। नहीं, उनकी आत्मा एकदम इतनी लम्बी यात्रा पर नहीं जाना चाहेगी ! अभी तो ठण्ड से ठिठुरी, भीड़-भाड़ से उकताई, बरसते बर्फ की मार से त्रस्त वह थकी-हारी आत्मा यहीं, इसी घर में आराम कर रही होगी।

डर मुझे ज़रा भी नहीं लगा। लेकिन मैं चुप बैठा रहा। शोरगुल करके मैं उनके विश्राम में बाधा डालना नहीं चाहता था। मैं चुपचाप उठा और नीचे रसोईघर में पहुंच गया। धरती के अन्दर दुबका हुआ यह रसोईघर मुझे हमेशा घर के केन्द्र और उसके हृदय की तरह लगता था। वहां अंगीठी के पीछेवाली बेंच पर बैठकर मैं सारे समय केवल मिस्टर शिमरडा के ही बारे में सोचता रहा। बाहर सैकड़ों मील लम्बे बर्फ के मैदान पर सनसनाती हवा की गूंज सुनाई दे रही थी। मुझे ऐसा लग रहा था मानो प्राणलेवा शीत में से मैं उस बूढ़े को घर के अन्दर ले आया हूं और अब आराम से उसके साथ बैठा हुआ हूं। एण्टोनिया ने अपने पिता के इस देश में आने से पहले के जीवन के बारे में जो कुछ बताया था मैं उसका स्मरण करने लगा: नाच और शादियों में वे अपना दिलरुबा बजाया करते थे। मुझे उन दोस्तों

का खयाल आया जिन्हें छोड़ते हुए वे ज़ार-ज़ार रो उठे थे, और रमतुला (तुरही) बजानेवाला उनका वह जिगरी दोस्त और उस रईस का वह बहुत बड़ा शिकारगाह, जहां से एण्टोनिया ने बताया था, कि वह और उसकी माताजी चांदनी रातों मे ईंधन चुराकर लाया करती थीं। उस जंगल में एक सफेद हरिण भी रहता था; कोई उसे मार नहीं सकता था, क्योंकि मारनेवाले को फांसी चढ़ा दिया जाता। मिस्टर शिमरडा को उनके जीवन-काल में व्यथित करनेवाली ये स्मृतियां निश्चय ही अभी तक यहां के वातावरण में मंडरा रही थीं और शायद इसीलिए मुझे याद आती जा रही थीं।

जब दादा-दादी लौटकर आए तो अंधेरा घिरने लगा था। दादीजी इस कदर थक गई थीं कि आते ही बिस्तर पर पड़ गईं। रात का भोजन मैंने और जेक ने तैयार किया। तश्तरियां धोते समय वह ज़ोर से फुसफुसाकर मुझे शिमरडों के यहां के हाल-चाल बताता रहा। "कोरोनर के आने तक शव को कोई हाथ नहीं लगा सकता। यदि छू भी दिया तो जाने क्या गज़ब हो जाएगा। बूढ़े की लाश ठण्ड से ठिठुरकर ऐंठ गई थी, मानो तुर्की मुर्ग को हलाल करने के बाद पर वगैरह नोचकर पाले में ठिठुरने के लिए टांग दिया हो। जब तक लाश से खून की गन्ध आती रही घोड़ों और बैलों ने बखारघर के अन्दर कदम नहीं रखा। जब लाश ठिठुरकर लकड़ी हो गई तभी जानवर अन्दर आने लगे। अब लाश के पास ही बंधे हैं, क्योंकि दूसरी कोई जगह नहीं है। बूढ़े के सिर पर एक लालटेन जलाकर टांग दी गई है। एण्टोनिया, अम्ब्रोश और उनकी मां लाश के पास बारी-बारी से बैठकर प्रार्थना करते हैं। पगला भी उनके साथ चला जाता है, उसे ठण्ड जो नहीं लगती।" लेकिन मैं जेक की इस राय से सहमत न हो सका। मेरा खयाल है कि ठण्ड तो उसे भी दूसरों की तरह ज़रूर लगती थी, लेकिन वह ऐसा दिखाना चाहता था, मानो उसे ठण्ड लगती ही नहीं। बेचारा मारेक हमेशा अपने-आपको दूसरों से विशिष्ट सिद्ध करने में लगा रहता था।

अम्ब्रोश के मन में अपने पिता से इतना अधिक लगाव हो सकता है, इसकी तो जेक ने कल्पना भी नहीं की थी। बेचारा अपने पिता की आत्मा की सद्गति के फेर में पड़ा था। पादरी को लेकर बड़ा चिन्तित था और

चाहता था कि वह जल्दी से जल्दी आ जाए। जाने क्यों उसे यह विश्वास हो गया था कि पिता की आत्मा घोर कष्ट में है और पादरी एवं पूरे परिवार की बहुत-सी प्रार्थनाओं के बिना उसकी मुक्ति सम्भव नहीं। अन्त में अपनी बात समाप्त करते हुए जेक ने कहा, "मेरे खयाल में तो बूढ़ा रौरव नरक में जा पड़ा है और घोर कष्ट पा रहा है। उसके उद्धार के लिए प्रार्थना करते-करते उन लोगों को जाने कितने बरस लग जाएंगे।"

"यह झूठ है, मैं इसे नहीं मानता।" मैंने पूरी दृढ़ता से कहा था। मैंने यह बताना ज़रूरी नहीं समझा कि मेरे मतानुसार तो बूढ़े की आत्मा अपने देश लौटने से पहले यहां इसी रसोईघर में दिन ढलने तक विलाप करती रही है। फिर भी जब रात में सोया तो यम के दण्ड और नरक की बातें उमड़-घुमड़कर मन को व्यथित करने लगीं। डाइव्स की नरक-यातना का किस्सा मैं पढ़ चुका था; उसकी याद भी रोंगटे खड़े कर देनेवाली थी। लेकिन मिस्टर शिमरडा तो धनी और स्वार्थी नहीं थे, उन्हें नरक का दण्ड क्यों मिलना चाहिए? बहुत दुःखी होने के ही कारण तो वे बेचारे अधिक दिन जीवित नहीं रह सके।

१५

ओटो फुश दूसरे दिन दुपहर को ब्लैकहॉक से लौटा। उसने बताया कि कोरोनर तो आज ही तीसरे पहर तक आ जाएगा, लेकिन पादरी अपने सदर मुकाम से कोई सौ मील दूर गया हुआ था और उधर के सारे रास्ते बन्द पड़े थे। वह खुद तो कुछ समय के लिए शहर के किराये के अस्तबल में सो लिया था, लेकिन घोड़े को पूरा आराम नहीं मिल पाया था। घनघोर बर्फ में उतनी लम्बी यात्रा ने घोड़े को इस कदर थका मारा था कि वह उसके बाद संभल नहीं पाया।

एक अपरिचित युवा बोहेमी भी अपने देशवासियों के संकट की बात सुनकर फुश के साथ अपने घोड़े पर सवार होकर चला आया था। ब्लैक-

हॉक के पास ही कहीं उसकी खेती-बाड़ी थी और एण्टन जेलीनेक उसका नाम था। मैंने उसे पहली बार तभी देखा था। तब उसकी चढ़ती जवानी थी—उम्र बाईस-चौबीस की, कद लम्बा, शरीर हृष्ट-पुष्ट, नाक-नक्शा सुन्दर, ताकत और ताज़गी से भरा-पूरा। दुःख-कष्ट की उस घड़ी में उसका अकस्मात् आ जाना मुझे एक चमत्कार ही लगा था। फेल्ट जूते और भेड़िये की खाल का लम्बा कोट पहने वह सीधा हमारे रसोईघर में चला आया था। ठण्ड में से आने के कारण उसके गाल और आखें लाल हो गई थीं। दादीजी को देखते ही उसने फुर्ती से अपनी फरवाली टोपी उतारकर घनी गूंजती आवाज़ में उनका अभिवादन किया था। मुझे उम्र के लिहाज़ से उसकी आवाज़ अधिक प्रौढ़ लगी थी।

उसने कहा था, "मेरे मुल्क के गरीब लोगों पर दया करने के लिए मैं आपका बहुत आभारी हूं, मिसेज़ बरडन।"

बात करते समय वह किसानों की तरह सकपकाता नहीं था; पूरे आत्म-विश्वास के साथ लोगों से आंखें मिलाकर बोलता था। उसका हर व्यवहार खुला और नैसर्गिक होता था। उसने बताया कि शिमरडों से मिलने के लिए आने का उसका विचार तो बहुत दिनों से था, लेकिन शरद ऋतु में वह मक्का की गाहनी में लग गया और सर्दियां शुरू होते ही करखाने के पास-वाले स्कूल में छोटे बच्चों के साथ अंग्रेज़ी सीखने के लिए जाने लगा। उसने मुझे बताया कि वहां की अध्यापिका बहुत अच्छी है और उसे स्कूल जाना बहुत अच्छा लगता है।

भोजन के समय दादाजी जेलीनेक से खूब बातें करते रहे; वैसे वे अजनबियों से आम तौर पर कम ही बोलते-बतियाते थे।

"पादरी के न आने से क्या उन्हें बहुत दुःख होगा?" दादाजी ने पूछा था।

जेलीनेक ने दादाजी की ओर अपलक दृष्टि से देखते हुए गम्भीर स्वर में कहा, "जी हां, यह उनके हक में बहुत बुरा हुआ। उनके बाप ने बहुत बड़ा पाप किया है। हमारे प्रभु ने भी तो कहा है कि आत्महत्या पाप है।"

दादाजी को उसकी स्पष्टवादिता बहुत अच्छी लगी।

"यह तो हम भी मानते हैं जेलीनेक, लेकिन साथ ही हमारा यह विश्वास

भी है कि पादरी के बिना ही मिस्टर शिमरडा की आत्मा अपने कर्ता के पास पहुंच जाएगी। हम तो ईसा को ही अपना मध्यस्थ मानते हैं।"

जेलीनेक ने अपना सिर हिलाते हुए कहा, "आप लोगों के सोचने का ढंग मैं जानता हूं। पाठशाला की मेरी अध्यापिका मुझे समझा चुकी हैं। लेकिन मैं बहुत देख और भुगत चुका हूं; और मरनेवालों के लिए प्रार्थना करने में मेरा विश्वास है। मैंने बहुत देखा है।"

उसकी बात समझ में नहीं आई, इसलिए हमने खुलासा करने के लिए कहा।

वहां बैठे सब लोगों की ओर एक दृष्टि डालकर वह बोला, "आप चाहते हैं कि मैं बताऊं, तो सुनिए। जब इसके जितना छोटा बच्चा था तभी से मैंने पादरी का हाथ बटाना शुरू कर दिया था। मेरा दीक्षा-संस्कार बहुत बचपन में ही हो गया था। धर्मोपदेश मेरे लिए कभी अस्पष्ट और अव्यवहार्य नहीं रहा। फिर प्रशावासियों से हमारी लड़ाई छिड़ गई। मेरे गांव के पास बहुत-से सैनिक डेरा डाले पड़े थे। सहसा हैज़ा शुरू हो गया और लोग मक्खियों की तरह मरने लगे। हमारे पादरी साहब मरनेवालों का अन्तिम संस्कार करने जाते और मैं पवित्र संस्कार (होली सेक्रामेण्ट) वाले पात्र लिए दिन-दिन-भर उनके साथ रहता। फौजी छावनी के पास जो भी जाता उसे बीमारी की छत लग जाता थी, लेकिन मेरा और पादरी साहब का बाल भी बांका न हुआ। हमें हैज़ा होने का कोई डर ही नहीं था, क्योंकि संस्कार-पात्रों में ईसा का पवित्र रक्त और मांस लेकर हम चलते थे और वही आधि-व्याधि से हमारी रक्षा कर रहा था।" क्षण-भर रुककर उसने दादाजी की ओर देखा और तब आगे बोला, "यह मैं अपनी बीती सुना रहा हूं मिस्टर बरडन, जो मैंने देखा और अनुभव किया। सभी सैनिक इस बात को जानते हैं। सड़क चलते मुझे और पादरी साहब को कूच करती हुई कई सैनिक टुकड़ियां और घोड़े पर सवार फौजी अफसर मिलते थे। मुझे देखते ही सबके सब अफसर अपने घोड़ों पर से उतर पड़ते और बीच सड़क में घुटनों के बल झुककर प्रणाम करते थे और जब तक हम गुज़र न जाते वे उसी तरह झुके रहते थे, क्योंकि मैं अन्तिम संस्कार के पात्र लिए रहता था और वे देखते ही उन्हें पहचान लेते थे और प्रणाम करने लगते थे। इसलिए जब मेरा कोई

देशवासी अन्तिम संस्कार के बिना मरता है तो मुझे अच्छा नहीं लगता, दुःख होता है; ऐसी मौत से उसकी सद्गति नहीं होने पाती, आत्मा अधोगति को प्राप्त होती है और कष्ट उठाती है। और शिमरडा परिवार के लिए मेरे दुःखित होने का कारण भी यही है।"

हम ध्यान से उसकी बातें सुनते और उसकी दृढ़ आस्था एवं सच्चे विश्वास की मन ही मन सराहना करते रहे।

दादाजी ने कहा, "धार्मिक मामलों पर गम्भीरता से सोच-विचार करनेवाले युवकों से मिलकर मुझे हमेशा खुशी होती है। और इससे तो मैं भी इन्कार नहीं करूंगा कि फौजी छावनी में भगवान तुम्हारी रक्षा कर रहे थे।"

भोजन के बाद यह तय पाया कि जेलीनेक घोड़ों की मदद से बर्फ काटकर शिमरडों के घरौंदे तक सड़क बना दे जिससे ज़रूरत पड़ने पर वहां घोड़ागाड़ी ले जाई जा सके। पास-पड़ोस में बढ़ईगिरी का काम अकेला फुश ही जानता था, इसलिए ताबूत बनाने का भार उसे सौंपा गया।

जेलीनेक ने भेड़िये की खाल का अपना लम्बा कोट पहन लिया। हमारे तारीफ करने पर उसने बताया कि भेड़ियों को खुद उसने मारा और खाल भी उसीने उतारी, मगर कोट बनाया उसके साथ रहनेवाले जान बौस्का नामक युवक ने, जो वियना में खालें पकाने का काम कर चुका था। जेलीनेक बखारघर में गया और खेती के दो मजबूत काले घोड़ों को खुरचनी में जोतकर ले आया। फिर वह पहाड़ी की राह मक्का के खेत की ओर चल दिया। मैं पवन-चक्की के पास खड़ा उसे पहाड़ी पर चढ़ते देखता रहा। कभी वह खुरचनी से उड़नेवाले बर्फ के बादलों में खो जाता था और कभी चमकीले काले घोड़ों के साथ फिर दिखाई देने लगता था।

बढ़ईगिरी के भारी-भरकम ठीये को उठाकर हम लोग रसोईघर में ले आए। वह बखारघर में पड़ा था। दादाजी शहर से जौ की खत्ती का नया फर्श बनाने के लिए ढेर सारे पटरे इसी शरद् ऋतु में लाए थे। फुश ने उनमें से कुछ पटिये अपने काम के लिए छांट लिए। जब पटरे और औज़ार रसोईघर के अन्दर रख दिए गए, दरवाजा फिर से बन्द कर लिया गया और कमरा गरम हो गया तो दादाजी घोड़े पर सवार हुए और शिमरडों के यहां

कोरोनर से मिलने के लिए चल दिए। इधर फुश ने अपना कोट उतारा, बांहें चढ़ाईं और काम में जुट गया। मैं ठीये पर चढ़कर बैठ गया और देखने लगा। औज़ार उठाने से पहले फुश बहुत देर तक एक कागज़ पर हिसाब जोड़ता और पटरों को गज़ से नापकर निशान लगाता रहा। बीच-बीच में वह सीटी बजाता और अपने कटे कान को खींचता जाता था। दादीजी इस बात का पूरा ध्यान रखकर काम कर रही थीं कि उनकी वजह से उसके काम में बाधा न पहुंचे। अन्त में उसने अपने गज़ को मोड़कर रख दिया और खुश होकर हमारी ओर देखा।

"चलो सबसे मुश्किल काम तो निपट गया।" उसने कहा, "जब काम किए को काफी दिन हो जाते हैं तो मैं पटरों के जोड़ ठीक से बिठा नहीं पाता। पिछली बार मैंने कोलोरेडो के सिलवरटन से भी आगे जो ब्लैक टाइगर माइन हैं, वहां के एक खान मज़दूर के लिए ताबूत बनाया था। उस खदान का मुंह पहाड़ी के अन्दर तक चला गया है। हमें एक डोली में बिठाकर सुरंग के अन्दर उतारा जाता था। डोली तीन सौ फुट गहरे गलियारे पर से गुज़रती थी, जो एक तिहाई पानी से भरा था। एक बार दो स्वेडनवासी डोली में से उचककर पानी में जा गिरे, पर मानो या न मानो, उनका बाल भी बांका न हुआ। दूसरे दिन देखा तो फिर काम पर हाज़िर। बड़े सख्त-जान होते हैं स्वेडनवाले, आसानी से मरा नहीं करते। जिन दिनों मैं वहां था तो इतालवी को भी पानी में कूदने का शौक चर्राया। हज़रत सिर के बल कूद तो पड़े, पर निकल न सके, वहीं रह गए। आज की ही तरह उस समय भी हम बर्फ में घिरे हुए थे और संयोग की बात कि सारे मज़दूर-शिविर में सिर्फ मुझीको ताबूत बनाना आता था। मेरे जैसे घुमक्कड़ के लिए यह हुनर भी बहुत काम का है।"

"अगर तुम्हें यह काम मालूम न होता तो ओटो, आज हमें बड़ी तकलीफ हो जाती।" दादीजी ने कहा।

"सो तो है।" उसने विनम्रता से कहा और आगे बोला, "ठीक से दराज़ें बन्द करके अच्छा बक्सा बनाना बहुत कम लोगों को आता है। ताबूत ऐसा होना चाहिए कि पानी अन्दर न जा सके। कभी सोचा करता हूं कि मेरे लिए भी उम्दा ताबूत बनानेवाला कोई होगा या नहीं। लेकिन मर जाने के

बाद बढ़िया या घटिया ताबूत से क्या वास्ता, जो भी वक्त पर मिल जाए···"

उस दिन सूर्यास्त तक सारे घर में आरी और रन्दा चलने की आवाज़ सुनाई देती रही। खर्र-खर्र और फरर-फर्र की वे आवाज़ें हंसी-खुशी से भरी और जीवितों को नई वस्तु प्रदान करने का सन्देश लिए हुए थीं। यह सोचकर मेरा मन खिन्न हो उठता था कि चीड़ के वे रंदे हुए नये तख्ते इतनी जल्दी ज़मीन के अन्दर उतार दिए जाएंगे। लकड़ी को पाला मार जाने से काम करने में कठिनाई हो रही थी और पटरों से चीड़ वृक्ष की भीनी-भीनी गन्ध आने लगी थी और पीली छिल्लियों का ढेर निरन्तर ऊंचा होता जाता था। यह बात मेरी समझ में नहीं आती थी कि आरी और रन्दा एवं बसूला और रुखानी चलाने में इतना कुशल होकर भी फुश बढ़ई क्यों न हुआ! इस समय वह इतनी सरलता और स्वाभाविकता से काम कर रहा था मानो जन्मजात बढ़ई हो। हर औज़ार को वह बड़े प्यार से उठाता; और रन्दा चलाते उसके हाथ ऐसे लग रहे थे मानो पटरों को आशीष दे रहे हों। बीच-बीच में वह किसी जर्मन भजन की कड़ी गुनगुनाने लगता, मानो पटरे छीलते-छीलते पुराने दिनों की यादें लौट आई हों।

चार बजे के लगभग हमारे पूरबवाले पड़ोसी के साथ पोस्टमास्टर मिस्टर बुशी आए और थोड़ी देर गरमाने के लिए रुक गए। दोनों सज्जन शिमरडों के यहां जा रहे थे। सारा इलाका बर्फ से पटा रहने के बावजूद मिस्टर शिमरडा की आत्महत्या की खबर जाने किस तरह चारों ओर फैल गई थी। दादीजी ने दोनों मेहमानों को मीठे केक के साथ गरमागरम कॉफी पिलाई। अभी ये सज्जन बैठे ही थे कि ब्लैकहॉक रोड पर रहनेवाला विधवा स्टीवेन्स का भाई उस जर्मन परिवार के पिता के साथ आता दिखाई दिया जो दक्षिण की ओर हमारा सबसे करीबी पड़ोसी था। घोड़ों पर से उतरकर दोनों आदमी हमारे भोजनवाले कमरे में, जहां हम बैठे हुए थे, आ गए। आत्महत्या का विवरण मालूम करने की उत्सुकता तो सबको थी ही और साथ ही यह चिन्ता थी कि मिस्टर शिमरडा को किस जगह दफनाया जाए। कैथोलिकों का सबसे पासवाला कब्रिस्तान ब्लैकहॉक में था, लेकिन वहां अभी हफ्तों तक कोई गाड़ी जा नहीं सकती थी। फिर मिस्टर बुशी

और दादीजी की राय में आत्महत्या करनेवाले को कैथोलिक कब्रिस्तान में दफनाया नहीं जा सकता था। स्क्वा क्रीक के पश्चिम में, नार्वेवासियों का गिरजाघर के पास अपना एक कब्रिस्तान था और आम राय यह थी कि वे लोग मिस्टर शिमरडा की कब्र के लिए शायद जगह दे दें।

जब सब लोग चले गए तो हम रसोईघर में लौट आए। दादीजी चॉकलेट केक के लिए चीनी की चाशनी बनाने लगीं और फुश रन्दा उठाकर पटियों को रंदने लग गया। इस बार एक अच्छी बात यह हुई कि सब लोग हमेशा की अपेक्षा ज़्यादा बोल-बतिया रहे थे। पोस्टमास्टर साहब को मैंने आज तीसरे पहर तक 'आज तो अखबार ही हैं' या 'आज ढेर सारी चिट्ठियां हैं' इन दो वाक्यों के अलावा और कुछ भी तो बोलते नहीं सुना था। दादीजी हमेशा अपने-आपसे या भगवान से बातें किया करतीं, दादाजी स्वभाव से ही मितभाषी थे और जेक और ओटो रात के भोजन के बाद इतने थक जाया करते कि मुझे लगता, मानो दीवालों से घिरा बैठा हूं। और आज हर आदमी की ज़बान जैसे खुल गई थी। उस शाम फुश ने मुझे कितने ही किस्से सुना डाले—ब्लैक टाइगर माइन के किस्से, लोगों के बुरी मौत मरने और दफनाए जाने के किस्से और मरनेवालों की अजीबोगरीब झकों के किस्से। "जब तक मरते नहीं देख लो," उसने कहा, "तुम किसी आदमी को समझ ही नहीं सकते। कुछ लोग इतने अच्छे होते हैं कि बिना शिकवा-शिकायत के चले जाते हैं।"

लौटते समय पोस्टमास्टर ने बताया कि दादाजी कोरोनर को रात बिताने के लिए घर ला रहे हैं। उन्होंने यह भी बताया कि नार्वेवासियों के गिरजाघर के अधिकारियों ने मन्त्रणा करके मिस्टर शिमरडा को अपने यहां दफनाने से इन्कार कर दिया है।

सुनकर दादीजी को बड़ा गुस्सा आया। बोलीं: "देखिए मिस्टर बुशी, यदि ये विदेशी ऐसी ही कुनबापरस्ती करते रहे तो हमें जल्दी ही एक ऐसा अमरीकी कब्रिस्तान शुरू करना होगा, जहां ज़्यादा उदारता बरती जा सके। जोसिया के पीछे लगकर मैं अगली वसन्त ऋतु में ही ऐसा कब्रिस्तान शुरू करवा दूंगी। यह तो मेरी बर्दाश्त के बाहर है कि कल को मर जाऊं तो वे नार्वेवासी बैठकर फैसला करें कि मैं उनके साथ दफन किए जाने-काबिल

हूं या नहीं ।"

थोड़ी देर बाद एण्टन जेलीनेक और कोरोनर को साथ लिए दादाजी भी आ गए । वे वृद्ध सज्जन गृहयुद्ध (सिविल वार) में लड़ चुके थे। स्वभाव से सौम्य और आसानी से घबरा जानेवाले व्यक्ति लगते थे; और उनका एक हाथ साफ नदारद था, बस खाली बांह लटकी हुई थी। यह मामला उन्हें बड़ा पेचीदा लग रहा था और उन्होंने कहा भी कि यदि दादाजी ने मना न किया होता तो वे क्रायीक की गिरफ्तारी का वारण्ट ज़रूर जारी कर देते । "उसका व्यवहार और उसकी कुल्हाड़ी के फले का घाव में फिर बैठना उसके जुर्म को साबित करने और सज़ा दिलाने के लिए काफी है ।"

यह बात तो दिन के उजाले की तरह साफ थी कि मिस्टर शिमरडा ने आत्महत्या की, लेकिन जेक और कोरोनर की राय में क्रायीक का आचरण अपराधियों जैसा था और इसलिए वे उसे दण्ड देने के पक्ष में थे । वह ज़रूर बुरी तरह डर गया था । बूढ़े के दुःख, दैन्य और एकाकीपन के प्रति उसने हद दर्जे की लापरवाही बरती थी, इसलिए अब शायद उसे पछतावा भी होने लगा था ।

लोगों को कड़ाके की भूख लगी थी, इसलिए उन्होंने खूब डटकर खाया, और मेरी यह आशा कि चॉकलेट केक का कुछ हिस्सा कल तक बचा रह जाएगा, निराशा में परिणत हो गई, क्योंकि वह तो दूसरी बार में ही खत्म हो गई थी । मिस्टर शिमरडा को कहां दफनाया जाए, इस विषय को लेकर काफी आवेश से बातें होती रहीं । यह भी पता चला कि इस सम्बन्ध में एक बात को लेकर हमारे सारे पड़ोसी बहुत विक्षुब्ध हो गए थे। मिसेज़ शिमरडा और अम्ब्रोश बुढ़ऊ को अपनी ज़मीन के दक्षिण-पश्चिमी कोने में, जहां खम्भा गड़ा था, ठीक वहीं दफनाना चाहते थे । दादाजी ने अम्ब्रोश को समझाया भी कि आगे जब सारी ज़मीन चहारदीवारी से घेर ली जाएगी और सीधी सड़कें बन जाएंगी तो चौराहा उस कोने पर ठीक उसी खम्भे के वहां पड़ेगा । लेकिन अम्ब्रोश ने यह कहकर सुना अनसुना कर दिया कि उससे कोई फर्क नहीं पड़ता ।

आखिर दादाजी ने जेलीनेक से पूछ ही लिया कि कहीं तुम्हारे देश में यह अन्धविश्वास तो नहीं है कि आत्महत्या करनेवाले को चौराहे पर दफन

करना चाहिए ?

जेलीनेक ने बताया कि ठीक से तो याद नहीं है, परन्तु देश में था तो इस तरह के रिवाज के बारे में कभी सुना ज़रूर था। फिर वह बोला, "मिसेज़ शिमरडा तो अपने पति को वहीं दफनाने पर अड़ गई हैं। मैंने बहुत समझाया, कहा भी कि सारे पड़ोसी बुरा मान जाएंगे, पर वे टस से मस नहीं हुईं। बोलीं, 'चाहे खुद कबर खोदनी पड़े, पर दफनाऊंगी वहीं।' तो मुझे विवश होकर वायदा करना पड़ा कि अच्छी बात है; मैं कल अम्ब्रोश की मदद करके वहां कब्र खोद दूंगा।"

दादाजी अपनी दाढ़ी को सहलाते हुए देर तक बात को तोलते रहे और फिर बोले, "मेरे खयाल में इस मामले में फैसला करने का अधिकार तो उन्हींको है और उनकी राय मानी जानी चाहिए; लेकिन उनका यह खयाल बिलकुल गलत है कि इस देश के लोग उनके पति की कब्र पर चौराहा बनाकर चला-फिरा करेंगे।"

१६

मिस्टर शिमरडा की लाश बखारघर में चार दिन तक पड़ी रही और पांचवें दिन उन्हें दफनाया गया। शुक्रवार का पूरे दिन जेलीनेक अम्ब्रोश के साथ कब्र खोदता रहा। ज़मीन ठिठुरन से इतनी सख्त हो गई थी कि उसे पुरानी कुल्हाड़ियों से काटना पड़ा था। शनिवार के दिन मुंहअंधेरे ही नाश्ता करके घोड़ागाड़ी में ताबूत रखा गया और हम रवाना हुए। जेक और जेलीनेक घोड़ों पर आगे चले गए थे। लाश खून के डबरे के जम जाने से धरती के साथ चिपट गई थी, इसलिए उसे वहां से उखाड़ना ज़रूरी हो गया था।

जब दादीजी और मैं शिमरडों के यहां पहुंचे तो औरतें घर में अकेली थीं; अम्ब्रोश और मारेक बखारघर गए हुए थे। मिसेज़ शिमरडा अंगीठी के पास सिमटी-सिकुड़ी बैठी थीं और एण्टोनिया तश्तरियां धो रही थी। मुझे आया देख वह अंधेरे कोने में से दौड़ी आई और मुझसे लिपटकर सिसक

उठी, "हाय जिम्मी, मेरे प्यारे बापू कहां चले गए।" लग रहा था, जैसे उसकी छाती ही फट जाएगी।

पड़ोसी आने लगे थे। मिसेज़ शिमरडा ठूंठ पर बैठी गरदन मोड़कर एक-एक को आते देखती रहीं। और सब तो घोड़ों पर आए थे, केवल पोस्ट-मास्टर के उधर का गाड़ी-रास्ता चालू होने से वे अपने परिवार के साथ घोड़ागाड़ी में आए थे। स्टीवेन्स की विधवा अपने खेत से ब्लैकहॉकवाली सड़क पर आठ मील घोड़े से आई थी। ठण्ड के कारण सब औरतें घरौंदे में घुस आईं और वहां काफी भीड़-भाड़ हो गई। बाहर परतों में बर्फ गिरने लगी थी और तूफान शुरू होने की आशंका बढ़ती जा रही थी; सब यही मना रहे थे कि दफनाने का काम जल्दी से जल्दी खत्म हो जाए तो छुट्टी पाएं।

इतने में दादाजी और जेलीनेक ने आकर मिसेज़ शिमरडा से कहा कि चलने का वक्त हो गया है। एण्टोनिया ने पड़ोसियों के लाए हुए कपड़े अपनी माताजी को पहना दिए और तब स्वयं हमारे यहां की एक पुरानी 'केप' ओढ़कर खरहे की खाल की टोपी सिर पर रख ली। यह टोपी उसे उसके पिताजी ने बना दी थी। चार आदमी ताबूत को उठाकर ऊपर ले आए। क्रायीक पिटे हुए कुत्ते की तरह उनके पीछे-पीछे चल रहा था। ताबूत को बाहर ढाल पर ही रख देना पड़ा, क्योंकि चौड़ा होने के कारण वह दरवाज़े के अन्दर नहीं आ सकता था। मैं मिस्टर शिमरडा को देखने के लिए घरौंदे में से बाहर सरक आया। वे करवट के बल घुटने मोड़े पड़े थे। उनका शरीर काली शाल में लिपटा था और सिर पर सफेद कपड़े की पट्टी बंधी थी, जिससे वे मिस्री ममी की तरह लग रहे थे। उनका एक लम्बा और सुडौल हाथ बाहर काले कपड़े पर रखा था। बस, उनके शरीर का सिर्फ इतना ही हिस्सा खुला हुआ था।

अब मिसेज़ शिमरडा बाहर आईं और एक खुली हुई प्रार्थना-पुस्तक लाश पर रखकर उन्होंने अपने पति के पट्टी-बंधे सिर पर अंगुलियों से सलीब का चिह्न बनाया। फिर अम्ब्रोश ने घुटनों के बल बैठकर उसी तरह सलीब का चिह्न बनाया और उसके बाद एण्टोनिया और मारेक ने। युल्का पीछे ठिठकी खड़ी रही। तब उसकी माताजी ने ज़ोर का धक्का देकर उसे आगे

कर दिया और अपनी भाषा में बार-बार जाने क्या कहती रहीं। युल्का घुटनों के बल बैठ गई, उसने आंखें मूंद लीं फिर डरते-डरते हाथ थोड़ा-सा आगे को बढ़ाया, पर तुरत पीछे खींच लिया और चीख मारकर रो उठी। इसपर मिसेज़ शिमरडा ने कन्धा पकड़कर उसे ताबूत की ओर धकेला।

दादीजी से देखा न गया। बीच-बचाव करते हुए उन्होंने दृढ़ स्वर में कहा, "नहीं मिसेज शिमरडा, रहने दीजिए। बेचारी नन्ही नादान बच्ची आपके मतलब को कैसे समझ सकती है ! मारे डर के उसकी तो जान ही निकल जाएगी। छोड़ दीजिए इसे।"

दादाजी का इशारा पाकर फुश और जेलीनेक ने ताबूत पर ढक्कन रखकर उसे कीलों से जड़ना शुरू कर दिया। एण्टोनिया की ओर देखने की मेरी हिम्मत नहीं हो रही थी। वह नन्ही युल्का को बांहों के घेरे में लेकर अपने से सटाए खड़ी थी।

ताबूत गाड़ी में रख दिया गया। बर्फ की मार चेहरे पर सहते हुए हम धीरे-धीरे आगे बढ़े। कब्र पर पहुंचे तो वह उस विशाल बर्फीले मैदान में मुझे छोटे-से धब्बे की तरह लगी। ताबूत को कब्र के किनारे लाया गया और तब रस्सियों के सहारे अन्दर उतार दिया गया। हम खड़े देखते रहे। आसमान से आटे जैसी बर्फ गिर रही थी औरआदमियों की टोपियों, कन्धों तथा औरतों की शालों पर जमती जा रही थी।

जेलीनेक ने पहले मिसेज़ शिमरडा से आग्रह-भरे स्वर में कुछ कहा और तब दादाजी से बोला, "हमारी भाषा में प्रार्थना की गई तो पड़ोसी समझ नहीं सकेंगे, इसलिए ये आपसे अपने पति के लिए अंग्रेज़ी में प्रार्थना करने का अनुरोध करती हैं, मिस्टर बरडन।"

दादीजी उत्कंठित होकर दादाजी की ओर देखने लगीं। दादाजी ने टोपी उतारकर हाथ में ले ली। उनकी देखा-देखी दूसरों ने भी अपनी-अपनी टोपियां उतार लीं। फिर दादाजी ने प्रार्थना शुरू की। अद्‌भुत थी उस दिन की उनकी वह प्रार्थना। सारी की सारी मुझे आज भी याद है। उन्होंने कहा था, "हे परम पिता परमात्मा, तू महान और न्यायपरायण है। अनन्त निद्रा में सोये इस पुरुष के मन की बात केवल तू ही जानता है, हममें से कोई भी नहीं जानता; और तेरे और इसके बीच जो कुछ भी है उसका

फैसला करना हमारा काम नहीं है।" फिर उन्होंने प्रार्थना की कि दूर देश से इस अजनबी के यहां आने पर अगर किसीको आपत्ति रही हो तो परमात्मा उसे क्षमा कर दे और वह इस मृत व्यक्ति के प्रति उदार हो जाए। इसके बाद विधवाओं और अनाथ बच्चों से किए गए वादों का उल्लेख करते हुए उन्होंने प्रभु से विनय की कि वह मृतक की विधवा और उसके बाल-बच्चों का मार्ग प्रशस्त और निष्कंटक करे और "लोगों को इनके साथ स्नेह, दया और न्यायानुकूल आचरण करने की प्रेरणा करे।" अन्त में उन्होंने कहा, "हे प्रभु, हम मिस्टर शिमरडा को तेरे दरबार में छोड़े जा रहे हैं, जहां जीव-मात्र के लिए दण्ड और क्षमा दोनों की व्यवस्था है।"

सारे समय दादीजी अपने दस्ताने की काली अंगुलियों की ओट से दादाजी की ओर देखती रही थीं। उनके 'आमीन' कहने पर ही उन्होंने उधर से आंखें हटाईं और निश्चिन्त हो सकीं। फिर वे ओटो की ओर मुड़-कर बहुत मन्द स्वर में बोलीं, "फुश, एक-आध भजन नहीं गा सकते? बर्बरियत कुछ तो कम हो।"

फुश ने वहां उपस्थित लोगों की ओर देखा। उसे उनकी आंखों में दादीजी के प्रस्ताव का समर्थन ही दिखाई दिया। तब उसने अपनी गूंज-भरी बुलन्द आवाज़ में 'यीशु, मेरे प्राण-पियारे' भजन शुरू किया। सब लोग उसकी आवाज़ में आवाज़ मिलाकर गाने लगे। उसके बाद जब-जब भी मैंने इस भजन को सुना है, हर बार बर्फ-मढ़ा वह लम्बा-चौड़ा मैदान, क़ब्र को घेरे खड़े वे थोड़े-से स्त्री-पुरुष और चक्राकार उड़ते महीन दुपट्टों-जैसी झीनी-झीनी हिम-फुहारों से भरी ठण्डी हवा मुझे याद आती रही है। फुश गाए जा रहा था :

"बाढ़ का पानी बढ़ता आवे,
झंझा-झक्कड़ ज़ोर दिखावे।"

... ...

बरसों बाद, जब खुली चरवाही के दिन समाप्त हो गए, बार-बार की गहरी जुताई से सारी लम्बी लाल घास प्रेरी के मैदान से गायब हो गई, सभी खेत चहारदीवारी के घेरे में आ गए, मनमाने ढंग से टेढ़ी-तिरछी जा रही सड़कें सर्वेक्षण की रेखाओं में बंधकर सीधी और व्यवस्थित हो गईं, तब भी मिस्टर

शिमरडा की कब्र, तार के खस्ताहाल घेरे से घिरी, लकड़ी का बग़ैर रंग-रोगनवाला सलीब धारण किए अपनी जगह पर बनी रही। दादाजी ने ठीक ही कहा था। मिसेज़ शिमरडा की यह आकांक्षा कि सड़कें उनके पति की कब्र पर चौराहा बनाती हुई निकलेंगी, कभी पूरी न हुई। उत्तर से आनेवाली सड़क वहां आकर ज़रा-सा पूरब को मुड़ती हुई निकल गई और पश्चिम से आनेवाली दक्षिण की ओर ज़रा-सा झुकाव लेती हुई, और इस तरह मिस्टर शिमरडा की कब्र बच गई। लम्बी लाल घास से भरी वह कब्र प्रेरी के मैदान में एक छोटे-से द्वीप जैसी लगती थी और गोधूलि वेला में जब चांद निकल आता या सन्ध्या-तारा का प्रकाश भर जाता तो वे धूलि-भरी सड़कें नदियों का भ्रम उत्पन्न कर देती थीं। सारे प्रदेश में वह मेरी सबसे प्रिय जगह थी और वहां आकर मैं भावाभिभूत हुए बिना रह नहीं सकता था। प्रिय था मुझे वह अंधविश्वास, मन समझाने का वह भोला भाव जिसके कारण कब्र वहां बनाई गई थी; और उससे भी प्रिय था मुझे आत्मा का वह आदेश, सर्वेक्षण की सीधी रेखाओं में वह विपर्यय—सड़कों का थोड़ा-सा मुड़कर निकल जाना, जिसके कारण दण्ड पूरा न हो सका था और उतनी ही प्रिय थीं वे धूल-भरी ममतामयी सड़कें, जिनपर होकर सूर्यास्त के बाद खड़खड़ाती घोड़ागाड़ियां घर लौटा करती थीं। उस क्रास के पास से गुज़रनेवाला ऐसा तो शायद ही कोई थका-मांदा गाड़ीवान रहा होगा जिसने वहां दफनाए जानेवाले के लिए मंगल-कामनाएं न की हों।

१७

उन कड़ी सर्दियों के बाद जब वसन्त ऋतु आई तो तेज़ हवा के झपट्टे भी बन्द हो गए। रोज़ सवेरे जागने पर मुझे हर बार यही अनुभूति होती थी कि सर्दियां समाप्त हो गईं। लेकिन यहां का वसन्तागमन वरजीनिया जैसा बिलकुल नहीं था—न तो नई कोपलों और नये पत्तों से मंडित जंगल थे और न फूलों-कलियों से शोभित बगीचे। यहां था सिर्फ वसन्त—कण-कण

में वासन्ती हलचल, मौसम की वह हलकी-सी बेचैनी; सर्वत्र उसकी वह जीवनदायिनी तरंग प्रवाहित होने लगी थी। आसमान, उसमें तेज़ गति से दौड़ते बादल, पीली धूप—सभीमें वसन्त की ऊष्मा और उछाह भरा था। हवा में गरमाहट आ गई थी और कभी वह ज़ोरों से चलने लगती थी और कभी सहसा बन्द हो जाती थी, मानो कोई खिलंदड़ा पिल्ला धमा-चौकड़ी मचाने के बाद थपकी की आशा में चुप लेट जाए। अगर मुझे प्रेरी के मैदान में आंखें बांधकर छोड़ दिया जाता तो भी पता चल जाता कि वसन्त आ गया है।

अब चारों तरफ से घास को जलाने की गंध आने लगी थी। हमारे सारे पड़ोसियों ने अपने-अपने चरागाह जला डाले थे। यह इसलिए ज़रूरी था कि नई उगनेवाली घास में पिछले साल के खड़े खुतरे मिल न जाएं। सब तरफ चरागाहों से उठनेवाली आग की लपटें दिखाई देती थीं, जिनसे सारी दिशाएं और हवाएं भी गरम हो गई थीं।

शिमरडा परिवार का लट्ठों का नया मकान, पुराने घरौंदे के ठीक सामने, पड़ोसियों की मदद से मार्च के महीने में ही बनकर तैयार हो गया था। वे उसमें रहने भी लग गए थे और घरौंदे से 'सेलार' का काम लेने लगे थे। अब उनके पास खेती-बाड़ी के काफी साधन हो गए थे। रहने के लिए चार आरामदेह कमरे थे, उधार मोल ली हुई एक नई पवन-चक्की थी, अच्छा-खासा मुर्गीघर और काफी मुर्गे-मुर्गियां भी हो गई थीं। मिसेज़ शिमरडा ने दादाजी से पच्चीस डालर में एक गाय खरीद ली थी—दस डालर नकद दिए थे और बाकी पन्द्रह डालर पहली फसल घर में आ जाने पर देने की बात थी।

अप्रैल के महीने में एक दिन दुपहर के बाद जब तेज़ हवाएं चल रही थीं, मैं अपने टट्टू पर सवार शिमरडों के यहां पहुंचा तो युल्का दौड़कर सामने आई। आजकल मैं उसीको पढ़ाता था। एण्टोनिया को तो दूसरे-दूसरे कामों से फुरसत ही नहीं थी। टट्टू को बाहर बांधकर जब मैं अन्दर रसोईघर में गया तो मिसेज़ शिमरडा रोटी पका रही थीं और पापी के बीज खाती जाती थीं। अब उन्हें इतनी अंग्रेज़ी आ गई थी कि मुझसे खेती-बाड़ी के सम्बन्ध में बहुत-से सवाल पूछ लेती थीं : खेतों में क्या काम चल

रहा है, तुम्हारे नौकर क्या कर रहे हैं, आदि। उनका ऐसा खयाल हो गया था कि बड़े लोग तो सारी बातें बताते नहीं हैं, बहुत कुछ छिपा रखते हैं और मैं बच्चा होने से सारे भेद बता सकता था। आज उन्होंने बड़ी चतुराई से मुझसे यह पूछा कि तुम्हारे दादाजी बुवाई कब करने जा रहे हैं। मैंने बता दिया और साथ में यह भी कह दिया कि दादाजी का खयाल है कि इस बार वसन्त में पानी नहीं बरसेगा; पिछले साल तो पानी बरस जाने से बुआई पिछड़ गई थी और बहुतों का बीज भी गल गया था।

इसपर उन्होंने कहा, "तुम्हारे दादा ईसा नहीं, गीले-सूखे के बारे में वे क्या जानते!"

मैंने उन्हें कोई जवाब नहीं दिया, देने से कोई लाभ भी न था। मैं अम्ब्रोश और एण्टोनिया के खेतों से लौट आने की प्रतीक्षा में बैठा रहा और मिसेज़ शिमरडा को रोटी पकाते देखता रहा। उन्होंने अंगीठी में से एक कॉफी-केक को बाहर निकाला और ब्यालू के समय तक उसे गरम रखने के विचार से पंख-भरी रज़ाई में लपेटकर रख दिया। एक बार उन्होंने भूने हुए कलहंस को भी गरम रखने के लिए इसी तरह रज़ाई में लपेटा था। जब मकान बन रहा था तो पड़ोसियों ने इसे देख लिया और चारों ओर यह बात फैल गई कि शिमरडा परिवार अपना खाना पंख-भरे बिस्तरों में लपेटकर रखता है।

जब सूरज डूबने को हुआ तो एण्टोनिया दक्षिणवाला बड़ा ढलवान चढ़कर अपने घोड़ों के साथ आती दिखाई दी। पिछले आठ महीनों में वह कितनी बड़ी हो गई थी! जब यहां आई तो निरी बच्ची थी, और अब भरे डील-डौलवाली लम्बी किशोरी, यद्यपि उसकी पन्द्रहवीं वर्षगांठ को ज्यादा दिन नहीं हुए थे। मैं उससे मिलने के लिए बाहर दौड़ा गया। वह पवन-चक्की के पास अपने घोड़ों को पानी पिला रही थी। उसके पांव में वे बड़े जूते थे, जिन्हें उसके पिताजी ने आत्महत्या से पहले उतारकर रख देने की समझदारी की थी। बदन में वह बड़ा-सा ढीला-ढाला सूती कपड़ा पहने थी जो उसकी पिंडलियों तक आता था। आस्तीनें वह दिन-भर चढ़ाए रहती, जिससे उसकी बांहें और गला धूप में तपकर मल्लाहों की तरह तांबे जैसा हो गया था। कंधों पर उसकी मज़बूत गरदन पेड़ के तने की तरह

उभरी हुई थी। सभी कृषि-प्रधान देशों की किसान औरतों की गरदनें बिलकुल इसी तरह खेती के घोड़े की गरदन जैसी पुष्ट होती हैं।

उसने हुलसकर मेरा अभिवादन किया और छूटते ही बताने लगी कि आज दिन-भर में उसने कितनी जमीन जोती है। उसने यह भी बताया कि अम्ब्रोश मैदान के उत्तरी हिस्से में बैलों से नई ज़मीन फाड़ रहा है।

"जिम, तुम जेक से पूछना कि आज उसने कितनी ज़मीन जोती। मैं उसके बराबर रहना चाहती हूं, एक भी दिन पिछड़ूंगी नहीं। ज़रूर इस बार हमारे यहां ढेर सारा अनाज होगा। देख लेना तुम।"

एण्टोनिया पवन-चक्की की सीढ़ियों पर अपना सिर एक हाथ पर रखकर बैठ गई। उधर घोड़े पानी पीते रहे, दोनों ने क्षण-भर को थूथनें मिलाईं और फिर पानी पीने लगे।

"पिछली रात तुम्हें अपने यहां से प्रेरी में लगी वह बड़ी आग दिखाई दी थी? तुम्हारे दादाजी की गंजियां तो नहीं जलीं न?"

"ना, नहीं तो।" मैंने कहा और आगे बोला, "टोनी, मैं तुमसे कुछ पूछने आया हूं। दादीजी जानना चाहती हैं कि क्या तुम स्कूल जाना पसन्द करोगी, अगले हफ्ते स्कूल खुल रहा है। वहां की अध्यापिका बहुत अच्छी हैं, और तुम्हें बहुत कुछ सीखने को मिलेगा।"

एण्टोनिया उठकर खड़ी हो गई, उसने दो-एक बार अपने कन्धों को ऊपर-नीचे किया, मानो वे जकड़ गए हों और तब बोली, "मेरे पास पढ़ाई के लिए वक्त ही कहां है? आदमियों की तरह काम करती हूं। अब अम्मां यह नहीं कह सकतीं कि अकेला अम्ब्रोश खटता है और कोई उसका हाथ बंटानेवाला नहीं। बिलकुल उसके मुकाबले काम करती हूं। स्कूल छोटे बच्चों के लिए है, मेरे लिए नहीं। मैं तो इस ज़मीन को अच्छा-सा खेत बनाने में जुटी हूं।"

घोड़ों को टचकारा देकर वह उन्हें बखारघर की ओर ले चली। मैं चिन्तामग्न उसके साथ हो लिया। सोचता जा रहा था कि आगे चलकर क्या इसका स्वभाव भी इसकी माताजी जैसा डींगियल और घमण्डी हो जाएगा? चलते-चलते जब उसकी चुप्पी कष्टकर हो उठी तो मैंने उसके मुंह की ओर देखा। वह रो रही थी। उसने तुरन्त मुंह फेर लिया और

आसमान में मिटती दिन की लाली की ओर देखने लगी।

वह अपने घोड़ों का साज़ खोलने लगी। मैं मचान पर चढ़ गया और घास नीचे गिराने लगा। फिर हम दोनों साथ-साथ घर की ओर चले। अम्ब्रोश लौट आया था और पोखरे पर बैलों को पानी पिला रहा था।

हम धीरे-धीरे चल रहे थे। एण्टोनिया ने मेरा हाथ अपने हाथ में ले लिया और बोली, "स्कूल में जो अच्छी-अच्छी बातें सिखाई जाती हैं वे तुम मुझे बता दिया करना। बता दोगे न जिम्मी ?" फिर एकदम विह्वल होकर कहने लगी, "मेरे बापू स्कूल में बहुत पढ़े थे। वे बहुत-सी बातें जानते थे। इतना महीन और बढ़िया कपड़ा बनाते थे, जो तुमने यहां देखा भी नहीं होगा। तुरही और दिलरुबा बजाना जानते थे। और किताबें तो उन्होंने इतनी पढ़ी थीं कि सारी बोहेमिया के पादरी उनसे पूछने और बातें करने आते थे। मेरे बापू को तुम भूल तो नहीं जाओगे, जिम ?"

"नहीं," मैंने कहा था, "मैं उन्हें कभी नहीं भूलूंगा।"

मिसेज़ शिमरडा ने मुझे ब्यालू के लिए रोक लिया। अम्ब्रोश और एण्टोनिया रसोईघर के दरवाज़े के पासवाले वाश-बेसिन में हाथ और मुंह पर छाई खेतों की गर्द धो चुके तो हम लोग खाना खाने बैठे। मेज़ पर मोमजामा बिछा था। मिसेज़ शिमरडा ने लोहे के बरतन में से करछुल से लपसी परोसकर ऊपर से दूध डाल दिया। लपसी के बाद ताज़ी रोटी और सोरगुम की राब परोसी गई। अन्त में कॉफी के साथ केक दिए गए। यह वही केक था जिसे गरम रखने के लिए मिसेज़ शिमरडा ने रज़ाई में लपेटा था। एण्टोनिया और आम्ब्रोश बोहेमी भाषा में झगड़ने लगे कि आज किसने ज़्यादा जुताई की। मिसेज़ शिमरडा गपागप खाती हुई उन्हें उकसाती जा रही थीं। वे बहुत खुश मालूम पड़ती थीं।

सहसा अम्ब्रोश तैश में आ गया और अंग्रेज़ी में बोला, "मेरेवाले हल में कल बैल जोतकर देखना ज़रा, सारी अकड़ ढीली पड़ जाएगी।"

एण्टोनिया खिलखिला उठी और बोली, "क्यों दिल छोटा करते हो ! क्या मैं जानती नहीं कि नई ज़मीन तोड़ना कितना मुश्किल काम है ? चाहो तो मैं कल तुम्हारी बारी की गाय दुह दूंगी।"

गाय का उल्लेख होते ही मिसेज़ शिमरडा फुर्ती से मेरी ओर मुड़ीं

और बोलीं, "गाय उतना दूध नहीं देती जितना तुम्हारे दादाजी ने कहा। अगर उन्होंने पन्द्रह डालर देने को कहा, मैं गाय लौटा दूंगी।"

"पन्द्रह डालर उन्होंने मांगे ही कब?" मुझे गुस्सा आ गया था, "वे तो आज तक ज़बान पर नहीं लाए। दूसरों के दोष निकालते फिरना मेरे दादाजी की बान नहीं।"

"कैसे कहते हो!" अम्ब्रोश भुन्ना उठा, "कह रहे थे कि मैंने आरी तोड़ डाली, जब कि मैंने नहीं तोड़ी। मकान बनाते समय की बात है।"

मैं जानता था कि वह झूठ बोल रहा है। आरी उसीने तोड़ी थी और फिर छिपा दी थी और झूठ बोल गया था। सारा खाया-पीया ज़हर हो गया। अपने-आपको कोसने लगा कि ब्यालू के लिए क्यों रुका! अब वहां किसी चीज़ में मन नहीं लग रहा था। एण्टोनिया आदमी की तरह आवाज़ करती हुई खा रही थी, उसने कई बार जंभाइयां लीं और हाथों को इस तरह फैलाती रही मानो दर्द करते हों। दादीजी ने सच ही कहा था, 'खेती का कड़ा काम उसकी सारी आदतें बिगाड़कर रख देगा। एकदम फूहड़ हो जाएगी।' फूहड़ तो वह हो ही गई थी।

ब्यालू के बाद मैं वासन्ती रात के उदास धुंधलके में घर लौट आया। सर्दियों के बाद एण्टोनिया से मिलने के बहुत ही कम अवसर मिले थे। वह दिन उगे से दिन छिपे तक खेतों में जुटी रहती। कभी टट्टू पर सवार, जहां वह हल चला रही होती, चला भी जाता तो क्षण-भर ठिठककर एक-आध बात कर लेती और फिर घोड़ों को टचकारती हुई हल की मुठिया थामे काम में लग जाती थी। उसके व्यवहार से ऐसा आभास होता मानो मैं निरा बालक हूं, वह बड़ी हो गई है और काम के मारे उसे मुझसे बोलने-बतियाने तक की फुर्सत नहीं है। रविवार के दिन भी वह काम में लगी रहती, कभी अपनी अम्मां के साथ बगीची की क्यारियां गोड़ती तो कभी दिन-भर बैठी सीना-पिरोना किया करती। दादाजी एण्टोनिया से बहुत खुश थे। जब हम शिकायत करते तो वे मुस्करा देते और कहते, "बड़ी काम करनेवाली लड़की है वह। जिससे भी शादी करेगी वह निहाल हो जाएगा! अन्न-धन की उसे कोई कमी नहीं रहेगी।"

इन दिनों टोनी की बातों के सारे विषय ही बदल गए थे। अक्सर

चीज़ों की कीमतों के बारे में या वह कितना वज़न उठा सकती है और बिना थके कितनी देर काम कर सकती है, इन्हीं गिने-चुने विषयों पर बातें करती थी। अपनी ताकत का उसे बड़ा घमण्ड था। अम्ब्रोश ने उसके ज़िम्मे कुछ ऐसे काम भी लगा दिए थे, जो लड़कियों के करने के नहीं थे। पास-पड़ोस के खेतिहर इस बात को लेकर ऐसी भद्दी मज़ाकें करने लगे थे कि सुन-सुनकर मेरा सिर शर्म से नीचा हो जाता था। जब भी मैं उसे हल की मुठिया थामे, घोड़ों को टचकारते, छाती तक बटन खोले, धूल से सना गला, गरदन और सीना लिए, पसीने से लथपथ, धूप में संवलाए चेहरे से लीक-लीक आते देखता तो मुझे मिस्टर शिमरडा के उस समय का वह स्वर याद आ जाता था जब वे स्नेह-विभोर होकर कहा करते थे, "मेरी आन्तोनिया !" बेचारे बहुत कम बोल पाते थे लेकिन थोड़े में ही कितना अधिक कह दिया करते थे !

१८

स्कूल में भर्ती हो जाने के बाद तो अपने बोहेमी पड़ोसियों से बहुत ही कम मिल पाता था। स्कूल में हम सोलह विद्यार्थी थे और सभी दुपहर का खाना साथ लेकर और अपने-अपने घोड़ों पर सवार होकर आया करते थे। मेरे सहपाठी अच्छे नहीं थे, लेकिन फिर भी मैंने उनसे दोस्ती कर ली और मानो इस तरह एण्टोनिया की उपेक्षा का बदला चुकाता रहा। पिता की मृत्यु के बाद अब अम्ब्रोश पूरी तरह परिवार का मुखिया बन गया था और अपने घर की औरतों का भाग्य-नियन्ता ही नहीं उनके विचारों और उनकी भावनाओं का नियामक भी हो गया था। एण्टोनिया मेरे आगे प्रायः उसकी राय का हवाला देती और यह दिखलाना न चूकती कि वह उसका आदर करती है और मुझे निरा बच्चा समझती है। वसन्तऋतु खत्म होने से पहले ही शिमरडों और हममें काफी मनमुटाव हो गया। उसका कारण यह घटना थी :

बहुत दिन हुए अम्ब्रोश जेक से घोड़े का एक साज़ मांगकर ले गया था। जब उसने लौटाया नहीं तो एक रविवार के दिन सवेरे मैं और जेक घोड़ों पर सवार होकर उससे वह साज़ मांगने के लिए गए। वासन्ती सवेरे की छटा अपनी पूरी बहार पर थी। सड़क के दोनों ओर ढेर के ढेर लाल, बैंगनी और गुलाबी फूल खिले हुए थे। लवा पक्षी गत वर्ष के सूरजमुखी के सूखे ठूंठों पर बैठे सूरज की अगवानी के गीत गा रहे थे। वे सिर उठाए सीधे सूरज की ओर देख रहे थे और उनकी पीली छातियां गीत की ताल पर तरंगित हो रही थीं। सवेरे की मन्द, मधुर, उष्ण बयार बह रही थी। रविवार होने से काम-काज की कोई जल्दी नहीं थी इसलिए हम बड़े इत्मीनान से धीरे-धीरे और खुश-खुश चले जा रहे थे।

जाकर देखा तो शिमरडा परिवार के सारे सदस्य इस तरह काम में जुटे थे मानो रविवार के बदले सप्ताह का साधारण दिन हो। मारेक अस्तबल की सफाई कर रहा था। एण्टोनिया और उसकी माताजी पोखरे के पार ढाल के सिरे पर बगीची की क्यारियां गोड़ रही थीं। अम्ब्रोश पवन-चक्की के बुर्ज में पहिये को तेल लगा रहा था। बुलाने पर उतरकर आया तो सही, परन्तु बड़े बेमन से और कुछ नाराज़ होता हुआ। जब जेक ने घोड़े का साज़ मांगा। तो वह 'हुं ह्' करके सिर खुजलाने लगा। साज़ जेक का तो था नहीं कि छोड़ देता। चीज़ दादाजी की थी, जेक ने दे दी थी और अब लौटाकर ठिकाने पहुंचा देने की ज़िम्मेवारी उसकी थी। उसका गुस्सा हो उठना उचित ही था।

"देखो अम्ब्रोश, यह कहने से काम नहीं चलेगा कि साज़ तुम्हारे पास नहीं है। मैंने खुद तुम्हें दिया था। कान खोलकर सुन लो, यदि तुम खोज कर नहीं लाए तो मुझे जाकर खोजना पड़ेगा।"

अम्ब्रोश कन्धे सिकोड़कर और मुंह बिचकाकर नीचे अस्तबल की ओर चल दिया। उसका बुरा मन्शा मैं उसी समय भांप गया था। थोड़ी देर बाद वह लौट आया। हाथों में एक पुराना-धुराना साज़ लिए हुए था जिसे जगह-जगह से चूहे कुतर गए थे, वह धूल और मिट्टी में सना हुआ था और बाल बाहर निकल आए थे।

"यही साज़ तुम चाहते हो न ?" उसने दुष्टता से पूछा।

जेक अपने घोड़े पर से नीचे कूद पड़ा। मारे गुस्से के उसका चेहरा लाल-गुलाल हो गया था। बोला, "मैंने जो साज़ दिया वह बिलकुल नया था, अम्ब्रोश ! यदि तुमने उसकी यह गत कर दी है तो मैं इसे लौटाकर हर्गिज़ मिस्टर बरडन के पास नहीं ले जाऊंगा। धरे रहो अपने पास।"

अम्ब्रोश ने साज़ वहीं ज़मीन पर गिरा दिया, बड़े आराम से कहा, "अच्छी बात है" और तब तेल की कुप्पी उठाकर पवन-चक्की की सीढ़ियां चढ़ने लगा। जेक ने लपककर उसका कमरबन्द पकड़ लिया और ज़ोर से अपनी ओर खींचा। ज़मीन पर आने से पहले अम्ब्रोश ने जेक के पेट का निशाना साधकर ज़ोर से लात चला दी। जेक सतर्क था ही, तुरन्त बगली काटकर वार बचा गया। ऐसी कमीनी हरकत तो बच्चे आपस में झगड़ा हो जाने पर मारा-मारी के समय भी नहीं करते। जेक आपा खो बैठा। उसने अम्ब्रोश के सिर पर पूरी ताकत से घूंसा मारा—खटाक की आवाज़ हुई, मानो कुल्हाड़ी से कद्दू काटा हो। अम्ब्रोश वहीं बेहोश होकर गिर पड़ा।

ज़ोर की चीखें सुनकर हमने देखा तो एण्टोनिया और उसकी माताजी बगटुट भागी आ रही थीं। पोखरे का चक्कर लगाकर आने के बदले वे सीधे गंदले पानी में होकर आई थीं और हड़बड़ी में अपने स्कर्ट तक उठाना भूल गई थीं। चीखें मारती और ज़ोर-ज़ोर से हाथ हिलाती वे वहां आ पहुंचीं। इस बीच अम्ब्रोश को होश आ गया था और वह थू-था करने लगा था, क्योंकि उसकी नकसिर फूट गई थी।

जेक उछलकर घोड़े पर सवार हो गया और बोला, "भाग चलो जिम ! यहां ठहरना ठीक नहीं।"

मिसेज़ शिमरडा ने दोनों हाथ आसमान की ओर उठाकर इस बुरी तरह कोसा कि यदि उनका बस चलता तो बिजली ही गिरा देतीं। फिर वे चीखने लगीं, "कानून, सज़ा ! मेरे अम्ब्रोश को मारा; कानून, सज़ा।"

"जेक और जिम बरडन, आज से तुम्हारी-मेरी कुट्टी ! आंख उठाकर भी नहीं देखूंगी।" एण्टोनिया अलग गुस्से से कांप रही थी।

जेक एक क्षण ठिठका और अपने घोड़े की बाग मोड़कर बोला, "तुम सबके सब अहसानफरामोश हो ! जिम के घरवालों को भी तुम्हारी कोई गरज़ नहीं पड़ी है। उनके लिए तो तुम सिरदर्द ही रहे हो।"

हम घोड़े दौड़ाते लौट आए। इस बुरी तरह गुस्सा आ रहा था कि सवेरे का सारा मज़ा किरकिरा हो गया। मैं रास्ते भर चुप रहा। जिम मारे गुस्से के बुरी तरह कांप रहा था और उसका चेहरा एकदम सफेद हो गया था। गुस्सा करने से उस बेचारे को बहुत तकलीफ होती थी और अक्सर बीमार हो जाया करता था।

"कोई भरोसा नहीं, जिम्मी," वह चोट खाए स्वर में कहता रहा, "इन परदेसियों का कोई भरोसा नहीं। झूठ और फरेब तो इनकी रग-रग में भरा होता है। किसीको लात मारना कितनी बुरी बात है। और देख लिए उन लुगाइयों के हाल जबकि सर्दियों-भर हम इन कम्बख्तों के लिए खटते रहे हैं। बड़े अहसानफरामोश हैं! ज़रा भी भरोसे के काबिल नहीं। तुम्हारा उनसे मेल-जोल बढ़ाना मुझे बिलकुल पसन्द नहीं।"

"मैं तो उनसे अब बोलूंगा भी नहीं। जैसा क्रायीक और अम्ब्रोश वैसे ही वे सब हैं।" गुस्से के मारे खुद मेरा बुरा हाल हो रहा था।

दादाजी ने सारा हाल सुना तो धीरे से मुस्करा दिए और जेक को सलाह दी कि वह कल ही शहर जाकर किसी जे० पी० (जस्टिस आफ पीस) के आगे जुर्म इकबाल कर ले और अम्ब्रोश को पीटने का जुर्माना अदा कर आए। उसके बाद, यदि मिसेज़ शिमरडा अपने बेटे के नाबालिग होने की आड़ लेकर कुछ झगड़ा-टंटा करना भी चाहें तो उनका बस नहीं चलेगा। जेक तुरत राज़ी हो गया और बोला कि घोड़ागाड़ी में चला जाऊंगा और अपने सूअर को भी बेचता आऊंगा। वह पिछले कई दिनों से इस सूअर को खिला-पिलाकर मोटा कर रहा था। सोमवार के दिन, जेक के रवाना होने के कोई घण्टे-भर बाद, मिसेज़ शिमरडा और अम्ब्रोश भी, गाड़ी में बैठकर जाते दिखाई दिए। दोनों फूलकर कुप्पा हो रहे थे और न दायें देखते थे और न बायें। उन्हें ब्लैकहॉकवाली सड़क पर मुड़ते देख दादाजी ने मुस्कराकर कहा, "मुझे अन्देशा था ही कि मिसेज़ शिमरडा मामले की चाराजोई के लिए शहर जाएंगी।"

जेक ने जुर्माना अदा कर दिया। दादाजी ने उसे खास इसी काम के लिए अपने पास से दस डालर का एक नोट दिया था। लेकिन मिसेज़ शिमरडा को जब पता चला कि जेक ने उस दिन शहर में अपना सूअर बेचा

है तो दोनों मां-बेटे ने यही निष्कर्ष निकाला कि जुर्माना अदा करने के लिए अपना सूअर बेचना पड़ा। इस विचार से उन लोगों को बड़ी प्रसन्नता हुई। उसके बाद डाकखाने या सड़क पर कहीं जाते हुए एण्टोनिया जेक और मुझे दिखाई दे जाती तो ताली बजाकर बेसुरे स्वर में गाने लगती, "जेकी, जेकी, सूअर बेच; जुर्माना भरकर रसीद सहेज।" यह क्रम कई हफ्तों चलता रहा।

ओटो को एण्टोनिया के इस आचरण पर ज़रा भी विस्मय न हुआ। उसने भौंहें सिकोड़कर सिर्फ इतना ही कहा, "किसी चेक के बारे में तुम मुझे क्या बताओगे? आस्ट्रिया का रहनेवाला हूं और उन लोगों की नस-नस से वाकिफ हूं।"

दादाजी शिमरडों के साथ हमारे इस झगड़े से अलग ही रहे। अम्ब्रोश और एण्टोनिया पहले की ही तरह उनका आदर करते रहे; राह-बाट में कहीं मिल जाते तो उतनी ही तत्परता से प्रणाम-नमस्कार करते। दादाजी भी उतने ही स्नेह से उनके हाल-चाल पूछते और सलाह-मशविरा देते रहते थे। उन्हें शिमरडों का भविष्य काफी उज्ज्वल दिखाई देता था। उनकी राय में अम्ब्रोश दूरन्देश आदमी था। नई ज़मीन तोड़ने में पुराने बैलों को अनुपयुक्त पाकर उसने उन्हें एक नवागन्तुक जर्मन को बेच दिया था और उस पैसे से घोड़ों की नई जोड़ी खरीद ली थी, जिन्हें दादाजी ने पसन्द किया था। मारेक काफी ताकतवर था, और अम्ब्रोश उससे खूब कसकर काम लेता था। लेकिन उसे खेत जोतने का काम कभी नहीं आया। कहां कब कितना ज़ोर लगाना चाहिए, यह बात पगले मारेक की समझ के परे थी। वह सिर्फ इतना ही समझ पाया था कि हर जगह और हर काम में पूरा ज़ोर लगाना चाहिए। अपनी इस मूर्खतापूर्ण धारणा के कारण वह हल को इतने ज़ोर से दबाकर जुताई करता था कि फला धरती में बहुत गहरा धंस जाता और घोड़े बहुत जल्दी थक जाते थे।

जून में अम्ब्रोश ने एक सप्ताह के लिए मिस्टर बुशी के यहां काम करना स्वीकार कर लिया और मारेक को भी पूरी मज़दूरी पर अपने साथ लेता गया। अब उसके बदले मिसेज शिमरडा खेतों में हल चलाने लगीं। वे और एण्टोनिया दिन-भर खेतों में काम करतीं और शाम को घर-गिरस्ती

के काम। उन्हीं दिनों की बात है। घर में मां-बेटी अकेली ही थीं कि एक रात उनका नया घोड़ा सहसा बीमार हो गया। बेचारियां बुरी तरह घबड़ा उठीं।

हुआ यह कि एण्टोनिया सोने से पहले सदा की तरह बखारघर में देखने के लिए गई कि सबकुछ ठीक-ठाक तो है ! वहां एक चितकबरे घोड़े का पेट फूलकर मशक हो गया था और वह सिर लटकाए खड़ा था। वह तुरत दूसरे घोड़े पर सवार होकर भागी-भागी हमारे यहां आई। घोड़े की पीठ ज़ीन कसने के लिए भी नहीं रुकी ; नंगी पीठ पर ही दौड़ी आई थी। उसने दस्तक दी तो हम सब सोने जा रहे थे। दादाजी ने जाकर दरवाज़ा खोला। नौकरों में से किसीको भेजने के बदले एक पिचकारी और कालीन का पुराना टुकड़ा साथ लेकर वे स्वयं उसके यहां गए। कालीन का वह टुकड़ा घोड़ों के बीमार हो जाने पर गरम सेंक के काम आता था। दादाजी शिमरडों के यहां पहुंचे तो मिसेज़ शिमरडा लालटेन लिए बीमार घोड़े के पास बैठी रो रही थीं। घोड़े के पेट में हवा कुन्द हो गई थी। दादाजी ने मिनटों में उसे अच्छा कर दिया। फर्र-फर्र कर सारी हवा बाहर निकल गई और देखते-देखते कबरे घोड़े का फूला पेट पिचक गया। मां-बेटी दादाजी की यह हिकमत देखती ही रह गईं।

"अगर घोड़ा मर गया मिस्टर बरडन," एण्टोनिया ने दादाजी से कहा था, "तो मैं अम्ब्रोश को क्या मुंह दिखाऊंगी ! तब तो मुझे रात में ही इस पोखरे में डूब मरना होगा।"

मिस्टर बुशी का काम खत्म कर जब अम्ब्रोश लौट आया तो हमने सुना कि उसने मारेक की कमाई के सारे पैसे ब्लैकहॉक के पादरी को अपने पिता की आत्मा की शान्ति के लिए प्रार्थना करने को दे दिए। दादीजी को यह अच्छा नहीं लगा। बोलीं, "मिस्टर शिमरडा के लिए प्रार्थना करवाने से एण्टोनिया के लिए जूते खरीदना ज़्यादा ज़रूरी था।" इसपर दादाजी ने उदारतापूर्वक कहा, "हाथ तंग रहने पर भी पादरी को छह डालर देने का मतलब है कि धर्म में उसकी पक्की आस्था है।"

शिमरडों से हमारा समझौता भी दादाजी के प्रयत्नों से ही हुआ। एक दिन सवेरे के समय उन्होंने कहा कि छोटे अनाज करीब-करीब पक चले हैं

इसलिए गेहूं की कटनी पहली जुलाई से शुरू कर देनी चाहिए। लेकिन इस काम के लिए अलग से आदमी चाहिए और अगर सब लोग रज़ामन्द हों तो अम्ब्रोश को कटनी और गाहनी के लिए लगा लिया जाए, क्योंकि उनके तो छोटा अनाज है नहीं।

अपनी बात समाप्त करते हुए उन्होंने कहा, "और मैं सोचता हूं इमेलिन, कि रसोई के काम में तुम्हारी मदद के लिए एण्टोनिया को बुला लाऊं। वह कुछ कमा लेगी और फिर आपसी गलतफहमियां अब दूर भी हो जानी चाहिए। अभी ठण्डे-ठण्डे जाकर बात पक्की कर आता हूं। जिम, तुम साथ चलोगे?" था तो वह प्रश्न लेकिन कहा गया था आदेश के रूप में।

नाश्ता करके हम लोग चल पड़े। मिसेज़ शिमरडा ने हमें आते देखा तो दरवाज़े पर से दौड़कर ढाल से निचान में उतरती हुई अस्तबल के पीछे चली गईं, मानो हमसे मिलने में कतराती हों। दादाजी ने देखा तो मुस्करा दिए। हमने उतरकर घोड़े को बांधा और उनसे मिलने अस्तबल की ओर चले।

बखारघर के पीछे एक विचित्र ही दृश्य दिखाई दिया। गाय निचान में खूंटे से बंधी कहीं चर रही थी। मिसेज़ शिमरडा खूंटा उखाड़कर उसे खींच लाई थीं और जब हम पहुंचे तो वे उसे एक गड़हे में छिपाने की कोशिश में लगी थीं। गड़हा गुफानुमा, संकरा और अंधेरा था और गाय अन्दर जाने से इनकार कर रही थी, और मिसेज़ शिमरडा उसे पीटती हुई पीछे से गड़हे के अन्दर धकेल रही थीं।

दादाजी ने जैसे यह देखकर भी नहीं देखा और बड़ी विनम्रता से अभिवादन किया, "गुड मार्निग, मिसेज़ शिमरडा। क्या बता सकेंगी कि अम्ब्रोश कहां मिलेगा? किस खेत में?"

"मक्का के उस खेत में।" उन्होंने उत्तर की ओर इशारा करते हुए कहा। वे गाय के सामने इस तरह खड़ी हो गई थीं मानो उसे छिपा ही लेंगी।

"मक्का के उस खेत में इस बार चरी अच्छी हो जाएगी।" उन्होंने उत्साह-भरे स्वर में कहा और तब पूछा, "और एण्टोनिया कहां है?"

"वहीं, उसके साथ।" वे किंकर्तव्यविमूढ़-सी धूल में अपने नंगे पांवों

को हिलाती खड़ी रहीं।

"अच्छी बात है; मैं वहीं चला जाता हूं। मेरा विचार आते महीने उन दोनों को मेरे यहां गेहूं और जौ की कटनी पर लगा लेने का है। दोनों को वाजिब मज़दूरी दी जाएगी। अच्छा, नमस्कार। हां, एक बात और है मिसेज़ शिमरडा," दादाजी ने चलते-चलते कहा, "मैं समझता हूं कि गाय का हिसाब अब बेबाक हो जाना चाहिए।"

वे चौंक पड़ीं और गाय के पगहा को कसकर पकड़ लिया। अपनी बात को समझते न देख दादाजी ने मुड़कर कहा, "अब आपको देना कुछ नहीं रहा, गाय आपकी हो गई।"

"देना नहीं रहा, गाय मेरी हो गई ?" धूप में अपनी छोटी-छोटी आंखें मिचकारते हुए उन्होंने डरे-डरे-से स्वर में पूछा।

"जी हां, देना कुछ नहीं रहा, गाय आपकी हुई।" दादाजी ने स्वीकृति-सूचक सिर हिलाते हुए कहा।

मिसेज शिमरडा ने पगहा छोड़ दिया, दौड़कर पास आ गईं और झुककर दादाजी का हाथ पकड़ लिया और चूमने लगीं। दादाजी अपनी सारी ज़िन्दगी में ऐसे कभी सिटपिटाए न होंगे। और सकुचा तो मैं भी गया था। लेकिन अच्छा ही हुआ। कई दिनों से चली आती मनोमालिन्य की दीवार एकबारगी ही ढह गई।

हम हंसते हुए वहां से आगे बढ़े और दादाजी कहते जा रहे थे, "बेचारी ज़रूर यह सोच-सोचकर मरी जा रही थी कि हम गाय को लेने आए हैं। यदि हम पगहा थाम ही लेते तो जाने क्या कर डालती और आसमान सिर पर उठाए बिना तो हमें क्या ही जाने देती।"

समझौता हो जाने की खुशी हमारे पड़ोसियों को भी कम न थी। अगले ही इतवार को मिसेज़ शिमरडा हमारे यहां आईं। वे जेक को देने के लिए अपने हाथ से बुने मोज़े भी लाई थीं। पूरे आडम्बर के साथ जेक को मोज़े देते हुए उन्होंने कहा, "अम्ब्रोश को पीटने के लिए तो अब तुम हमारे यहां नहीं आओगे न ?"

जेक सकुचा उठा और धीरे से बोला, "मुझे अम्ब्रोश से कोई दुश्मनी थोड़े ही है ! वह मुझे नहीं छेड़े तो मैं भी उसे क्यों छेड़ूंगा।"

"अगर उसने पीटा तो हम जुर्माना चुकाने के लिए सूअर कहां से लाएंगे ?" उन्होंने वाक-प्रहार कर ही दिया।

जेक ने ज़रा भी बुरा न माना। हंसकर बोला, "आप सब कुछ कह सकती हैं। हमारी मेहमान हैं और महिला भी; एक नहीं दो-दो विशेषाधिकार हैं आपके।"

१९

जुलाई का महीना दम निकालनेवाली उस तेज़ गर्मी के साथ शुरू हुआ जिसकी बदौलत कन्सास और नेब्रास्का की धरती सारी दुनिया में मक्का का सर्वश्रेष्ठ इलाका है। हमें तो जैसे रात में मक्का के बढ़ने की आवाज़ भी सुनाई देने लगी थी। मक्का के उन खुशबूदार खेतों से जहां लम्बी पत्तियोंवाले हरे रसीले पौधे झूमा करते, तारों-भरी रात में फूटने और तड़कने की हलकी-हलकी आवाज़ें आया करती थीं। मिसौरी से लेकर रॉकी पर्वतमाला तक फैले विशाल मैदान पर बरसती चिलचिलाती धूप भुट्टों की बाहर लटकती बल्लरों के सहारे अन्दर के मुलायम दानों को ठीक उसी तरह पकाकर पुष्ट कर रही थी जैसे ताप-मापी से नियन्त्रित गर्मी अपना काम करती है। उन दिनों मक्का के खेत काफी दूर-दूर थे और बीच में घास के मीलों लम्बे टुकड़े। तब मेरे दादाजी जैसों की दूर-दृष्टि ही भविष्य के गर्भ में छिपे इस सत्य को उद्घाटित कर पाती थी कि किसी दिन टुकड़ों में बंटे ये खेत फैल और बढ़कर बहुत बड़े हो जाएंगे और शिमरडा एवं बुशी आदि व्यक्तियों के निजी खेत न रहकर सारे विश्व के खेत—दुनिया की मक्का के खेत—हो जाएंगे; और इनकी उपज का मानव-जाति के युद्ध अथवा शान्तिकालीन क्रिया-कलापों के लिए उतना ही आर्थिक महत्त्व होगा जितना कि रूसी गेहूं का।

कुछ सप्ताहों तक सूरज लगातार तपता और आग उगलता रहा और रात में यदा-कदा पानी भी बरस जाता था। इस सबसे मक्का की फसल

को काफी लाभ पहुंचा। जब दाने जम गए और उनमें जीव पड़ गया तो हमें सूखे का कोई डर नहीं रहा। लेकिन गेहूं के खेतों में कटनी के कमरतोड़ काम में जुटे लोगों को गर्मी का जैसे कोई भान ही नहीं था। उन्हें पानी पिलाते-पिलाते मेरा कचूमर ज़रूर निकल जाता था। दादीजी और एण्टोनिया को रसोईघर में इस बुरी तरह जुटे रहना पड़ता था कि उन्हें भी मौसम की गर्मी का पता नहीं चल पाता था। सवेरा अभी ओसभीगा ही होता कि मैं और एण्टोनिया उठकर बगीची से सब्ज़ियां लाने के लिए चल देते थे। और यह उन दिनों हमारा रोज़ का क्रम था। दादीजी उसे धूप से बचाने के लिए रोज़ बड़ा हैट पहना दिया करती थीं; लेकिन बगीची पहुंचते ही वह उसे उतारकर घास पर रख देती और हवा में उसके बाल फर-फर उड़ने लगते। आज भी मुझे याद है कि जब हम फलियां तोड़ रहे होते तो किस तरह उसके होंठ पर पसीने की बूंदें मूंछों की रेख की तरह उभर आया करती थीं।

"घर के अन्दर खटने के बजाय मुझे तो बाहर खेती-बाड़ी का काम करना सुहाता है। दादीजी लाख कहती रहें कि कड़ी मशक्कत मेरे हाड़ को आदमियों जैसा बना देगी, पर मुझे कोई परवाह नहीं। आदमी जैसा हाड़ मुझे तो अच्छा लगता है।" और सिर के बालों को झटका देकर वह मुझे अपनी बल्लियों की उभरी हुई मछलियां दिखाने लग जाती थी।

उसके आ जाने से घर में सभी खुश थे। उसके हंसमुख स्वभाव और कार्यतत्परता ने उसके सारे ऐबों पर परदा डाल दिया था और धमककर चलने एवं बरतनों की ज़ोर से उठा-पटक आदि की ओर किसीका ध्यान नहीं जाता था। और सबसे ज़्यादा खुश थीं दादीजी।

रात में बहुत उमस और गरमी हो जाया करती थी। कटनी करने-वाले घास भरने के मचान पर सोते थे, क्योंकि वह जगह मकान की अपेक्षा ठण्डी थी। मैं खुली खिड़की के पास सोता था और क्षितिज की कोर पर बिजलियों की दमक अथवा नीले आकाश में उठे पवन-चक्की के पंजर को देखा करता। एक रात बिजली की कड़क और चमक के साथ पानी बरसने लगा; लेकिन वर्षा इतनी कम हुई कि उससे कटे अनाज को कोई नुकसान नहीं हुआ। ब्यालू करके नौकर सीधे बखारघर में सोने के लिए चले गए

थे। तश्तरियां धो चुकने के बाद मैं और एण्टोनिया बादलों को देखने के लिए मुर्गीघर की ढलवां छत पर चढ़ गए। बिजली इतनी ज़ोर से कड़की मानो लोहे की कई चद्दरें एक साथ ज़ोर से खनखना उठी हों। आसमान में टेढ़ी-तिरछी बिजली कौंध गई और उसके उजाले में क्षण-भर को सब कुछ साफ-साफ दिखाई दे गया। करीब आधा आसमान काले बादलों से भरा था, लेकिन पूरा पश्चिमी आकाश साफ और नीलाभा से परिपूर्ण था। जब बिजली दमकती तो यह हिस्सा चांदनी में सोए पड़े नील सरोवर जैसा लगता था और बादलों-भरा हिस्सा किसी समुद्री नगर के ढहे जाते घाट पर की संगमरमरी पायधुनी जैसा। हम आकाश की ओर मुंह किए देख रहे थे। थोड़ी ही देर में बड़ी-बड़ी गरम बूंदें पड़ने लगीं। छोटी नौका जैसा एक काला बादल सबसे अलग मंडराता हुआ पश्चिम की ओर चला जा रहा था। हमें अपने चारों ओर बूंदों की पटर-पटर सुनाई दे रही थी, यहां तक कि धूल-भरी ज़मीन पर उनके गिरने की आवाज़ भी। तभी दादीजी ने दरवाज़े से झांककर कहा, "काफी देर हो गई है बच्चो, तुम भीग जाओगे, उतर आओ।"

"जी, अभी आए।" एण्टोनिया ने वहीं से पुकारकर जवाब दे दिया और फिर मुझसे बोली, "तुम्हारी दादीजी और यहां की सब चीज़ें बहुत अच्छी हैं और मुझे बहुत पसन्द भी।" उसने दुःख-भरी एक सांस ली, "काश मेरे बापू इन गर्मियों तक जीवित रहते और काश सर्दियां फिर कभी न आएं।"

मैंने दिलासा दिया, "अभी गर्मियां तो काफी दिन रहेंगी।" और फिर कहा, "टोनी, तुम इस समय कितनी अच्छी हो! क्या हमेशा ऐसी नहीं रह सकतीं?"

"ऐसी, यानी कैसी?"

"जैसीकि तुम हो; जैसी इस समय लग रही हो। क्यों हर समय अम्ब्रोश की तरह किया करती हो?"

वह सिर के नीचे दोनों हाथ बांधकर लेट गई और आसमान की ओर देखती हुई बोली, "यहां तुम्हारी तरह रहना अलग बात है। सब तरह का आराम है तुम्हें; वहां हमको तकलीफ ही तकलीफ है।"

दूसरा भाग

मुझे दादाजी के साथ रहते करीब तीन बरस हो गए थे तो उन्होंने ब्लैकहॉक रहने का फैसला किया। वे और दादीजी बूढ़े हो चले थे और खेती-बाड़ी का कड़ा काम अब उनसे हो नहीं सकता था, फिर मैं तेरह बरस का हो गया था, इसलिए मुझे स्कूल भेजना भी ज़रूरी था। यही सब सोच-विचारकर हमारे खेत-खलिहान और घर-बखार स्टीवेन्स की विधवा और उसके कुंआरे भाई को किराये पर उठा दिए गए और हमने ब्लैकहॉक के उत्तरी छोर पर व्हाइट पादरी का मकान खरीद लिया। हमारे खेत की ओर से शहर में आने पर पहला मकान यही पड़ता था, जिसे देखकर लम्बी दूरी से आनेवाले ग्रामीण इस विचार से सुख की सांस लेते कि चलो अपनी यात्रा खत्म हुई।

मार्च महीने से ब्लैकहॉक में आकर रहने की बात थी। जैसे ही उठ आने का दिन तय हुआ, दादाजी ने ओटो और जेक को भी बता दिया। ओटो ने कहा कि आपके जैसी बढ़िया जगह तो मुझे दूसरी मिलेगी नहीं और खेती-बाड़ी के काम से तंग भी आ गया हूं इसलिए दूर पछांह में कहीं निकल जाऊंगा। जेक मारपोल पर ओटो की बातों और साहसिक वृत्तांतों का कुछ ऐसा रंग चढ़ा कि उसने भी उसीके साथ जाने का फैसला कर लिया। हमने उसे रोकने की बहुत कोशिश की। एक तो पढ़ा-लिखा नहां था, दूसरे हर किसीपर बड़ी जल्दी विश्वास कर लेता था, इसलिए डर था कि चलते-पुर्जों के चंगुल में फंसकर तबाह हो जाएगा। दादीजी ने ऊंच-

नीच बहुत समझाया, बारहा कहा कि जाने-पहचाने भले लोगों के हा साथ रहो, पर वह कब माननेवाला था। उसे तो अमीर बनने की धुन सवार थी और सोचने लगा था कि कोलोरेडो में लबालब भरी चांदी की खदानें बस उसका रास्ता ही देख रही हैं।

लेकिन अपने जाने के दिन तक दोनों आदमी बराबर हमारी सेवा में जुटे रहे। उन्होंने हमारा सारा सामान शहर पहुंचाया, नये घर में दरियां और कालीन बिछवाए, रसोईघर में दादीजी के लिए अलमारियां और कपबोर्ड लगाए। इतने मनोयोग से काम कर रहे थे मानो जाना चाहते ही न हों। लेकिन एक दिन सहसा चल ही दिए। धूप हो या आंधी-तूफान, दोनों ने हमारे यहां बड़ी ईमानदारी और तनदेही से काम किया था; उनसे हमें जो सुख मिला वह दुनिया के किसी बाज़ार में खरीदा नहीं जा सकता। मेरे लिए तो दोनों ही बड़े भाई की तरह थे, मेरी उपस्थिति में न कोई अपशब्द बोले, न कोई अनुचित व्यवहार (आचरण) किया और न कभी मुझे अकेलापन अखरने दिया। एक दिन नये कपड़े पहने, मोमजामे के अपने थैले उठाए, पश्चिम की ओर जानेवाली गाड़ी पर सवार होकर ऐसे गए कि फिर लौटकर नहीं आए। महीनों बाद ओटो का एक कार्ड मिला कि जेक को पहाड़ी बुखार आने लगा था, अब अच्छा है और दोनों आदमी यँकी गर्ल माइन् में काम करते हैं और सब ठीक-ठाक है। मैंने उनके पते पर जवाब लिखा तो पत्र 'पानेवाले का पता नहीं' टिप्पणी के साथ लौट आया। उसके बाद उनका कोई पता नहीं चला।

ब्लैकहॉक की एक निराली ही दुनिया थी—साफ-सुथरा, सुघड़ आर सुनियोजित छोटा-सा प्रेरी कस्बा था वह। हर घर के आगे हरियाली से लदे अहाते, सफेद घेरे, धूल-भरी चौड़ी सड़कें और छोटे-छोटे वृक्षों की छाया में लकड़ी के पैदल रास्ते बने हुए थे। शहर के बीचोबीच नई ईंटों से बनी दुकानों की दो कतारें थीं, ईंटों का बना एक मदरसा, अदालत और चार सफेद गिरजाघर थे। ऊंचाई पर होने के कारण हमारे मकान से सारा कस्बा दिखाई देता था और ऊपरवाली मंज़िल की खिड़कियों से तो दो मील दूर दक्षिण में बहनेवाली नदी के घुमावदार किनारे भी दीख जाते थे। क्षितिज तक फैले खेतों का विस्तार छिन जाने के बाद इस नदी की धारा

और उसके किनारों को देख-देखकर मुझे बड़ी सान्त्वना मिलती थी।

मार्च के महीने में हम ब्लैकहॉक में रहने के लिए आए और अप्रैल खत्म होते-होते अच्छे-खासे कस्बाती बन गए। दादाजी नये बैप्टिस्ट चर्च में डीकन के पद पर नियुक्त हो गए थे ; दादीजी गिरजाघर के भोजों और मिशनरी सभा-समितियों में व्यस्त रहने लगी थीं; और मैं बिलकुल ही बदल गया था। सहसा अपने-आपको समवयस्क लड़कों के बीच पाकर लगता था कि बहुत कुछ सीखना-समझना बाकी रह गया है। स्कूल की वसन्तकालीन 'टर्म' (अवधि) खत्म होते-होते तो मुझे मारा-मारी करना, 'कीप्स' नाम का खेल खेलना, छोटी लड़कियों को तंग करना और अपनी कक्षा के अन्य लड़कों की तरह निषिद्ध शब्दों का धड़ल्ले से प्रयोग करना आ गया था। यदि हमारी पड़ोसिन मिसेज़ हार्लिंग का डर और दबाव न रहता तो शायद मैं सोलहो आने उच्छृङ्खल हो जाता। वे बराबर मुझपर निगाह रखतीं और एक सीमा के बाद मेरी शैतानियां बढ़ते देखतीं तो अपने घर मेरा आना ही नहीं बन्द कर देतीं अपने हंसमुख खिलन्दड़े बच्चों के साथ खेलने पर रोक भी लगा दिया करती थीं।

फार्म पर रहने की अपेक्षा अब अपने देहाती पड़ोसियों से ज़्यादा मिलना-जुलना हो जाया करता था। सुविधाजनक होने के कारण वे प्रायः हमारे यहां ठहरते थे। यहां घोड़ों को बांधने के लिए बड़ा-सा बखारघर था और गाड़ियां छोड़ने के लिए पिछवाड़े काफी बड़ा आंगन। अब तो उनकी औरतें भी अक्सर साथ आने लगी थीं, क्योंकि हमारे साथ खाना खाया जा सकता था, लम्बी यात्रा के बाद वे थोड़ी देर सुस्ता सकती थीं और बाज़ार में सौदा-सुलफ खरीदने के लिए जाने से पहले कपड़े-लत्तों को ठीक-ठाक करने की सुविधा तो खैर थी ही। एक तरह से हमारा घर देहाती होटल ही बन गया था और जितने ही अधिक आदमी होते मुझे उतना ही अच्छा लगता था। दुपहर में मदरसे से लौटकर जब पिछवाड़े किसी घोड़ा-गाड़ी को खड़ा पाता तो मेरी कली-कली खिल जाती थी। आकस्मिक रूप से आनेवालों के लिए नानबाई के यहां से रोटी या भुना हुआ गोश्त लाने मुझीको जाना पड़ता था और मैं इसके लिए सदैव तैयार रहता था। पूरी वसन्त और उसके बाद गर्मियों-भर मैं आस लगाए रहा कि अम्ब्रोश

एण्टोनिया और युल्का को हमारा नया घर दिखलाने के लिए लाएगा। मैं उन्हें लाल प्लश का अपना फर्नीचर और जर्मन सज्जाकार द्वारा बैठक की छत पर चित्रित बिगुल बजाते हुए नन्हे-नन्हे देवदूतों के चित्र दिखाना चाहता था।

इस बीच अम्ब्रोश कई बार आया। गाड़ी वह हमारे आंगन में ही छोड़ता था और घोड़े भी हमारे बखारघर में ही बांधता था। लेकिन भोजन के लिए वह कभी नहीं रुका और न उसने कभी अपनी मां और बहिनों के ही बारे में कुछ बताया। जब कभी उससे पूछा तो उसने कन्धे उचकाकर सिर्फ यही जवाब दिया, 'मज़े में हैं।'

मिसेज़ स्टीवेन्स अब हमारे खेत पर ही रहने के लिए आ गई थीं। हमारी तरह वे भी एण्टोनिया को चाहती थीं और जब भी आतीं उसके समाचार सुना जाती थीं। यह उन्हींने बताया कि अम्ब्रोश ने अपनी बहिन को आदमी की तरह गेहूं की कटनी पर लगाए रखा और वह पूले बांधने से गाहनी करने तक सारे मर्दाने काम करती रही। किसानों को उसका काम बहुत पसन्द आया और उन्होंने हर तरह से उसका खयाल रखा और कइयों ने तो यहां तक कहा कि वे अम्ब्रोश के बदले उसीको मज़ूरी पर लगाना पसन्द करते हैं। गतवर्ष शरद से क्रिसमस तक उसने पड़ोसियों की मक्का मींड़ी थी और शायद इस वर्ष भी उसे यही करना पड़ता, लेकिन दादीजी ने उसे हमारे पड़ोसी हार्लिंग परिवार में काम दिलाकर कस्बे बुला लिया।

२

कस्बे में हार्लिंग जैसे पड़ोसी पाकर दादीजी बहुत खुश थीं और इसके लिए भगवान को दुआएं दिया करती थीं। हमारी ही तरह वे भी किसान थे। कस्बे में रहने के बावजूद उनकी जगह छोटा-मोटा खेत ही थी—बड़ा-सा बखारघर, सब्ज़ियों की बाड़ी, फलों का बगीचा, चरागाह के बीड़ और एक पवन-चक्की भी थी। ये लोग मूलतः नार्वे के निवासी थे और मिसेज़ हार्लिंग

दस वर्ष की उम्र तक क्रिश्चीनिया में रही थीं। उनके पति का जन्म मिनेसोटा में हुआ था। वे गल्ले और पशुओं के क्रय-विक्रय का काम करते थे और हमारे इलाके के सबसे साहसी व्यापारी समझे जाते थे। पछांह की ओर रेल-मार्ग पर छोटे-छोटे कस्बों में उनके अन्न-भाण्डार (एलीवेटर) थे। और वे प्रायः यात्रा में रहते थे। उनकी अनुपस्थिति में घर का सारा काम उनकी पत्नी संभाला करती थीं।

मिसेज़ हार्लिंग अपने मकान की ही तरह ठमकी हुई, चौड़ी-चकली और मजबूत औरत थीं। शक्ति और उत्साह का तो जैसे वे स्रोत ही थीं; और जहां भी जातीं वातावरण को प्रेरित कर देती थीं। चेहरा भरा हुआ और गुलाबी, आंखें बड़ी और चमकीली और छोटी गोल ठुड्डी उनके दृढ़ निश्चय की सूचक थी। ज़रा-से में उन्हें गुस्सा आ जाता, ज़रा-से में खिलखिलाने लगतीं और हमेशा प्रसन्न रहा करतीं। उनकी हंसी मुझे खूब याद है—उनके नेत्रों से विकीरित मुदित आलोक जैसी खिलखिलाती, संक्षिप्त और बौद्धिकता से परिपूर्ण हंसी थी उनकी। छोटे कदम रखती धमधमाती हुई चला करतीं और जहां भी जातीं जड़ता, आलस्य, खेद, खिन्नता, अनमनेपन आदि को मार भगाती थीं। काम छोटा हो या बड़ा, पूरी उमंग और उत्साह से उसमें जुट जाया करतीं—बेमन से और लस्टम-पस्टम काम करना उन्हें ज़रा भी नहीं सुहाता था। हर मामले में अपनी पसन्द अथवा नापसन्द को ज़ोरों से व्यक्त करती थीं और जीवन के हर व्यापार को उत्सव बना डालती थीं। इसीलिए तो उनके यहां कपड़ों की धुलाई का दिन कमरतोड़ मजूरी के बदले हर्षोल्लास-भरी क्रीड़ा होता, अचार-मुरब्बा डालने के दिन त्योहार बन जाते और घर की सफाई किसी साम्राज्य की क्रान्ति से कम न होता। उस बार वसन्त में जब वे बगीची के काम में भिड़ीं तो उनका उत्साह और प्रेरणा झाड़बन्दी के इस पार हमें भी छू जाते रहे।

उनके तीन बच्चे लगभग मेरी ही उम्र के थे। इकलौता चार्ली—उनके बड़े लड़के की मृत्यु हो गई थी—मुझसे दो साल बड़ा, यानी सोलह का था। संगीताचार्य के नाम से प्रसिद्ध जुलिया मेरी समवयस्क थी। छोटे बालोंवाली चिबल्ली सैली तेरह बरस की थी। वह मेरे ही जितनी ताकतवर और लड़कों के सभी खेलों में कुशल थी। भूरी चमड़ी और धप खाए

पीले बालों वाली वह चिबल्ली लड़की जंगली बिल्ली ही थी। नंगे सिर हैट पहनने की तो जैसे उसने कसम खा रखी थी—झोंटे उछालती, एक पांव के स्केट पर सारे शहर में दौड़ लगाया करती और 'कीप्स' के खेल में इतनी सफाई से धोखा देती कि कोई पकड़ न पाता था।

फ्रांसिस थी उनकी सबसे बड़ी लड़की और हम बच्चों की दुनिया में बड़े सम्मान-सम्भ्रम का स्थान रखती थी। कारोबार में वह अपने पिता की मुख्य सहायिका थी और जब वे यात्रा पर जाते तो ब्लैक हॉक का अपना पूरा दफ्तर उसीके जिम्मे छोड़ जाते थे। व्यापार-वणिज के मामलों में वह बड़ी दक्ष थी; शायद इसीलिए उसके पिताजी उसके साथ सख्ती से पेश आते थे और खूब कसकर काम लेते थे। उन्होंने उसका वेतन बांध दिया था। खासी बड़ी रकम मिलती थी उसे हर महीने, लेकिन छुट्टियां बहुत कम थीं, इतवार को भी डाक देखने और बाज़ार-भाव मालूम करने के लिए दफ्तर जाना पड़ता था। चार्ली के साथ मिस्टर हार्लिंग उतना कठोर व्यवहार नहीं करते थे। व्यवसाय में उसकी कोई रुचि नहीं थी, पढ़ता था और अन्नापोलिस की तैयारियां कर रहा था। पिता ने उसे बन्दूक और औज़ार और बिजली की बैटरियां और न जाने क्या-क्या खरीद दिया था और कभी नहीं पूछते थे कि उसने उन चीज़ों का क्या किया।

फ्रांसिस का रंग अपने पिता की तरह गहरा और कद भी उन्हींके जितना लम्बा था। सर्दियों में वह सील के चमड़े का कोट और टोपी पहनती और अक्सर शाम को दोनों बाप-बेटी दो आदमियों की तरह गल्ले और पशुओं के बारे में बातें करते हुए घर लौटते थे। कभी वह ब्यालू के बाद दादाजी से मिलने चली आती तो वे बहुत खुश हो जाते थे। प्रायः दोनों मिलकर ब्लैक हॉक के कुख्यात सूदखोर विक कटर के चंगुल से किसी दुर्भाग्य ग्रस्त किसान को बचाने के उपाय सोचा करते और कइयों को उन्होंने बचाया भी था। रुपये के लेन-देन के मामले में फ्रांसिस की समझ के बारे में दादाजी बहुत ऊंची राय रखते थे और कहा करते कि काउण्टी के किसी बैंकर का अन्दाज़ एक बार भले ही गलत हो जाए, फ्रांसिस का नहीं हो सकता। दो-एक बार लेन-देन के मामले में कुछ लोगों ने उसे छकाना चाहा तो उलटे उन्हींको मुंह की खानी पड़ी। और यह बात सभी

को मालूम थी। दूर-पास के सभी किसानों को वह जानती थी और यह भी कि कौन कितनी ज़मीन पर खेती कर रहा है, किसके पास कितने जानवर हैं और किसकी कितनी देनदारी और किसकी कितनी सामर्थ्य है। अपनी आसामियों में उसकी रुचि निरे व्यावसायिक हित के कारण हो, ऐसी बात नहीं थी। वह उनके सुख-दुःख में हिस्सा लेती और इतनी ममता से उनका उल्लेख करती मानो किसी पुस्तक अथवा नाटक में के उसके प्रिय पात्र हों।

जब कभी फ्रांसिस काम के सिलसिले में देहातों में जाती तो व्यावसायिक कारण के बिना भी दूर-दराज़ के बहुत-से बूढ़े-बूढ़ियों से मिलने चली जाया करती और उन औरतों से भी मिल आती जो कभी-कभार ही कस्बे आ पाती थीं। बूढ़ी दादियां, जो अंग्रेज़ी का एक अक्षर भी नहीं बोल पाती थीं, उनकी बातें भी वह बड़ी आसानी से समझ लेती; और सारी दुनिया पर अविश्वास करनेवाली बहुत-सी शक्की मिजाज बूढ़ियां अनजाने और स्वेच्छा से ही उसे अपना दुखड़ा सुनाने लग जाती थीं। देहात में किसी भी मौसम में किसीके यहां शादी हो या गमी फ्रांसिस उसमें ज़रूर शरीक होती थी। और हर किसान बेटी की शादी में फ्रांसिस हार्लिंग अपनी ओर से कोई न कोई उपहार अवश्य देती थी।

हार्लिंग परिवार में एक डेन लड़की रसोईदारिन का काम करती थी। जब अगस्त महीने में वह छोड़ने को हुई तो दादीजी ने एण्टोनिया को रख लेने का अनुरोध किया। दुबारा जैसे ही अम्ब्रोश कस्बे आया दादीजी ने उसे खूब ऊंच-नीच समझाकर राज़ी कर लिया। खास बात उन्होंने यह कही कि क्रिश्चियन हार्लिंग के यहां तेरी बहिन के रसोईदारिन हो जाने पर लोगों की निगाह में तेरी साख बहुत ऊंची हो जाएगी। फिर एक रविवार के दिन समय निकालकर मिसेज़ हार्लिंग फ्रांसिस के साथ शिमरडों के यहा गईं। वे लड़की को ही नहीं उसके परिवार को भी देखना और लड़की की मां से सारी बातें साफ-साफ कर लेना चाहती थीं। सूर्यास्त से पहले जब दोनों मां-बेटी लौटीं तो मैं अपने आंगन में ही खड़ा था। मुझे देखा तो हंसती, हाथ हिलाती निकल गईं। स्पष्ट ही दोनों बहुत प्रसन्न लग रही थीं। व्यालू के बाद दादाजी गिरजाघर चले गए और तब मैं और दादीजी झाड़बंदी की राह उनके यहां जा धमके। शिमरडों के यहां उनकी

यात्रा के समाचार जानने की हम दादी-पोते के मन में खलबली मची हुई थी।

मिसेज़ हार्लिंग देहाती रास्तों पर लम्बी यात्रा से थक गई थीं और आगेवाली बरसाती में चार्ली तथा सैली के साथ वैठी सुस्ता रही थीं। लेटे रहने की शौकीन जुलिया हिंडोले (हमक) में पड़ी थी और फ्रांसिस अन्दर अंधेरे कमरे में पियाना बजाती हुई खुली खिड़की की राह अपनी माताजी से बातें करती जा रही थी।

मिसेज़ हार्लिंग हमें आते देख हंस पड़ीं और बोलीं, "ज़रूर आप जूठे बरतन मेज़ पर ही छोड़ आई हैं।" इतने में फ्रान्सिस भी पियानो बन्द कर वहां आ गई।

एण्टोनिया उन्हें देखते ही पसन्द आ गई थी; एक ही निगाह में वे समझ गईं कि वह किस तरह की लड़की है। "लेकिन मिसेज़ शिमरडा तो, बाप रे, गज़ब की औरत है। कहते-कहते मिसेज़ हार्लिंग को हंसी आ गई, "ऐसे लोगों से निपटना मैं खूब जानती हूं मिसेज़ बरडन! वे आपके बस के नहीं। और वह अम्ब्रोश! जैसी मां वैसा वेटा; अल्लाह क्या खूब मिलाई जोड़ी, एक अन्धा और दूसरा कोढ़ी!" वे फिर खिलखिलाकर हंस पड़ीं।

अम्ब्रोश उनसे एण्टोनिया के कपड़े और तनख्वाह के बारे में देर तक रग-झग करता रहा। उसका कहना था कि बहिन की तनख्वाह का पाई-पैसा हर महीने उसे सौंप दिया जाए और उसके कपड़े-लत्तों का इन्तज़ाम जैसा वह वाजिब समझेगा कर देगा। मिसेज़ हार्लिंग के यह कहने पर कि वे एण्टोनिया की तनख्वाह में से सालाना पचास डालर उसपर खर्च करने के लिए रख लेंगी, वह बोला, "क्या मेरी बहिन को कस्बे ले जाकर और सजा-संवारकर भरमाना चाहती हो?" वहां जो कुछ हुआ, अम्ब्रोश जिस तरह उछला-कूदा, जिस तरह बार-बार टोपी पहनकर, मानो मामला खत्म हो गया हो, इस तरह खड़ा होता रहा, जिस तरह उसकी मां ने कोट का पल्लू खींचकर उसे फिर बिठाया और बोहेमी में कहती-सुनती रही, आदि सब कुछ उन्होंने हमें पूरे विस्तार के साथ कह सुनाया। अन्त में मिसेज़ हार्लिंग ने एण्टोनिया को प्रति सप्ताह तीन डालर पर रखना

स्वीकार कर लिया—उन दिनों यह काफी अच्छा वेतन समझा जाता था। यह भी तय पाया कि एण्टोनिया के लिए जूतों का प्रबन्ध भी मिसेज़ हार्लिंग ही करेंगी। जूता-पुराण भी खूब देर चलता रहा और बहुत गरमागरम बहस हुई। अन्त में मिसेज़ शिमरडा ने इस अनुरोध के साथ बात खुटा दी कि वे इसके बदले मिसेज़ हार्लिंग को प्रतिवर्ष तीन मोटे-ताज़े कलहंस भेज दिया करेंगी। इस तरह मामला तय हुआ और अब अम्ब्रोश अगले शनिवार के दिन अपनी बहिन को कस्बे पहुंचा जाएगा।

"एकदम तो सलीके से काम ज़रूर नहीं कर पाएगी, ढंग-धड़ा आते-आते कुछ समय लग ही जाएगा, क्योंकि खेती-बाड़ी की कड़ी मेहनत का काम करती रही है। मगर इतना मैं कह सकती हूं कि अगर हाड़ उसके कड़े नहीं पड़ गए हैं तो आगे चलकर आपको कोई शिकायत नहीं रहेगी।" दादीजी ने कहा।

मिसेज़ हार्लिंग ने इत्मीनान की हंसी हंसकर कहा, "इसकी तो मुझे ज़रा भी चिन्ता नहीं है मिसेज़ बरडन! आप देखती रहिएगा, मैं उसे यों सिखा-पढ़ाकर होशियार कर दूंगी। कुल जमा सत्रह साल की तो है ही, कोई बूढ़ा तोता थोड़े ही है कि नया नाम न सीख सके! नाक-नक्शा भी काफी अच्छा है।" यह बात उन्होंने स्नेह-भरे स्वर में कही।

अब फ्रांसिस बोली, "हां, मिसेज़ बरडन, आपने यह बात तो हमें बताई ही नहीं! जब हम पहुंचे तो वह बगीची में नंगे पांव फटे चिथड़े पहने काम कर रही थी। लेकिन रूप फिर भी फूटा पड़ता था; गेहुंए रंग के हाथ-पांव इतने सुडौल हैं और गालों पर ऐसी सुर्खी मानो दो बड़े गहरे लाल बेर रख दिए हों!"

एण्टोनिया के रूप की यह प्रशंसा सुनकर हमें बड़ा सुख मिला। दादीजी स्नेह-भरे स्वर में बोलीं, "जब वह आई थी तब आप लोग देखतीं। सच फ्रांसिस, अपने बूढ़े बाप के ज़माने में तो वह साक्षात् पद्मिनी थी। लेकिन जब से बाप मरा बेचारी खेतों में खटते-खटते और धूप-पाला सहते-सहते बठरा गई है। बाप अपने जीते-जी उस गरीब को इतनी कड़ी मेहनत कभी न करने देता।"

फिर देर तक वे दादीजी से मिस्टर शिमरडा की मृत्यु और उस बड़े

तूफान का हाल सुनती रहीं। दादाजी के गिरजाघर से लौटकर आने तक हमने शिमरडों का काफी हाल उन लोगों को बतला दिया।

जब हम विदा हुए तो मिसेज़ हार्लिंग ने पूरे विश्वास के साथ आश्वस्त होकर कहा, "वह यहां सुखी होगी और दुःख के दिनों को जल्दी ही भूल जाएगी।"

३

शनिवार को अम्ब्रोश ने पिछवाड़े के दरवाज़े पर गाड़ी रोकी और एण्टोनिया हमेशा की तरह गाड़ी में से कूदकर रसोईघर में दौड़ी आई। वह मोज़े और जूते पहने थी और मारे उत्तेजना के उसकी सांस नहीं समा रही थी। आते ही मेरे कन्धे झकझोरकर वह बोल उठी, "मुझे भूल तो नहीं गए हो, जिम?"

दादीजी ने उसे चूमा और बोलीं, "भगवान तुम्हारा भला करे बेटी। अब ऐसा काम करना कि कोई नुक्स न निकाल सके।"

एण्टोनिया ने बड़ी उमंग से सारा घर देखा और एक-एक चीज़ की तारीफ करते हुए आशा-भरे स्वर में बोली, "अब कस्बे आ गई हूं तो आपके कहे के अनुसार ही सारे काम करूंगी दादीजी!"

मेरे लिए यह कितने आनन्द की बात थी कि एण्टोनिया फिर हमारे पास आ गई थी और दिन हो या रात, मैं कभी भी उसे देख सकता था। मिसेज़ हार्लिंग को उससे सिर्फ एक ही शिकायत थी कि वह काम करते-करते अक्सर बच्चों के साथ खेलने लग जाती थी। वह बगीचे में हमारे साथ दौड़ लगाती, बखारघर में हमसे घास-मार खेलती और भालू बनकर नीना को डराया करती—'पहाड़ से आया भालू, नीना को उठाकर ले जाएगा।' यहां अंग्रेज़ी वह इतनी जल्दी सीख गई कि स्कूल खुलते-खुलते ठीक हमारी तरह बोलने-बतियाने लगी।

उसे चार्ली हार्लिंग की तारीफ करते देख मैं ईर्ष्या से जल-भुन जाता

था। वह कक्षा में प्रथम आता था, पानी के नल और बिजली की घण्टी की मरम्मत कर सकता था और घड़ी का पुर्ज़ा-पुर्ज़ा खोलकर जोड़ लिया करता था, इसलिए टोनी उसे जाने क्या समझने लगी थी और हर वक्त उसकी तारीफ के पुल बांधा करती ! चार्ली के मुंह से कोई बात निकलनी चाहिए, बस तुरत पूरा करने दौड़ पड़ती थी। हरदम चार्ली का मुंह जोहा करती और उसका बस चलता तो चार्ली के लिए आसमान के तारे भी तोड़ लाती। चार्ली शिकार को जाता तो बड़े प्रेम से उसका कलेवा तैयार कर साथ रख देती, उसके दस्तानों की मरम्मत करती, शिकारी कोट के बटन टांक देती, उसकी मनपसन्द केक पकाती और जब वह अपने पिताजी के साथ यात्रा पर चला जाता तो उसके लम्बे बालोंवाले शिकारी कुत्ते की खोज-खबर रखती। उसने मिस्टर हार्लिंग के पुराने कोट कतर-ब्योंत कर अपने पांवों के लिए स्लीपर बना लिए थे। उन स्लीपरों को पहने वह चार्ली का हुक्म बजाने, उसे खुश करने और उसके तौक रखने के लिए उसके पीछे-पीछे डोला करती।

चार्ली के बाद वह सबसे अधिक नीना को चाहती थी। नीना सिर्फ छः बरस की थी, और घर के दूसरे सब बच्चों से ज़्यादा जटिल और दुरूह थी। स्वभाव से मनमौजी, हर बात में अपने को विशिष्ट समझनेवाली वह लड़की पल-पल में रूठ जाया करता थी। कुछ भी मन के खिलाफ हुआ या किसीने किसी बात के लिए इन्कार कर दिया तो उसकी भूरी कोमल आंखों में आंसू भर आते और वह मुंह मोड़कर चुपचाप एक ओर को चल देती थी। फिर कितना ही पीछे दौड़ो, कितना ही मनाओ, नीना रानी का पारा उतरता नहीं था। मेरे खयाल में तो सारी दुनिया में न इतनी बड़ी-बड़ी आंखें होंगी और न किसी आंख मेंइतने आंसू होंगे जितने नीना के। मिसेज़ हार्लिंग और एण्टोनिया सदा नीना का ही पक्ष लेती थीं। हमारी कोई सफाई सुनी नहीं जाती थी। हमारा यही गुनाह क्या कम था कि हमने उसे रुलाया ! तुरत आरोप लग जाता, 'तुमने नीना को रुलाया।' और साथ ही सज़ा भी सुना दीजाती, 'जिम्मी, जाओ अपने घर और सैली, तुम बैठकर गणित करो।' नीना पसन्द मुझे भी थी; वह बहुत सुकुमार, विलक्षण और नटखट थी और पता नहीं चल पाता था कि कब क्या कर बैठेगी और उसकी आंखें

इतनी सुन्दर थीं कि बरबस ही प्यार करने को जी चाहता था। मेरा मन उसे उछालने और फिरकियां खिलाने का खूब होता था।

जब मिस्टर हार्लिग घर न होते तो उनके यहां हमारी धमा-चौकड़ी मची रहती। लेकिन जब वे घर होते तो या तो बच्चे जल्दी सो जाया करते या हमारे यहां खेलने चले आते। मिस्टर हार्लिग को बच्चों का शोर-गुल ज़रा भी पसन्द नहीं था। वे घर में पूरी शान्ति ही नहीं अपनी पत्नी को भी सदा अपने पास चाहते थे। भोजन समाप्त होते ही वे मिसेज़ हार्लिग को पश्चिम रुख पर बने अपने कमरे में ले जाते और पहररात गए तक उनसे व्यापार-व्यवसाय की बातें किया करते। हमारे खेलों में मिसेज़ हार्लिग की उपस्थिति का अभाव हमें बुरी तरह खलता था, क्योंकि उनके सुझाव और उनकी हंसी हमारा हौसला बढ़ाया करते थे। लेकिन यह बात उस समय समझ में नहीं आती थी।

अपने सोने के कमरे में मिस्टर हार्लिग की एक मेज़ और खिड़की के पास एक आरामकुर्सी लगी हुई थी। उस कुर्सी पर उनके सिवाय कभी और कोई नहीं बैठा। जब वे घर होते तो रात के समय खिड़की के अपारदर्शी शीशों पर मुझे उनकी छाया पड़ती दिखाई देती थी—बड़ी ही हेकड़ लगा करती थी वह छाया मुझे। उनके वहां रहते मिसेज़ हार्लिग उन्हींमें बंधी रहतीं—दूसरे किसी ओर ज़रा भी ध्यान न देती थीं। सोने से पहले वे हमेशा उन्हें बीअर के साथ छौंकी हुई सालमन या अनचोवी मछली खिलाया करती थीं। उस कमरे में कॉफी बनाने का एक फ्रान्सीसी बरतन और स्पिरिट का चूल्हा भी था। रात में जब भी कभी वे कॉफी पीना चाहते तो उनकी पत्नी तुरत बनाकर दे दिया करती थीं।

ब्लैकहॉक में रहनेवाले अधिकांश पुरुषों का अपने परिवार से अलग कोई स्वतन्त्र अस्तित्व नहीं था। बिल चुका दिए, दफ्तर के बाद बच्चों को बाबा गाड़ी में घुमा लाए, 'लॉन' पर हजारे से पानी छिड़क दिया, रविवार के दिन परिवार को मोटर में घुमा लाए और पिता के कर्तव्यों से छुट्टी हुई। इसीलिए इन सबसे भिन्न मिस्टर हार्लिग का तौर-तरीका मुझे सत्ता-मद से मस्त किसी स्वेच्छाचारी शासक अथवा निरंकुश राजा जैसा लगता था। उनके चलने, बोलने, दस्ताने पहनने, हाथ मिलाने आदि का ढंग एक शक्ति-

सम्पन्न व्यक्ति के जैसा होता था। कद तो उनका लम्बा नहीं था, परन्तु सिर को ऐसी अकड़ से उठाकर चलते थे कि देखनेवालों पर रोब पड़ ही जाता था। आंखों में दर्प और साहस का भाव सामने वाले को चुनौती देता प्रतीत होता था। एण्टोनिया अपने देश के जिन अमीरों का वर्णन किया करती थी वे मेरे खयाल में बहुत कुछ क्रिश्चियन हार्लिंग से मिलते-जुलते रहे होंगे। उन्हींके जैसे ओवरकोट पहननेवाले और अपनी छिगुलियों में उन्हींके जैसी जगमगाते हीरे की अंगूठी धारण किए हुए।

घर में पिता की मौजूदगी के सिवा हार्लिंगों के यहां चुप्पी और शांति नाम को भी नहीं रहती थी। हर घड़ी शोर-गुल मचा ही रहता था। मिसेज़ हार्लिंग, नीना और एण्टोनिया तो बच्चों के भरे-पूरे घर से भी ज़्यादा शोर मचाती थीं। और फिर कोई न कोई पियानो को छेड़ता ही रहता था। संगीताचार्य जुलिया रोज़ कुछ घंटे नियमित रियाज़ करती थी। लेकिन बजा तो सभी लेते थे। फ्रांसिस दुपहर में भोजन करने आती तो खाना तैयार होने तक बजाती थी। सैली स्कूल से लौटती तो कोट-टोपी उतारे बिना ही बजाने बैठ जाती। वह प्रायः हब्शी गवैयों की खेतों-बागानों की धुनें बजाया करती थी, जिन्हें हमारे शहर में प्रचलित करने का श्रेय हब्शी गायकों को ही था। यहां तक कि नीना भी स्वीडी विवाह का विदाई-गीत बजा लेती थी।

स्वयं मिसेज़ हार्लिंग ने एक बहुत अच्छे उस्ताद से पियानो बजाना सीखा था और रियाज़ करने के लिए थोड़ा-बहुत समय रोज़ निकाल लिया करती थीं। जब कभी किसी काम से उनके यहां जाता और वे पियानो बजा रही होतीं तो जब तक स्वयं मुड़कर न देखें मुझे चुपचाप इन्तज़ार करना पड़ता था। अब भी लगता है, जैसे वे ठमकी हुई पियानो के आगे स्टूल पर बैठी नन्हे गदराये पंजों की अंगुलियों को तेज़ी और सफाई से परदों पर दौड़ा रही हैं और उनकी दृष्टि सामने संगीत के पन्ने पर गड़ी हुई है।

४

"तुम्हारा नहीं चाहिए छुनिया गेहूं, मुझे नहीं चाहिए जौ, बढ़िया मैंदा नाप-जोखकर मैं तो चार्ली की रोटी पकाऊंगी।"

एण्टोनिया चार्ली की मनपसन्द केक बना रही थी और हम ऊपर की तुकबन्दी गा-गाकर उसे चिढ़ा रहे थे।

शरद् ऋतु के आखिरी दिन थे और शाम को इतनी ठण्ड हो जाती थी कि हम लोग बाहर आंगन में आंख-मिचौनी खेलना छोड़कर गर्मी के लिए रसोईघर में आ घुसते थे। भुनी मक्का को चाशनी में पागकर हमने लड्डू बनाना शुरू किया ही था कि पिछवाड़ेवाला दरवाज़ा खटखटाने की आवाज़ सुनाई दी। एण्टोनिया चम्मच से बड़े बरतन में केक का घोल मथ रही था। उसने चम्मच नीचे रखा और जाकर दरवाज़ा खोला।

एक भरे बदन की गोरी, खूबसूरत लड़की दरवाज़े में शरमाई-शरमाई खड़ी थी। चौखट के बीचोबीच नीले कशमीरे की पोशाक पहने, छोटा-सा नीला टोप लगाए, कन्धों पर चौखाने का गरम शाल डाले और हाथ में एक साधारण-सा बटुवा लिए वह चित्र लिखित-सी लग रही थी।

"हल्लो, टोनी! क्या तुमने मुझे पहचाना नहीं?" हमारी ओर तिरछी निगाहों से देखते हुए उसने धीमे, कोमल स्वर से पूछा।

एण्टोनिया क्षण-भर मुंह बाये देखती ही रह गई, फिर बोली, "अरे, तुम हो लेना! इस तरह सज-संवरकर आई हो कि मैं सच ही पहचान न सकी।"

अपनी प्रशंसा से सन्तुष्ट और प्रसन्न लेना हंस दी। एकबारगी तो मैं भी उसे पहचान नहीं पाया था। आज से पहले उसे कभी सिर पर हैट लगाए अथवा पांवों में जूते-मोज़े पहने देखा नहीं था। और इस समय वही कपड़े-लत्तों से दुरुस्त शहराती लड़कियों जैसी सामने इतमीनान से खड़ी मुस्करा रही थी।

"हल्लो जिम!" वह रसोईघर के अन्दर आ गई और अपने चारों

ओर देखती हुई बोली और फिर उसने एण्टोनिया से कहा, "टोनी, मैं भी कस्बे में काम करने के लिए आई हूं।"

"अच्छा, नौकरी करने आई हो? यह तो बहुत अच्छी बात है।" एण्टोनिया असमंजस में खड़ी थी और तय नहीं कर पा रही थी कि अपनी सहेली से क्या कहे और उसे कहां बिठाए?

खानेवाले कमरे का दरवाज़ा खुला था और उधर मिसेज़ हॉलिंग बैठी किरोसिये से कसीदा काढ़ रही थीं और फ्रांसिस बैठी पुस्तक पढ़ रही थी। फ्रांसिस ने आवाज़ देकर लेना को उधर बुला लिया।

"तुम लेना लिंगार्ड ही हो न? मैं तुम्हारी माताजी से मिलने आई थी। उस दिन तुम ढोर चराने चली गई थीं। अम्मां, यह है लेना, क्रिस लिंगार्ड की सबसे बड़ी लड़की।"

मिसेज़ हार्लिंग ने कसीदा एक ओर रख दिया और लेना को ऊपर से नीचे तक गौर से देख गईं! लेना ज़रा भी नहीं सकपकाई। वह बड़े इतमीनान से फ्रांसिस की बताई कुर्सी पर बैठ गई। उसने पहले बटुवा और फिर भूरे सूती दस्तानों को बड़ी शालीनता से अपनी गोद में रख लिया था। हम भूनी मक्का लिए खाने के कमरे में चले आए, लेकिन एण्टोनिया रसोईघर में ही रही, बोली कि मुझे केक सेकने के लिए अंगीठी में रखना है।

"अच्छा, तो तुम कस्बे आ गई हो।" मिसेज़ हार्लिंग ने उसपर अपनी आंखें गड़ाए हुए पूछा, "कहां नौकरी मिली है तुम्हें?"

"सिलाई का काम करनेवाली मिसेज़ टामस के यहां। वे मुझे सीना-काटना सब कुछ सिखाएंगी। कह रही थीं कि मैं बहुत जल्दी सीख जाऊंगी। खेती-बाड़ी के काम से तो मैं तंग आ गई हूं। बड़ा अंधा काम है और कितना ही करो, कभी खत्म नहीं होता। ऊपर से कोई न कोई टंटा लगा ही रहता है। मैंने 'ड्रेसमेकर' बनने का फैसला कर लिया है।"

"काम अच्छा है और सिलाई करनेवालों की ज़रूरत भी है। लेकिन अगर मैं तुम्हारी जगह होती तो खेती-बाड़ी की निन्दा कभी न करती।" मिसेज़ हार्लिंग ने कुछ सख्ती से कहा, और पूछा, "तुम्हारी माताजी कैसी हैं?"

"उनकी तबीयत कभी अच्छी नहीं रहती; रहे भी कहां से, दिन-भर कमरतोड़ काम में जुटी रहती हैं। उनका बस चले तो वे भी खेती-बाड़ा को छोड़कर छुट्टी पा जाएं ! उनकी रज़ामन्दी से ही मैं कस्बे आई हूं। सिलाई सीखने के बाद पैसा आने लगेगा और तब उनकी मदद कर सकूंगी।"

"देखें, तब तक याद भी रहता है।" उन्होंने संदिग्ध भाव से कहा और कसीदा उठाकर फुर्ती से क्रिरोसिया चलाने लगीं।

"जी, भूलूंगी तो नहीं।" उसने स्निग्धस्वर में बड़ी ही विनम्रता से कहा और अंगुलियों को चिपचिपा होने से बचाती हुई, हमने जो भुनी मक्का दी थी उसे खाने लगी।

फ्रांसिस ने अपनी कुर्सी उसके पास खींच ली और बोली, "मैंने तो सुना था लेना, कि तुम्हारी शादी होने जा रही है ?" वह स्पष्ट ही उसे छेड़ रही थी, "वह निक स्वेण्डसन तो तुम्हारे पीछे हाथ धोकर पड़ गया था।"

लेना ने बड़े ही भोलेपन से मुस्कराते हुए उसकी ओर देखा और जवाब दिया, "हां, पीछे तो ज़रूर पड़ा था; लेकिन जब उसके बाप ने यह कह दिया कि लेना से शादी की तो एक भी कट्ठा ज़मीन नहीं दूंगा तो अब वह एनी आइवरसन से शादी कर रहा है। मैं उसकी जगह होती तो यह रिश्ता कभी मंजूर न करती। निक खुद इस रिश्ते से बहुत नाराज़ है और अपना सारा गुस्सा एनी पर उतारेगा। अपने बाप से तो उसकी बोलचाल उसी दिन से बन्द है।"

फ्रांसिस हंस दी और पूछा, "अब तुम्हारा क्या इरादा है ?"

"मैं खुद तो शादी करना नहीं चाहती न निक से और न किसी दूसरे से। मुझे तो शादी में कोई सुख दिखाई नहीं देता, ज़्यादातर लोगों को पछताते और बर्बाद होते ही देखा है। बस, इतना ही चाहती हूं कि अम्मां और भाई-बहनों की मदद कर सकूं, किसीकी बीवी बनकर रहने की ज़रा भी इच्छा नहीं है।"

"विचार तो अच्छा है।" फ्रांसिस ने कहा, "क्या मिसेज़ टामस यह कह रही थीं कि तुम सिलाई-कटाई जल्दी सीख लोगी ?"

"जी हां। मुझे शौक भी है, लेकिन अभी तक कोई मौका नहीं मिला। मिसेज़ टामस इतने बढ़िया-बढ़िया कपड़े बनाती हैं कि आपसे क्या कहूं !

मिसेज़ गार्डनर उनसे बैंगनी मखमल की पोशाक बनवा रही हैं। मखमल आया है ओमाहा से। इतना बढ़िया है कि बस !" वह अपने कशमीरे को सहलाने लगी और फिर बोली, "इस बात को तो टोनी भी जानती है कि खेतों में काम करना मुझे पसन्द नहीं।"

मिसेज़ हार्लिंग ने उसकी ओर देखकर कहा, "दिमाग ठिकाने रखकर काम करोगी तो सिलाई-कटाई सभी कुछ सीख जाओगी, लेना ! लेकिन अगर दूसरी देहाती लड़कियों की तरह मौज-मज़ा और नाच-रंग में लगी रहीं तो ख़ाक-पत्थर कुछ भी नहीं सीख पाओगी। कितनी ही देहाती लड़कियां काम सीखने के लिए कस्बे आती हैं और नाच के पीछे दीवानी हो जाती हैं।"

"जी हां, हो तो जाती हैं। टीनी सोडरबाल भी आ रही है। उसे 'ब्वायेज़ होम होटल' में काम मिल गया है। तरह-तरह के अजनबियों से मिला करेगी वहां।" कहते-कहते उसका स्वर लालसा-प्रदीप्त हो उठा था।

"मेरी राय में तो होटल किसी लड़की के काम करने लायक जगह है नहीं।" मिसेज़ हार्लिंग ने कहा, "वहां हज़ार आते और हज़ार जाते हैं। वैसे सुना है कि मिसेज़ गार्डनर अपनी नौकरानियों पर पूरी निगरानी रखती हैं।"

लम्बी बरौनियों तले सोई-सोई-सी लेना की निश्छल आंखें कमरों की एक-एक चीज़ का मुआयना करती और सराहती रहीं। फिर वह अपने सूती दस्ताने पहनती हुई उठ खड़ी हुई और अनिश्चय के-से भाव से बोली, "अब मुझे चलना चाहिए।"

फ्रांसिस ने कहा कि जब कभी मन न लगे, अकेली उकता जाओ या कुछ पूछना-ताछना हो तो आ जाया करना। लेना ने कहा, "ब्लैकहॉक में मन तो क्या ही ऊबेगा।"

क्षण-भर वह रसोईघर के दरवाज़े पर ठिठकी खड़ी एण्टोनिया से अनुरोध करती रही, "कभी-कभी मिलने के लिए आ जाया करना। मिसेज़ टामस ने अपने यहां मुझे अलग से एक कमरा दे दिया है। उसमें कालीन भी बिछा है।"

टोनी बेचैनी से एक पांव का बोझ दूसरे पर डालती हुई बोली, "आ जाऊंगी कभी, लेकिन मिसेज़ हार्लिग को मेरा कहीं आना-जाना पसन्द नहीं है।" वह जैसे गला छुड़ा रही थी।

"बाहर जाने पर तो तुम जो चाहे करो, कौन देखता है, क्यों ?" लेना ने चुप-चुप पूछा, "क्या कस्बा तुम्हें पसन्द नहीं, टोनी ? कोई कुछ भी कहे मैं तो खेती-बाड़ी को सदा के लिए धता बता चुकी।" और उसने एक बार गरदन मोड़कर खाने के कमरे की ओर देख लिया, जहां मिसेज़ हार्लिग बैठी कसीदा काढ़ रही थीं।

जब लेना चली गई तो फ्रांसिस ने एण्टोनिया से पूछा, "क्यों री, तू उससे दिल खोलकर क्यों नहीं मिली; खिंची-खिंची क्यों रही ?"

एण्टोनिया ने व्यथित होकर कहा, "पता नहीं, आपकी माताजी को उसका यहां आना अच्छा लगेगा या नहीं ? वहां देहात में तो वह काफी बदनाम हो चुकी है।"

"वह सब मुझे मालूम है। लेकिन यहां ढंग से रही तो माताजी कभी बुरा नहीं मानेंगी। हां, तुम बच्चों से उस बारे में कुछ मत कहना। जिम तो सब कुछ सुन ही चुका होगा ?"

जब मैंने सिर हिलाकर हामी भरी तो उसने मेरे बाल खींचते हुए कहा, "शैतान सब कुछ जानता है और ज़रूरत से ज़्यादा, क्यों ?" मेरी फ्रांसिस से अच्छी पटती थी और वह मुझे बड़ी बहिन की तरह स्नेह करती थी।

फिर मैं दादीजी को यह खबर देने घर दौड़ा गया कि लेना लिंगार्ड कस्बे में नौकरी करने आई है। सुनकर सबको बड़ी खुशी हुई, क्योंकि बेचारी देहात में बहुत कष्ट पाती रही थी।

लेना स्क्वा क्रीक के पश्चिम में नार्वेवालों की बस्ती में रहती और शिमरडों तथा उसके घर के बीच में जो खुली ज़मीन थी उसमें अपने पिता के पशु चराया करती थी। जब भी हम उधर जाते वह नंगे सिर, नंगे पांव, फटे कपड़ों में किसी तरह अपना तन छिपाए, कुछ न कुछ बुनती और ढोरों को चराती हुई दिखाई दे जाती थी। लेना का परिचय पाने से पहले मैं यही समझे था कि वह प्रेरी में रहनेवाली कोई जंगली औरत होगी, क्योंकि मैंने उसे हमेशा

खुले में ही देखा था, मकान के अन्दर या किसी छत के तले देखने का मौका नहीं पड़ा था। उसके पीले केश धूप में तपकर ललछौंहे हो गए थे, लेकिन हाथ और पांव की चमड़ी निरन्तर धूप में रहने के बाद भी आश्चर्यजनक रूप से सफेद थी। त्वचा के इस निखार के कारण फटे और कम कपड़े पहनने वाली अन्य लड़कियों की अपेक्षा वह अधिक नंगी लगती थी। पहली बार जब उससे बातचीत करने का मौका आया तो उसके कोमल स्वर और आचरण की सहज भावना देखकर मैं चकित रह गया था। आम तौर पर ढोर चरानेवाली लड़कियों में एक तरह की अक्खड़ता आ जाती थी और उनकी बोली-बानी और रंग-ढंग मरदाने हो जाया करते थे। लेकिन लेना ने बड़े मधुर स्वर में मुझे और जेक को घोड़ों से उतरने और थोड़ी देर रुकने के लिए कहा था, मानो वह घर में ही हो और मेहमानों का स्वागत करना उसके लिए कोई नई बात न हो। अपने फटे कपड़ों के कारण वह लज्जित भी नहीं थी और हमारे साथ इस तरह बोल-बतला रही थी मानो पुराने परिचित हों। उसकी आंखों के रंग और स्नेह-भरी विश्वासोत्पादक दृष्टि की ओर भी मेरा ध्यान तभी गया था—गहरा बैंगनी रंग था उसकी आंखों का।

क्रिस लिंगार्ड कोई बहुत सफल किसान नहीं था और फिर उसका परिवार भी काफी बड़ा था। लेना हमेशा अपने छोटे भाई-बहिनों के लिए मोज़े बुना करती और नार्वी औरतों को यद्यपि उसकी बहुत-सी बातें पसन्द नहीं थीं, परन्तु वह जिस तरह भाई-बहिनों का खयाल रखती और मां का हाथ बंटाती रहती, इसकी तो वे भी तारीफ करती थीं। टोनी ने ठीक ही कहा था, लेना की काफी बदनामी हो चुकी थी। उसने ओल बेन्सन को करीब-करीब दीवाना ही कर दिया था, ऐसी मोहिनी डाली कि वह सब छोड़-छाड़कर इसीके नाम की माला जपने लगा—और यह तब की बात है जब वह बच्ची ही थी।

ओल नार्वी बस्ती के एक छोर पर सीलन-भरे छोटे-से घरौंदे में रहता था। वह मोटा, आलसी, साहसहीन और निरुद्यमी था और दुर्भाग्य किसी राजरोग की तरह उसके पीछे लग गया था। सब तरह के टंटे-बखेड़े कर चुकने के बाद उसकी बीवी 'पगली मेरी' ने एक पड़ोसी के बखारघर में आग लगाने की कोशिश की, पकड़ी गई और लिंकन के पागलखाने भेज दी

गई। वहां कुछ महीने रहने के बाद वह भाग आई; दो सौ मील का पूरा फासला उसने पैदल तय किया, दिन में चलती थी और रात में बखारघरों और घास की गंजियों में छिप जाया करती थी। नार्वी बस्ती में लौटकर आई तो उसके दोनों पांव खुरों की तरह कड़े हो गए थे। उसने जब बहुत चिरौरी-विनती की कि अब पागलपन का कोई काम नहीं करेगी तो लोगों ने घर में रहने की इजाज़त दे दी, हालांकि उसके पागलपन में कोई कमी नहीं हुई थी और सभी इस बात को जानते थे; क्योंकि वह अब भी बर्फ पर नंगे पांव दौड़ा करती और पहले की तरह पड़ोसियों के आगे अपनी गृहस्थी का दुखड़ा रोया करती।

मेरी के पागलखाने से लौट आने के कुछ ही दिनों बाद मैंने एक युवक डेन को, जो गाहनी में हमारे यहां काम कर रहा था, जेक और ओटो से यह कहते सुना कि क्रिस लिंगार्ड की सबसे बड़ी लड़की ने ओल बेन्सन को पूरी तरह दीवाना बना डाला है; लौंडिया के चक्कर में वह कम्बख्त ठीक अपनी बीवी की तरह होश-हवास खो बैठा है। नौबत यहां तक पहुंच गई कि गर्मियों में खेत की जुताई करते-करते ओल बैलों को बीच खेत में हल से बांधकर लेना लिंगार्ड की तलाश में चल देता और भटकता-भटकाता वहां पहुंच जाता जहां वह अपने ढोर चरा रही होती। वहां मजनूं मियां धरना देकर बैठ जाते और अपनी लैला को ढोर चराते देखा करते। सारी बस्ती में बतकही होने लगी, लेकिन न लेना को परवाह थी और न ओल को। आखिर नार्वी पादरी की बीवी ने लेना को आड़े हाथों लिया और इस तमाशे को फौरन बन्द करने का आदेश देते हुए प्रति रविवार गिरजाघर आने का अनुरोध किया। लेना ने छूटते ही जवाब दिया, "ढंग के कपड़े-लत्ते तो हैं नहीं; क्या इन चिन्दों को पहनकर गिरजाघर आऊंगी?" बात पादरी की बीवी को लग गई; उसने घर के पुराने पेटी-बक्सों को ढूंढ़-खोजकर अपनी वह पोशाक लेना को दे दी जिसे वह स्वयं शादी के पहले पहना करती थी।

अगले इतवार को लेना सज-धजकर गिरजाघर पहुंची। उसे कुछ देर जरूर हो गई थी, परन्तु अपने साज-सिंगार में उसने कोई कसर रहने नहीं दी थी—केश-विन्यास चुस्त और दुरुस्त, पांवों में मोज़े और जूते और बदन पर पादरिन की दी पोशाक, जिसे उसने ठीकठाक कर लिया था

और जो अब उसके उभारों पर पूरी तरह पैबस्त हो रही थी। लोग उसकी तरफ आंखें फाड़े देखते ही रह गए कि यह कौन युवती आ गई ! आज पहली बार देखनेवालों को पता चला कि वह कितनी खूबसूरत है और जवान हो गई है; केवल ओल को यह बात बहुत पहले ही मालूम हो गई थी। अभी तक चिथड़ों में छिपा लेना का यौवन आज चुस्त कपड़ों में से फटा पड़ रहा था। अन्तिम भजन के बाद जब भक्त-मण्डली चलने को हुई तो ओल सबकी निगाह बचाकर बाहर निकल आया, जहां उसका घोड़ा खड़ा था और उसने फुर्ती से लेना को अपने साथ घोड़े पर बिठा लिया। लोग स्तम्भित रह गए। बात बहुत आपत्तिजनक भी थी। किसी विवाहित आदमी का ऐसा आचरण आज तक न देखा गया था, न सुना। लेकिन आगे जो हुआ उसके मुकाबले यह तो कुछ भी नहीं था। पगली मेरी औरतों की भीड़ को चीरकर बाहर निकल आई और चीखती-चिल्लाती, गालियां बकती लेना के पीछे भागी :

"तेरा नाश हो जाए हरजाई, रण्डी, तेरा ! किसी दिन हाथ पड़ गई तो छुरे से नाक-कान, गाल-जोबन सब तराशकर रख दूंगी। फिर चटक-मटक दिखाकर डोरे डालना मरदुओं पर, मैं भा देख लूंगी। सुन लिया री बदज़ात लेना······"

वहां जितनी औरतें थीं बेचारियों के सबके सिर मारे शर्म के नीचे हो गए। सबकी सब मर्यादा का पालन करनेवाली भली गृहिणियां थीं। उनसे तो आंख उठाकर भी नहीं देखा गया। लेकिन लेना लिगार्ड को न लाज थी न शर्म। ओल के आगे घोड़े पर बैठी खिलखिल करती हंसती जा रही थी और मुड़-मुड़कर गुस्से में अनाप-शनाप बक रही पगली मेरी की ओर देखती जाती थी।

लेकिन लेना के होंठों से वह हंसी जल्दी ही गायब हो गई। पागल मेरी हाथ धोकर उसके पीछे पड़ गई थी। पगली मेरी हाथ में चमचमाता छुरा लिए पीछे होती और लेना जान बचाने के लिए कभी प्रेरी के मैदान में और कभी शिमरडों के घर के चारों ओर दौड़ रही होती। उसने कभी अपने बाप से शिकायत नहीं की; या तो लजाती थी या फिर मेरी के छुरे से भी अधिक डर उसे अपने बाप के गुस्से और उसके डण्डे का था। एक दिन तासरे पहर

की बात है। मैं शिमरडों के यहां बैठा था। सहसा लेना लाल घास में से बगटुट दौड़ती हुई आई और सीधे घर में घुसकर एण्टोनिया के बिस्तर में छिप गई। थोड़ी ही देर बाद गालियां बकती हुई मेरी भी आ धमकी। उसके हाथ में नंगा छुरा था। हम सबको बारी-बारी से छुरे की तेज़ धार दिखलाते हुए उसने फाहिश गालियों में बिस्तार से बतलाया कि वह कहां-कहां से लेना का गोश्त काटकर उसे कुरूप करेगी। मिसेज़ शिमरडा खिड़की में से झांककर रस लेती हुई सुनती रहीं और जब एण्टोनिया ने मेरी के आंचल में ढेर सारे टमाटर भर उसे समझा-बुझाकर और शान्त करके लौटा दिया तो उन्हें बड़ी निराशा हुई। मेरी के चले जाने के बाद लेना रसोईघर के पीछेवाले टोनी के कमरे में से बाहर निकल आई। बिस्तर में दुबके रहने के कारण उसका चेहरा ज़रूर तमतमाया हुआ था, बाकी वह बिलकुल शान्त और अनुद्विग्न थी। उसने मुझसे और एण्टोनिया से कहा कि चलकर उसके ढोरों को इकट्ठा करवा दें, क्योंकि इस बीच सब इधर-उधर निकल गए होंगे और किसीका खेत भी चरने लगे हों तो आश्चर्य नहीं।

"रण्डो, गाय-बछिया भी हिरवाओगी और मारी भी जाओगी। पराये मर्दों से दीदे लड़ाना कोई भला काम थोड़े है!" मिसेज़ शिमरडा ने उसे घुड़कते हुए कहा था।

जवाब में उसने बड़े ही भोलेपन से मुस्कराकर कहा था, "मैं किसीसे दीदे-वीदे नहीं लड़ाती चाची! वह खुद दौड़ा आता है तो क्या करूं! मुझसे तो दुत्कारते नहीं बनता। और प्रेरी अकेले मेरे बाप का तो है नहीं कि सबको मना करती फिरूं!"

५

लेना के ब्लैकहॉक आ जाने के बाद उससे अक्सर मेरी मुलाकात हो जाया करती थी। वह कस्बे के बाज़ार में कभी मिसेज़ टामस के लिए रेशम तो कभी कोई और सामान खरीदती हुई मिल जाती थी। अगर साथ लौटते

तो वह उन पोशाकों के बारे में बतलाती जिन्हें तैयार करने में हाथ बंटा रही होती या फिर विस्तार से बतलाने लगती कि शनिवार की रात में जब टीनी सोडरबाल से उसके होटल में मिलने गई तो वहां क्या-क्या देखा।

पूरे बरलिंगटन रेल-मार्ग पर ब्वायेज़ होम सबसे बढ़िया होटल था, इसलिए इलाके के सभी घुमन्तू एजेण्ट और प्रतिनिधि रविवार बिताने के लिए ब्लैकहॉक चले आते थे। शनिवार की रात को भोजन के बाद होटल के बड़े कमरे में उनका जमघट लगता। मार्शल फील्ड का नौकर एन्सन कर्कपैट्रिक पियानो बजाता और नये से नये रसीले गाने गाकर उन्हें सुनाता। बरतन धोने-पोंछने के काम में रसोइए का हाथ बंटाकर और पूरा काम निपटाकर टीनी लेना के साथ खानेवाले कमरे और बड़े कमरे के बीच के दुहरे दरवाज़े के उस पार बैठ जाती, और दोनों संगीत सुनतीं और उन लोगों के हंसी-मज़ाक और किस्से-कहानियों पर हंस-हंसकर दुहरी हुआ करतीं। लेना को घुमन्तू प्रतिनिधियों का जीवन इतना पसन्द था कि वह मेरे लिए प्रायः इसीकी कामना किया करती, 'बड़े होकर तुम किसी कम्पनी के घुमन्तू प्रतिनिधि बन जाना। बड़ी मस्त और मज़े की ज़िन्दगी होती है इन लोगों की, हमेशा हंसी-खुशी से भरी हुई। दिन-भर रेल की मुसाफरी और रात में सैर-सपाटे, किसी बड़े शहर में पहुंच गए तो नाटक-सिनेमा।' होटल के ठीक पीछे एक पुरानी इमारत में दुकानें लगी थीं। वहां सेल्समैन अपने बड़े-बड़े ट्रंक खोलकर नमूने सजा देते और खड़े हो जाते थे। ब्लैकहॉक के व्यापारी और दुकानदार आते, नमूने देखते और आर्डर लिखा जाते। मिसेज़ टामस थोक की खरीदार नहीं थीं, लेकिन प्रतिनिधि-विक्रेता उन्हें भी अपना माल और नमूने देख लेने देते थे। इससे मिसेज़ टामस को बहुत-सी नई बातें मालूम हो जाया करती थीं। बड़े भले और उदार होते थे वे घुमन्तू प्रतिनिधिगण, टीनी सोडरबाल को रूमाल और दस्ताने और फीते और चारखाने के मोज़े दे जाया करते थे, तेल-फुलेल की शीशियां और सुगन्धित साबुन की टिकियां तो इतनी अधिक देते थे कि वह उनमें से कुछ लेना को भी दे दिया करती थी।

क्रिसमस के एक हफ्ते पहले की बात है। तीसरे पहर के समय बाज़ार गया तो लेना और उसका चौरस सिरवाला अजीबो-गरीब छोटा भाई क्रिस,

दोनों एक दुकान के सामने खड़े खिड़की में सजाकर रखे मोम के खिलौने, टोके और हज़रत नूह की नाव को देख रहे थे। क्रिस को इस बार कुछ पैसे मिल गए थे इसलिए वह अपने पड़ोसी के साथ क्रिसमस का सौदा-सुलफ खरीदने के लिए शहर चला आया था। था तो वह बारह ही बरस का, लेकिन इन सर्दियों में उसे नार्वी गिरजाघर को झाड़ने-बुहारने और हर रविवार के दिन आग जलाकर गिरजाघर को गरम रखने का काम मिल गया था। निश्चय ही बड़ा जानमारू काम रहा होगा उस बेचारे के लिए !

हम डकफोर्ड की दुकान के अन्दर चले गए और क्रिस ने जो सामान खरीदा था, मुझे खोलकर दिखलाया—उसने अपने से छोटे छहों भाई-बहनों के लिए एक-एक उपहार खरीदा था, जिसमें सबसे छोटे बच्चे के लिए रबर का एक सूअर भी था। लेना ने टीनी सोडरबाल से मिली इत्र की एक शीशी अपनी मां के लिए दे दी थी। क्रिस उसके साथ कुछ रूमाल भी ले जाना चाहता था। पैसे उसके पास ज़्यादा नहीं बचे थे इसलिए सस्ती चीज़ की तलाश में था। दूकान में एक मेज़ पर बहुत-से सस्ते रूमाल रखे थे। क्रिस को वे रूमाल पसन्द आए, जिनके कोनों पर अक्षर लिखे हुए थे। ऐसे रूमाल अपने जीवन में वह आज पहली ही बार देख रहा था। काफी देर तक वह रूमालों को उलटता-पलटता रहा और लेना उसके पीछे खड़ी राय ज़ाहिर करती रही कि लाल अक्षरों का रंग जल्दी नहीं उड़ेगा। काफी देर तक वह असमंजस की हालत में खड़ा रहा तो मैं यही समझा कि उसके पास इतना पैसा नहीं है कि रूमाल खरीद सके। तभी उसने कहा, "बहन, अम्मां का नाम तो है बर्थ, पर मेरी समझ में नहीं आ रहा कि बर्थ का 'ब' अक्षर खरीदूं या अम्मां का 'अ' !"

लेना ने उसका बाल-कटा सिर थपथपाते हुए कहा, "मेरी राय में तो 'ब' ही खरीदना चाहिए क्रिसी ! अपने नाम का अक्षर देखकर अम्मां खुश हो जाएंगी। अब तो कोई उन्हें उनके नाम से पुकारता भी नहीं।"

क्रिस का सारा असमंजस जाता रहा। उसने तीन लाल और तीन नीले अक्षरवाले रूमाल खरीद लिए। जब पड़ोसी ने आकर कहा कि चलने का समय हो गया है तो लेना ने गुलूबन्द भाई के गले के चारों ओर लपेट दिया और उसके कोट का कॉलर खड़ा कर दिया—ओवरकोट तो उसके पास

था ही नहीं। फिर वह गाड़ी में बैठ गया और ठण्ड में अपनी लम्बी यात्रा पर चल पड़ा। हम उसे देखते रहे। जब आंख से ओझल हो गया तो लौटे। हवा तेज़ हो गई थी और हम दोनों साथ-साथ चल रहे थे। लेना की आंखों में आंसू उमड़ आए थे। ऊनी दस्तानों की पीठ से अपने आंसू पोंछकर उसने कहा, "सबकी कितनी याद आती है मुझे !" उसने इस तरह कहा था मानो किसी कोसने का जबाब दे रही हो।

६

सर्दियों के आगे प्रेरी के छोटे कस्बे की बिसात ही क्या ! पूरे ज़ोर-शोर से जाड़ा अपना हमला बोल देता है। मैदान की ओर से चलनेवाली ठण्डी हवा पत्तियों के सारे आच्छादन उड़ा ले जाती है। गर्मियों में चहारदीवारी पर पत्तियों के इन पर्दों की वजह से दो घरों के बीच काफी ओट बनी रहती है। लेकिन जाड़ों में पत्तियां खिर जाने से ओट हट जाती है और मकान काफी पास-पास आ जाते हैं। हरी फुनगियों में छिपी छतें अब एकदम आंखें तरेरती सामने आ जाती हैं और लता-कुंज में दुबके रहनेवाले कोने निरावृत होकर आंखों में खूबने लगते हैं।

सवेरे सामने की हवा में स्कूल जाते समय एक-एक पग चलना दूभर हो जाता था और मेरा सारा ध्यान सड़क पर ही लगा रहता था। लेकिन जब तीसरे पहर घर लौटता तो मुझे सारा कस्बा सुनसान और वीरान लगता था। सर्दियों के डूबते सूरज की ठण्डी, पीली, कमज़ोर किरणें कस्बे की शोभा-वृद्धि नहीं करती थीं, उसकी वास्तविकता और भोंडेपन को उघाड़कर रख देती थीं। पश्चिमाकाश में जब धुएं-से बादल भर जाते, सूरज उनकी ओट हो जाता, बर्फ-मढ़ी छतों और नीली हिम-राशियों पर सांझ-बेला की गुलाबी आभा प्रतिबिम्बित हो उठती तो ठण्डी हवा का वेग और भी बढ़ जाता और मानो वह अपने बेसुरे राग में गा उठती थी, 'यही है वास्तविकता; तुम चाहो या न चाहो, यही है सत्य ! गर्मियों के वे सारे चोचले, छाया-प्रकाश

का वह ताना-बाना, अभिराम हरियाली का वह कम्पन, पत्तियों की वह थिरकन—सब झूठ था, धोखा था, निरा आवरण था; उस सबके नीचे यही वास्तविकता छिपी बैठी थी—यही—और यही—और यही, जो है सत्य !' लगता था जैसे ग्रीष्म के सौन्दर्य को प्यार करने का यह दण्ड हमें दिया जा रहा हो।

अगर कभी दो क्षण भी स्कूल के क्रीड़ांगण पर रुक जाता, या पोस्ट-आफिस से डाक लेकर लौटते हुए सिगार स्टैण्ड में लोगों की गपशप सुनने के लिए ठिठक जाता तो घर पहुंचते-पहुंचते अंधेरा हो जाता था। राह चलते सूरज डूब जाता, ठिठुरन-भरी लम्बी सड़कों पर अंधेरा घिरने लगता, रसोईघरों की खिड़कियों में पीला प्रकाश दिखाई देने लगता और घरों में पकाए जा रहे शाम के भोजन की गन्ध मेरे नथुने में भरने लगती थी। सड़क पर कोई इक्का-दुक्का आदमी ही दिखाई देता था और वह भी तेज़ी से घर की ओर आग और गर्मी के पास पहुंच जाने के लिए भाग रहा होता था। घरों में जलती अंगीठियां लोगों को खींचनेवाले चुम्बक बन गई थीं। दूर-दूर से लोग उनकी ओर खिंचे चले जाते थे। सड़क चलते बूढ़ों की सिर्फ लाल नाक, सफेद दाढ़ी और प्लश की लम्बी टोपियां ही दिखाई देती थीं; बाकी सारा चेहरा ढंपा होता था। युवक जेबों में हाथ डाले छलांगें भरते या कभी-कभी बर्फीले रास्तों पर फिसलते हुए चला करते। चमकीले टोपों और गुलूबन्द में लैस बच्चे तो घर के दरवाज़ों में से निकलने के साथ ही दौड़ना शुरू कर देते; धीमे चलना तो जैसे वे जानते ही नहीं थे। भागते जाते और दस्तानोंवाले हाथ जांघों पर पीटते थे। मेथोडिस्ट चर्च के पास पहुंचते-पहुंचते घर का आधा रास्ता तय हो जाता था। आज भी याद है कि गिरजाघर में उजाला देखकर मुझे कितनी खुशी होती थी। रंग-बिरंगी खिड़कियों से छनकर आता प्रकाश ठिठुरन-भरी सड़क पर चलकर आनेवालों का जैसे स्वागत करता था। सर्दियों के वीराने में लोगों की रंगों की चाह उतनी ही तीव्र हो जाती है जितनी लैपलैण्डवासियों की चर्बी और शक्कर की। जिस दिन गिरजाघर में प्रार्थना, प्रवचन या भजन-गोष्ठी होती समय से काफी पहले दीये जला दिए जाते थे और हम दीयों के जलाए जाते ही ठण्ड में ठिठुरते और बातें करते हुए बाहर सड़क पर मंडराने लगते और कभी-कभी तो खड़े-खड़े हमारे पांव

ठण्ड से सुन्न भी हो जाते थे। उस समय इस तरह, उजाला होते ही, गिरजा-घर के बाहर मंडराने का कारण समझ में नहीं आता था; पर आज समझ में आता है कि खिड़कियों में लगे लाल, नीले, हरे, पीले कांचों से छनकर आनेवाला रंगीन प्रकाश हमें बांध लिया करता था।

सर्दियों की उन रातों में हमारे पड़ोसी हार्लिंगों की खिड़कियों का उजाला भी मुझे गिरजाघर की रंग-बिरंगी खिड़कियों के प्रकाश की ही तरह लुभाया करता था। उस गरम प्रशस्त मकान के अन्दर रंगों की बहार भी होती थी। रात के भोजन के बाद मैं टोपी पहनकर और दोनों हाथ जेबों में डाले बेंत की झाड़बन्दी में से लपकता हुआ उस पार निकल जाया करता था। लेकिन अगर मिस्टर हार्लिंग घर होते और उनके सोने के कमरे की खिड़की पर उनकी उद्धत छाया दिखाई देती तो मैं अन्दर नहीं जाता था। तब दरवाज़े पर से ही मुड़ जाता और लम्बे रास्ते से सड़क-सड़क यह सोचता हुआ घर लौटता कि दादा-दादी के पास बैठकर कौन-सी पुस्तक पढ़ना ठीक रहेगा।

ऐसी निराशाओं के बाद जब पीछेवाले बैठक में हम बूझ-बुझौवल खेलते या फैन्सी ड्रेस शो करते तो मेरी सारी कसर पूरी हो जाती और आनन्द हमेशा द्विगुणित हो जाता था। उन तमाशों में सैली प्रायः लड़के का वेश धारण करती थी। उन्हीं सर्दियों में फ्रांसिस ने हमें नाचना सिखाया और वह प्रायः कहा करती थी कि हम सबमें एण्टोनिया का नाच सबसे बढ़िया होगा। हर शनिवार की रात को मिसेज़ हार्लिंग हमें 'मार्था', 'नार्मा', 'रिगोलेट्टो' आदि पुराने गीति-नाट्य बजाकर सुनाया करतीं और साथ ही उनकी कहानियां भी बताती जाती थीं। उन दिनों शनिवार की हर रात उत्सव की रात होती थी। प्रकाश से जगमगाते बड़े कमरे, पीछेवाली बैठक और खाने के कमरे में ठंड का नाम न होता, आरामदेह कुर्सियां और सोफे अपनी जगह करीने से रखे रहते और दीवालों पर सुन्दर कलात्मक चित्र टंगे होते थे। वहां बैठकर बड़ा सकून मिलता था। एण्टोनिया अपना सीने-पिरोने का सामान लेकर वहीं हमारे साथ बैठ जाया करती थी—उसने अपने कपड़े सीने का काम शुरू कर दिया था। प्रेरी के खुले मैदान में भाई की गम्भीर चुप्पी और मां की भुनभुनाहट और शिकायतों के बीच बरसों

सर्दियों की कड़ी रातें बिता चुकने के बाद हार्लिगों का यह घर टोनी को, उसीके शब्दों में, 'स्वर्ग की तरह' लगता था। काम से वह ज़रा भी नहीं कतराती थी। हमारे लिए टाफी या चाकलेट बनाने को हमेशा तैयार रहती थी। अगर सैली ज़रा-सा कान में कह देती या चार्ली आंख से इशारा-भर कर देता तो वह रसोईघर में तीन-तीन बार खाना पका चुकने पर भी चौथी बार आग जलाकर टॉफी या चाकलेट चढ़ाने के लिए दौड़ी जाती थी।

हम सब भी रसोईघर में पहुंच जाते और नीना एण्टोनिया से कहानियां सुनाने का आग्रह करने लगती। वह केक को भुनने के लिए अंगीठी में रख देती या टॉफी को ठण्डा करने के लिए छोड़ देती और कहानियां सुनाने लगती। बड़ी दिलचस्प होती थीं उसकी कहानियां—बछड़े ने कैसे अपना पांव तोड़ लिया, युल्का ने मुर्गियों को बाढ़ में बह जाने से कैसे बचाया, बोहेमिया में क्रिसमस कैसे मनाया जाता है और वहां शादियां किस तरह होती हैं आदि-आदि। एण्टोनिया से कहानियां सुन-सुनकर नीना ने क्रिसमस के बारे में बड़ी विचित्र धारणाएं बना ली थीं। हमारे मना करने के बावजूद उसकी यह धारणा पक्की हो चुकी थी कि ईसा का जन्म बोहेमिया में शिमरडों के उस देश से चलने के कुछ समय पहले ही हुआ था। टोनी की कहानियां हम सभीको अच्छी लगती थीं। कहानी कहने का उसका अपना ढंग था। आवाज़ प्रभावोत्पादक, गहरी और गूंज-भरी थी। जिस चीज़ का भी वर्णन करती उसमें जान डाल दिया करती थी।

एक रात हम अखरोट की टाफी के लिए बैठे गिरी छील रहे थे तो टोनी ने हमें एक नई कहानी सुनाई।

"पिछली गर्मियों में जब मैं नार्वी बस्ती में आइवरसन के यहां गाहनी कर रही थी तो वहां जो घटना घटी वह आपको मालूम है, मिसेज़ हार्लिंग ? मैं वहां गेहूं की गाड़ी पर थी।"

मिसेज़ हार्लिंग आकर हमारे साथ बैठ गईं और बोलीं, "क्यों टोनी, तुम कुठले में अनाज भर लेती हो ?" वे जानती थीं कि यह काम कितना मुश्किल होता है।

" जी हां, एण्डर्न का मुटल्ला लड़का दूसरी गाड़ी हांक रहा था और उसे कुठले में गाड़ी खाली करने में जितनी देर लगती थी उतनी ही देर में

मैं भी अपनी गाड़ी खाली कर आती थी। उस दिन गज़ब की गर्मी थी। हम दुपहर का खाना खाकर लौटे और लोगों ने मज़े-मज़े काम शुरू किया। आदमियों ने घोड़े जोतकर मशीन चालू कर दी। ओल आइवरसन ऊपर पटरे पर चढ़ गया और पूलों के बन्द काटने लगा। मैं पुआल की गंजी के सहारे छाया में बैठी सुस्ता रही थी। एक तो उस समय मेरी बारी नहीं थी और फिर गर्मी बुरी तरह सता रही थी। इतनी तेज़ धूप थी कि मानो सारी दुनिया जल-भुनकर खाक हो जाएगी। सहसा मैंने एक आदमी को खुतरों में चलकर आते देखा। जब वह करीब आ गया तो पता चला कि हज़रत आवारागर्द थे। सामने से जूतों ने मुंह बा दिया था और अंगुलियां झांकने लगी थीं। हफ्तों से दाढ़ी नहीं बनी थी। आंखें लाल और डरावनी हो रही थीं, मानो बरसों का रोगी हो। सीधा मेरे पास आकर इस तरह बातें करने लगा जैसे पुरानी जान-पहचान हो। आते ही बोला, "क्या छिछले तालाब हैं यहां के, कोई चाहे तो उनमें डूबकर मर भी नहीं सकता।"

मैंने कहा, "यहां डूबकर मरना तो कोई भी नहीं चाहता। लेकिन अगर जल्दी बारिश नहीं हुई तो हमें पशुओं के पीने के लिए पम्प से पानी ज़रूर खींचना पड़ेगा।"

इसपर उसने जल-भुनकर कहा, "तुम लोगों को अपने जानवरों की बड़ी फिकर है, क्यों?" फिर उसने पूछा, "तुम्हारे पास बीयर होगी?" मैंने कह दिया कि बीयर चाहिए तो बोहेमियों के पास जाओ। गाहनी के समय नार्वी लोगों के यहां बीयर नहीं हुआ करती। "या खुदा!" उसने सिर पर हाथ मारकर कहा, "ये लोग नार्वी हैं, क्यों? और मैं तो समझ रहा था कि अमरीकी होंगे।"

फिर वह मशीन के पास जा खड़ा हुआ और चिल्लाकर ओल आइवरसन से बोला, "सुनो बिरादर, मुझे ऊपर आ जाने दो। पूलों के बन्द तो मैं भी काट सकता हूं और इस आवारागर्दी से तंग आ गया हूं। अब कहां भटकता फिरूंगा, यहीं काम करने दो।"

मैं समझ गई थी कि उसके दिमाग के पेंच ढीले हो गए हैं और वह चलती मशीन को बिगाड़ देगा। इसलिए ओल को बार-बार इशारों से मना करती रही। मगर वह क्यों मानने लगा? धूप और गर्मी के अलावा भूसी

अलश उसे तकलीफ दे रही थी। तेज़ गर्मी में पसीने से चिपककर भूसी इस बुरी तरह काटने लगती है कि पहलवानों के भी छक्के छूट जाते हैं। वह तुरत उतर पड़ा और एक गाड़ी के नीचे छाया में जा घुसा। आवारागर्द को मुंहमांगी मुराद मिल गई। लपककर मशीन पर चढ़ गया और पूलों के बन्द काटने लगा। कुछ देर तो बराबर काम करता रहा, फिर मेरी ओर देखकर हाथ हिलाया और दूसरे ही क्षण सिर के बल मशीन के अन्दर जा गिरा।

मेरी चीख सुनकर आसपास के लोग दौड़े आए और घोड़ों को रोकें-रोकें इतने में तो वह पट्टे से खिंचकर दांतों में जा फंसा और उसका कीमा बन गया। अन्दर इस बुरी तरह फंस गया था कि बड़ी मुश्किल से निकाला जा सका और मशीन तो हमेशा के लिए खराब हो गई, उसके बाद कभी ठीक से काम न कर सकी।"

"तो क्या टोनी, वह बिलकुल ही मर गया था?" हम सब एकसाथ पूछ बैठे।

"मर गया? हां, मर ही तो गया था। लेकिन लो, नीना रानी तो रोने लगीं। अब हम यह कहानी कहेंगे ही नहीं। चुप हो जाओ, नीना रानी! टोनी के रहते कोई आवारा तुम्हारा बाल भी बांका नहीं कर सकता।"

मिसेज़ हार्लिंग ने नीना को ज़ोर से डांटा, "रोना बन्द करो नीना, नहीं तो आगे से, जब एण्टोनिया देहात की कहानिया सुनाएगी तो मैं तुम्हें ऊपर भेज दिया करूंगी। उसके नाम-धाम और ठौर-ठिकाने का पता लग गया था एण्टोनिया कि नहीं?"

"जी नहीं, आज तक पता नहीं चला। एक बार कानवे नामक छोटे-से कस्बे में दिखाई पड़ा था, बाकी तो आवारागर्दी ही करता रहा था। कानवे में भी बीयर की तलाश में गया था, लेकिन वहां कोई दुकान ही नहीं है। ऐसा खयाल किया जाता है कि किसी मालगाड़ी में चुपके से चढ़कर यहां पहुंचा होगा, पर गार्ड का कहना है कि उसने नहीं देखा। उसपर न कोई चिट्ठी मिली, न पता-ठिकाना। जेब में एक पुराना-धुराना छोटा-सा चाकू था, और कागज़ में लिपटी मुर्गी की सौभाग्य-सूचक हड्डी, और हां, एक कविता भी थी।"

"कविता ?" हमने आश्चर्य में भरकर पूछा।

"याद आ गया।" फ्रांसिस ने कहा, "वह 'बलूत की पुरानी बाल्टी' (दि ओल्ड ओकन बकेट) नामक कविता थी, जिसे उसने किसी अखबार में से काटकर रख लिया था। ओल अ'इवरसन मुझे दफ्तर में दिखलाने के लिए लाया था। मैंने देखा तो कागज़ करीब-करीब फट चला था।"

"बात बिलकुल समझ में नहीं आती मिस फ्रान्सिस !" टोनी गहन विचारों में डूबती-उतराती बोली, "गर्मियों में और खास तौर पर गाहनी के समय कोई भी क्यों मरना चाहेगा ! कितने अच्छे दिन होते हैं वे !"

"बेशक, बहुत बढ़िया दिन होते हैं एण्टोनिया !" मिसेज़ हार्लिङ्ग ने उसकी सारी शंकाओं का समाधान करते हुए कहा, "अगली गर्मियों में गाहनी में हाथ बंटाने के लिए मैं तुम्हारे घर चलूंगी। अरे हां, वह टॉफी तैयार हो गई या नहीं ? बड़ी देर से खुशबू आ रही है मुझे।"

एण्टोनिया और उसकी मालकिन का स्वभाव और उन दोनों के विचार लगभग एक जैसे थे। दोनों स्वतन्त्र प्रकृति की और स्थिर मतिवाली महिलाएं थीं। दोनों का दृष्टिकोण मौलिक था और वे किसीकी नकल प्रायः कम ही करती थीं। बच्चे, पशु और संगीत दोनों को प्रिय थे; और खेती-बाड़ी की कड़ी मशक्कतवाला काम दोनों को अच्छा लगता था। अच्छा पुष्टिकर और स्वादिष्ट खाना पकाने और लोगों को भरपेट खिलाने में दोनों को सुख मिलता था। नन्हे बच्चों का दोनों ही चिन्तापूर्वक लालन-पालन करती थीं—मुलायम सफेद बिस्तरे बिछाकर और उनमें बच्चों को सुलाकर दोनों जैसे कृतकृत्य हो जाती थीं। दोनों ही घमण्डियों को फटकारने से बाज़ न आतीं और दीन-दुखियों की बड़ी तत्परता से सेवा-सहायता करती थीं। दोनों के अन्तस् में कहीं बहुत गहरे आनन्द का अखूट सरोवर छलक रहा था और दोनों को ही जीवन से गहन प्यार था—टीम-टाम और तड़क-भड़क से सर्वथा दूर, परन्तु साथ ही दूसरों को अनुप्राणित और शक्ति-सम्पन्न करनेवाला। विश्लेषण करके मैं उसे नाम-रूप तो कभी नहीं दे पाया, परन्तु स्पष्ट रूप से अनुभव ज़रूर करता रहा। और इस बात को बहुत अच्छी तरह जानता था कि ब्लैक हॉक में हार्लिङ्गों के घर को छोड़कर एण्टोनिया किसी और के यहां एक सप्ताह भी नहीं रह पाएगी।

७

सर्दियां देहाती कस्बों में पलथी मारकर बैठ जाती हैं और बुढ़ाकर बासी, भोंडी और चिड़चिड़ी हो जाने तक जमी बैठी रहती हैं। खेत की ज़िन्दगी में सबसे बड़ा तथ्य होता है मौसम और उसके अन्तर्गत मनुष्य के क्रिया-कलाप ठीक उसी तरह चलते रहते हैं जिस तरह बर्फ जमी सतह के नीचे नाला बहता रहता है। लेकिन ब्लैकहॉक में सर्दियों ने मानव-जीवन को पंगु, अभावग्रस्त, संकुचित, ठिठुरन से भरा और ठठरियों तक नंगा करके रख दिया था।

जनवरी और फरवरी में जब रातें साफ होतीं मैं और हार्लिंग परिवार के बच्चे नदी पर स्केटिंग के लिए जाया करते। हम स्केटिंग करते हुए बड़े द्वीप तक चले जाते और जमी हुई बालू पर अलाव जलाया करते। लेकिन मार्च में नदी की धारा और छोरों पर की बर्फ खुरदरी, भूरी और बदरंग हो गई और उसमें दरारें भी पड़ने लगीं। मुझे हर चीज़ से कोफ्त होने लगी—क्या स्कूल और क्या सर्दियों के कपड़े। यहां तक कि बर्फ में पड़ी लीकोंवाली सड़कों से भी मन ऊब गया; और बर्फ के गंदे ढेरों और बाड़े में लगे कोयले के अम्बार को देख-देखकर घिन आने लगी। उस पूरे एक-रस मनहूस महीने में सिर्फ एक ही बात अच्छी हुई—हब्शी पियानोवादक अंधा द' आर्नाल्ट घूमता-घामता हमारे कस्बे में आ गया। सोमवार की रात में आपेरा हाउस में उसका जलसा हुआ और शनिवार और रविवार उसने और उसके मैनेजर ने हमारे यहां के आरामदेह होटल में बिताए। मिसेज़ हार्लिङ्ग द' आर्नाल्ट को कई बरसों से जानती-पहचानती थीं। शनि-वार की रात उन्होंने एण्टोनिया को टोनी के पास ब्वायज़ होम जाने की इजा-ज़त दे दी, क्योंकि वे जान गई थीं कि आज वहां ज़रूर गाना-बजाना होगा।

शनिवार की उस रात मैं भी खाना खाकर होटल पहुंच गया और चुपके से बड़े कमरे में जा घुसा। कुर्सियां और सोफे सब भर गए थे और हवा में सिगार के धुएं की गन्ध बसी हुई थी। वह बड़ा कमरा कभी दो छोटे कमरों में बंटा हुआ था, इसलिए जिस जगह से बीचवाला परदा काटकर निकाला

गया था वहां फर्श में सिलवट पड़ गई थी। कमरे में एक पूरा लम्बा कालीन बिछा था और बाहर की हवा उसके रोओं को हौले-हौले लहरा रही थी। कमरे के दोनों छोर पर कोयले की अंगीठियां दहक रही थीं और बड़ा पियानो कमरे के बीचोबीच खुला हुआ रखा था।

मिसेज़ गार्डनर एक सप्ताह के लिए ओमाहा गई हुई थीं इसलिए आज घर में काफी स्वच्छन्दता दिखाई दे रही थी। उनका पति जानी गार्डनर मेहमानों के साथ शराब पीकर अपने होश-हवास गंवा चुका था। कारबार सारा मिसेज़ गार्डनर ही चलातीं और पूरा इन्तज़ाम भी उन्हींके ज़िम्मे था। उनका पति मेज़ के पास खड़ा आगन्तुकों का स्वागत कर रहा था। वह लोकप्रिय तो था, परन्तु अच्छा व्यवस्थापक नहीं।

सारे ब्लैकहॉक में मिसेज़ गार्डनर जैसे बढ़िया कपड़े-लत्ते किसी औरत के पास नहीं थे। घोड़ा भी उन्हींका सबसे अच्छा था। उनके पास एक बढ़िया बग्घी और एक छोटी-सी सफेद सुनहरी स्लेज गाड़ी भी थी। पास में काफी गहने होते हुए भी वे कभी पहनती नहीं थीं, क्योंकि उन्हें गहनों का कोई मोह नहीं था। कद उनका लम्बा, रंग गेहुंआ और चेहरा इंडियनों जैसा सिकुड़ा हुआ, भाव-हीन और कठोर था। उनका व्यवहार सबसे उदासीनतापूर्ण होता और वे बहुत कम बोलती थीं। होटल में ठहरनेवालों को लगता था, जैसे वे अनुग्रह करने के बदले अनुगृहीत हो रहे हों। यदि मिसेज़ गार्डनर क्षण-भर भी बात कर लेतीं तो सबसे चलता-पुर्ज़ा सेल्समैन भी अपने को कृतकृत्य समझने लगता था। उनके होटल में ठहरनेवाले लोग आम तौर पर दो कोटियों में बंटे हुए थे, एक वह जिन्होंने मिसेज़ गार्डनर के गहने-गोठे देखे थे और दूसरे वे जिन्होंने नहीं देखे थे।

जब मैं बड़े कमरे में घुसा तो मार्शल फील्ड का नौकर एन्सन कर्कपैट्रिक पियानो पर शिकागो में चल रही म्युज़िकल कामेडी की धुनें बजा रहा था। वह तेज़-तर्रार नाटा आयरी (आयरलैण्डवासी) बड़ा ही घमण्डी और बन्दर जैसा कुरूप था। सब जगह उसके दोस्त और मल्लाह की तरह हर बन्दरगाह में उसकी प्रियतमाएं थीं। वहां बैठे हुए सब लोगों को तो मैं नहीं जानता था, लेकिन कन्सास सिटी से आनेवाले एक फर्नीचर-विक्रेता, एक दवाफरोश और रिली ओ' विली को ज़रूर पहचानता था। विली गहने बनानेवाली

कम्पनी का सेल्समैन था और संगीत के साज़ (वाद्ययंत्र) बेचा करता था। संगीत के उस्तादों, अभिनेता और अभिनेत्रियों एवं अच्छे अ.र बुरे होटलों के बारे में बहस छिड़ी हुई थी। वहीं मुझे इस बात का पता चला कि मिसेज़ गार्डनर बूथ और बारेट का संगीत सुनने के लिए ओमाहा गई हैं, जहां अगले सप्ताह उनका जलसा हो रहा था; और लन्दन में, 'ए विण्टर्स टेल" में मेरी एण्डरसन को भारी सफलता मिली है।

दफ्तर का दरवाज़ा खुला और जानी गार्डनर अन्धे द' आर्नाल्ट को साथ लेकर भीतर आया। अन्धा होते हुए भी आर्नाल्ट को किसीका हाथ पकड़कर चलना पसन्द नहीं था। वह नन्ही टांगोंवाला भारी-भरकम नीमगोरा, हब्शी और यूरोपीय माता-पिता की वर्णसंकर सन्तान (मुलट्टो) था। सुनहली मूठवाली अपनी छड़ी को फर्श पर खटखटाता हुआ वह आगे बढ़ा। उसका पीला चेहरा ऊपर प्रकाश की ओर उठा हुआ था और चौड़ी-चकली मुस्कान के कारण सफेद दन्तपंक्ति साफ दिखाई दे रही थी। उसकी अन्धी आंखों पर कागज़ जैसी महीन पलकें सिमटी-सिकुड़ी और निःस्पन्द पड़ी थीं।

"नमस्कार भाइयो ! बहिनें तो नहीं हैं न ? नमस्कार भाइयो ! तो आज की रात यहां गाना-बजाना हो रहा है ? क्या आपमें से कुछ सज्जन गाना भी गाएंगे ?" विनम्र चाटुकारिता की ध्वनिवाला कोमल स्नेह-भरा हब्शी-स्वर था वह, जिसे मैं बहुत बचपन से सुनता आया था। सिर भी उसका हब्शियों जैसा ही था; कहना चाहिए कि सिर था ही नहीं, नन्हे-नन्हे घुंघराले बालों के नीचे एकदम गरदन शुरू हो जाती थी। यदि आन्तरिक प्रसन्नता और दयालुता से मण्डित न होता तो वह चेहरा देखनेवालों को अवश्य घिनौना लगता। वरजीनिया से आने के बाद मैंने इतना प्रसन्न चेहरा दूसरा नहीं देखा था।

ठक्-ठक् करता हुआ वह पियानो के पास पहुंच गया। बैठ जाने के बाद मैंने उसके स्नायविक कम्पन को लक्ष्य किया, जिसके बारे में मिसेज़ हार्लिङ्ग मुझे बता चुकी थीं। जब वह बैठा या एक जगह खड़ा होता तो उसका सारा शरीर झूलनेवाले खिलौने की तरह आगे-पीछे डोला करता। पियानो बजाते समय वह संगीत की लय पर झूमता, लेकिन ठाले रहने पर भी उसका शरीर बराबर डोला करता, मानो खाली चक्की चल रही हो ! उसने

पायदानों को टटोलकर उनपर पांव रखे और चलाकर देखा, दो-एक बार अपने पीले हाथों को पियानो के परदों पर इधर से उधर चलाकर सरगम की आवाज़ निकाली और तब लोगों की ओर मुड़कर बोला :

"पियानो तो बिलकुल शीन-काफ से दुरुस्त है। पिछली बार बजाकर गया था तब से इसका कुछ भी नहीं बिगड़ा—सुर, परदे, पायदान सब बढ़िया हैं। मेरे आने से पहले मिसेज़ गार्डनर हमेशा ही इस पियानो का सुर मिलवा लिया करती हैं। मेरा खयाल है कि आप लोगों में कई अच्छे गलेवाले सज्जन भी हैं। आज की रात खेतों-बागानों के कुछ बढ़िया पुराने गीत गाए जाएं तो कैसा रहे ?"

उसने पियानो पर 'मेरा पुराना केण्टुकी घर' (माई ओल्ड केण्टुकी होम) बजाना शुरू किया और गानेवाले उसे घेरकर खड़े हो गए। फिर तो एक के बाद एक हब्शी गीत गाया जाने लगा और आर्नाल्ट अपना पीला चेहरा उठाए, अन्धी आंखों को मूंदे झूमता-झामता पियानो बजाता रहा।

उसका जन्म सुदूर दक्षिण में द' आर्नाल्ट के बागान में हुआ था, जहां दास-प्रथा शारीरिक रूप से तो अवश्य खत्म हो गई थी, परन्तु आत्मिक रूप से अब भी विद्यमान थी। जन्म के कोई तीन सप्ताह बाद किसी कठिन रोग में ग्रस्त हो जाने से उसकी दृष्टि सदा के लिए जाती रही। बड़ा होकर कुछ बैठने और पैयां-पैयां चलने काबिल हुआ तो स्नायविक कम्पन के रोग ने आ घेरा। उसकी हृष्ट-पुष्ट सुन्दर हब्शी मां वारांगणा और द' आर्नाल्ट की धोबिन थी। अपने अन्धे बेटे को हर समय डोलते देख वह यही समझी कि इसका दिमाग खराब है। अन्धे, बदसूरत और हर समय डोलनेवाले बच्चे को दिलोजान से प्यार करते हुए भी वह इसको लेकर इतना शरमाती थी कि उसे कभी लोगों के सामने आने नहीं देती थी। मालिक के यहां से खाने-पीने की जो भी अच्छी चीज़ें लाती सबकी सब अन्धे बच्चे को दे दिया करती थी। मजाल नहीं कि कोई दूसरा बच्चा अन्धे को छेड़ सके या उसकी चीज़ें छीनकर खा जाए। पता लगते ही मां उनकी कुटम्मस कर दिया करती थी। अन्धा जल्दी ही बोलने लगा और उसकी याददाश्त शुरू से ही इतनी अच्छी थी कि जो बात एक बार सुन लेता कभी भूलता नहीं था। मां सोचने लगी कि शायद पागल न भी हो ! अन्धा था इसलिए मां ने नाम रखा

सैमसन, लेकिन बागान में सब कोई इसे 'पीली मार्था का पगला' कहकर पुकारते थे। वह बड़ा ही विनम्र और आज्ञाकारी बालक था। लेकिन छः बरस का होते ही उसपर यह झक सवार हुई कि जहां सवेरा होता और वह मालिक के बड़े मकान की उस खिड़की के आगे जा खड़ा होता जहां बैठकर मिस नेली द' आर्नाल्ट पियानो पर रियाज़ किया करती थी। मिस नेली का कमरा मकान के दक्षिण रुख पर था और अन्धे के घर से वहां का रास्ता नील पुष्पी की क्यारियों में से बाक्सवुड की झाड़बन्दी के साथ-साथ जाता था। वह प्रतिदिन बिना भटके नियमपूर्वक वहां पहुंच जाया करता था। मां शायद उसके बड़े से बड़े अपराध पर भी इतना नाराज़ न होती जितना इस कृत्य से। वह इतना कुरूप था कि किसी गोरे की उसपर निगाह पड़ जाना ही मां को शर्मिन्दा करने के लिए काफी होता था। जब कभी वह उसे भागते हुए पकड़ पाती तो खूब पिटाई करती और तरह-तरह से डराती कि यदि मिस्टर द' आर्नाल्ट ने देख लिया तो उसकी कैसी दुर्गति करेंगे। लेकिन सैमसन पर किसी बात का असर नहीं होता था। उसे जैसे ही मौका मिलता भागकर फिर वहीं पहुंच जाता था। मिस द' आर्नाल्ट जब कभी रियाज़ छोड़कर खिड़की में आ खड़ी होतीं तो उन्हें यह बदसूरत हब्शी बच्चा, बोरा पहने, हालीहाक की कतारों में खड़ा दिखाई दे जाता—उसकी अंधी आंखें सूरज की ओर उठी होतीं और चेहरे पर मूर्खतापूर्ण आनन्द छाया रहता। अक्सर मिस द' आर्नाल्ट का मन मार्था से यह कहने को हो आता कि वह अपने इस बच्चे को घर पर ही रखे, लेकिन उसकी मुख-मुद्रा का खयाल आते ही वे अपने-आपको रोक लिया करती थीं। दया भी आती थी कि बेचारे के पास केवल सुनना ही बचा है तो उससे उसे क्यों वंचित किया जाए; लेकिन यह तो उन्होंने सपने में भी नहीं सोचा था कि उसकी श्रवण-शक्ति में संगीत की प्रतिभा भी निहित है।

एक दिन सैमसन हालीहाक की क्यारियों में इसी तरह खड़ा था और मिस नेली अपने संगीत-शिक्षक को पियानो बजाकर सुना रही थीं। खिड़की खुली थी। पाठ पूरा हुआ, गुरु-शिष्या कुछ देर बातें करते रहे और फिर कमरे के बाहर चले गए। सैमसन ने पहले उनके बातें करने की, फिर कमरे से बाहर जाने की और अन्त में दरवाज़ा बन्द किए जाने की आवाज़ें सुनीं।

वह धीरे-धीरे सामनेवाली खिड़कियों के पास आया और सिर अन्दर डाल-कर टोह लेता रहा : कमरे के अन्दर कोई नहीं था। कमरे में किसीकी भी उपस्थिति का पता उसे तुरत चल जाया करता था। खिड़की की देहलीज़ पर एक पांव रखकर वह थोड़ी देर असमंजस की स्थिति में खड़ा रहा।

मां उसे अक्सर डराती रहती थी कि यदि कभी मालिक ने तुम्हें अपने घर के आसपास मंडराते देख लिया तो बड़े खूंख्वार कुत्ते से नुचवा डालेंगे। एक बार सैमसन अनजाने ही उस खूंख्वार कुत्ते के पास चला गया था। अपने चेहरे पर उसकी डरावनी सांस की याद वह भूला नहीं था। एक क्षण वह उसीके बारे में सोचता रहा, लेकिन दूसरे ही क्षण चौखट लांघकर कमरे में चला गया।

अंधेरे में टटोलता हुआ वह उस बाजे के पास पहुंच गया—उसके मुंह की तरफ। उसने हौले से उसे छुआ और हौले से ही वह बज उठा—कोमल और दयापूर्ण टुनटुनाहट के साथ। वह रोमांचित हो उठा और चुप खड़ा रहा। फिर वह उसे छू-छूकर देखने लगा, उसने उसके चिकने बाजुओं पर अंगुलियां फिराईं जो फिसलती चली गईं; उसने उसके नक्काशीदार पांवों को बांहों में भरकर देखा। वह उसके रूप और आकृति का अन्दाज़ कर लेना चाहता था और यह जानकारी भी कि वह कितना बड़ा है और कितनी जगह घेरता है। वह उसे कड़ा, शीतल और निष्प्राण लगा। उसकी अंधी दुनिया में ऐसी कोई चीज़ नहीं थी जिससे वह उसकी तुलना कर पाता। फिर वह उसके मुंह की तरफ लौट आया और एक सिरे से परदों को दबा-कर देखने लगा—मधुर-कोमल ध्वनि ज़ोर से गूंज उठी। जाने कैसे वह समझ गया कि परदों को अंगुलियों से दबाना चाहिए, मुट्ठियों अथवा पांवों से नहीं। अपनी सहज प्रेरणा से ही उसने उस यन्त्र की बारीकियों को जाना और आत्मसात् किया, और मानो समझ गया कि उसके खंडित व्यक्तित्व को वह यन्त्र ही परिपूर्णता प्रदान करेगा। एक-एक कर सब ध्वनियों को बजा चुकने के बाद वह उन धुनों को बजाने की कोशिश करने लगा, मिस नेली जिनका रियाज़ किया करती थीं। इन सारी धुनों को वह खिड़की के बाहर खड़ा कई-कई दिनों तक सुनता रहा था और वे उसके छोटे-से मस्तिष्क और मांस-मज्जा तक का अविभाज्य अंग बन गई थीं। और जिस प्रकार

मनुष्य की वासनाएं प्रदीप्त हो उठती हैं उसी प्रकार यन्त्र पर उसकी अंगुलियों के स्पर्श से इस समय वे सारी धुनें जागती जा रही थीं।

दरवाज़ा खुला; मिस नेली और उनके संगीत-शिक्षक पीछे आ खड़े हुए। अंधे सैमसन को किसीकी भी उपस्थिति का तुरत पता चल जाता था, लेकिन इस समय वह जान न पाया। वह तो उन छोटे-बड़े पर्दों में समाए संगीत को छू-छूकर जगाने में तल्लीन हो रहा था। एक बार गलत सुर लग जाने से वह रुक गया और सही सुर लगाने जा ही रहा था कि मिस नेली ने बड़ी कोमलता से उसका नाम लेकर पुकारा। मारे डर के अधमुआ वह हिरन की तरह चौकड़ी भरकर अंधेरे में भागा, खिड़की से जा टकराया, माथा फूट गया और चीखें मारता हुआ लहूलुहान फर्श पर जा गिरा। जैसाकि उसकी मां ने बताया, उसे 'फिट' आ गया था। डाक्टर को उसे अफीम देनी पड़ी थी।

जब अच्छा हो गया तो मिस नेली उसे पियानो सिखाने लगीं। कई कुशल शिक्षकों ने बार-बार उसकी परीक्षा ली। उसका सुर-ताल का ज्ञान, याददाश्त और अदाकारी तीनों ही बहुत अच्छे थे। बिलकुल बच्चा था तभी से जो भी धुनें उसे सुनाई जातीं, उन्हें अपने ढंग से बजाकर सुना दिया करता था। गलत सुर भी ज़रूर लग जाते थे और कई बार तो बहुत-से लग जाते, लेकिन राग के मूल भाव और आशय को वह कभी खण्डित नहीं होने देता था। तान-पलटों के उलट-फेर और सुरों की अनोखी बन्दिश करके हर संगीत के आशय को स्पष्ट कर दिया करता था। उसे विधिवत् सिखाने के बहुत प्रयत्न किए गए, यहां तक कि एक-एक कर सभी शिक्षक हार मान गए, लेकिन बजाने का शास्त्रीय ढंग उसे कभी नहीं आया; वह अपने ही खास ढर्रे पर चलता रहा। वह तो जन्मजात हब्शी उस्ताद था, जिसका पियानो-बजाने का अपना निजी ढंग था—अशुद्ध,अशास्त्रीय, परन्तु अद्भुत। पियानो-वादन की दृष्टि से देखें तो निन्द्य, लेकिन संगीत की दृष्टि से देखें तो अद्भुत प्राणवत्ता से परिपूर्ण, आनन्ददायी लय से संयुक्त, और वह शक्तिशाली लय उसके अंधेरे मस्तिष्क में ही नहीं गूंजा करती सदा-सर्वदा उसके शरीर को भी दोलायमान किए रहती थी। उसको सुनना और बजाते हुए देखना एक हब्शी को अपने विशिष्ट ढंग से आनन्दोपभोग करते हुए देखना था। लगता

था जैसे हाड़-मांस के जीवों के समस्त सुखद मनोवेग उन सफेद-काले पर्दों पर ढेर के ढेर पड़े हों और वह मोहाविष्ट की तरह डोलता हुआ उन्हें अपनी पीली अंगुलियों से उड़ा रहा हो।

एक बार द' आर्नाल्ट वाल्ज़ की अति तीव्र तार-लय से सहसा मन्द्र पर आ गया और अपने पीछे खड़े आदमी से मन्द स्वर में बोला, "कोई वहां नाच रहा है।" उसने अपने नन्हे-से सिर से खानेवाले कमरे की ओर इशारा करते हुए कहा, "मुझे छोटे-छोटे पांवों की आवाज़ सुनाई दे रही है— लड़कियां हैं शायद।"

एन्सन कर्कपैट्रिक ने कुर्सी पर चढ़कर दरवाज़े की सरदल में से झांका। वह फौरन नीचे कूदा, झटके से दरवाज़े खोले और खानेवाले कमरे में झपटता चला गया। टीनी और लेना, एण्टोनिया और मेरी डुसाक कमरे के बीचों-बीच वाल्ज़ नाच रही थीं। एन्सन को देखते ही वे नाच छोड़कर खिल-खिलाती हुई रसोईघर की ओर भागीं।

कर्कपैट्रिक ने लपककर टीनी को पकड़ लिया। "तुम्हें हो क्या गया है? यहां अपने से नाच रही हो और दीवाल के उस पार सारा कमरा अकेले आदमियों से भरा पड़ा है। अपनी सहेलियों से परिचय तो कराओ टीनी।"

दूसरी लड़कियां अब भी हंसती हुई भागी जा रही थीं। टीनी ने हाथ छुड़ाने की कोशिश करते हुए घबराकर कहा, "मिसेज़ गार्डनर को यह ज़रा भी पसन्द नहीं। अगर उन्हें मालूम हो गया कि तुम यहां हमारे साथ नाचने आए हो तो वे बहुत नाराज़ होंगी।"

"मिसेज़ गार्डनर यहां हैं ही कहां? बेफिक्र हो जाओ छोकरियो! वे ओमाहा गई हैं।...तुम शायद लेना हो और तुम टीनी और तुम तो ज़रूर मेरी हो। क्यों पहचान लिया न एक-एक को?"

ओ' रिली और दूसरे भी कई आदमी खानेवाले कमरे में आ गए थे और कुर्सियां उठाकर मेज़ों पर रखने लगे थे। जानी गार्डनर भागा आया और बोला, "यारो, जूते पड़वाओगे क्या? रसोईदारिन जाग जाएगी और मेरी ऐसी की तैसी करवा देगी। गाओ-बजाओ भले ही रात-भर उस कम्बख्त की कान पर जूं नहीं रेंगती, लेकिन खाने के कमरे में ज़रा भी खटर-पटर हुई कि तुरत धमधमाती हुई नीचे उतर आती है।"

"तुम भी यार जानी, कमाल करते हो। रसोईदारिन से इतना डरते हो ? निकाल बाहर करो ससुरी को और मॉली को तार कर दो कि दूसरी रसोईदारिन लेती आए। ठीक है न, फिर कोई चुगली नहीं करेगा।"

जानी ने अपना सिर हिलाते हुए कहा, "यारो, अब तुम्हें क्या बताऊं। हालत यह है कि यहां ब्लैकहॉक में शराब पीता हूं तो मॉली को ओमाहा में उसकी गन्ध, स्वाद और नाम तक का पता चल जाता है।"

सब लोग हो-होकर हंस पड़े। दो-एक ने उसका कंधा थपथपाते हुए कहा, "अच्छी बात है, तो हम मॉली से समझ लेंगे। अब जानी, मेर शेर, तुम यहां से चलते-फिरते नज़र आओ।"

मॉली मिसेज़ गार्डनर का ही नाम था। उनकी होटल-बस के दोनोंओर बड़े-बड़ नीले अक्षरों में उनका यह नाम 'मॉली बान' लिखा हुआ था। जानी की अंगूठी और उसकी घड़ी के 'केस' और निस्सदेह उसके दिल पर भी 'मॉली' नाम अंकित था। जानी बेचारा सीधा, भला और प्यारा-सा आदमी था और अपनी पत्नी को बहुत काबिल औरत मानता था। बात ठीक भी थी। जानी साहब बीवी ही की बदौलत यहां होटल के मालिक बने बैठे थे, नहीं तो किसी दूसरे की होटल में कलम घिसाई कर रहे होते।

कर्कपैट्रिक ने कुछ कहा और द' आर्नाल्ट ने पियानो पर हाथ फैलाकर नाच की धुनें निकालना शुरू कर दिया। बजाते-बजाते उसके चेहरे से पसीने की धारें बहने लगीं और सिर के नन्हे घुंघराले बाल भी पसीने से तर हो गए। पसीने से तरबतर हो जाने के कारण वह विलास और वासना के अफ्रीकी देवता जैसा लग रहा था। नाचनेवालों में यदि कोई दम लेने या साथी बदलने के लिए ठिठक जाता तो वह पुकार उठता था, "यह कौन मेरी नाक कटवा रहा है ? ज़रूर कोई शहराती भाई होना चाहिए ! आशा है बहिनें कदमों को ढीलाकर फर्श को ठण्डा नहीं होने देंगी।"

शुरू-शुरू में तो एण्टोनिया डरी-डरी-सी विली ओ रिल्ली के कंधे पर से लेना और टीनी की ओरप्रश्नसूचक दृष्टि से देखती रही। टीनी सोडरबाल का बदन छरहरा, पांव फुर्तीले और टखने गज़ब के सुन्दर थे। अपनी लम्बाई के हिसाब से वह काफी ऊंचे कपड़े पहनती थी। वह जल्दी-जल्दी बोलती और दूसरी लड़कियों से फुर्तीली भी अधिक थी। मेरी डुसाक के

हाड़ चौड़े और रंग भूरा था, चेहरे पर शीतला के कुछ व्रण भी थे, लेकिन फिर भी वह खूबसूरत थी। उसके घने, बलखाए, ललछौंहे भूरे बाल बहुत सुन्दर थे, कपाल छोटा और चिकना और काली-कजरारी आंखों में राजरानी की-सी निडरता और लापरवाही थी। देखते ही लगता था जैसे वह धृष्ट, व्युत्पन्नमति और निर्लज्जता की सीमा तक निस्संकोच हो, और वास्तव में उसमें ये तीनों बातें थीं। वे सब खूबसूरत थीं—देहाती जीवन की ताज़गी और निखार लिए हुए और उनके नेत्रों में जो आलोक था उसे बिना किसी उपमा-उपमान के सही अर्थों में 'यौवन की दीप्ति' कहा जा सकता है।

यदि उसका मैनेजर आकर पियानो बन्द न कर देता तो उस रात अंधा आर्नाल्ट जाने कितनी देर बजाता रहता। महफिल बर्खास्त होने से पहले उसने हमें अपनी सोने की घड़ी बताई, जो दीवालघड़ी की तरह घण्टे बजाती थी और पुखराज की वह अंगूठी थी, जिसे किसी रूसी रईस ने न्यूआरलिअन्स में उसकी हब्शी धुनों पर खुश होकर इनाम दी थी। अन्त में वह सबको विनम्रता से सिर झुकाकर ठक-ठक करता हुआ खुश-खुश ऊपर चला गया। मैं और एण्टोनिया साथ-साथ घर लौटे। नृत्य और संगीत ने हमें इतना उद्वेलित कर दिया था कि उत्तेजना के कारण घर के अन्दर जाकर सोने का मन ही नहीं हो रहा था। हार्लिगों के फाटक पर ठण्ड में देर तक खड़े-खड़े कनफुसकियां करते रहे तब कहीं जाकर बेचैनी दूर हुई।

८

लम्बी सर्दियों के बाद जब वसन्त ऋतु आ गई तो मैंने और हार्लिङ्ग परिवार के सभी बच्चों ने जैसे छुटकारे की सांस ली! वसन्त के उन दिनों हम सब परम प्रसन्न, मगन और निराकुल थे। अच्छी-खासी धूप होने लगी थी और हम दिन-दिन-भर घर के बाहर मिसेज़ हार्लिग और टोनी का हाथ बंटाया

करते—कभी बगीची में क्यारियां बनाकर रोपें लगाते, कभी फलबाग में पेड़ों के थालों की गोड़ाई करते, कभी अंगूर की लताओं को बांधते तो कभी झाड़बन्दी की कलम उतारते। रोज़ सवेरे जैसे ही नींद खुलती बगीची की क्यारियों से टोनी के गाने की आवाज़ सुनाई देती थी। जब सेब और चेरी वृक्ष फूलों से लद गए तो हम उनके नीचे चिड़ियों के नये घोंसलों की तलाश में घूमा करते, एक-दूसरे पर ढेले फेंका करते और नीना के साथ आंख-मिचौनी खेला करते। जड़-जंगम को सुषमा से मंडित करनेवाले ग्रीष्म की सवारी अभी आई नहीं थी, परन्तु चल पड़ी थी और धूम-धड़ाके से चली आती थी। जीवन नन्हे-से शान्त देहाती क़स्बे में भी कभी स्थिर नहीं रहता और लड़के-लड़कियां बढ़ते और बड़े होते ही रहते हैं, वे चाहें या न चाहें उन्हें बड़ा तो होना ही पड़ता है। लेकिन उनके बुज़ुर्ग अक्सर इस बात को भूल जाया करते हैं।

बात जून की ही है, क्योंकि मिसेज़ हार्लिंग और एण्टोनिया चेरी का मुरब्बा डाल रही थीं और मैंने उन्हें सवेरे-सवेरे जाकर बताया था कि हमारे शहर में नाच सिखानेवाले पूरे ताम-झाम के साथ आए हुए हैं। मैंने स्टेशन से दो छकड़ों में तम्बू और रंगीन खम्भे लाए जाते देखे थे।

उसी दिन तीसरे पहर के समय मैंने तीन हंसमुख इतालवियों को ब्लैक-हॉक के गली-कूंचों में घूमते-फिरते देखा। उनके साथ एक हृष्ट-पुष्ट औरत भी थी; वह गले में सोने की ज़ंजीर (सिकड़ी) पहने थी और हाथ में फीतोंवाली छतरी खोले चल रही थी। उन्हें खास तौर पर नन्हे बच्चों और खाली ज़मीनों की तलाश थी। जब मैंने पास जाकर उनसे बातें कीं तो वे मुझे मिलनसार और विश्वसनीय लगे। उन्होंने बताया कि सर्दियों में तो वे कन्सास सिटी में काम करते हैं और गर्मियों में अपना डेरा-तम्बू लेकर देहाती कस्बों में नाच सिखाने निकल जाते हैं जब एक जगह काम मन्दा हो जाता है तो दूसरी जगह चल देते हैं।

उन्होंने अपना तम्बू डेनी लाण्ड्री के पास लम्बे चिनार वृक्षों से घिरे ज़मीन के खाली टुकड़े में खड़ा किया। वह तम्बू मेले के चकरी-झूले के तम्बू जैसा चारों ओर से खुला था और उसके खम्भों पर रंग-बिरंगी झण्डियां लगी हुई थीं। पूरा सप्ताह भी नहीं गुज़रने पाया था कि सभी

महत्त्वाकांक्षिणी माताओं ने तीसरे पहर के समय अपने बच्चों को वहां नाच सीखने के लिए भेजना शुरू कर दिया। तीन बजते ही सफेद पोशाकों में सजी नन्ही बालिकाएं और गोल कालर की कमीज़ पहने छोटे-छोटे लड़के अपने-अपने घरों से तम्बू की ओर चल पड़ते थे। मिसेज़ वानी उनके स्वागत के लिए दरवाज़े पर खड़ी होती थीं। वे हमेशा ही लवेण्डरी रंग की पोशाक पहनतीं, जिसपर ढेर सारे काले फीते टंके होते और सोने की सीकड़ी उनकी छाती पर झूला करती। बालों का जूड़ा वे सिर पर खड़ा, स्तूपाकार बांधती थीं और उसमें लाल मूंगे के कंघे खोंसे रहतीं। जब मुस्करातीं तो उनके टेढ़े-मेढ़े पीले मज़बूत दांत दिखाई दे जाते थे। छोटे बच्चों को वे स्वयं सिखाती थीं और बड़े बच्चों को उनका पति, जो बीन भी बजाता था।

माताएं भी अक्सर सीने-पिरोने और कसीदाकारी का काम लिए अपने नन्हे-मुन्नों के साथ चली आतीं और तम्बू की छांहवाली बाजू में बैठकर काम किया करतीं। मुरमुरेवाला अपनी कांचवाली गाड़ी के साथ आ जाता; गाड़ी को वह दरवाज़े के पास बड़े चिनार के नीचे खड़ी करता और आप धूप में बैठ जाता। नाच खत्म होने पर उसकी अच्छी बिक्री हो जाया करती थी। लाण्ड्री के डेन मालिक, मिस्टर जेनसन बरसाती में से बड़ी कुर्सी उठा लाते और उसे दूब के मैदान में रखकर बैठ जाते थे। स्टेशन पर काम करनेवाले कुछ फटेहाल लड़के कोने में सफेद छाते के नीचे मुर-मुरों और ठण्डे लेमोनेड की अपनी दुकान अलग जमा लेते, और नाच सीखने के लिए आनेवाले साफ-सुथरे बच्चों का मुंह चिढ़ाया करते। ज़मीन का वह खाली टुकड़ा जल्दी ही कस्बे का सबसे मनोरम स्थान हो गया! गरम तिपहरियों में भी वहां चिनार की ठण्डी छाया और मस्त हवा रहती थी और वातावरण में मुरमुरों, पिघलते मक्खन और हवा में झूमते सपोनिया पुष्प की मस्त गन्ध लहराया करती। फूल के उन पौधों के बीज लाण्ड्री-वाले के बगीचे से छिटककर दूब के उस मैदान में आ जमे थे और हरियाली को अपनी गुलाबी आभा से सुशोभित कर रहे थे।

वानी दम्पती नियम के बड़े पाबन्द थे और नगर परिषद द्वारा निर्धारित समय पर अपना स्कूल बन्द कर देते थे। ठीक दस बजे पत्नी का संकेत पाकर मिस्टर वानी बीन पर 'होम, स्वीट होम' की धुन बजाने लगते और

सारे ब्लैक हॉक कस्बे को मालूम हो जाता कि नृत्यशाला बन्द होने का समय हो गया। बीन इतने नियम से और ठीक समय पर बजती थी कि शहर के कई लोग गोलघर के भोंपू की तरह उससे अपनी घड़ियां मिलाने लगे थे।

अभी तक गर्मी की सूनी सांझें बिताने का युवक-युवतियों के पास कोई साधन नहीं था। विवाहित लोग तो घर के सामनेवाली बरसातियों में मूर्तियों की तरह बैठ जाया करते थे। परन्तु जवान लड़के-लड़कियां कस्बे के रास्तों पर निरुद्देश्य भटका करते—कभी उत्तर की ओर खुले प्रेरी के छोर तक चले जाते, फिर दक्षिण में मालगोदाम तक, वहां से मुड़े तो डाकघर, आइसक्रीम की दुकान और कसाईखाना—न घूमने-फिरने की जगह थी, न समय बिताने की। अब कम से कम एक जगह तो हो गई थी, जहां लड़कियां नये कपड़े पहनकर जा सकती थीं और जहां चारों ओर छाई निस्तब्धता को भंग करने की आशंका के बिना हंसा और खिलखिलाया जा सकता था। बड़ी भीषण होती थी वह शान्ति, लगता था जैसे धरती में से रिस-रिसकर मुंह चिढ़ाती चुप्पी ऊपर आ रही हो और पेड़ों की टहनियों के घनान्धकार में चमगादड़ों के साथ उलटी लटकी हो! अब वाद्ययंत्रों के मधुर कलरव ने उसे चूर्ण-विचूर्ण कर डाला था। सबसे पहले रात के काले, धूल-भरे सन्नाटे को चीरती हुई मिस्टर वानी की बीन की रजत घण्टियों-सी तुनुन-तुन सुनाई देती थी और फिर दिलरुबा बज उठते थे। एक दिलरुबा का स्वर तो बिलकुल वंशी-वादन की तरह था—मन-प्राणों को आलोड़ित कर मूर्च्छना के स्वर में टेरता हुआ-सा। हमारे पांव आप ही तम्बू की ओर उठ जाया करते थे। हम अक्सर सोचा करते कि यह तम्बू पहले कभी क्यों नहीं आया?

अब युवक-युवतियों में नृत्य उतना ही लोकप्रिय था जितना पिछले साल गर्मियों में पहियेवाले जूतों से स्केटिंग करना! मंगलवार और शुक्रवार की रातें तो वानी दम्पती से प्रोग्रेसिव युकर क्लब ने अपने सदस्यों के लिए सुरक्षित करवा ली थीं। बाकी दिनों में कोई भी वहां आ सकता था। शर्तें सिर्फ दो ही थीं: देने को नकद पैसा और वहां के नीति-नियम की पाबन्दी! सभी तरह के लोग नाचने के लिए आते थे—रेल-मार्ग के मज़दूर,

गोलघर के मिस्त्री, अखबार बांटने और सामान पहुंचानेवाले, बर्फ बेचनेवाले और पास-पड़ोस के किसान लड़के, जो दिन का काम खतम करके कस्बे आ सकते थे।

हर शनिवार की रात को मैं ज़रूर पहुंचता था। उस दिन तम्बू आधी रात तक खुला रहता। आठ-दस मील के घेरे के किसान लड़के आ जुटते थे और कस्बे में नौकरी करनेवाली सभी किसान-कन्याएं—एण्टोनिया और लेना और टीनी और डेनी लाण्ड्री में काम करनेवाली लड़कियां और उनकी सहेलियां आदि सभी नाच में उत्साह से शरीक होती थीं। इन शनिवासरीय नृत्यों का मज़ा लेने के लिए अकेला मैं ही नहीं, मेरे जैसे और भी कई लड़के आते थे। यहां तक कि प्रोग्रेसिव युकर क्लब के युवा सदस्य भी अपनी प्रेयसियों के रोष और 'नौकरानियों' के साथ वाल्ज़ नाचने की लोक-निन्दा का खतरा उठाकर पहुंच जाया करते थे; परन्तु वे हमेशा काफी रात बीत जाने के बाद ही आते थे।

९

नौकरी करनेवाली लड़कियों की वजह से ब्लैकहॉक की सामाजिक स्थिति बड़ी विचित्र हो गई थी। प्रायः सभी देहाती लड़कियां कर्ज़ में डूबे बाप को उबारने या छोटे भाई-बहिनों को पढ़ाने की गरज से नौकरी की तलाश करती हुई कस्बे में आई थीं। और कस्बे का हर नौजवान इन सुन्दर-सुडौल लड़कियों की ओर आकर्षित होने लगा था।

इन लड़कियों को शुरू-शुरू में काफी बुरे दिन देखने पड़े थे; कठोर संघर्षों में पल-पुसकर ये बड़ी हुई थीं और इन्हें पढ़ने का अवसर भी बहुत ही कम मिल पाया था। लेकिन अपने जिन छोटे भाई-बहिनों के लिए इन्होंने इतना त्याग किया और जिन्हें सब तरह की 'सुविधाएं' मिलीं, उनसे आज जब मैं मिलता हूं तो वे मुझे न शिक्षित लगते हैं और न उतने समझदार। जंगल की नई ज़मीन तोड़नेवाली पहले खेवे की इन लड़कियों ने जो कुछ भी

सीखा और समझा वह जीवन की पाठशाला में बैठकर, गरीबी से और अपनी माताओं और दादियों से सीखा। कच्ची उम्र में अपना पुराना देश छोड़कर नये देश में आने के कारण इन्हें काफी पहले ही सजग होकर निरीक्षण, पर्यवेक्षण और ग्रहणशीलता के द्वारा ज्ञानार्जन के अनुष्ठान में लग जाना पड़ा था।

जिन दिनों मैं ब्लैकहॉक में रहता था ऐसी कोई बीसेक देहाती लड़कियां वहां नौकरियां करती थीं। आज भी याद है कि उनमें से हरएक अपने विशिष्ट गुणों के कारण मुझे कितनी असाधारण और चित्ताकर्षक लगती थी। शारीरिक दृष्टि से तो वे ध्यान खींचती ही थीं, विचार और व्यवहार की दृष्टि से भी ब्लैकहॉक की कस्बाती औरतों से सफा अलग दिखाई दे जाती थीं। खुले खेतों के कमरतोड़ काम ने उन्हें शक्ति-सम्पन्न कर दिया था। कस्बे में आने का आरम्भिक संकोच मिट जाने पर उनका वह शारीरिक बल चारित्रिक दृढ़ता, गहन आत्मविश्वास और खुलेपन से व्यवहार करने के रूप में प्रतिष्ठित हुआ था।

यह उन दिनों की बात है जब हाई स्कूलों में खेल-कूद शुरू नहीं हुए थे। लड़कियों को अगर स्कूल जाने के लिए आधे मील से ज़्यादा चलना पड़ता तो वह उनके लिए बड़ी मुसीबत की बात समझी जाती थी। कस्बों में टेनिस-कोर्ट भी नहीं थे और सम्पन्न परिवारों की लड़कियों का व्यायाम आदि करना अच्छी बात नहीं समझी जाती थी; यह सोचा जाता था कि शारीरिक श्रम से उनकी शोभा और सुन्दरता को क्षति पहुंचेगी। हाई-स्कूल में पढ़नेवाली कुछ लड़कियां अवश्य सुन्दर और खुशमिजाज़ थीं, लेकिन वे सर्दियों-भर ठण्ड के कारण और गर्मियों-भर गर्मी के कारण घर में घुसी बैठी रहती थीं। उनके शरीर में लोच नाम की चीज़ तो जैसे थी ही नहीं, अंग-अंग जड़ हो गया था; साथ नाचने में अंगों का स्वाभाविक स्फुरण ज़रा भी न होता, लगता था जैसे मांसपेशियां जकड़ गई हों और हिलने-डुलने से इनकार किए जाती हों! कक्षा में बैठी उन लड़कियों के वे चेहरे मुझे अब भी याद हैं, और सिर्फ चेहरे ही तो थे—हंसमुख और गुलाबी या मलिन और निस्तेज, स्याही से सनी ऊंची-ऊंची डेस्कों ने जिन्हें कन्धों के नीचे से काट दिया हो ऐसे मुखौटों की तरह। और वे डेस्कें वहां रखी भी

इसीलिए गई थीं कि हमें झुके कन्धों और बैठी छातियोंवाले सींकिया पहलवान बना दें।

ब्लैकहॉक में जितने भी व्यापारी थे उन सबकी लड़कियों की यह दृढ़ मान्यता थी कि वे सुसंस्कृत और परिष्कृत हैं और नौकरी-चाकरी करनेवाली देहाती लड़कियां फूहड़-गंवार। उन दिनों अमरीकी किसान भी उतनी ही तंगी में थे जितने अन्य देशों से आनेवाले उनके पड़ोसी। वे सब थोड़ी-थोड़ी-सी पूंजी लेकर नेब्रास्का आए थे और जिस धरती को जोतना-बोना चाहते थे उसके बारे में किसीको कोई जानकारी नहीं थी। अपनी ज़मीनों पर कर्ज़ भी सभीको लेना पड़ा। लेकिन पेनसिलवानिया अथवा वरजीनिया से आनेवाले में यह फर्क था कि हालत कितनी ही तंग क्यों न हो, वह अपनी बेटियों को नौकरी-चाकरी करने के लिए कभी नहीं भेजता था ; उसकी बेटियां घर बैठकर गरीबी भुगतें या ज़्यादा से ज़्यादा किसी देहाती मदरसे में मास्टरनी हो जाएं।

इसके विपरीत बोहेमी अथवा स्वीडी-नार्वी लड़कियां बड़ी तत्परता से नौकरी-चाकरी करती थीं। मास्टरनियां तो वे बन नहीं सकती थीं; क्योंकि न वे अंग्रेज़ी जानती थीं और न अंग्रेज़ी भाषा पढ़ने का उन्हें अवसर ही मिल पाता था। लेकिन अपने माता-पिता और खेत-खलिहान को कर्ज़ से उबारने की उनकी आकांक्षा बड़ी प्रबल होती थी, इसलिए और कोई चारा न देख वे मोटी-झोटी हर नौकरी करने लगती थीं। बहुत-सी लड़कियां तो कस्बे में आने के बाद भी उतनी ही गम्भीर और विचारशील बनी रहतीं, जितनी घर पर खेती-बाड़ी का काम करते समय थीं। लेकिन कुछ ऐसी भी थीं जो जवानी की बहार लूटने से हिचकती नहीं थीं। तीन बोहेमी लड़कियां जिनमें तीनों का नाम मेरी था, इसी श्रेणी में रखी जा सकती हैं। मौज-शौक से उन्हें कोई एतराज़ नहीं था; लेकिन जहां तक मुझे याद है, कस्बे आनेवाली कोई भी देहाती लड़की माता-पिता को ऋण-मुक्त करने के अपने कर्तव्य से कभी पराङ्मुख नहीं हुई। हर महीने वे अपनी गाढ़ी कमाई के डालर घर भेज दिया करती थीं। मुझे खूब याद है कि वे हल और कटनी-यंत्र, मादा सूअर और बछड़ियां खरीदने अथवा पशुओं के चारे-वारे के लिए बराबर पैसा दिया करती थीं।

देहाती लड़कियों द्वारा अपने परिवार की सहायता करने का एक शुभ परिणाम यह हुआ कि हमरे देश के विदेशी किसान क़र्ज़-मुक्त ही नहीं हुए, जल्दी से जल्दी सम्पन्न भी हो गए। जब सारा कर्ज़ बेबाक हो जाता तो वे लड़कियां, यथासंभव, अपने ही राष्ट्र के पड़ोसी किसानों के बेटों से शादियां कर लेतीं; और जो लड़कियां कभी ब्लैकहॉक के सम्पन्न परिवारों में रसोईदारिनें थीं वे आज अपने ही बड़े-बड़े फार्मों की मालकिनें हैं और अपने ही काम-काज और बाल-बच्चों की देखभाल कर रही हैं। जिन कस्बाती औरतों के यहां वे नौकरी करती थीं उनके बच्चों से आज इन लड़कियों के बच्चे कहीं सुखी, सम्पन्न और प्रसन्न हैं।

इन लड़कियों के साथ कस्बेवालों का रवैया मुझे बहुत ही मूर्खतापूर्ण लगता था। यदि मैं अपने सहपाठियों से कभी कहता कि लेना लिंगार्ड के दादाजी पादरी थे और नार्वे में उनकी बड़ी प्रतिष्ठा थी तो वे भौचक्के से मेरी ओर देखने लगते थे। उनका वह भाव मानो पुकार-पुकारकर कहता था, 'तो इससे क्या हुआ ? सभी विदेशी मूर्ख होते हैं, क्योंकि उन्हें अंग्रेज़ी बोलना नहीं आता।' सारे ब्लैकहॉक में मुझे तो एक भी आदमी ऐसा नहीं दिखाई देता था जो एण्टोनिया के पिताजी की तरह बुद्धिमान, सुसंस्कृत और विशेष प्रतिभासम्पन्न हो। लेकिन लोग थे कि एण्टोनिया और तीनों मेरियों में कोई फर्क नहीं करते थे। उनके लेखे तो तीनों ही बोहेमी और 'नौकरानियां' थीं।

मेरा शुरू से ही ऐसा विश्वास था कि एक दिन अपनी देहाती लड़कियों को सुखी-सम्पन्न होते और उन्नति करते देखूंगा। और मेरा वह विश्वास सार्थक हुआ। आज ब्लैकहॉक का हर परेशानहाल व्यापारी सिर्फ यही चाहता है कि अपना बिसातबाना, कृषि-यंत्र और मोटरें आदि सामान इलाके के मालदार फार्मों को ही बेचे। और इलाके के सारे मालदार फार्म वे ही हैं जहां शुरू दिनों की बोहेमी और स्विडी-नार्वी नौकरानियां मालकिनें बनी बैठी हैं।

ब्लैकहॉक के लड़के सामान्यतः यही चाहते थे कि ब्लैकहॉक की लड़कियों से शादी-ब्याह करें, अपने नये-नये सुन्दर-सुघड़ मकानों में रहें; उन मकानों में बढ़िया-बढ़िया कुर्सियां हों, जो सिर्फ शोभा की वस्तु हों,

बैठने के लिए नहीं; और उन मकानों में हाथ की चित्रकारीवाले सुन्दर कलात्मक चीनी बरतन भी हों, सिर्फ सजावट के लिए, इस्तेमाल करने के लिए नहीं। लेकिन कभी-कभार कोई युवक अपने खाते-बही में से सिर उठाकर अथवा अपने पिता की पेढ़ी में लगी जाली के पार, खिड़की के आगे से मन्थर गति से झूमकर जाती हुई लेना लिंगार्ड या ऊंचा स्कर्ट और चारखाने के मोज़े पहनकर थिरकती जाती टोनी सोडरबाल की ओर देखने लग जाता और उसका दिल हाथ से निकल जाया करता था।

ये देहाती लड़कियां कस्बे की सामाजिक व्यवस्था के लिए अच्छाखासा ख़तरा बन गई थीं। उनका सौन्दर्य परम्परागत और रूढ़िग्रस्त समाज के लिए चुनौती बन गया था—ब्लैकहॉक के मर्यादाशील समाज की धुंधली पृष्ठभूमि में वह मशाल की तरह चमकने लगा था। लेकिन फिर भी विवाह योग्य लड़कों की माताओं के डर का कोई कारण नहीं था; वे व्यर्थ ही आशंकित थीं। अपने लाड़लों के साहस के बारे में उन्हें ज़रूर ही भ्रम हो गया था। ब्लैकहॉक के युवकों को देहातिनों के प्रेमाकर्षण की अपेक्षा अपनी मर्यादा और मान-सम्मान की रक्षा का खयाल कहीं ज़्यादा था।

हमारे कस्बे के सम्पन्न परिवारों के युवक राजवंशोत्पन्न कुमारों की तरह थे। अपने दफ्तर में झाड़ू लगाने या माल ढोने की अपनी ही गाड़ियां चलानेवाले लड़के हंसमुख देहाती लड़कियों से हंसी-मज़ाक और चुहल भले कर लें, किसीको एतराज़ नहीं था; लेकिन प्रेम-निवेदन के लिए तो उन्हें सारी शाम सजे-संवरे उन दीवानखानों में जाकर बैठना पड़ता था जहां प्रेमसंभाषण मरियल टट्टू की तरह खिट-खिट कर रेंगा करता और लड़कियों के पिता अकसर आ-आकर उसे गरमाने की भोंडी और मूर्खतापूर्ण हरकतें किया करते। प्रेम-मिलन की बोरियत से छुट्टी पाकर जब वह घर लौटता तो उसे रास्ते में कनफुसकियां करती टोनी और लेना या लम्बे प्लश कोटों में सजी-धजी तीनों मेरियां मिल जातीं और टोनी-लेना की कनफुसकियां एवं तीनों मेरियों की अदाएं उसके तन-मन में आग लगा देती थीं। होटल में वह किसी व्यापारी से मिलने जाता तो वहां टीनी उसके मन को लुभाती और लाण्ड्री में कालर लेने पहुंचता तो शंख जैसे गले और गुलाबी

गालोंवाली चारों डेनी लड़कियां इस्त्री करती हुई अपनी मुस्कराहटों की बिजलियां उसपर गिराती थीं।

तीनों मेरियों के लोकापवाद और दुश्चरित्रता के इतने किस्से प्रचलित हो गए थे कि नगर के सम्भ्रान्त बूढ़े बड़ी दुकान के सिगार-स्टैण्ड में बैठे अक्सर रस ले-लेकर कहा-सुना करते थे। पहले मेरी डुसाक बोस्टनवाले रैंचर के घर में काम करती थी। वह रैंचर कुंआरा था और कई साल उसकी नौकरी करने के बाद मेरी डुसाक को अपना भारी पांव हल्का करने के लिए थोड़े दिन कहीं एकान्त में जाकर रहना पड़ा था। फिर वह अपनी सहेली मेरी स्वोबोडा की जगह काम करने आ गई थी। संयोग की बात कि मेरी स्वोबोडा भी उसीके जैसी झंझट में फंस गई थी। तीनों मेरियां बारूद का ढेर समझी जाती थीं और लोगों की राय में उन्हें घर के अन्दर रखना बारूद को चूल्हे की आग के पास रखना था। लेकिन तीनों ही खाना इतना बढ़िया पकातीं और घर का सारा काम-काज इतने अच्छे ढंग से करतीं कि कभी खाली रहने ही नहीं पाती थीं—हर समय नौकरी उनके आगे हाथ बांधे खड़ी रहती थी।

वानी का तम्बू अब एक ऐसी जगह हो गई थी जहां कस्बाती लड़के और देहाती लड़कियां बिना किसी भेद-भाव के समान स्तर पर खुले मन से मिल-जुल सकते थे। अपने पिता की पेढ़ी में खज़ांचीगिरी करनेवाला सीलवेस्टर लावेट हर शनिवार की रात बिला नागा तम्बू में पहुंच जाया करता था। वह बराबर आधी रात तक लेना लिंगार्ड के साथ नाचने और उसीके साथ घर लौटने लगा था। यदि किसी दिन दर्शकों में उसकी बहिनें या मित्र होते तो वह चिनार वृक्षों की छांह में खड़ा हो जाता और सिगरेट पीते हुए हसरत-भरी निगाहों से लेना को देखा करता। कई बार मैं अंधेरे में उससे टकरा जाता और मुझे उसपर दया आ जाती थी। उसे देखकर मुझे अक्सर ओल बेनसन याद हो आता था। वह भी इसी तरह दूर बैठा हसरत-भरी निगाहों से लेना को ढोर चराते देखा करता था। आगे गर्मियों में जब लेना एक सप्ताह के लिए अपनी मां से मिलने घर गई तो एण्टोनिया ने मुझे बताया था कि लावेट भी उसके पीछे-पीछे वहां जा पहुंचा और उसे

अपनी बग्घी में बिठाकर घुमाता रहा था। मैं सोचने लगा था कि सीलवेस्टर लेना से शादी कर लेगा और इस तरह देहाती लड़कियों को कस्बे के समाज में ऊंचा पद प्राप्त हो जाएगा।

धीरे-धीरे सीलवेस्टर लेना के ध्यान में इस कदर डूबा रहने लगा कि उसके काम में गलतियां होने लगीं; अब उसे हिसाब मिलाते-मिलाते अंधेरा हो जाता और काफी रात बीते दुकान से छुट्टी कर पाता था। लेना को वह बहुत दिन भरमाए रहा, जिसे सभी जानते हैं। आखिर इस दुःखद परिस्थिति से छुटकारा पाने के लिए वह एक विधवा के साथ भाग गया, जो उससे उम्र में छः साल बड़ी और नगर के एक आधे मुहल्ले की मालकिन थी। यह इलाज बहुत कारगर साबित हुआ। फिर तो उसने लेना की ओर कभी भूलकर भी नहीं देखा; कभी राह चलते आमना-सामना हो भी जाता तो आंखें नीची किए जरा-सी हैट उठा देता और अपनी राह चला जाता।

ऐसे ही क्लीव, कापुरुष थे कस्बे के वे सफेद हाथों और ऊंची कालरों-वाले रोकड़िये और हिसाबनवीस! लावेट को मैं दूर से घूरा करता, और कितना चाहता था कि अपनी नफरत ज़ाहिर करनेका कोई मौका मिलता!

१०

वानी दम्पती के तम्बू में ही एण्टोनिया के स्वतन्त्र व्यक्तित्व का उद्‌घाटन हुआ। वह हार्लिगों की नौकरानी थी अवश्य लेकिन लोग-बाग उन्हें उसके मालिक की अपेक्षा संरक्षक ही अधिक समझते थे। वह उनके घर, आंगन और बगीचे में रहती आई थी और लगता था जैसे उसके सारे विचार उस परिवार में ही केन्द्रित हों—परिवार के बाहर भी उसका कोई लाग-लगाव हो सकता है, इसकी कल्पना किसीको भी नहीं थी।

तम्बू लग जाने के बाद उसमें परिवर्तन होने लगा। वह टीनी, लेना और उनकी सहेलियों के साथ वहां जाने लगी। वानी दम्पति एण्टोनिया की नृत्यकला की बड़ी प्रशंसा करते और प्रायः उसे अपने तम्बू की श्रेष्ठतम

नर्तकी कहा करते थे। मैंने उन दिनों लोगों को यहां तक कहते सुना कि जल्दी मिसेज़ हार्लिङ्ग इस लड़की की वजह से भारी मुसीबत में पड़ जाएंगी। युवक-सम्प्रदाय में 'हार्लिङ्गों की टोनी' को लेकर ठीक वैसी ही मज़ाकें होने लगी थीं जैसी 'मार्शलों की अन्ना' और 'गार्डनरों की टीनी' के बारे में हुआ करती थीं।

अब एण्टोनिया के पास बात करने का सिर्फ एक ही विषय था और वह था तम्बू ! रात-दिन उसके मन में तम्बू के ही विचार घुमड़ा करते। वह सारे दिन नाच की धुन गुनगुनाया करती। जिस दिन शाम के खाने में देर हो जाती तम्बू पहुंचने की हड़बड़ी में चीनी मिट्टी के बरतन उसके हाथ में फूट जाया करते थे। संगीत की पहली तान पर ही वह अपनी सुध-बुध भूल जाती थी। कई बार तो ठीक से कपड़े-लत्ते पहनने के लिए भी नहीं रुकती थी। एप्रन फेंककर ऐसी ही चल देती थी। कई बार मैं उसके साथ जाता था; और मुझे याद है कि तम्बू की रोशनियां दिखाई देते ही वह लड़कों की तरह दौड़ने लगती थी। उसके साथ नाचनेवालों की कमी नहीं थी। कई लोग प्रतीक्षा में खड़े होते और वह जाते ही नाचने लग जाती थी, दम लेने को भी नहीं रुकती थी।

तम्बू में एण्टोनिया की सफलता और लोकप्रियता के नतीजे भी जल्दी ही सामने आए। बर्फवाला ढकी बरसाती में रखे रेफ्रीज़रेटर को भरने आता तो पहले की तरह काम खत्म करके तुरत लौट नहीं जाता था, देर तक वहीं मंडराया करता। माल पहुंचानेवाले लड़के किराना सामान लेकर आते तो रसोईघर के दरवाज़े पर काफी देर धरना दिए खड़े रहते। आस-पास के देहातों के किसान छोकरे शनिवार का बाज़ार करने कस्बे आते तो बाड़े की राह पिछवाड़े के दरवाज़े पर आ धमकते और टोनी को नाच, दावत या सैर-सपाटे का न्यौता दे जाते। लेना और नार्वी अन्ना अक्सर अपनी सहेली की मदद करने चली आतीं, जिससे उसे जल्दी छुट्टी मिल जाए। नाच के बाद जो लड़के उसे घर तक पहुंचाने आते वे कभी-कभी इतने ज़ोर से हंसते कि मिस्टर हार्लिङ्ग की कच्ची नींद टूट जाती थी। मतलब यह कि बादल घिर आए थे और वज्र कभी भी कड़क सकता था।

शनिवार की एक रात मिस्टर हार्लिङ्ग तलघर में से बीयर लाने के

लिए गए और सीढ़ियां चढ़कर ऊपर आए तो उन्हें पीछेवाली बरसाती में पहले छीना-झपटी की और बाद में ज़ोर से तमाचा मारने की आवाज़ें सुनाई दीं। उन्होंने तुरत बगलवाले दरवाज़े में से झांककर देखा तो दो लम्बी टांगें चहारदीवारी फांदती हुई दिखाई दीं। और एण्टोनिया भी वहीं तमतमाई हुई खड़ी थी। भागनेवाला हैरी पैन था, जिसकी शादी अगले ही रविवार को उसके मालिक की लड़की से होने जा रही थी। उस दिन वह अपनी मित्र-मण्डली के साथ तम्बू में आया था और पहर रात तक नाचता रहा था। फिर उसने एण्टोनिया के आगे उसे घर तक पहुंचाने का प्रस्ताव रखा और काफी चिरौरी-बिनती करता रहा। वह मिस फ्रांसिस का दोस्त था और एण्टोनिया उसे भला आदमी समझती थी इसलिए राज़ी हो गई। जब घर आ गया तो उसने पीछेवाली बरसाती में एण्टोनिया को चूमने की कोशिश की। एण्टोनिया ने विरोध किया और खासकर इसलिए कि सोमवार को उसकी शादी होने जा रही थी। लेकिन वह न माना; उसने एण्टोनिया को पकड़कर चूम ही लिया। एण्टोनिया आगबबूला हो गई; किसी तरह एक हाथ छुड़ाकर इतने ज़ोर से तमाचा रसीद किया कि वह गाल सहलाता हुआ चहारदीवारी फांदकर भाग छूटा।

मिस्टर हार्लिङ्ग ने बीयर की बोतलें मेज पर रख दीं और बोले, "मैं जानता था एण्टानिया, कि आखिर यही होगा। तुम ऐसी लड़कियों के साथ जाने और उनकी सोहबत में रहने लगी हो जो आजाद हैं और आसानी से प्रलोभनों का शिकार हो जाती हैं। तुम्हारे लिए लौंडे मेरे दरवाज़े पर मंडराया करें यह मुझे बिलकुल पसन्द नहीं। आज तो बस हद ही हो गई। अब फैसला हो जाना चाहिए। या तो नाचने के लिए जाना बन्द करो या कहीं और काम तलाश कर लो। दोनों बातें मेरे यहां नहीं चल सकतीं। अच्छी तरह सोच लो।"

दूसरे दिन सवेरे मिसेज़ हार्लिंग और फ्रान्सिस ने भी उसे बहुत समझाया, पर वह ऐसी बिफरी कि किसी भी तरह न मानी। तमककर बोली, "तम्बू जाना बन्द कर दूं, क्यों? क्या मैंने कोई गुनाह किया है? नाचने जाना हर्गिज़ नहीं छोड़ूंगी—कभी नहीं, मेरे पिताजी आकर रोकें तब भी नहीं! मिस्टर हार्लिंग मालिक ज़रूर हैं, लेकिन तभी तक जब तक कि

उनकी छत के नीचे हूं और उनका काम करती हूं; काम पूरा करने के बाद कोई मेरा मालिक नहीं। अपनी फुर्सत के समय मैं क्या करती हूं, कहां जाती हूं उससे किसीको क्या मतलब? अपनी सहेलियों का साथ भी क्यों छोड़ूं? वे सब भली लड़कियां हैं और जिन लड़कों के साथ मैं जाती हूं वे सब भी शरीफ हैं। पैन को भी मैं भला समझती थी, यहां आता है, मिस फ्रान्सिस का दोस्त है, इसलिए। मुझे क्या पता था कि वह इतना लुच्चा और कमीना होगा। बच्चू को किए का फल मिल गया। गाल पर पांच अंगुलियों की सौगात लेकर जाए अब शादी करने!" वह मारे गुस्से के भभक उठी थी।

"देखो एण्टोनिया, दो में से सिर्फ एक बात हो सकती है—तम्बू जाना छोड़ो या काम।" मिसेज़ हार्लिंग ने निश्चयात्मक स्वर में कहा, "मकान मिस्टर हार्लिंग का है और उनका कहा मैं भी नहीं दुलख सकती।"

"तो मैं चली जाऊंगी मिसेज़ हार्लिंग। लेना बहुत दिनों से मुझे अपने पास बुला रही है। मेरी स्वोबोडा कटर के यहां का काम छोड़कर होटल में काम करने के लिए जा रही है और वह जगह मुझे मिल सकती है।"

मिसेज़ हार्लिंग ने कुर्सी पर से उठते हुए कहा, "एण्टोनिया, यदि तुम कटर के यहां काम करने गई तो फिर लौटकर मेरे घर नहीं आ सकती। जानती तो हो ही कि वह आदमी कैसा है! वहां जाकर तबाह हो जाओगी।"

टोनी ने चाय की केतली उठा ली और गिलासों में उबलता पानी डालते हुए व्यग्र हंसी हंसकर बोली, "अपनी हिफाज़त करना मुझे खूब आता है, आप निश्चिन्त रहिए। कटर का दम नहीं कि मुझसे कुछ कह सके। मेरे इन बाज़ुओं में उससे कहीं ज़्यादा ताकत है। फिर वे चार डालर हफ्ता देंगे और उनके यहां बच्चे भी नहीं हैं। थोड़ा-सा काम है, जिसे मैं चुटकियों में निपटा दूंगी और रोज़ शाम को और हुआ तो तीसरे पहर भी घूमने-फिरने और नाचने के लिए जा सकूंगी।"

"मैं तो समझे थी कि तुम्हें बच्चों से लगाव है। टोनी, आखिर तुम्हें हो क्या गया है, जो इस तरह सारी ममता तोड़कर चली जा रही हो!"

"कुछ हो तो ज़रूर गया है।" एण्टोनिया ने सिर को झटका देकर

और दांत भींचकर कहा, "यही तो मेरे मौज-शौक के दिन हैं और मौका मिल रहा है तो कैसे छोड़ दूं ? क्या पता, अगले साल तम्बू आएगा भी या नहीं। दूसरी लड़कियों की तरह मैं भी मज़ा लूट लेना चाहती हूं।"

इसपर मिसेज़ हार्लिंग ने कर्कशता से हंसते हुए कहा, "अगर कटर के यहां काम करने गई तो ऐसा मज़ा आएगा कि सारी ज़िन्दगी भूल न सकोगी।"

फ्रान्सिस ने पूरा किस्सा मुझे और दादाजी को बताते हुए अन्त में कहा था कि जब उसकी अम्मां गुस्से में भरी धमधमाती हुई रसोईघर से चली हैं तो अलमारियों में रखे सारे बरतन खड़ाखड़ा उठे थे। मिसेज़ हार्लिंग को कड़वी घूंट पीकर रह जाना पड़ा और बेचारी पछता रही थीं कि उन्होंने एण्टोनिया से इतना नेह क्यों बढ़ाया।

११

विक कटर ब्लैकहॉक का नामी सूदखोर था। बेचारा रूसी पीटर उसीके फन्दे में फंसकर तबाह हुआ था। जो भी किसान एक बार उसके चंगुल में फंस जाता ज़िन्दगी-भर छूट न पाता था। कटर से क़र्ज़ लेना सट्टे या जुए के चक्कर में फंसने जैसा था—मुसीबत से छुटकारा पाने के लिए हारकर मुसीबतों को गले लगाते जाना !

वाईक्लिफ उसका पहला नाम था—वाईक्लिफ कटर; लेकिन लोग उसे विक कहते थे। वह अक्सर बताया करता कि उसका लालन-पालन कितने पवित्र वातावरण में हुआ था। हाथ हिलाते हुए बड़ी शान से यह भी कहता कि प्रोटेस्टैण्ट चर्च को नियमित चन्दा देता हूं, क्योंकि यह मेरी 'भावनाओं का प्रश्न' है। वह इओवा राज्य के जिस नगर से आया था वहां स्वीड लोगों की अच्छी बस्ती थी, इसलिए वह थोड़ी-बहुत स्वीडी भाषा बोल लेता था। उसका यह भाषा-ज्ञान इस इलाके में शुरू-शुरू में आकर बसनेवाले स्वीडी-नार्वी लोगों के साथ कारबार करने में बहुत काम आया।

हर नई बस्ती में ऐसे लोग भी थे जो प्रतिबन्धों और कायदे-कानून से बचने के लिए वहां आ बसे थे। कटर ब्लैकहॉक के ऐसे ही महाजनों में था। वह पक्का जुआरी था और दाव पर बहुत कम हारता था। उसके दफ्तर में देर तक उजाला देख हम समझ जाते कि वहां पोकर (ताश के खेल) की बाज़ी जमी होगी। कटर हमेशा इस बात की डींग हांका करता कि उसने कभी शेरी से तेज़ शराब नहीं पी और जो पैसा जवान लोग सिगार में फूंक दिया करते हैं उसे बचाकर आज की अपनी हैसियत बनाई है। किशोरों को वह हमेशा नैतिक उपदेश सुनाया करता था। एक बार जब हमारे यहां काम से आया तो उसने मुझे 'रिचर्ड की जंत्री' से कई उद्धरण सुना डाले और इस बात पर खुशी ज़ाहिर की कि मैं शहराती होते हुए भी गाय लगा लेता था। दादाजी से उसकी अच्छी पटती थी और जब दोनों मिल जाते तो वह 'पुराने अच्छे दिनों' और सादगीपूर्ण जीवन का राग अलापने लगता था। उसका गुलाबी गंजा सिर और मुलायम चमकीली पीली मूंछें मुझे बहुत बुरी लगती थीं। लोगों का कहना था कि जिस तरह औरतें रात में कंघी करती हैं ठीक उसी तरह वह अपनी मूंछों को हर रात पोंछा और झाड़ा करता था। उसके सफेद दांत ऐसे लगते थे मानो कार-खाने के बने नकली दांत हों। उसकी त्वचा लाल और खुरदरी थी मानो धूप में स्थायी रूप से जल गई हो! वह अक्सर गरम सोतों की कीचड़ में लोटने के लिए जाया करता था। वह लम्पट हमेशा औरतों की ताक में रहता और किसी न किसी तरह उन्हें फंसाकर बेचारियों का सर्वनाश कर देता था। अपने घर में रहनेवाली दो स्वीडी लड़कियों को तो उसने कहीं का न रखा था। उनमें से एक को उसने ओमाहा ले जाकर कोठे पर बिठा दिया था और अब भी वहां अपना मुंह काला करने जाया करता था।

कटर की अपनी बीवी से हर समय ठनी रहती थी मगर रात-दिन की झांव-झांव के बाद भी वे तलाक देकर अलग होने को तैयार नहीं थे। वे हरियाली से घिरे, सफेद रंग से पुते, नक्काशीदार भड़कीले मकान में रहते थे। उनके घर की चहारदीवारी भी सफेद और भड़कीली थी और बखारघर भी लगभग वैसा ही था। कटर अपने-आपको अश्व-विद्या-विशारद समझता था और आम तौर पर किसी न किसी बछेरे को सिखाता रहता था। रवि-

वार के सवेरे वह बिला नागा मेले के मैदान में रेसकोर्स पर अपनी बग्घी में बछेरे को जोते चक्कर लगाता दिखाई देता। उस समय वह हाथों में पीले रंग के दस्ताने और सिर पर सफेद काले चौखानोंवाली यात्री टोपी पहने होता और उसकी लम्बी मूंछें हवा में लहराया करतीं। अगर आस-पास कोई लड़का दीख जाता तो कटर उसे यह कहकर अपनी 'स्टाप-वाच' थमा देता कि चौथाई डालर दूंगा, लेकिन चक्कर पूरे करके यह कहता हुआ चल देता कि इस समय तो रेजगारी नहीं है; खैर, कोई बात नहीं, अगली बार देख लेंगे। उसके मन के मुताबिक न तो कोई उसकी लॉन की घास काट सकता था और न कोई उसकी बग्घी को धो-पोंछ सकता था—चाहे इन कामों में कोई जान ही क्यों न लड़ा दे, कटर कोई न कोई नुक्स निकाल ही देता था। खर दिमाग ऐसा कि अपने अहाते या गली में किसी-को पांव न रखने देता; अगर कोई लड़का उसके अहाते में मरी बिल्ली फेंक जाता या उसकी गली में टीन के डिब्बे डाल जाता तो उस बेचारे की शामत ही आ जाती थी। एक ओर सदाचार के ढोंग और दूसरी ओर हद दर्जे की लम्पटता ने ही उसे इतना कमीना बना दिया था।

संयोग से औरत उसे बराबरी की मिली थी। मिसेज़ कटर औरत नहीं भूतनी थी—ताड़ की तरह लम्बी, बेढंगे डील-डौलवाली, लोहे के रंग जैसे बाल, तमतमाया चेहरा और बड़ी-बड़ी पागल की तरह गोल-गोल घूमती हुई आंखें। अगर किसीसे खुश हो जाती तो उसके आगे सिर धुनने और पुतलियां नचाने लगती थी। दांत उसके घोड़े की तरह लम्बे और मुड़े हुए थे। लोगों का कहना था कि उसे मुस्कराते देख बच्चे मारे डर के रोने लगते थे। मुझे तो वह चेहरा क्रोध की साक्षात् प्रतिमा ही लगता और मेरी निगाहों को मूठ-मारे की तरह बांध लिया करता था। उसकी आंखों में विक्षिप्तता की झलक दिखाई देती थी। शिष्टाचार के नियमों की वह पूरी पाबन्द थी और आम तौर पर ज़री का लक-दक सलेटी लिबास पहनकर और सिर पर नग-जड़ी ऊंची बानेट लगाकर लोगों से मिलने जाया करती थी।

वह चीनी मिट्टी के बरतनों पर चित्रकारी करने में बड़ी माहिर थी और हर समय इस काम में जुटी रहती थी; यहां तक कि उसने घर के एक-एक चीनी बरतन पर चित्र बना डाले थे—हाथ-मुंह धोने के तसले से लेकर पति

के हजामत बनाने के मग्गे तक कुछ भी नहीं छोड़ा था। एक बार कटर किसी आगन्तुक को अपनी पत्नी की चित्रकारी दिखला रहा था। संयोग से चीनी का एक बरतन हाथ से गिरकर टूट गया। मिसेज़ कटर ने तुरत रूमाल मुंह पर रख लिया मानो गश खाकर गिर पड़ेगी और पति की भर्त्सना करते हुए बोली थी, "कर दिया न बण्टाढार, अब तो गम खाओ।"

कटर के घर में पांव रखते ही दोनों का झगड़ा शुरू हो जाता और रात में सोने तक बराबर चलता रहता। उनकी नौकरानियां दोनों के झगड़े का हाल खूब नमक-मिर्च लगाकर लोगों को सुनाया करती थीं। कटर की बीवी अक्सर अखबार में से बेवफा पतियोंवाले समाचार काटकर और बदली हुई लिखावट में पता लिखकर अपने पति के नाम भेज दिया करती थी। कटर दुपहर में घर लौटता तो अखबारों को ढूंढ़-खोजकर उन कतरनों को यथास्थान लगा देता और अपने इस काम पर शान से फूला न समाता। सवेरे वे इस बात पर लड़ते रहते कि कटर को कौन-सा अधोवस्त्र पहनना चाहिए—हलका या भारी? और सारी शाम वे इस झगड़े में पूरी कर देते कि कटर को ज़ुकाम हुआ है या नहीं?

यों तो पति-पत्नी के झगड़ने के छोटे-बड़े कई कारण थे, परन्तु खास कारण था विरासत का सवाल। बीवी बच्चे न होने के लिए साफ शब्दों में पति को दोषी ठहराती थी और पति कहता था कि तू इस इरादे से जान-बूझकर बच्चे पैदा नहीं करती कि मेरे बाद तू जीवित रह सके और मेरी सारी सम्पत्ति अपने मैकेवाले कम्बख्तों को दे जाए। इसपर पत्नी रद्दा जमाती कि अगर अपने तौर-तरीके नहीं बदलोगे तो ज़रूर पहले मर जाओगे और मैं तुम्हारे बाद भी मोटी-ताज़ी बैठी रहूंगी। पत्नी के मुंह से अपने स्वास्थ्य की निन्दा सुनकर कटर फौरन डम्बल शुरू कर देता और कम से कम एक महीने तक इस क्रम को ज़ारी रखता अथवा रोज़ सवेरे इतनी जल्दी उठकर शोर-शरापे के साथ कपड़े पहनता और बग्घी में बैठकर सैर को निकल जाता, जब उसकी बीवी को खर्राटे की नींद सोये रहना पसन्द था।

एक दिन घर-खर्च को लेकर दोनों में खूब चख-चख हुई। उसके बाद ज़री का लिबास पहनकर कटर की पत्नी घर से निकली और दोस्तों से यह कहकर चीनी मिट्टी के बरतनों पर कुछ काम मांग लाई कि उसे चित्रकारी

की आमदनी पर गुज़ारा करने के लिए मजबूर कर दिया गया है। इस तरह वह कटर को लोगों की निगाहों में गिराना और शर्मिन्दा करना चाहती थी। लेकिन कटर चिकना घड़ा साबित हुआ। लज्जित होने के बदले वह और भी प्रसन्न हुआ।

कटर हमेशा धमकी दिया करता कि मकान पर बुरी तरह छाए इन देवदार वृक्षों को काटकर फेंक दूंगा। "अगर तूने मेरी इस ओट को हाथ भी लगाया तो मैं यहां एक क्षण भी नहीं रहूंगी। जैसी बैठी हूं वैसी ही उठकर चल दूंगी।" कटर की बीवी धमकी का जवाब धमकी से देती थी। कटर के लिए उससे गला छुड़ाने का यह बहुत अच्छा उपाय था, लेकिन उसने कभी पेड़ नहीं काटे। दोनों को झगड़ने में मज़ा आता था और शायद सुख भी मिलता था; और हमें तो उनका झगड़ा देख-सुनकर मज़ा आता ही था। विक कटर एक ही शैतान था, उसके जैसा लफंगा मैंने दूसरा नहीं देखा; लेकिन दुनिया में कटर की पत्नी जैसी औरतों की कोई कमी नहीं है––कभी वे नये धर्मों की स्थापना करती हुई तो कभी अनशन करके ज़बर्दस्ती खाना खिलाई जाती हुई देखी जा सकती हैं; ऊपर-ऊपर से शान्त रहने पर भी इन शंखिनियों को आसानी से पहचाना जा सकता है।

१२

कटर दम्पति के यहां नौकरी कर लेने के बाद एण्टोनिया का अधिकांश समय मौज-मज़े, सैर-सपाटे और दावतों में जाने लगा। जिस दिन नाच में जाना न होता आधी रात तक बैठी सिलाई किया करती। उसकी नई पोशाकों पर टीका-टिप्पणियां भी होने लगी थीं। लेना के निर्देशन में उसने मिसेज़ गार्डनर की नई पार्टी ड्रेस और मिसेज़ स्मिथ की बाहर पहननेवाली पोशाक की सस्ते कपड़ों में ऐसी हूबहू नकल की थी कि दोनों महिलाएं बुरी तरह कट कर रह गई थीं, और उनसे जलनेवाली मिसेज़ कटर मन ही मन बहुत खुश हुई थीं।

टोनी अब दस्ताने और ऊंची एड़ीवाले जूते और पर लगे बानेट पहनने

और टीनी, लेना तथा मार्शलों की नार्वी अन्ना के साथ करीब-करीब रोज़ तीसरे पहर के समय बाज़ार जाने लगी थी। हम हाई स्कूल के लड़के तीसरे पहर की छुट्टी में खेल के मैदान में घूमते हुए अक्सर उन्हें बाज़ार की ओर जाते देखा करते। पहाड़ी ढालवाली सड़क के तख्ते-जड़े फुटपाथ पर वे चारों दो-दो की कतारमें इठलाती-बलखाती हुई आती थीं। उनकी सुन्दरता दिन दूनी और रात चौगुनी बढ़ती जा रही थी। जब हमारे पास से गुज़रतीं तो यह सोचकर मेरी छाती फूल उठती कि चारों में एण्टोनिया ही सबसे सुन्दर है—परी-कथा की फूलकुमारी की तरह अनिन्द्य सुन्दरी।

ऊंची कक्षा में होने के कारण अब स्कूल से मेरी जल्दी छुट्टी हो जाती थी। कभी मैं इन लड़कियों को बाज़ार में जा पकड़ता और मना-मुनकर आइस क्रीम की दुकान में चलने के लिए राज़ी कर लेता था। हम यहां बैठ जाते और ये चिड़ियों की तरह चहकती हुई हंस-हंसकर मुझे देहात की खबरें सुनाया करतीं।

एक दिन टीनी सोडरबाल ने इतना छेड़ा कि मुझे गुस्सा आ गया। बैठे-बिठाए उसे क्या सूझी कि कहने लगी, "सुना है तुम्हारी दादी तुम्हें बैप्टिस्ट पादरी बनाने जा रही हैं। फिर तो तुम्हें नाचना छोड़कर गले में सफेद नेकटाई बांधनी पड़ेगी। खासे लूलू नज़र आओगे तब; क्यों सहेलियो ?"

लेना खिलखिलाकर हंस पड़ी और बोली, "फिर देर काहे की जिम ! जल्दी पादरी बन जाओ और मुझसे शादीकर लो; बल्कि हम सभी से शादी कर लो और जो बच्चे हों उनका बप्तिस्मा किया करना।"

नार्वी अन्ना का व्यवहार हमेशा शालीन हुआ करता था। झिड़की-भरे स्वर में बोली, "दुत् ! बैप्टिस्ट बच्चों के बप्तिस्मे में विश्वास नहीं करते। क्यों जिम, ठीक कह रही हूं न ?'

मैंने कह दिया, "बैप्टिस्ट किसमें विश्वास करते हैं और किसमें नहीं, मेरी बला से, और न मैं पादरी बनूंगा।"

"बड़ों का कहना नहीं मानना अच्छी बात नहीं है जिम !" टीनी ने खीसें निपोरकर कहा। वह बराबर चिढ़ाए जा रही थी, "पादरी बनकर जंचोगे खूब, हज़ारों में नहीं, लाखों में एक। पढ़क्कू भी कितने हो ! अच्छा

प्रोफेसर बन जाना। शायद पसन्द भी है तुम्हें। टोनी को तो पढ़ाते ही रहे हो न?"

अब टोनी बोली, "ए, हटो भी! मेरा जिम्मी डाक्टर बनेगा। तुम बीमारों की खूब सेवा कर सकते हो जिम। दादीजी ने तुम्हें सेवा-चाकरी में बहुत होशियार कर दिया है। मेरे बापू भी तुम्हारी खूब तारीफ किया करते थे कि जिम बड़ा होशियार लड़का है।"

मैंने कहा, "जो जी चाहेगा बन जाएंगे, तुमसे मतलब! अच्छा मिस टोनी, हम शैतान का परकाला बनकर आपको छेड़ने लगें, तो?"

चारों लड़कियां खिलखिलाकर हंस पड़ीं, लेकिन तुरत नार्वी अन्ना की आंख का इशारा पाकर चुप हो गईं। मेरे हाई स्कूल के प्राचार्य उसी दुकान के अगलेवाले हिस्से में रोटी खरीदने के लिए घुसे थे। मेरे बारे में यह मशहूर हो गया था कि बड़ा गूढ़ हूं और अन्ना इस बात को जानती थी। लोग कहने लगे थे कि बड़ा धूर्त है, अपनी उम्र की सम्भ्रान्त लड़कियों की ओर आंख उठाकर भी नहीं देखता, मगर टोनी, लेना या तीनों मेरियों की सोहबत में खूब चहकने लगता है!

वानी दम्पती ने नाच की जो लौ लगा दी थी वह आसानी से नहीं बुझी। उनके चले जाने के बाद युकर क्लब आउल क्लब में रूपान्तरित हो गया और सप्ताह में एक दिन मेज़ोनिक हाल में नाच के जलसे करने लगा। निमन्त्रण मुझे भी दिया गया, लेकिन मैंने अस्वीकार कर दिया। उन सर्दियों में मैं बहुत ही उद्विग्न और व्यग्र रहने लगा था और परिचितों को देखकर चिढ़ छूटती थी। चार्ली हार्लिग अन्नापोलिस पहुंच गया था और मैं अभी तक ब्लैकहॉक में बैठा वहां के हाई स्कूल में अपनी हाज़री भरवा रहा था—सवेरे नाम पुकारे जाने पर 'प्रेज़ेण्ट, सर' बोलता और शाम को घण्टी बजने पर प्राथमिक शाला के बच्चे की तरह उठकर घर चल देता था। मिसेज़ हार्लिग इधर मुझसे कुछ खिंची-खिंची रहने लगी थीं, क्योंकि मैं एण्टोनिया का पक्ष लेता था। अब रात के खाने के बाद करने को कोई काम ही नहीं बचा था! स्कूल में जो भी पढ़ाया जाता सुनकर वहीं याद हो जाता था, और पहर रात तक किताबें खोले घोखते बैठना मेरे बस का

नहीं था।

जी बहलाने के विचार से सरे शाम से ही भटकने लगता था। वही की वही जानी-पहचानी सड़कें होती थीं—बर्फ से जमी हुई या कीचड़ से सनी हुई! उन सड़कों के दोनों ओर बने मकानों में सद्गृहस्थ या तो बच्चों को सुला रहे होते या बैठक में अंगीठी के आगे चुप बैठे खाना हजम कर रहे होते। ब्लैकहॉक में दो मदिरालय थे। उनमें से एक तो बहुत ही अच्छा यानी कि भले आदमियों के जाने लायक था और इस बात को गिरजाघर के भक्त लोग भी स्वीकार करते थे। इस मदिरालय का मालिक था सुदर्शन एण्टन जेलीनेक। उसने अपना खेत-खलिहान किराये पर उठाकर शहर में मदिरालय खोल लिया था। यहां लम्बी मेज़ें लगी हुई थीं और बोहेमी एवं जर्मन किसान आराम से बैठकर अपने घरों से साथ लाया खाना खा सकते थे और जेलीनेक से बीयर खरीदकर पी सकते थे। जेलीनेक राई की रोटी, भुनी मछली और आयात की हुई पनीर भी रखता था और उसके गाहक इन चीज़ों को खरीदकर बड़े स्वाद से खाते थे। मैं अक्सर वहां पहुंच जाता और बैठा लोगों के गपोड़े सुना करता। लेकिन एक दिन जेलीनेक मेरे पीछे-पीछे सड़क तक आया और मेरे कन्धे पर हाथ रखकर बोला, "जिम, मैं तुम्हें अपना दोस्त समझता हूं और तुमसे मिलकर मुझे हमेशा खुशी होती है, लेकिन जानते ही हो कि गिरजाघर के भक्त लोग मदिरालयों को अच्छी जगह नहीं समझते। तुम्हारे दादाजी ने मेरे साथ हमेशा अच्छा सलूक किया है, इसलिए मैं नहीं चाहता कि तुम मेरे यहां आओ, क्योंकि मैं जानता हूं कि तुम्हारे दादाजी को यह पसन्द नहीं और मैं उनसे रार नहीं बढ़ाना चाहता।"

इस तरह मेरा वहां जाना बन्द हो गया।

अब कभी बड़ी दुकान में चले गए और वहां सिगार-स्टैण्ड में बैठे-बैठे बूढ़ों को राजनीति के छिलके उतारते या गन्दे किस्से कहते सुनते रहे। वहां से ऊबे तो बूढ़े जर्मन से गपशप करने सिगार फैक्टरी चले गए। वह बूढ़ा बेचने के लिए कनारी पक्षी पाला करता था और किसी भी विषय पर बात क्यों न शुरू करो घूम-फिरकर जानवरों की खाल में भूसा भरने की कला पर आ जाया करता था। फिर रेलवे स्टेशन भी था, जहां मैं अक्सर रात-वाली गाड़ी को देखने चला जाया करता और थोड़ी देर तार बाबू के पास

बैठ लिया करता था। यह तार बाबू बड़ा ही दुःखी आदमी था और ओमाहा या डेनवर जैसी जगहों में, जहां कुछ चहल-पहल और ज़िन्दगी हो, अपना तबादला हो जाने के सपने देखा करता था। मैं जब भी जाता वह मुझे अभिनेत्रियों और नर्तकियों की तसवीरें ज़रूर दिखाता था। ये तसवीरें उसने सिगरेट के कूपनों से जमा की थीं और कूपनों के लिए सिगरेटें पी-पीकर अपना स्वास्थ्य चौपट कर डाला था। उन गोरे मुखड़ों और नंगी टांगों वाली तसवीरों के लिए वह मौत को भी गले लगाने को तैयार था। वहां थोड़ी देर स्टेशन एजेण्ट से भी बात की जा सकती थी, परन्तु वह भी उतना ही ऊबा हुआ और असन्तुष्ट व्यक्ति था। हर समय तबादले के लिए अपने अफसरों के नाम अर्ज़ियां लिखा करता। उसकी दिली इच्छा व्योमिंग जाने की थी, जहां रविवार के दिन ट्राउट मछली का शिकार किया जा सकता था। कहा करता, "जोड़लों के मर जाने के बाद अपने को तो भैया, ट्राउट के शिकार के सिवा ज़िन्दगी में और कोई मज़ा नहीं रहा।"

मेरे मन-बहलाव के कुल जमा इतने ही साधन थे। नौ बजे के बाद बाज़ार की सारी रोशनियां गुल हो जाती थीं। तारे-छिटकी रातों में मैं शहर की लम्बी, ठण्डी, सन्नाटा-भरी सड़कों पर, दोनों ओर के मकानों को मुंह चिढ़ाता, निरुद्देश्य भटका करता। गहरी नींद में अचेत पड़े वे छोटे-छोटे मकान अधिकतर घटिया लकड़ी से बनाए गए थे और खराद पर उतारे उनकी बरसातियों के खम्भे बहुत ही कुरूप लगते थे। आदमी के बसेरे की दृष्टि से वे कोई बहुत उपयुक्त स्थान नहीं थे। रात में उनकी खिड़कियों पर तूफान-रक्षी परदे चढ़े होते और पीछेवाली बरसातियां कनातों से ढक दी जाती थीं। बिलकुल खस्ताहाल और कमज़ोर होते हुए भी वे मकान अपने अन्दर कितना दुःख, दैन्य और नाराज़ी, ईर्ष्या, फूट और कलह छिपाए हुए थे! उनके अन्दर चल रहा जीवन-व्यापार कितने छल-कपटों और निषेध-नकारों से भरा हुआ था! पकाने-पोने, धोने-पोंछने और सफाई-धुलाई से कतराने की क्या-क्या चालें नहीं चली जाती थीं। और पर निन्दा-रस के परिपाक के लिए कौन-सी कीमियागरी नहीं की जाती थी! उन मकानों में रहनेवाले लोग जीवन से इस तरह बचकर जीने की कोशिश करते थे, मानो किसी निरंकुश आततायी के अत्याचारपूर्ण शासन में डरे-

नहीं था।

जी बहलाने के विचार से सरे शाम से ही भटकने लगता था। वही की वही जानी-पहचानी सड़कें होती थीं—बर्फ से जमी हुई या कीचड़ से सनी हुई ! उन सड़कों के दोनों ओर बने मकानों में सद्गृहस्थ या तो बच्चों को सुला रहे होते या बैठक में अंगीठी के आगे चुप बैठे खाना हजम कर रहे होते। ब्लैकहॉक में दो मदिरालय थे। उनमें से एक तो बहुत ही अच्छा यानी कि भले आदमियों के जाने लायक था और इस बात को गिरजाघर के भक्त लोग भी स्वीकार करते थे। इस मदिरालय का मालिक था सुदर्शन एण्टन जेलीनेक। उसने अपना खेत-खलिहान किराये पर उठाकर शहर में मदिरालय खोल लिया था। यहां लम्बी मेज़ें लगी हुई थीं और बोहेमी एवं जर्मन किसान आराम से बैठकर अपने घरों से साथ लाया खाना खा सकते थे और जेलीनेक से बीयर खरीदकर पी सकते थे। जेलीनेक राई की रोटी, भुनी मछली और आयात की हुई पनीर भी रखता था और उसके गाहक इन चीज़ों को खरीदकर बड़े स्वाद से खाते थे। मैं अक्सर वहां पहुंच जाता और बैठा लोगों के गपोड़े सुना करता। लेकिन एक दिन जेलीनेक मेरे पीछे-पीछे सड़क तक आया और मेरे कन्धे पर हाथ रखकर बोला, "जिम, मैं तुम्हें अपना दोस्त समझता हूं और तुमसे मिलकर मुझे हमेशा खुशी होती है, लेकिन जानते ही हो कि गिरजाघर के भक्त लोग मदिरालयों को अच्छी जगह नहीं समझते। तुम्हारे दादाजी ने मेरे साथ हमेशा अच्छा सलूक किया है, इसलिए मैं नहीं चाहता कि तुम मेरे यहां आओ, क्योंकि मैं जानता हूं कि तुम्हारे दादाजी को यह पसन्द नहीं और मैं उनसे रार नहीं बढ़ाना चाहता।"

इस तरह मेरा वहां जाना बन्द हो गया।

अब कभी बड़ी दुकान में चले गए और वहां सिगार-स्टैण्ड में बैठे-बैठे बूढ़ों को राजनीति के छिलके उतारते या गन्दे किस्से कहते सुनते रहे। वहां से ऊबे तो बूढ़े जर्मन से गपशप करने सिगार फैक्टरी चले गए। वह बूढ़ा बेचने के लिए कनारी पक्षी पाला करता था और किसी भी विषय पर बात क्यों न शुरू करो घूम-फिरकर जानवरों की खाल में भूसा भरने की कला पर आ जाया करता था। फिर रेलवे स्टेशन भी था, जहां मैं अक्सर रात-वाली गाड़ी को देखने चला जाया करता और थोड़ी देर तार बाबू के पास

बैठ लिया करता था। यह तार बाबू बड़ा ही दुःखी आदमी था और ओमाहा या डेनवर जैसी जगहों में, जहां कुछ चहल-पहल और ज़िन्दगी हो, अपना तबादला हो जाने के सपने देखा करता था। मैं जब भी जाता वह मुझे अभिनेत्रियों और नर्तकियों की तसवीरें ज़रूर दिखाता था। ये तसवीरें उसने सिगरेट के कूपनों से जमा की थीं और कूपनों के लिए सिगरेटें पी-पीकर अपना स्वास्थ्य चौपट कर डाला था। उन गोरे मुखड़ों और नंगी टांगों वाली तसवीरों के लिए वह मौत को भी गले लगाने को तैयार था। वहां थोड़ी देर स्टेशन एजेण्ट से भी बात की जा सकती थी, परन्तु वह भी उतना ही ऊबा हुआ और असन्तुष्ट व्यक्ति था। हर समय तबादले के लिए अपने अफसरों के नाम अर्ज़ियां लिखा करता। उसकी दिली इच्छा व्योमिंग जाने की थी, जहां रविवार के दिन ट्राउट मछली का शिकार किया जा सकता था। कहा करता, "जोड़लों के मर जाने के बाद अपने को तो भैया, ट्राउट के शिकार के सिवा जिन्दगी में और कोई मज़ा नहीं रहा।"

मेरे मन-बहलाव के कुल जमा इतने ही साधन थे। नौ बजे के बाद बाज़ार की सारी रोशनियां गुल हो जाती थीं। तारे-छिटकी रातों में मैं शहर की लम्बी, ठण्डी, सन्नाटा-भरी सड़कों पर, दोनों ओर के मकानों को मुंह चिढ़ाता, निरुद्देश्य भटका करता। गहरी नींद में अचेत पड़े वे छोटे-छोटे मकान अधिकतर घटिया लकड़ी से बनाए गए थे और खराद पर उतारे उनकी बरसातियों के खम्भे बहुत ही कुरूप लगते थे। आदमी के बसेरे की दृष्टि से वे कोई बहुत उपयुक्त स्थान नहीं थे। रात में उनकी खिड़कियों पर तूफान-रक्षी परदे चढ़े होते और पीछेवाली बरसातियां कनातों से ढक दी जाती थीं। बिलकुल खस्ताहाल और कमज़ोर होते हुए भी वे मकान अपने अन्दर कितना दुःख, दैन्य और नाराज़ी, ईर्ष्या, फूट और कलह छिपाए हुए थे! उनके अन्दर चल रहा जीवन-व्यापार कितने छल-कपटों और निषेध-नकारों से भरा हुआ था! पकाने-पोने, धोने-पोंछने और सफाई-धुलाई से कतराने की क्या-क्या चालें नहीं चली जाती थीं। और पर निन्दा-रस के परिपाक के लिए कौन-सी कीमियागरी नहीं की जाती थी! उन मकानों में रहनेवाले लोग जीवन से इस तरह बचकर जीने की कोशिश करते थे, मानो किसी निरंकुश आततायी के अत्याचारपूर्ण शासन में डरे-

दबे ज़िन्दगी के दिन पूरे कर रहे हों। लोगों की बोली-बानी, आचार-व्यवहार और देखने-सुनने में भी दुराव-छिपाव और डर-भय परिलक्षित होता था। हर प्राकृतिक चेष्टा, वैयक्तिक रुचि और नैसर्गिक प्रेरणा पर आशंकाओं और सतर्कताओं के पहरे लगे हुए थे। मुझे उन मकानों में सोए हुए लोगों की ज़िन्दगी उन्हींके अपने रसोईघरों के चूहों जैसी लगती थी—अंधेरे में चीज़ों से कतराकर चलना, शोर-शार न करना, जरा-सा खुटका होते ही दुबक जाना, और अपने पीछे कोई चिह्न, कोई संकेत न छोड़ जाना। पीछे बाड़ों में राख और कोयले का बढ़ता जाता अम्बार ही इस बात का एकमात्र साक्षी होता था कि जीवन को निःशेष करने की निरर्थक प्रक्रिया यहां अब भी विद्यमान है। मंगलवार की रात को आउल क्लब की ओर से नाच का जलसा होता था, उस दिन सड़कों और गलियों में थोड़ी-बहुत चहल-पहल हो जाया करती थी और किसी खिड़की में आधी रात तक दीए का उजाला दिखाई दे जाता था। बस, उसके बाद फिर वही अंधेरा और सन्नाटा हो जाता था।

आउल क्लब के नृत्य-समारोहों में सम्मिलित होने से इनकार करने के बाद, मैंने शनिवार की रात को फायरमेन्स हाल के नाचों में शरीक होने का फैसला किया। अपने अभिभावकों से इस सम्बन्ध में कहना या उनकी अनुमति लेना व्यर्थ ही होता। दादाजी को नाच-गान से योंही एतराज़ था, मेरे आग्रह पर वे ज़्यादा से ज़्यादा यही कहते कि अगर जाना ही चाहते हो तो मेज़ोनिक हाल के नाच में जाया करो, क्योंकि वहां ऐसे लोग जाते हैं 'जिन्हें हम जानते-पहचानते हैं।' और 'जाने-पहचाने' लोगों से मुझे इतनी चिढ़ हो गई थी कि उनके पास फटकना भी नहीं चाहता था।

मैं नीचेवाले कमरे में सोता था और वहीं पढ़ता-लिखता भी था। उस कमरे में एक अंगीठी भी थी। शनिवार की रात को मैं अपने कमरे में जल्दी चला आता और कपड़े बदलकर यानी नई कमीज़, धुला कालर और नया कोट पहनकर दादा-दादी के सोने का इन्तज़ार करने लगता। जब वे सो जाते तो खिड़की खोलकर धीरे से बाहर निकल आता। पहली बार जब इस तरह दादा-दादी को धोखा दिया तो मेरी अन्तरात्मा मुझे धिक्कारने लगी। शायद दुबारा भी धिक्कारा था, लेकिन फिर मैं पुराने पापियों की

तरह ढीठ हो गया।

अब तो सप्ताह के छहों दिन मेरा मन फायरमेन्स हॉल के नृत्य-समारोह में लगा रहता और मैं बड़ी व्यग्रता से शनिवार की प्रतीक्षा किया करता। वहां उन सभी लोगों से भेंट होने लगी जो वानी दम्पति के तम्बू में आते थे। कभी-कभी विल्बर के बोहेमी और तीसरे पहरवाली माल गाड़ी से आनेवाले बिस्मार्क के जर्मन लड़के भी वहां आ जुटते थे। टोनी, लेना, टीनी, तीनों मेरियां और डेनी लाण्ड्री में काम करनेवाली चारों लड़कियां तो हर शनिवार को बिला नागा वहां आती ही थीं।

चारों डेन लड़कियां लाण्ड्री के मालिक और उसकी बीवी के साथ लाण्ड्री के पीछेवाले उन्हींके मकान में रहती थीं। लाण्ड्री और मकान के बीच में काफी बड़ा बगीचा था, जिसमें रस्सियों पर कपड़े सूखा करते थे। लाण्ड्री का मालिक भला, दयालु और समझदार आदमी था। वह अपनी नौकरानियों को अच्छी तनख्वाह देता, उनकी सुख-सुविधा का पूरा ख्याल रखता और अपनी बेटियों की तरह मानता था। उसने उन्हें रहने के लिए मकान भी बहुत अच्छा दिया था। एक बार उसने मुझे बताया था कि उसकी अपनी बेटी हाथ बंटाने के लायक हुई ही थी कि 'भगवान ने उसे उठा लिया और तब से मैं नौकरानियों को ही अपनी बेटियां मानने लगा हूं।' गर्मियों में वह शाम के समय लाण्ड्री के आगे फुटपाथ पर कुर्सी डालकर बैठ जाया करता; अखबार गोद में खुला पड़ा रहता और वह वात्सल्यपूर्ण दृष्टि से खिड़की के शीशे के पीछे डेनी भाषा में बातें और कपड़ों पर इस्त्री करती हुई अपनी इन नौकरानियों को देखा करता था। सड़क पर उठते धूल के बगूले या बगीची की साग-सब्ज़ियों को झुलसाती लू-लपट—मैंने उसे किसीसे भी उद्विग्न और व्यग्र होते नहीं देखा था। वह हमेशा निरुद्विग्न बना रहता। उसके विनोदी चेहरे को देखकर ऐसा लगता था मानो उसने सुख और सन्तोष का मूल रहस्य पा लिया हो। सुबह-शाम वह अपनी घोड़ागाड़ी में गाहकों के धुले कपड़े पहुंचाने और घर-घर से गन्दे कपड़ों के गट्ठर बटोरने का काम किया करता था। उसकी नौकरानियां नाचते समय तो उतनी खूबसूरत नहीं लगती थीं, लेकिन जब लाण्ड्री में काम में जुटी होतीं तो उनका श्रम-अभिषिक्त सौन्दर्य दीपित हो उठता था—मेज़ पर इस्त्री करती

हुई या नंगी बांहों और खुले गले से तसलों पर झुकी कपड़े धोती हुई उन लड़कियों के गाल गहरे गुलाबी हो जाते और सिर के सुनहरे बाल भाप या पसीने से भीगकर उनकी लटें कानों के पास कुण्डलाकार हो जाती थीं और वे गज़ब की सुन्दरी लगती थीं। अंग्रेज़ी उन्होंने ज़्यादा नहीं सीखी और टोनी तथा लेना की तरह महत्त्वाकांक्षिणी भी नहीं थीं। परन्तु बड़ी सीधी और भली लड़कियां थीं और हमेशा खुश रहती थीं। अपने धुले कपड़ों में वे मिस्टर जेनसन के बगीचे की सहदेवी की पत्तियां रख लेती थीं, इसलिए उनके साथ नाचने पर उनके कपड़ों से नई धुलाई और ताजी इस्त्री की गन्ध के साथ सहदेवी की पत्तियों की सुगन्ध भी आने लगती थी।

युगल-नृत्य के लिए लड़कियां काफी नहीं थीं और हर कोई टोनी और लेना के साथ नाचना चाहता था।

लेना को नाचने में ज़ोर नहीं लगाना पड़ता था। वह बहुत कुछ अलस भाव से नाचती थी और हाथ से अपने साथी के कन्धे पर हौले-हौले स्वरांकन करती जाती थी। कोई कुछ कहता तो मुस्करा देती और जवाब तो शायद ही कभी देती थी। नृत्य-संगीत की धुनें उसे किसी स्वप्नलोक में उड़ा ले जातीं और वह खोई-खोई अधमुंदी आंखों की भोली चितवनों से देखने लगती थी। हिलते-डुलते और सांस लेते उसके शरीर से सुगन्धित पाउडर की लपटें उठती रहती थीं। उसके साथ 'होम, स्वीट होम' नाचना सचमुच घर लौट आने की तरह होता था—झंझा-तूफान-भरे समन्दर की बीहड़ यात्रा से घर लौटने की तरह। उसका हर नाच वाल्ज़ की तरह होता था और हमेशा एक ही तरह का वाल्ज़—हर जगह से घूम-फिरकर अनिवार्य रूप से घर लौट आने का घूमर नाच! उसके साथ नाचते-नाचते मन उसी तरह व्यग्र हो जाता था जिस तरह उमस-भरी गर्मियों से अकुलाहट होने लगती है।

लेकिन टोनी के साथ नाचते हुए ऐसी कोई अनुभूति नहीं होती थी। उसके साथ नाचने का अपना अलग ही मज़ा था। हर नाच नई यात्रा, नये अनुसंधान और अभूतपूर्व अनुभूति की तरह होता था। मुझे उसके साथ स्काटिश (एक तरह का पोल का नृत्य) नाचना बहुत पसन्द था। उसमें गज़ब का लोच, फुर्ती और विविधता थी और वह हर बार नये लटकों और

नई पदावलियों, नई भंगिमाओं और नई मुद्राओं का प्रयोग करती थी। उसने मुझे संगीत की बंधी-सधी ताल और क्षिप्र-मन्द लय के साथ और उसके प्रतिकूल भी नाचना सिखाया था। मैं अकसर सोचा करता कि यदि मिस्टर शिमरडा प्रेरी के बियाबान में भटक आने के बदले न्यूयार्क में बस जाते और अपने दिलरुबा को जीवन-यापन का साधन बनाते तो आज एण्टोनिया का जीवन कितना भिन्न होता।

एण्टोनिया अक्सर लारी डान ओवान नाम के एक रेल-कण्डक्टर के साथ नाचती थी। वह बड़ा ही दिखनौटा और औरतों को लुभानेवाला आदमी था। एण्टोनिया भी रूप-रंग में कम नहीं थी—सुन्दर मुखड़ा, चमकीली आंखें और नाचते समय होंठ ज़रा-से खुल जाते थे। उसके गालों का गहरा गुलाबी रंग हमेशा वैसा ही बना रहता था। पहली बार जब वह मिसेज़ गार्डनर की काली मखमली पोशाक की तर्ज़ पर बनी अपनी वेलवटीन (सूती मखमल—सुआलीन) की पोशाक पहनकर आई थी तो मुझे याद है कि हम सब किस तरह अश्-अश् कर उठे थे!

एक रात जब डान ओवान ड्यूटी पर था एण्टोनिया नार्वी अन्ना और जो लड़का अन्ना के साथ नाचता था, उसके साथ नृत्य-भवन आई और फिर उस रात मैं उसे उसके घर तक पहुंचाने गया।

जब हम वृक्षों से घिरे कटर के आंगन में पहुंचे तो मैंने एण्टोनिया से कहा कि आज तो 'गुडनाइट' कहने से पहले मैं तुम्हें चूमना चाहता हूं।

"ज़रूर चूमो, जिम!" उसने कहा, लेकिन दूसरे ही क्षण झटके से पीछे हटती हुई गुस्सा-भरे स्वर में बोली, "अगर जानती कि इस तरह चूमोगे तो हर्गिज राज़ी न होती। तुम्हारे द्वारा इस तरह चूमा जाना मुझे बिलकुल पसन्द नहीं। दादीजी से शिकायत करनी पड़ेगी अब तो।"

"लेना लिंगार्ड चूम लेने देती है और कुछ भी नहीं कहती।" मैं भी नाराज हो गया था, "और मैं उसे बिलकुल नहीं चाहता, जबकि तुम्हें इतना चाहता हूं।"

"लेना चूम लेने देती है?" वह भभक उठी, "अगर उसने तुमपर डोरे डाले तो मैं उसका मुंह ही नोच लूंगी।" उसने फिर मेरा हाथ पकड़ लिया और हम दोनों फाटक की राह बाहर फुटपाथ पर निकल आए। एण्टोनिया

कहती जा रही थी, "मुझे तुमसे बड़ी आशाएं हैं जिम। तुम यहां के कस्बाती लड़कों जैसे बनो, यह मुझे ज़रा भी पसन्द नहीं। सारी उम्र यहां बैठे रहना, किराना माल के बक्से इधर से उधर पहुंचाया करना और गपोड़े हांका करना—यह तुम्हारा काम नहीं है। तुम्हें कॉलेज में जाकर पढ़ना और दुनिया में नाम कमाना है। कितना गर्व है मुझे तुमपर! और तुम स्वीडी छोकरियों के पीछे दीवाने हो रहे हो? छोड़ो जिम, दीवानापन; और वादा करो कि उनकी ओर आंख उठाकर भी नहीं देखोगे।"

"मैं तो तुम्हें छोड़ किसीकी ओर देखता भी नहीं, लेकिन तुम हो कि मुझे निरा बच्चा ही समझती हो।" मैंने विषण्ण होकर कहा।

वह हंसती हुई मुझसे लिपट गई और बोली, "बच्चा तो समझती ही रहूंगी और हो भी तुम कितने प्यारे बच्चे! मुझे जी भरकर चाहो, कभी मना नहीं करूंगी, लेकिन आगे कभी लेना के साथ डोलते देखा तो सीधे जाकर दादीजी से कह दूंगी। वैसे लेना बुरी लड़की नहीं है, लेकिन इन मामलों में, तुम जानते ही हो कि वह ज़रा कमज़ोर है और ज़रा-से में संयम खो देती है। वह भी क्या करे, उसकी आदत हो गई है।"

अगर उसे मुझपर गर्व था तो मुझे भी उसपर कम गर्व नहीं था। कटर की वृक्ष-वीथि में से होकर फाटक को बन्द करता हुआ बाहर सड़क पर आया तो एण्टोनिया के विचार से मेरा सिर ऊंचा उठा हुआ था। उसका प्यारा चेहरा, उसके कोमल बाहु और उसकी छातियों में धड़कता सच्चा दिल मुझे रह-रहकर याद आ रहे थे और मैं इस विचार से धन्य और कृतकृत्य था कि वह अब भी मेरी है—मेरी एण्टोनिया! घर लौटते हुए मैं दोनों ओर के मकानों को तुच्छता से देखता जा रहा था और उनके अन्दर सोये मूर्ख युवकों पर मुझे दया आ रही थी। इतनी उम्र लेकर भी वे मूर्ख असली औरतों को न पा सके थे और नकली गुड़ियों के आंचल से बंधे डोल रहे थे। उनके मुकाबले में मैं अभी बच्चा ही था पर जान गया था कि असली औरतें कहां हैं; और मुझे उनसे कोई भय भी नहीं था।

उसके बाद नाच से लौटता तो घर के अन्दर जाने को जी न चाहता और देर तक बिस्तरे पर पड़ा करवटें बदला करता। कभी सवेरे मीठे सपने आया करते: मैं और टोनी देहात में हैं और घास की गंजियों पर से फिसल

रहे हैं, जैसा कि बचपन में फिसला करते थे; पीले पहाड़ पर एक तरफ से चढ़ते हैं और दूसरी तरफ फिसल-पट्टी की तरह फिसलकर भूसे के ढेर में बार-बार गिरते हैं।

एक सपना वही का वही मुझे बार-बार आता था। कटे खेत में नाज के पूलों के ढेर लगे हैं और मैं एक ढेर के पास लेटा हुआ हूं। खूतरों में चलती हुई लेना लिगार्ड आती है। वह नंगे पांव होती, ऊंचा स्कर्ट पहने रहती और उसके हाथ में नाज काटने की मुड़ी हुई दरांती रहती। उसका चेहरा ऊषा की तरह दमकता हुआ होता और उसके सारे शरीर से एक गुलाबी आभा प्रस्फुटित हुआ करती। वह आकर मेरे पास बैठ जाया करती, लम्बी सांस लेती और मुझसे कहती, "अब कोई नहीं रहा, और मैं तुम्हें जी भर कर चूम सकती हूं।"

मन कितना चाहता था कि ऐसा ही सपना एण्टोनिया के बारे में आए, लेकिन अफसोस, कभी नहीं आया।

१३

एक दिन तीसरे पहर की बात है। देखा तो दादीजी रो रही थीं। घर में वे चल भी इस तरह रही थीं, मानो पांव निर्जीव हो गए हों। मैं मेज़ के आगे बैठा पढ़ रहा था। उठकर उनके पास गया और पूछा कि तबीयत तो खराब नहीं है; और यदि कोई काम हो तो लाओ कर दूं।

"नहीं जिम, तबीयत को कुछ नहीं हुआ, अच्छी हूं; बुढ़ापे का शरीर, हाथ-पांव थक ही जाते हैं और कुछ परेशान भी हूं।" उन्होंने मुंह बिगाड़कर कहा।

मैं एक क्षण किंकर्तव्यविमूढ़ खड़ा रहा, फिर बोला, "किस बात से परेशान हैं आप? दादाजी ने कुछ खो-खा तो नहीं दिया?"

"नहीं रे बेटे, पैसे-टके की कोई बात नहीं है। होती तो मुझे इतना बुरा न लगता। लेकिन मेरे पास शिकायत आई है। घरवालों से लाख छिपाओ

ऐसी बातें छिपा नहीं करतीं।" वे धड़ाम से एक कुर्सी पर बैठ गईं और एप्रन से मुंह ढांपकर फिर रोने लगीं। "मैं जानती हूं जिम," उन्होंने आगे कहा, "बूढ़ों के लिए नाती-पोतों का लालन-पालन मुश्किल होता है। लेकिन ऐसा होगा, यह नहीं जानती थी। तुमने यह क्या किया बेटे ?"

उनका रोना मुझसे देखा न गया। मैं दोनों हाथ उनके गले में डालकर लिपट गया और व्यथित कण्ठ से बोला, "क्या बात है दादीजी ? आपका मतलब फायरमेन्स हाल में होनेवाले नाच से तो नहीं है ?"

उन्होंने सिर हिलाकर हामी भरी।

"अपनी गलती मंजूर करता हूं। मुझे आपसे छिपाकर नहीं जाना चाहिए था। लेकिन मैंने कोई बुरा काम किया है या जाना अनुचित है, ऐसा मैं नहीं मानता। मुझे वे देहाती लड़कियां पसन्द हैं और उनके साथ नाचना भी। बस, कुल जमा इतनी-सी बात है।"

"लेकिन तुमने हमें अंधेरे में क्यों रखा ? और लोग कितनी बदनामी कर रहे हैं ? जिसे देखो वही कहता है कि तुम आवारा हो गए ! सारा दोष हमींको लगाया जा रहा है और ठीक भी है।"

"लोगों की राय की तो मुझे परवाह नहीं, लेकिन अगर आपको नागवार लगता है तो अब से नहीं जाऊंगा। फायरमेन्स हाल की ओर आगे से आंख उठाकर भी नहीं देखूंगा।"

मैंने दादीजी को दिया वचन अन्त तक निभाया; लेकिन वसन्त की पूरी ऋतु मेरे लिए निरानन्द हो गई। सारी शाम दादा-दादी के साथ घर बैठा रहता और लैटिन पढ़ा करता, जो यद्यपि हमारे हाई स्कूल के पाठ्यक्रम में तो नहीं थी, परन्तु जिसका ज्ञान विश्वविद्यालय की प्रवेशिका परीक्षा के लिए अनिवार्य था। मैं गर्मियों तक विश्वविद्यालय-प्रवेश की पूरी तैयारियां कर लेना चाहता था, जिससे शरद् ऋतु में कालेज खुलने पर बिना किन्तु-परन्तु के मेरा प्रवेश हो जाए। मैं बड़ी व्यग्रता से उस दिन की प्रतीक्षा करने लगा।

निन्दा और तिरस्कार कोई भी क्यों न करे, उससे मुझे बड़ी चोट लगती थी। वसन्त के आते ही मेरी उदासी और अकेलापन बहुत बढ़ गए। सोहबत के लिए या तो तार बाबू के पास चला जाता या सिगार फैक्टरी

के जर्मन मालिक के पास और उसके कनारी पक्षियों में अपने को भुलाए रहता। उस साल मैंने मन को बहलाने के लिए नीना हार्लिंग के यहां मई की फूलडलिया पहुंचाने का काम भी किया था। फूल मैंने खरीदे थे एक जर्मन बुढ़िया से जिसने अपने घर की हर खिड़की से फूलों के गमले लगा रखे थे। एक पुरानी टोकरी को काट-पीट कर मैंने डलिया बनाई और उसमें फूलों को सजाकर रख दिया। इधर शाम हुई, आसमान में चौथ का चांद उगा और मैं डलिया लेकर दबे पांवों हार्लिङ्गों के दरवाज़े पर पहुंच गया। डलिया चौखट पर रखकर मैंने घण्टी बजाई और रिवाज के अनुसार वहां से भाग आया। उधर नीना प्रसन्न होकर किलकारियां लगा रही थी, इधर बेंत की झाड़-बन्दी के पार मैं सुन-सुनकर सुख पा रहा था।

शाम को मैं अक्सर बाज़ार चला जाता और अपनी योजनाओं पर बातें करता हुआ फ्रांसिस के साथ घर लौटता था। मैं उससे अपनी पढ़ाई के बारे में भी परामर्श करता था। एक दिन बातों के सिलसिले में वह मुझसे बोली, "अम्मां तुमसे नाराज़ नहीं हो सकतीं; यह केवल तुम्हारा भ्रम है। वे बहुत उदार और सहृदय हैं; आखिर तो मां का दिल है और तुम्हें अपना बच्चा समझती हैं। एण्टोनिया के व्यवहार से उन्हें ज़रूर चोट पहुंची है और यह बात उनकी समझ में नहीं आती कि तुम अपने जैसी हैसियत वाली लड़कियों के बदले टीनी और लेना के साथ रहना क्यों पसन्द करते हो?"

"तुम तो समझ सकती हो न?" मैंने छूटते ही पूछा।

फ्रांसिस ने हंसकर कहा, "हां, कुछ तो समझ ही सकती हूं। तुम उन्हें देहात से जानते हो और उनके प्रति तुम्हारा पक्षपात स्वाभाविक भी है। कुछ मानी में तुम अपनी उम्र के लड़कों से ज़्यादा वयस्क हो! कालेज की परीक्षाएं पास करके जब गम्भीर हो जाओगे तो अम्मां को कोई चिन्ता नहीं रह जाएगी। तुम तैयारियों में जुटे हो, यह उन्हें मालूम है।"

"यदि तुम लड़का होतीं," मैं फिर भी कहता रहा, "तो मेरी ही तरह व्यवहार करती और आउल क्लब का सदस्य कभी न बनतीं।"

उसने सिर हिलाते हुए कहा, "क्या कहा जा सकता है! शायद बन जाती, शायद न भी बनती। मेरा तो ख्याल है कि मैं देहाती लड़कियों को

तुमसे ज़्यादा जानती हूं। तुम उन्हें व्यर्थ ही तूल देते हो ! न ये इतनी सुन्दर हैं, न इतनी आकर्षक। पर अतिभावुक (रोमांटिक) होने के कारण तुम उन्हें इन्द्रलोक की अप्सराएं समझने लगे हो। तुम्हारे साथ यही मुश्किल है। खैर, छोड़ो इस बात को। अम्मां तुम्हारे दीक्षान्त समारोह (कमेन्समेंट) में आने वाली हैं। अभी कल ही मुझसे पूछ रही थीं कि तुम वहां किस विषय पर भाषण दोगे। वे हृदय से चाहती हैं कि तुम्हारा भाषण अच्छा हो और तुम अच्छे नम्बरों से उत्तीर्ण हो जाओ।"

दीक्षान्त समारोह में मैंने खब जमकर भाषण दिया और मेरे खयाल में वह काफी अच्छा रहा। मैंने उसमें बहुत-सी बातों का और खास तौर पर मेरे इधर के विचारों, मान्यताओं और जानकारियों का बड़े प्रभावशाली ढंग से उल्लेख किया था। मिसेज़ हार्लिङ्ग ऑपेरा हाउस में हमारे दीक्षांत भाषण सुनने के लिए आई थीं और अधिकतर मैं उन्हींकी ओर देखते हुए बोला था। और वे तो पूरे समय अपनी तीक्ष्ण विदग्ध दृष्टि से मेरी ही ओर देखती रही थीं। बाद में वे मंच के पीछेवाले कमरे में, जहां हम अपने प्रमाण-पत्र लिए खड़े थे, आईं और खुशी से उमगते स्वर में बधाई देते हुए बोलीं, "तुमने तो कमाल ही कर दिया जिम ! इतना अच्छा, युक्तियुक्त और जमकर बोलोगे, इसकी मुझे उम्मीद नहीं थी। तुमने अपने निरीक्षण, पर्य-वेक्षण और अनुभव की बात कही। किताबों में ऐसे भाषण नहीं हुआ करते।" उस दिन मुझे जो पुरस्कार और उपहार मिले उनमें मिसेज़ हार्लिङ्ग की ओर से एक रेशमी छाता भी था, जिसकी मूठ पर मेरा नाम लिखा था।

ऑपेरा हाउस से मैं अकेला घर लौटा। मेथोडिस्ट चर्च के पास पहुंचा तो वहां मैपिल वृक्ष के नीचे, घनी पत्तियों से छनकर आती चांदनी में, तीन सफेद आकृतियां चहलकदमी कर रही थीं। मुझे आते देख वे दौड़कर मेरे पास आ गईं। वे लेना, टोनी-अन्ना हानसेन थीं और वहां मेरी प्रतीक्षा कर रही थीं।

"जिम, गज़ब का भाषण था तुम्हारा।" टोनी की मारे उत्साह के सांस नहीं समा रही थी। "ब्लैकहॉक में तो कोई भी वकील न होगा, जो इतना बढ़िया भाषण दे सके ! मैंने यही बात तुम्हारे दादाजी से भी कही है। हालांकि तुम्हें बताएंगे नहीं, पर वे खुद बड़े प्रसन्न और विस्मित थे। क्यों

सहेलियो, कह रहे थे न ?"

लेना बगल से निकलकर मेरे पास आ खड़ी हुई और छेड़ते हुए बोली, "हाय राम, तुम इतने गम्भार क्यों हो गए थे ? मैं डरी कि घबरा गए हो और अब सारा भाषण भूल जाओगे।"

अन्ना ने उत्कण्ठित होकर कहा, "मन में ऐसे विचार और उनको प्रकट करने के लिए ठीक शब्दों का होना किसीके भी लिए कितनी अच्छी और खुशी की बात है। जिम, मुझे तुम्हारे इस सौभाग्य पर ईर्ष्या होती है। सब पढ़ने की माया है; और काश, मैं भी स्कूल जा पाती!"

"मैं वहां बैठी सोच रही थी, जिम, कि मेरे बापू अगर तुम्हारे इस भाषण को सुन पाते तो कितने खुश होते।" एण्टोनिया ने मेरे कोट के पल्ले थाम लिए थे, "तुम्हारे भाषण में ऐसा जाने क्या था कि मुझे रह-रहकर बापू याद आ रहे थे।"

"जब मैंने भाषण लिखा तो तुम्हारे बापू के ही विचार आ रहे थे।" मैंने कहा, "और टोनी, मैंने अपना यह भाषण उन्हींको समर्पित किया है।"

वह मुझसे लिपट गई और उसका चेहरा आंसुओं से तर हो गया।

वे फुटपाथ पर चलती हुई आंखों से ओझल हो गईं और मैं वहीं खड़ा उनकी सफेद पोशाकों को छोटा और छोटा होता हुआ देखता रहा। जीवन में सफलताएं तो और भी कई आईं, मार्के भी बहुत-से मारे लेकिन मन-प्राणों को विभोर करने वाली वैसी प्रसन्नता मैंने फिर कभी नहीं जानी।

१४

दीक्षांत-समारोह के दूसरे दिन मैं अपनी किताबें और मेज़-कुर्सी ऊपर के एक खाली कमरे में उठा लाया और जी-जान से पढ़ाई में जुट गया। यहां एकांत में मैं बिना विघ्न-बाधा के खब मन लगाकर पढ़ सकता था। गर्मियों में मैंने त्रिकोणमिति का साल-भर का कोर्स पूरा कर डाला और अकेले अपने-

आप कवि वरजिल की रचनाओं का अध्ययन आरम्भ कर दिया। रोज़ सवेरे कमरे की धूप में घूमता और दूर नदी के धोरों और बीच के चरागाहों को देखता हुआ मैं वरजिल की काव्यकृति 'एनीड' पढ़ता और उसके पद्यों को मुखाग्र किया करता। कभी शाम को जब उनके घर के सामने से निकलता तो मिसेज़ हार्लिंग मुझे अपने यहां बुला लिया करतीं और पियानो बजाकर सुनातीं। उन्हें अपने बेटे चार्ली की याद सताया करती और मुझसे वे उसके अभाव को पूरा करने की कोशिश करती थीं—और यह बात स्वयं उन्होंने मुझे बताई थी। जब कभी दादाजी को मेरी योग्यता या दादीजी को मेरी उम्र के बारे में संशय हो जाता और दोनों सोचने लगते कि मैं कॉलेज में अकेला रह भी पाऊंगा या नहीं, तो मिसेज़ हार्लिंग बड़े ज़ोर-शोर से मेरा पक्ष ग्रहण कर उनके सारे संशयों को निर्मूल कर दिया करती थीं। दादाजी मिसेज़ हार्लिंग की राय की बड़ी कद्र करते थे और मैं जानता था कि वे कभी उनके खिलाफ नहीं जाएंगे।

उस साल पूरी गर्मियों में मैंने सिर्फ एक ही छुट्टी मनाई और वह भी जुलाई में। एक शनिवार के दिन तीसरे पहर एण्टोनिया मुझे बाज़ार में मिल गई और उसने बताया कि अगले दिन वह, टीनी और लेना अन्ना हानसेन के साथ नदी जा रही हैं। एल्डर में फूल खिलने लगे थे और अन्ना शराब बनाने के लिए इन फूलों का भभका लगाना चाहती थी।

"अन्ना हमें मार्शलों की घोड़ागाड़ी में ले जाएगी। हमने सैर और वहीं खाने-पीने का कार्यक्रम बनाया है। बस हम चारों सहेलियां ही होंगी, और कोई नहीं। अगर तुम भी चल सको, जिम, तो क्या कहने! पुराने दिनों की याद ताज़ा हो जाएगी।"

मैंने एक क्षण सोचकर जवाब दिया, "चल तो सकता हूं, अगर किसीको एतराज़ न हो।"

रविवार के दिन मैं मुंह-अंधेरे ही घर से निकल पड़ा और बस्ती से बाहर आ गया। रात में खूब ओस पड़ी थी और इस समय घास तुहिन-कणों से पटी हुई थी। चारों ओर ग्रीष्मकालीन रंग-बिरंगे फूल अपनी बहार दिखा रहे थे। सड़क के किनारे-किनारे मधुमालती के लम्बे गुलाबी फूल खिले थे; और रोहिणी एवं दधिपुष्पक तो सभी जगह छिटके हुए थे। तारों

वाली बागुड़ के पार लम्बी घास में मैंने दुग्धी के चटक केसरिया फूलों के कुछ पौधे भी देखे, जो हमारे इधर बहुत ही कम पाए जाते हैं। आगे, सड़क से कुछ हटकर, घास कटे एक चरागाह में गैलर्डिया की लाल-पीली कालीन-सी बिछी हुई थी। मैं सड़क छोड़ इस टुकड़े का चक्कर लगाता हुआ आगे बढ़ा। इस समय लवा पक्षियों के अलावा मैदान में कोई भी जीव-जन्तु नहीं था। सारा मैदान खाली और सूना पड़ा था और लगता था मानो धरती मुझसे गले मिलने ऊंची उठ आई हो।

पश्चिम की ओर कहीं ज़ोरों की बरसात हुई थी और इसीलिए गर्मियों के बावजूद नदी में पानी अधिक और उसकी धारा का वेग भी प्रबल था। मैंने पुल पार किया और किनारे के झाड़-झंखाड़ों में से होता हुआ नदी के ऊपर की ओर चला। आगे गिलास के झुरमुटों में सब ओर से घिरी एक ऐसी जगह मुझे मालूम थी जहां ओट और एकांत में कपड़े बदले जा सकते थे। इस झुरमुट पर कई जंगली लताएं छाई हुई थीं। यहां पहुंचकर मैंने कपड़े उतारे और नदी में तैरने चला। लड़कियों के आने में अभी काफी देर थी। अब पहली बार लगा कि यहां से चले जाने पर इस नदी की खूब-खूब याद आएगी। रेतीले धोरों, बेंत के कुंजों और चिनार के पौधोंवाले इन साफ-सफेद किनारों पर हम लोग बहुत धूम मचाया करते थे और कहा जा सकता है कि ब्लैकहॉक के लड़कों का इस नदी और यहां के किनारों पर एकछत्र साम्राज्य था। चार्ली हार्लिंग और मैंने साथ-साथ शिकार की टोह में यहां की चप्पा-चप्पा ज़मीन छान मारी थी, नदी में गिरे हर ठूंठ और लट्ठे पर साथ बैठकर मछलियां पकड़ी थीं, हर नाले-खाड़ी में और ढाल-कराड़ पर चढ़े-उतरे थे और यह किनारा हमें मित्रवत् प्यारा था।

तैरने के बाद मैं योंही छिछले में पड़ा पानी उछाल रहा था कि पुल पर गाड़ी के गुज़रने और घोड़ों की टापों की गूंज सुनाई दी। मैं ज़ोर से चिल्लाया और गोता मारकर धारा के साथ-साथ पुल की ओर तैर चला। उन्होंने गाड़ी पुल के बीचोबीच लाकर खड़ी कर दी और अन्दर बैठी दोनों लड़कियां बाहर कोचबक्स पर बैठी अपनी सहेलियों के कंधे पकड़कर खड़ी हो गईं। अब वे चारों मेरी ओर इस तरह देख रही थीं मानो कोई हिरन झाड़ी में से निकलकर नदी पर पानी पीने आ गया हो! मुझे अपनी जगह

से वे ऊपर गाड़ी में खड़ी बहुत सुन्दर लग रही थीं। मुझे पुल के पास पांव टिकाने को ज़मीन मिल गई। मैंने पानी में खड़े होकर दोनों हाथ हिलाते हुए चिल्लाकर उनसे कहा, "कितनी खूबसूरत लग रही हो तुम लोग !"

"तुम भी कुछ कम नहीं जंच रहे हो।" उन्होंने जवाब दिया और खिल-खिलाकर हंस पड़ीं। फिर अन्ना हानसेन ने घोड़ों की रास ढीली कर दी और गाड़ी खड़खड़ाती हुई आगे बढ़ गई। मैं भी गोते लगाता कपड़े उतारने की जगह आया और नदी पर फैली देवदार की एक शाखा के सहारे किनारे पर आ गया। थोड़ी देर मैं धूप में बदन सुखाता रहा और फिर धीरे-धीरे कपड़े पहनने लगा। उस झुरमुट को छोड़कर जाने का मेरा मन नहीं हो रहा था। हरियाली से छाई उस ठण्डी जगह में लता-पत्रों से छन-छनकर धूप अन्दर आ रही थी और पास ही देवदार के टेढ़े-मेढ़े पेड़ पर कठफोड़ा ठक-ठक कर रहा था। आखिर मैं बाहर निकला और सड़क-सड़क पुल की ओर चल दिया। रास्ते में सूखी नालियों में से खड़िया मिट्टी के ढेले उठाता और उन्हें अपने हाथों में तोड़ता-मसलता चला जा रहा था।

जब मैं पहुंचा तो लड़कियां घोड़े को छाया में बांध अपनी-अपनी डलिया लेकर रेत और झाड़-झंखाड़ के बीच से जाती सड़क-सड़क पूरब की ओर चली गई थीं। एक-दूसरे को पुकारती उनकी आवाज़ें सुनाई दे रही थीं। एल्डर के पौधे आम तौर पर धोरों के बीच तराई की ठण्डी और छायादार ज़मीन में नहीं उगते। इन पौधों को रेतीली ज़मीन, नमी और धूप तीनों चीज़ों की ज़रूरत होती है। इसलिए नाले के किनारे रेतीले पट में एल्डर के कुंज के कुंज छाए हुए थे। यहां इनकी जड़ों को भरपूर नमी और फुन-गियों को काफी धूप मिल जाया करती थी। उस साल गर्मियों में एल्डर की बहार देखते ही बनती थी—डाली-डाली सुन्दर फूलों से लदी हुई थी।

मैं घुटनों ऊंची घनी झाड़ियों के बीच जानवरों की आवा-जाही का रास्ता पकड़ आगे बढ़ा तो ऐसे कगारे पर निकल आया जिसका तीखा ढाल सीधा पानी के किनारे पहुंच रहा था ! पिछली बरसात में नाले की तेज़ धारा से कगार का काफी बड़ा हिस्सा कट गया था और अब उसपर ऊपर से लेकर नीचे, पानी के सिरे तक एल्डर के पौधे उग आए थे। ऊपर से देखने पर लगता था जैसे पूरे ढाल पर एल्डर के फूलों की चादर बिछी हो ! वहां

मैं एक क्षण सुध-बुध खोया-सा खड़ा रहा ! चारों ओर व्याप्त नीरवता और ढेर-ढेर लहराते फूलों ने मुझे परितृप्त और अभिभूत कर दिया था। पुष्पों के उस विस्तार को छूने और उस नीरवता को भंग करने का मेरा मन नहीं हो रहा था। सिर्फ मधुमक्खियों की गुन-गुन और नीचे बहते सोते की कल-कल, छल-छल की आवाज़ आ रही थी। फिर मैंने कगार पर से झुककर उस सोते को देखा; रेत के एक लम्बे टीबे ने उसे नदी के मुख्य प्रवाह से अलग कर दिया था; और नदी की गंदली धारा के मुकाबले इस नाले का पानी इतना स्वच्छ और साफ था कि पेंदी के कंकर-पत्थर और रेत-बालू मुझे साफ दिखाई दे रहे थे। वहीं किनारे की कुछ बाहर को निकली हुई ज़मीन पर स्तूपाकार एल्डरों के नीचे एण्टोनिया बैठी हुई थी। मेरी आवाज़ सुनकर उसने ऊपर देखा और मुस्कराई, लेकिन चेहरे से लगता था जैसे रो रही हो। मैं बालू पर फिसलता हुआ उसके पास पहुंच गया और रोने का कारण पूछा।

"घर और देश की याद आ गई, जिम्मी।" उसने मधुर-कोमल स्वर में कहा, "इन फूलों और इस गन्ध ने मुझे अपने पुराने देश की याद दिला दी। हमारे यहां ये फूल ढेर के ढेर होते थे। मेरे ही आंगन में बहुत-से एल्डर उगे हुए थे। बापू उनके नीचे हरी बेंच पर बैठा करते और पास ही एक हरी मेज़ रखी रहती। गर्मियों में जब फूल खिलते तो बापू और तुरही बजानेवाला उनका दोस्त वहां बैठे घंटों अच्छी-अच्छी बातें किया करते। मैं उनके पास जा खड़ी होती और सुना करती। वैसी सुन्दर बातें इस देश में आकर मैंने किसीसे नहीं सुनीं।"

"किस विषय पर बातें करते थे वे ?" मैंने पूछा।

उसने लम्बी सांस लेकर सिर हिलाते हुए कहा, "यह तो मुझे मालूम नहीं; लेकिन संगीत और जंगल और ईश्वर आदि के बारे में बातें किया करते थे और उन दिनों वे जवान भी थे।" फिर मेरी आंखों में आंखें गड़ाकर सहसा पूछ बैठी, "क्यों जिम्मी, क्या मेरे बापू की आत्मा लौटकर फिर वहीं चली गई होगी, तुम्हारा क्या खयाल है ?"

तब पहली बार मैंने उसे अपनी उस दिन की अनुभूति के बारे में बताया जब दादाजी और दादीजी उसके पिता के शव को देखने के लिए गए थे और मैं

घर में अकेला रह गया था। फिर मैंने उससे कहा कि यदि तुम्हारे पिताजी की आत्मा अपने देश पहुंच नहीं गई होगी तो वह उसी रास्ते पर होगी और जल्दी ही पहुंच जाएगी। आज भी जब मैं उनकी कब्र के पास से गुज़रता हूं तो यही लगता है कि हाड़-मांस जरूर यहां की मिट्टी में पड़ा है, लेकिन आत्मा तो उड़कर अपने प्यारे देश के मनोरम जंगलों और सुहावने खेतों में पहुंच गई होगी।

अगाध विश्वास, स्नेह और भोलापन भरा था एण्टोनिया की उन आंखों में ! ऐसी निश्छल, प्रेमालोकित आंखें मैंने तो आज तक दुनिया में दूसरी नहीं देखीं।

"हाय, यह तुमने मुझे पहले क्यों नहीं बताया ? आज तुम्हारे मुंह से सुनकर अपने बापू के बारे में मैं कितनी निश्चिन्त हुई !" उसने थोड़ी देर के बाद कहा, "तुम तो जानते ही हो, जिम कि बापू अम्मां से कितने भिन्न थे ! असल में उन्हें अम्मां से शादी नहीं करनी चाहिए थी। यह उन्होंने अपने जीवन में बहुत बड़ी गलती की। मेरे सब चाचा उनसे इस बात पर नाखुश थे। घर के बड़े-बूढ़े भी इसी कारण उनसे नाराज़ रहते थे। उनका कहना था कि शादी करने के बदले कुछ दे-दिलाकर गला छुड़ा लेना चाहिए था। लेकिन बापू को यह पसन्द नहीं था। वे अम्मां से उम्र में बड़े थे, अपनी ज़िम्मेदारी समझते थे और बुरा व्यवहार तो ज़रा भी नहीं करना चाहते थे। बापू अपनी अम्मां के घर में रहते थे और मेरी मां गरीब घर की लड़की थी और वहां काम करने आती थी। शादी के बाद दादीजी इस कदर नाराज़ हुईं कि अम्मां को घर में पांव नहीं रखने दिया और बापू को भी घर से निकाल दिया। दादी मरीं तो पहली बार मैं उनके घर गई थी। है न अजीब बात ?"

वह बोलती रही और मैं तपी बालू में चित लेटा एल्डर के पुष्पगुच्छों की ओट से झांकते नीले आकाश की ओर देखता रहा। मधुमक्खियां ऊपर ही ऊपर धूप में फूलों पर मंडराती हुई गुनगुना रही थीं। कुशल हुई कि वे नीचे छांह में उतरकर नहीं आईं। उस दिन एण्टोनिया मुझे ठीक उस बालिका की तरह लग रही थी जो मिस्टर शिमरडा की अंगुली पकड़े हमारे घर आया करती थी।

"किसी दिन टोनी, मैं ज़रूर तुम्हारे देश जाऊंगा और उस कस्बे में भी जहां तुम लोग रहते थे। क्या तुम्हें उस कस्बे के गली-रास्ते अब भी याद हैं?"

"जहां जन्मी और बड़ी हुई उस जगह को और वहां की राह-बाट को भूल जाऊंगी ? कैसी बात करते हो जिम ! आंख बांधकर आधी रात में भी छोड़ दो तो सारे कस्बे में घूम-घामकर नदी पार उस कस्बे में चली जाऊंगी, जहां मेरी दादीजी रहती थीं। बस्ती तो ठीक, जंगल के भी सारे रास्ते मेरे पांवों के जाने-पहचाने हैं—कहां जड़ें उभरी हुई हैं, कहां गड़हे हैं, कहां ठोकर लग सकती है और कहां पांव मोच खा सकते हैं, सब मुझे मालूम है। अपना देश और घर-द्वार कभी भूल सकती हूं ?"

ऊपर टहनियों के टूटने की आवाज़ सुनाई दी। देखा तो लेना लिंगार्ड कगार पर खड़ी नीचे झांककर देख रही थी।

"अरे महकचियो", उसने चिल्लाकर कहा, "इतने ढेर के ढेर फूल यहां हैं और तुम दोनों पड़े पीनक ले रहे हो !" मेरे सपनों-जैसा लाल मुखड़ा लिए उसने कगार पर से झुककर फूलों के हमारे स्तूप को ढहा दिया। उसमें इतनी शक्ति और उत्साह मैंने पहले कभी नहीं देखा था। उसके ऊपर वाले छोटे, प्रणयातुर ओठ पर पसीने की बूंदें छिटक आई थीं। मैं उठकर खड़ा हो गया और दौड़ता हुआ ऊपर चढ़ गया।

सूरज अब ठीक माथे पर आ गया था और इतनी गरमी हो गई थी कि पेड़ों की पत्तियां निर्जीव-सी लटकने लगी थीं। मैं खाने का सामान उठाकर खड़िया मिट्टी के एक टीले के ऊपर ले आया। यहां घास पर बलूत वृक्षों की छाया थी और उमस वाले दिन भी हवा के झोंके आते रहते थे। नीचे बल खाती हुई नदी बही जा रही थी और वृक्षों में लुका-छिपी खेलता ब्लैकहॉक दिखाई देता था और उसके पार दूर क्षितिज की कोर तक फैला हुआ मैदान। वहां से परिचित खेत-खलिहानों और पवनचक्कियों को हम देखने-पहचानने का प्रयत्न करने लगे। हर लड़की, जिस ओर उसके पिता का खेत-खलिहान था, हाथ से दिखाती हुई मुझसे कहने लगी कि इस बार उनके यहां कितने एकड़ में गेहूं और कितने एकड़ में मक्का बोई गई है।

टीनी सोडरबाल ने कहा, "इस बार हमने बीस एकड़ में राई बोई है।

मिल में पिसवा लेते हैं और बहुत बढ़िया रोटी बनती है। जब से दादा राई बोने लगे हैं अम्मां को देश की याद कम आती है और पेट भरकर खाने भी लगी हैं।"

"मांओं बेचारियों की मुसीबत ही है।" लेना ने कहा, "अपने-अपने देश छोड़कर आना पड़ा और यहां तरह-तरह के नये-नये काम करने पड़ रहे हैं। मेरी अम्मां हमेशा से शहर में रहीं। खेती-बाड़ी का कोई काम आता नहीं। यहां मजबूरी हालत में करती तो हैं, पर जम नहीं पाता। बूढ़े तोते को बोलना सिखाने जैसी बात है।"

"ठीक कहती हो बहिना," अन्ना ने गम्भीर होकर कहा, "नये मुल्क में बेचारे बूढ़ों की जान सच में मुसीबत हो जाती है। मेरी दादी काफी कमज़ोर हो गई हैं और भूलने लगी हैं। उन्हें याद ही नहीं रहता कि मुल्क छोड़कर यहां आ गए हैं। यहां समझती हैं कि अभी नार्वे में ही हैं और अक्सर अम्मां से कहती रहती हैं, 'बहू, किनारे पर और मछली हाट ले चलो, मछली हाट!' हर वक्त मछली-मछली भजा करती हैं। मैं जब भी घर जाती हूं तो उनके लिए टीन-बन्द सालमन या मेकेरल मछली ज़रूर ले जाती हूं।"

"बाप रे, कितनी गरमी है!" लेना ने जम्हाई लेकर कहा। वह एक छोटे बलूत के नीचे उतान पड़ी थी। एल्डर फूलों को चुनने-बटोरने की भाग-दौड़ के बाद थककर अब विश्राम कर रही थी। उसने अपने ऊंची एड़ी के स्लीपरों को उतार दिया था, जिन्हें पहिनकर आना मूर्खता ही कही जाएगी। "जिम, इधर आओ, सिर में कितनी बालू भरी हुई है, लाओ निकाल दूं।" और वह मेरे बालों में अंगुलियां चलाने लगी।

एण्टोनिया ने उसे परे धकेल दिया और घुड़कते हुए बोली, "दुत्, इस तरह बालू निकल चुकी।" फिर उसने मेरे सिर को दोनों हाथों से पकड़कर खूब ज़ोर से हिलाया और एक-एक धौल दोनों ओर जमाकर छुट्टी कर दी; "चलो, निकल गई बालू।" अन्त में लेना से बोली, "अब तो इन स्लीपरों पर रहम करो, मत पहना करो; कितने तंग पड़ने लगे हैं तुम्हारे पांवों में! मुझे दे दो, युल्का के लिए।"

लेना अपने सफेद मोज़ों को स्कर्ट से ढांपती हुई बोली, "अच्छी बात है, ले लेना। युल्का के लिए हर चीज़ तुम्हीं खरीदा करती हो न? क्या

बताऊं, बापू के कृषि-यंत्रों का दाम चुकाने के आगे मैं तो बहिनों के लिए कभी कुछ खरीद ही नहीं पाती। लेकिन इस बार तो अक्तूबर में मेरी के लिए एक नया कोट खरीदूंगी ही, चाहे उस कम्बख्त हल की किस्त रोकना ही क्यों न पड़े।"

टीनी ने सुझाया कि अक्तूबर के महीने में कोट खरीदने में क्या तुक है ! क्रिसमस पर खरीदना चाहिए; तब काफी सस्ते हो जाते हैं, और फिर बोली, "ज़रा गौर करो, मुझ बेचारी का क्या हाल होता होगा ? पूरे छह बच्चे घर पर हैं और सब मुझसे छोटे। और वे मुझे अमीर समझते हैं, क्योंकि गांव जाना होता है तो बढ़िया कपड़े पहनकर ही जाती हूं।" उसने कन्धे सिकोड़े और आगे बोली, "लेकिन तुम सब जानती ही हो कि खिलौने मेरी खास कमज़ोरी है। जब भी घर जाती हूं उनके लिए खिलौने ज़रूर ले जाती हूं, ज़रूरत की कोई चीज़ कभी नहीं ले जाती।"

"तुम्हारी बात मैं खूब समझती हूं, क्योंकि खिलौनों का मोह मुझे भी है।" अन्ना ने कहा, "जब हम यहां आए तो मैं छोटी-सी थी और गरीबी के कारण खिलौने नहीं खरीद सकते थे। नार्वे से चलते समय किसीने मुझे एक खिलौना दिया था, जहाज़ पर एक लड़के ने उसे तोड़ डाला। अभी तक मैं उसे माफ नहीं कर सकी हूं, भूलना तो दूर की बात है।"

"बेजान खिलौने पर इतना क्या अफसोस, हुंह्।" लेना ने अक्खड़ता से कहा, "यहां आने पर तो तुम्हें भी मेरी तरह रखने और खिलाने के लिए जीते-जागते कई गुड्डे-गुड़िया मिल गए होंगे।"

"हां भई, बच्चे तो एक के बाद एक होते ही जाते हैं। मैं बच्चों से नहीं घबराती; बच्चे मुझे बहुत अच्छे लगते हैं। अब जो छुटकेवाला है न, कोई नहीं चाहता था कि वह हो, लेकिन हो गया तो सबका दुलारा है और सभी उसपर जान छिड़कते हैं।"

लेना ने आह भरकर कहा, "बच्चे बुरे किसीको नहीं लगते, पर सर्दियों में नहीं होने चाहिए। जबकि हमारे यहां हमेशा सर्दियों में ही होते हैं। पता नहीं, अम्मां कैसे इतना सब सह पाती हैं ! सुनो सहेलियो," वह एकदम उठकर बैठ गई और बोली, "मैंने अम्मां को उस गारे-मिट्टी के घर से उबारने का फैसला कर लिया है। भाई लोग कभी नहीं करेंगे। यह काम मुझीको

करना होगा। मेरे बड़े भाई जानी को अभी से अपनी शादी की पड़ी है, और बहूरिया के लिए घर बनाएंगे, अपनी मां के लिए नहीं। मिसेज़ टामस कह रही थीं कि लेना, तुम इतना सीख-साख चुकी हो कि अब किसी भी कस्बे में जाकर अपना कारबार कर सकती हो। या तो अपना कारबार करूंगी या फिर किसी मालदार सटोरिये से शादी कर लूंगी।"

"सटोरिये से शादी—छिः !" अन्ना ने मुंह बिगाड़कर कहा, "ज़िन्दगी तबाह कर लोगी। मैं तो सेल्मा क्रोन की तरह किसी स्कूल में पढ़ाना चाहती हूं। यहां के हाईस्कूल में मास्टरनी बननेवाली वह पहली स्विडी-नार्वी लड़की है; सोचो तो कितनी बड़ी बात है ! हमें उसपर गर्व होना चाहिए।"

सेल्मा पढ़ने-लिखने में मन लगानेवाली मेहनती लड़की थी। वह टीनी और लेना की तरह तड़क-भड़क और मौज-शौक के पीछे भागती नहीं फिरती थी। फिर भी सब लड़कियां उसकी तारीफ करती थीं।

टीनी ने बेचैनी से करवट बदली और अपने पुआल के बने टोप से हवा करती हुई बोली, "मेरा भी दिमाग उसके जैसा तेज़ होता तो रात-दिन पढ़ा करती। परन्तु यहां तो कुन्द दिमाग लेकर जन्मे हैं और वह जन्म से ही तेज़ थी। और फिर उसके बाप ने पढ़ाने में कोई कसर नहीं छोड़ी; खुद पढ़ाता था उसे। कहते हैं कि अपने देश में वह काफी बड़ा आदमी था।"

"मेरे नाना भी बहुत बड़े आदमी थे।" लेना ने कहा, "लेकिन उससे हमें क्या फायदा ? हम तो यहां, इस हालत में आन पड़े हैं। मेरे दादाजी भी बहुत होशियार और तेज़-तर्रार थे, मगर साथ ही, हद दर्जे के ज़िद्दी और अपने मन की करनेवाले। उन्होंने लेप औरत से शादी कर ली। मेरी नसों में भी थोड़ा-बहुत लेप खून होना चाहिए, तभी न मैं इस तरह का बर्ताव करती हूं !"

"क्या कहती हो, लेना", मैंने आश्चर्य से पूछा, "लेप औरत से शादी कर ली ? खालिस लेप से, जो चमड़ा पहनते हैं ?"

"चमड़ा पहनती थी या नहीं, यह तो नहीं जानती, पर थी वह लेप। दादाजी के घरवाले बुरी तरह परेशान हो गए थे। बात यह हुई कि वे सरकारी नौकर थे और सरकार के ही काम से उत्तर में गए थे। वहां लेप दादी से मुहब्बत हो गई और दादाजी शादी करके ही रहे।"

"लेकिन मैं तो समझता हूं कि लेप औरतें मोटी और बदसूरत होती हैं और उनकी आंखें चीनियों की तरह चुन्दी और तिरछी होती हैं।" मैंने प्रतिवाद करते हुए कहा।

"हो सकती हैं, मुझे नहीं मालूम ! लेकिन इतना जानती हूं कि उनमें ऐसी कोई बात ज़रूर है जो आदमियों को लुभा लेती है। तभी तो उत्तर में रहनेवाली नार्वी माताओं को हमेशा यह डर लगा रहता है कि कहीं उनके लड़के लेप औरतों के मोह में न फंस जाएं।"

तीसरे पहर जब गर्मी कुछ कम हो गई तो हम बलूत के पेड़ों पर 'बिल्ली चाहे कोना' खेलते रहे। लेना को ही हर बार दांव देना पड़ा और वह इतना थक गई कि अन्त में हारकर बैठ रही ! तब हम भी कूदकर नीचे आ गए। थक तो हम भी गए थे।

जब सब लोग घास पर बैठ गए तो एण्टोनिया ने उनींदे स्वर में कहा, "जिम, स्पेनियों के यहां पहले-पहल आने के बारे में तुम और चार्ली हार्लिंग जो बातें किया करते थे वे इन लड़कियों को भी बताओ न ! वैसे मैं सुनाती तो रही हूं, पर सारी बातें मुझीको कहां मालूम हैं।"

हम बलूत के एक छोटे वृक्ष के नीचे बैठे थे। टोनी पेड़ के तने से टेक लगाए बैठी थी और दूसरी लड़कियां उसका और आपस में एक-दूसरे का सहारा लिए हुए थीं। मैंने उन्हें कोरोनाडो का किस्सा सुनाया कि सात सुनहले शहरों की तलाश में वह कहां-कहां गया और उसने क्या-क्या किया। स्कूल में तो हमें यही पढ़ाया जाता है कि कोरोनाडो इधर उत्तर में नेब्रास्का तक नहीं आया था, वह कनसास से ही लौट गया था। लेकिन चार्ली हार्लिंग और मेरा यह दृढ़ विश्वास था कि वह हमारी इसी नदी के किनारे-किनारे इधर बहुत दूर तक चला आया था। हमारी काउण्टी के उत्तरी छोर पर जब एक किसान नई धरती तोड़ रहा था तो उसे अपने खेत की मिट्टी में से धातु की एक रकाब और एक तलवार मिली थी; रकाब पर बढ़िया कारीगरी की हुई थी और तलवार के फलक पर स्पेनी भाषा में कुछ लिखा हुआ था। उसने दोनों चीज़ें मिस्टर हार्लिंग को दे दी थीं और वे उनके दफ्तर में लोगों के देखने के लिए गर्मियों-भर रखी रही थीं। मैं और चार्ली अक्सर उस रकाब और तलवार को उलट-पलटकर देखा करते थे। पादरी

फादर केली स्पेनी भाषा जानते थे और उन्होंने पढ़कर बताया था कि तलवार के फलक पर उसे बनानेवाले का पूरा और कोर्डोवा शहर का संक्षेप में नाम लिखा हुआ था।

"उन दोनों चीज़ों को खुद मैंने भी अपनी इन आंखों से देखा है।" एण्टोनिया ने विजय-गर्व से कहा, "इसलिए जिम और चार्ली की बात सच है और इनके स्कूल के मास्टरों और किताबों की बात गलत।"

अब लड़कियों की जिज्ञासा जाग उठी और वे पूछने लगीं कि स्पेनी लोग यहां तक क्यों आए ? जब वे इधर आए तो यह इलाका कैसा था ? कोरोनाडो स्पेन लौटकर क्यों नहीं गया ? वहां तो उसकी कई गढ़ियां और हवेलियां थीं और धन भी अपरम्पार था और वह स्पेन के राजा का प्रमुख सरदार था, फिर भी लौटकर क्यों नहीं गया ? मैं क्या जवाब देता ? असल में मेरे पास इन सब सवालों का कोई जवाब नहीं था। स्कूली किताबों में लिखा था कि, "बियाबान में उसका दिल टट गया, और वह मर गया", और सिर्फ इतना ही मैं जानता था।

"नहीं जी, ज़रूर कोई और बात रही हागी।" एण्टोनिया ने उदास स्वर में कहा और बाकी सब लड़कियों ने सिर हिलाकर उसकी बात का समर्थन किया।

अब सूरज डूब रहा था। हम पश्चिमाकाश को रक्तवर्ण होते और सूरज के गोले को धीरे-धीरे क्षितिज में उतरते हुए देखते रहे। अस्त होते हुए सूरज की लाली ने सारी दिशाओं और समस्त जड़-चेतन को लाल रंग से रंग दिया था। हमारे चारों ओर की घास और बलूत वृक्षों की छाल और नदी की धारा सभी कुछ लाल हो गया था। बेत की झाड़ियों के हवा में हिलने-डुलने से उनपर पड़ रही लाल किरणें ऐसी लगती थीं मानो उनमें से आग की लपटें उठ रही हों। धारा के बीच में बालू के जो टीबे थे वे कांच की तरह चमकने लगे थे। हवा एकदम बन्द हो गई थी। नीचे तराई में कहीं कोई भटकी पण्डुकी उदास स्वर में हूं-हुं-हूं-हुं कर रही थी और फिर कुछ समय बाद झाड़ियों में से किसी उल्लू के घुरकने की आवाज़ आने लगी। लड़कियां एक-दूसरे से सटी बिलकुल मौन और निश्चल बैठी थीं और सूरज की किरणें विराट की लम्बी अंगुलियों की तरह उनके कपालों का स्पर्श कर

रही थीं।

तभी हमने एक विचित्र दृश्य देखा। आसमान में एक भी बादल नहीं था। सोना ढुले निर्मल पश्चिमाकाश में सूरज धीरे-धीरे धरती की ओर ढरकता जा रहा था। क्षितिज छूते ऊंचे खेतों की मिट्टी पर जैसे ही लाल गोले की निचली कोर रखी गई, सूरज के पूरे बिम्ब पर एक बृहदाकार काली छाया उभर आई। हम तुरत उठकर खड़े हो गए और आंखें फाड़े उस ओर देखने लगे। दूसरे ही क्षण सारी बात हमारी समझ में आ गई। ऊपर कहीं किसी खेत में कोई हल खड़ा छोड़ दिया गया था और वह इस समय डूबते हुए सूरज के गोले के सामने आ गया था। तिरछी किरणों के प्रकाश में अपने आकार से काफी बड़ा वह सूर्य-बिम्ब के ठीक बीच में मढ़ा हुआ-सा लग रहा था—काला, भारी और विजय-दर्प से मंडित।

हमारे देखते-देखते वह काली छाया विलीन हो गई और सूरज का पूरा बिम्ब धीरे-धीरे धरती में समा गया। दिशाओं में अन्धकार भरने लगा, निचाईवाले खेत काले हो चले, पश्चिमाकाश में केवल हलकी पीताभ लाली शेष रह गई और वह भूला हुआ हल भी अपने नगण्य-से अस्तित्व के साथ प्रेरी के मैदान में जाने कहां विलीन हो गया।

१५

अगस्त महीने के आखिरी हफ्ते में कटर दम्पति घर की देख-रेख का भार एण्टोनिया को सौंपकर कुछ दिनों के लिए ओमाहा चले गए। स्विडी लड़की की बदनामी के बाद से विक कटर की बीवी अपने पति को ब्लैकहॉक से बाहर कहीं भी अकेला नहीं जाने देती थी।

मालिकों के जाने के दूसरे दिन एण्टोनिया हमारे यहां मिलने आई। उसे उद्विग्न देख दादीजी ने पूछा, "एण्टोनिया, क्या बात है? तुम परेशान नज़र आ रही हो।"

"हां दादीजी", उसने थोड़ी हिचकिचाहट के साथ कहा, "कल रात मैं

सो नहीं सकी।" और फिर उसने बताया कि जाने से पहले मिस्टर कटर चांदी के अपने सारे बर्तन एक टोकरी में भरकर उसके खाट के नीचे रख गए हैं और कागज़ों से भरा एक बक्सा भी, और कहते गए हैं कि इस बक्से में कीमती कागज़ात और दस्तावेज़ हैं; और उससे वादा करा गए हैं कि वह उनके लौट आने तक वहीं उसी खाट पर सोएगी और रात में देर तक घर से बाहर नहीं रहेगी। वे रात में सहेलियों को अपने यहां बुलाने की भी मुमानियत कर गए हैं और सुरक्षा के लिए दरवाज़े पर बड़ा-सा नया येल ताला लगा गए हैं।

कटर ने जाने से पहले इन हिदायतों पर इतना अधिक ज़ोर दिया कि बेचारी एण्टोनिया परेशान हो गई और अब अकेले घर में सोते उसे डर मालूम पड़ने लगा। "जिस तरह वह बार-बार रसोईघर में आकर हिदायतें देता रहा और जिस तरह घूर-घूरकर मेरी ओर देखता रहा उससे आशंका होती है कि वह मुझे डराने और परेशान करने की कोई भद्दी चाल चलना चाहता है।"

दादीजी भी आशंकित हो उठीं और बोलीं, "तब तो तुम्हारा वहां अकेले रहना उचित नहीं। लेकिन वादा कर चुकी हो इसलिए घर को सूना छोड़कर जाना भी ठीक नहीं। एक काम हो सकता है। जिम वहां जाकर सोए और तुम यहां रात में मेरे पास सोने आ जाया करो। फिर तो मुझे भी कोई चिन्ता नहीं रहेगी। उसके बरतनों और दस्तावेज़ों की रखवाली जैसी तुम करती हो वैसी जिम भी कर सकता है।"

एण्टोनिया ने उत्सुक होकर मुझसे पूछा, "क्यों जिम, तुम्हें मंजूर है? मैं रोज़ तुम्हारे लिए बिस्तर लगा दिया करूंगी। रातें ठण्डी हैं और बिस्तरा खिड़की के पास है। तुम्हें ज़रा भी तकलीफ न होगी। मैं तो पिछली रात मारे डरके खिड़की भी नहीं खोल पाई।"

मुझे अपने कमरे में सोना पसन्द था। और कटर का घर मुझे यों भी पसन्द नहीं था, लेकिन टोनी की परेशानी का खयाल कर मैं वहां सोने के लिए राज़ी हो गया। मुझे कटर के घर में भी ख़ूब अच्छी नींद आई और जब सवेरे लौटकर घर आया तो टोनी ने मेरे लिए बहुत बढ़िया नाश्ता बना रखा था। प्रार्थना के बाद वह भी हमारे साथ नाश्ते पर बैठी और मुझे ऐसा

लगा मानो पुराने दिन लौट आए हों।

तीसरी रात की बात है। मैं कटर के घर में सोया हुआ था। सहसा मेरी नींद खुल गई और ऐसा लगा मानो किसीने दरवाज़ा खोला और बन्द किया। लेकिन चारों तरफ सन्नाटा था। मैंने सोचा, भ्रम हो गया और फिर तुरत नींद आ गई।

मैंने किसीको अपनी खाट की पाटी पर बैठते महसूस किया। मैं अभी पूरी तरह जागा नहीं था, पर इतना ज़रूर समझ गया कि आनेवाला कोई भी क्यों न हो बरतन चुराने के इरादे से ही आया होगा। चुप मारकर पड़े रहना ही अच्छा है; वह बरतन समेटकर चलता बनेगा और मुझे तंग नहीं करेगा। मैं दम साधकर लेटा रहा। एक हाथ ने धीरे से मेरा कन्धा पकड़ा और कोलोन से सुवासित बाल मेरे चेहरे पर घिसटने लगे। अपने ऊपर झुके हुए दाढ़ी वाले उस घृणित चेहरे को मैंने उतने अंधेरे में भी देख लिया। मैंने उसकी मूंछें पकड़कर ज़ोर से खींची और चिल्ला उठा। कन्धा दबाने वाला हाथ तुरत मेरे गले में आ गया। वह आदमी पागल हो उठा था। एक हाथ से मेरा गला दबाता, दूसरे हाथ से मेरे चेहरे पर थप्पड़ें मारता वह गुस्से में अनाप-शनाप गालियां बकने लगा।

"तो मेरी गैरमौजूदगी में ये करम करती है वो ? तो ये हैं उस हराम-ज़ादी के लच्छन ? बता रे हरामी की औलाद, कहां है वो ? खाट के नीचे तो नहीं छिपी है री हरामिन तू ? ठहर तो सही, जाएगी कहां, पकड़कर अभी तेरे नखरे में गरम मसाला भर दूंगा ! पहले इस चूहे से निपट लेने दे, तेरे इस यार से ! पकड़ तो गया ही है, अभी मसलकर रखे देता हूं इसे !"

कटर की मुट्ठी में गला रहते तो मेरा कोई बस चल नहीं सकता था। मैंने उसका अंगूठा पकड़कर इतने ज़ोर से मोड़ा कि वह चीख उठा और गला उसके हाथ से छूट गया। मैं तुरत उछलकर खड़ा हो गया और एक ही झापड़ में उसे ज़मीन पर गिरा दिया। फिर मैं खिड़की से बाहर की ओर कूदा, लोहे की जाली से टकराया और उसे लिए हुए बाहर आंगन में जा गिरा।

दूसरे ही क्षण मैं रात के कपड़ों में अपने घर की ओर भागा जा रहा था, ठीक जिस तरह कभी-कभी बुरे सपने देखनेवाले होश-हवास खोकर नींद में

दौड़ने लगते हैं। घर पहुंचकर रसोईघर की खिड़की की राह अन्दर दाखिल हुआ। नाक और ओंठ लहू-लुहान हो गए थे, लेकिन कुछ भी करने से मजबूर था। खूंटी पर मुझे एक ओवरकोट और शाल टंगे दिखाई दिए। दोनों चीज़ों को ओढ़कर बैठक में साफे पर लेट गया और चोट और दर्द के बावजद मुझे नींद आ गई।

दादीजी ने सवेरे मुझे वहां उस हालत में देखा तो चीख पड़ीं। उनके चिल्लाने की आवाज़ सुनकर मैं जाग गया। सच में मेरी हालत देखने काबिल हो गई थी। वे सहारा देकर कमरे के अन्दर ले चलीं तो मुझे कांच में अपनी शक्ल दिखाई दे गई। होंठ कट गया था और थूथन की तरह उठ आया था। नाक जामुन की तरह बड़ी और नीली हो गई थी। एक आंख चोट की मार से सूजकर बन्द हो गई थी। दादीजी डाक्टर को बुलाने दौड़ीं, लेकिन मैंने सफा मना कर दिया। मैं सारा दर्द सहने को तैयार था, लेकिन कोई मुझे इस हालत में देखे यह मेरी बर्दाश्त के बिलकुल बाहर की बात थी। मैंने उनसे कह दिया कि और तो और, आप दादाजी को भी इस कमरे में न आने दें। दर्द और कमज़ोरी के मारे मेरे बुरे हाल हो रहे थे। ज्यादा कुछ कह भी नहीं सकता था। लेकिन दादीजी तुरत मेरा आशय समझ गईं। रात-वाला कमीज़ उतरवाने पर जब उन्हें मेरे कन्धे और छाती पर के घाव दिखाई दिए तो चिहुंक उठीं और बिलख-बिलखकर रोने लगीं। उस दिन सवेरे का उनका सारा समय मेरे घावों की मरहम-पट्टी और चोटों पर तम्बाकड़ू का लेप करने में ही बीत गया। एण्टोनिया दरवाज़े के बाहर खड़ी सिसक रही थी। मैंने दादीजी से कहकर उसे वहां से फौरन दूर हटवा दिया! मुझे उसपर उतना ही गुस्सा आ रहा था जितना कटर पर। अपनी इस दुर्गति का मूल कारण मैं एण्टोनिया को ही समझता था। लेकिन दादीजी का खयाल कुछ और ही था। वे भगवान को धन्यवाद दे रही थीं कि वहां उस समय एण्टोनिया के बदले मैं था और वह बेचारी बाल-बाल बच गई। लेकिन मैं दीवाल की ओर मुंह किए नाराज़ पड़ा रहा। होंठ कटवाने और नाक तुड़वाने के लिए मैं भगवान का कृतज्ञ हो ही कैसे सकता था? फिर मेरी सारी चिन्ता तो यह थी कि लोगों को यह बात बिलकुल ही मालूम नहीं होनी चाहिए, और मन-ही-मन मना रहा था कि दादीजी

किसीको भी मेरे पास न आने दें। अगर लोगों को पता चल जाता तो मेरी ऐसी गत बनाते कि किसीको मुंह भी न दिखा पाता। सबसे ज़्यादा डर था मुझे बड़ी दुकान के सिगार स्टैण्ड में बैठकर गपोड़े हांकनेवाले बूढ़े खूसटों का। बात का बतंगड़ बना देना उनके बाएं हाथ का खेल था। यह किस्सा उनके हाथ पड़ जाता तो जाने कहां पहुंचा देते।

दादीजी इधर मेरी सेवा-टहल में लगी थीं, उधर दादाजी स्टेशन अपने किसी काम से गए थे। लौट आकर उन्होंने बताया कि विक कटर रात में पूरबवाली गाड़ी से घर लौटा था और छह बजे की गाड़ी से डेनवर चला भी गया। स्टेशन एजेण्ट बता रहा था कि उसके चेहरे पर पट्टियां चिपकी हुई थीं और बायां हाथ झोली में पड़ा था। इस कदर पिटा हुआ लग रहा था कि एजेण्ट ने पूछ ही लिया, "क्यों भाई, रात में खुश-खुर्रम उतरे थे और अभी यह हाल? क्या बात हो गई?" बस, सुनते ही कटर लाल-पीला हो गया; लगा गालियां बकने और स्टेशन एजेण्ट को नौकरी से निकलवाने की धमकियां देने।

तीसरे पहर जब मैं सो रहा था, एण्टोनिया दादीजी को साथ लेकर कटर के यहां से अपना सामान उठा लाने के लिए गई। बाहर दरवाज़े पर ताला लगा था, इसलिए उन्हें खिड़की तोड़कर अन्दर जाना पड़ा। एण्टोनिया जिस कमरे में सोती थी, वहां सब चीज़ें अस्त-व्यस्त बिखरी पड़ी थीं। अलमारी में से उसके सारे कपड़ों को निकालकर कमरे के फर्श पर फेंक दिया गया था और उन्हें पांवों से खूब कुचला और रौंदा गया था। मेरे कपड़ों की तो वह दुर्गति हुई कि दादीजी को उन्हें वहीं कटर के रसोईघर में जला देना पड़ा।

एण्टोनिया कमरे के सामान को सहेज-बटोरकर अभी अपना सन्दूक जमा ही रही थी कि दरवाज़े की घण्टी ज़ोर से बज उठी। देखा तो बाहर मिसेज़ कटर खड़ी थीं, नये ताले की चाभी उनके पास नहीं थी और वे मारे गुस्से के अंगारा हुई जा रही थीं। 'आखिर मुझे कहना पड़ा कि जब्त करो, नहीं तो गुस्से से दिमाग ही फट जाएगा।' दादीजी को उनसे कहना पड़ा था।

उन्होंने मिसेज़ कटर को एण्टोनिया से मिलने नहीं दिया। बाहर बरामदे में बिठाए उन्हें बातों में लगाए रहीं। रात वाली सारी घटना दादीजी ने

उन्हें बता दी आर अन्त में यह भी कह दिया कि एण्टोनिया डर गई है और अपने घर जा रही है; उससे पूछना-ताछना बेकार ही होगा, क्योंकि उस बेचारी को कुछ भी नहीं मालूम।

फिर मिसेज़ कटर ने भी दादीजी को अपनी रामकथा सुनाई। कल सवेरे वे और उनके पति दोनों साथ-साथ ओमाहा से घर के लिए चले थे। ब्लैकहॉक की गाड़ी के लिए उन्हें वेमोर जंक्शन पर काफी देर रुकना पड़ा। गाड़ी आने तक पत्नी को स्टेशन पर छोड़ कटर वेमोर बैंक में अपना लेन-देन सम्बन्धी कुछ काम निपटा आया। लौटकर उसने कहा कि मुझे तो यहां रात-भर रुकना पड़ेगा, तुम अकेली घर चली जाओ। वह जाकर उसका टिकट भी खरीद लाया और टिकट के साथ एक बीस डालर का नोट भी उसने पत्नी के बटुए में रख दिया। नोट रखते देख पत्नी को सन्देह होना चाहिए था, पर नहीं हुआ।

लौटनेवाली गाड़ियां छोटे स्टेशनों पर नहीं रुकतीं, इस बात को सभी जानते हैं। कटर ने पत्नी का टिकट कण्डक्टर को दिखा दिया और उसे आराम से एक डिब्बे में बिठा दिया। जब रात होने को आई तब कहीं कटर की पत्नी को पता चला कि वह कन्सास सिटी जानेवाली गाड़ी में बैठी है। उसने टिकट निकालकर देखा तो वह भी कन्सास सिटी का ही था। कटर ने सारा इन्तज़ाम पहले ही कर लिया था। कंडक्टर से पूछने पर पता चला कि वेमोर से ब्लैकहॉक की गाड़ी कन्सास सिटीवाली इस गाड़ी के कोई बारह मिनट बाद ही छूटती थी। वह समझ गई कि ब्लैकहॉक अकेले जाने के ही लिए उसके पति ने यह चाल चली थी। लेकिन अब तो कन्सास सिटी गए बिना कोई चारा नहीं था। मन मारकर वह कन्सास सिटी पहुंची और वहां से पहली गाड़ी में घर लौटी।

अपनी पत्नी से एक दिन पहले घर लौटने के, यदि कटर चाहता तो और भी कई आसान रास्ते हो सकते थे—वह उसे ओमाहा के होटल में छोड़ आता या कह देता कि कुछ दिनों के लिए शिकागो जा रहा है। लेकिन उसे खूब नाराज़ करना भी तो उसका एक हेतु था।

"देख लेना मिसेज़ बरडन, मैं उससे इसका पूरा-पूरा बदला लेकर रहूंगी। जाएगा कहां मुझसे बचकर!" मिसेज़ कटर ने अपना घोड़े जैसा सिर हिलाते

और आंखों को गोल-गोल नचाते हुए कहा।

दादी जी ने उसकी बात को तुरत स्वीकार कर लिया। मिसेज़ कटर अपनी बात पूरी कर दिखाएंगी, इसमें उन्हें ज़रा भी सन्देह नहीं था।

कटर को अपनी पत्नी को उकसाने में मज़ा आता था। वह जितनी ही गुस्सा होती उसे उतना ही मज़ा आता और एक प्रकार का उद्दीपन प्राप्त होता था। आवारगी और दुश्चरित्रता के अपने सारे दुष्कर्मों से उसके अन्दर का शैतान उस हद तक तृप्त नहीं हो पाता था जितना अपनी पत्नी को कुपित, विभ्रमित और हतबुद्धि करके ! वह दिलोजान से चाहता था कि उसकी पत्नी उसे शैतान ही नहीं, शैतान का परकाला समझे। और बहुत अंशों में मिसेज़ कटर ऐसा समझती भी थी। कटर की लम्पटता एक बार भले ही कम हो जाए, उसके लम्पट होने में मिसेज़ कटर का विश्वास कभी घटने वाला नहीं था। बढ़िया खाने के बाद तेज़ शराब का घूंट जिस तरह अनिवार्य होता है, किसी दुष्कर्म के बाद अपनी बीवी से झगड़ा करना कटर के लिए ठीक वैसी ही अनिवार्यता थी। वह सारे उद्दीपनों को छोड़ सकता था, लेकिन अपनी बीवी से झगड़ा करने के उद्दीपन को छोड़ पाना उसके लिए असम्भव था।

तीसरा भाग

विश्वविद्यालय में जाते ही मुझे गैस्टन क्लेरिक नामक एक अत्यन्त प्रतिभाशाली और प्रेरणादायी व्यक्तित्व के सम्पर्क में आने का सुअवसर प्राप्त हुआ। क्लेरिक साहब मुझसे कुछ ही सप्ताह पूर्व लातिन विभाग के अध्यक्ष बनकर लिंकन विश्वविद्यालय में आए थे। वे बड़े ही विद्वान और सहृदय थे। बरसों इटली में रह चुके थे और वहां लम्बी बीमारी में उनका स्वास्थ्य चौपट हो गया था। अब अपने चिकित्सकों की सलाह पर हमारे यहां पश्चिम में रहने आए थे। प्रवेशिका परीक्षा में वे मेरे परीक्षक थे और आगे मेरे पाठ्यक्रम के नियोजक-नियामक भी वही रहे।

जब पहली बार गर्मियों की छुट्टी पड़ी तो मैं घर नहीं गया, लिंकन में ही रहकर ग्रीक भाषा का साल-भर का कोर्स पूरा करता रहा, क्योंकि मुझे इसी शर्त पर प्रथम वर्ष (फ्रेश मैन क्लास) में प्रवेश दिया गया था। क्लेरिक साहब को भी उनके डाक्टरों ने न्यू इंग्लैण्ड जाने की इजाज़त नहीं दी थी, इसलिए कोलोरेडो में कुछ सप्ताह बिताकर वे लौट आए और फिर गर्मियों-भर लिंकन में ही रहे। हम साथ टेनिस खेलते, साथ पुस्तकें पढ़ते और साथ-साथ दूर तक घूमने जाते। वह मेरे बौद्धिक जागरण का काल था और इसीलिए मेरे जीवन का सबसे अच्छा और सुखमय समय भी! उन दिनों की याद कर मैं आज भी आनन्द-विभोर हो जाता हूं। विचारों की दुनिया में मेरा प्रवेश क्लेरिक साहब ने ही करवाया। इस दुनिया में जब पहली बार प्रवेश किया जाता है तो कम से कम कुछ समय के लिए दूसरी किसी चीज़

का भान नहीं रहता, यहां तक कि पहले जो हो चुका है वह भी न हुए के समान प्रतीत होने लगता है। लेकिन विचारों के जगत् में मेरे साथ एक विचित्र बात हुई; मेरे पुराने जीवन की स्मृतियां और अनुभूतियां अब नये रूप-रंग में मेरे सामने आने और नई अर्थवत्ता से मंडित होने लगीं।

उन दिनों विरल बस्तीवाले इस राज्य के छोटे कस्बों और देहातों से लिंकन विश्वविद्यालय में पढ़ने आनेवाले विद्यार्थियों में कई युवक बड़े मेहनती, गम्भीर और धुन के पक्के थे। कुछ लड़के तो सीधे मक्का के खेतों से, अपनी जेबों में सिर्फ गर्मियों की मजूरी के पैसे रखे, चले आए थे और चार बरस तक हर तरह का त्याग करके पढ़ते रहे थे—जाड़ा-पाला, भूख-प्यास, उन्होंने किसीकी भी परवाह नहीं की और ज्ञान-प्राप्ति के अनुष्ठान में लगे रहे और अध्ययन पूरा करके ही गए। हमारे शिक्षकों में भी कई तरह के लोग थे। नई-नई जगहों में जाकर विद्यालय चलानेवाले भ्रमणशील शिक्षक थे, अर्थाभाव सहकर भी प्रोटेस्टेण्ट मत का प्रचार करनेवाले लगनशील पादरी थे, और कुछ नये-नये उत्साही ग्रेजुएट युवक भी थे। प्रेरी में हमारा यह विश्वविद्यालय अभी नया-नया ही स्थापित हुआ था और वहां के वातावरण में आशा, उत्साह और कुछ कर दिखाने की उमंग थी।

हम विद्यार्थियों का वैयक्तिक जीवन भी अपने शिक्षकों की ही तरह मुक्त और स्वच्छन्द था—विद्यालय के अपने होस्टल-छात्रावास आदि न होने के कारण रहने-सहने पर आज की-सी पाबन्दियां नहीं थीं। हम जहां भी और जैसे भी चाहे रह सकते थे और रहते थे। मैं एक ऐसे बूढ़े दम्पति के यहां रहता था, जो लिंकन को बसानेवाले मूल निवासियों में थे। अपने सभी बाल-बच्चों की शादी कर अब वे शान्तिपूर्वक अपने दिन बिता रहे थे। मकान उनका शहर के छोर पर और विद्यार्थियों के लिए बड़ा असुविधाजनक था। उस मकान के बाद प्रेरी का मैदान शुरू हो जाता था, इसीलिए मुझे वहां एक कमरे के किराये पर दो कमरे मिल गए थे। सोने का कमरा बहुत छोटा था, मेरी चारपाई ही मुश्किल से अंट पाती थी और उसे गरम रखने का भी कोई साधन नहीं था। असल में वह कपड़े रखने की छोटी कोठरी थी लेकिन इस कोठरी की बदौलत ही मैं दूसरे कमरे को अपना अध्ययन-कक्ष बना सका था। ड्रेसिंग टेबल और कपड़े-लत्ते रखने की बड़ी

अलमारी को मैंने हटाकर एक ओर रख दिया था और दोनों चीज़ों के अस्तित्व को इस तरह भूल गया था जैसे बच्चे अपने खेल में बाधक होनेवाली वस्तुओं के अस्तित्व को भुला दिया करते हैं। वैसे अलमारी इतनी बड़ी थी कि उसमें मेरे सारे कपड़े ही नहीं, जूते और टोपियां तक समा गई थीं। पश्चिम में प्रेरी के मैदान की ओर खुलनेवाली एक खिड़की थी। वहां मैंने अपने पढ़ने-लिखने की मेज़ लगाई, जो काफी बड़ी थी और जिसका ऊपरी हिस्सा हरे रंग का था। दाहिने हाथ के कोने पर मैंने किताबें रखने के टांड खड़े किए, जिन्हें मैंने ही बनाया और अपने हाथ से रंगा था। बाईं ओर की खाली दीवाल पर पुराने ढंग के मटियाले वालपेपर पर प्राचीन रोम का एक बड़ा-सा नक्शा टांग दिया था। यह नक्शा किसी जर्मन विद्वान की कलाकृति था और क्लेरिक साहब ने अपनी किताबों के साथ आर्डर देकर मेरे लिए मंगवा दिया था। किताबों के टांड के ऊपर पम्पई के नाटकघर की तसवीर टंगी थी। यह तसवीर क्लेरिक साहब ने मुझे अपने संग्रह में से दी थी।

पढ़ने-लिखने की मेज़ के एक सिरे पर दीवाल से सटाकर एक बड़ी-सी सोफानुमा कुर्सी मैंने रखी थी। इस कुर्सी की पीठ काफी ऊंची थी और इसे मैंने एक खास मतलब से खरीदा था। मेरे अध्यापक क्लेरिक साहब जब शाम को घूमने निकलते तो अक्सर मेरे यहां चले आते थे। मैंने इस बात को लक्ष्य किया कि यदि बैठने को आरामदेह कुर्सी हो, बेनेडिक्टाइन की बोतल और उनकी पसन्द के सिगरेट रखे हों तो वे ज़्यादा देर बैठते और तब उनकी बातों का रंग भी खूब जमता था। छोटे-मोटे खर्चों के मामले में क्लेरिक साहब ज़रा कंजूसी बरतते थे; बस एक इस दूषण को छोड़ उनके चरित्र में और कोई बुराई नहीं थी। कभी वे उदासी-से में भरे घुन्नाते हुए आते और दो-चार व्यंग्यपूर्ण टिप्पणियां कसकर फिर लिंकन की सड़कें नापने निकल जाते; वहां की सड़कें भी ब्लैकहॉक की सड़कों की ही तरह सुनसान और मन को बुरी तरह उबानेवाली थीं। लेकिन कभी क्लेरिक साहब आधी राततक जमे रहते, अंग्रेज़ी और लातिन काव्यों की बारीकियां बखाना और अपने इटली-प्रवास के किस्से सुनाया करते।

उनकी बातचीत के विशद और हृदयग्राही ढंग का वर्णन कर पाना मेरे लिए मुश्किल ही होगा। भीड़भाड़ में तो वे प्रायः चुप ही रहते थे। कक्षा

के भाषण में भी अनर्गल कुछ नहीं कहते थे और न चुटकुलेबाज़ी ही करते थे। जिस दिन थके होते उनके भाषणों में बिखराव, अस्पष्टता और बोझिलता आ जाती थी; लेकिन जिस दिन तबीयत से बोलते सुननेवालों को मज़ा आ जाता था। क्लेरिक साहब कवि तो नहीं, परन्तु मेरी राय में, कवि-हृदय अवश्य थे। वे चाहते तो महाकवि बन सकते थे, परन्तु उनकी प्रखर कल्पना-शक्ति बातों की राह-रीत कर काव्य-प्रतिभा को पनपने नहीं देती थी; वाग्मिता ही हो गई थी उनके कवि की शत्रु—संहारक। वैयक्तिक सम्प्रेषण में ही वे अपनी सारी सम्पदा लुटा दिया करते थे। अपनी काली भौंहों को सिकोड़े, दीवाल पर किसी वस्तु अथवा कालीन की किसी आकृति को वे देर तक टक लगाए देखा करते और तब सहसा उस बिम्ब को उद्‌घाटित, कहना चाहिए कि रूपायित करने लगते, जो उनके मन की गहन कन्दराओं में घुमड़ रहा होता था। पुराणकालीन जीवन को अपनी वाणी के आलोक से उद्‌भासित करने की सामर्थ्य उनमें थी; सुनते-सुनते ऐसा लगता था मानो अन्धकार के गर्त में से उज्ज्वल-धवल आकृतियां कदम बढ़ाती प्रकाश के घेरे में चली आ रही हों। उस रात का उनका वह चेहरा और उस चेहरे पर के वे भाव मैं कभी नहीं भूलूंगा जब उन्होंने पीस्तुम (Paestum) के समुद्रवर्ती मन्दिरों में अकेले एक रात बिताने के अपने अनुभव सुनाए थे। बिना छत वाले स्तम्भों के बीच हवा अठखेलियां कर रही थी, दलदल में उगी पुष्पित घास पर चिड़ियां मंडरा रही थीं और पर्वतों के बादल छाये रजत शिखरों पर किरणें इन्द्रधनुष के सातों रंग ढुलका रही थीं। गर्मियों की वह छोटी रात वहां बिताने के लिए वे जान-बूझकर ही ठहर गए थे। सिर्फ एक कोट पहने और कम्बल ओढ़े वे सारी रात नक्षत्र-मण्डल को आकाश-मार्ग का अतिक्रमण करते हुए देखते रहे थे; अन्त में सागर-तल में से 'बूढ़े टीथोनस की दुल्हिन,' प्रातः तारा, अंगड़ाई लेकर उठ बैठी और उसने पर्वतमालाओं पर पड़ी झिल-मिलियां उठाना शुरू कर दीं। वहीं तो उन्हें ठण्ड लग गई थी और फिर ऐसा बुखार आया कि ग्रीस-यात्रा का कार्यक्रम रद्द करना पड़ा और महीनों नेपुल्स में बीमार पड़े रहे। अभी तक उसीका प्रायश्चित्त किए जा रहे थे।

ऐसी ही एक सन्ध्या और याद है। बातों ही बातों में कवि वरजिल के प्रति महाकवि दान्ते के आदर-भाव की चर्चा चल पड़ी थी। फिर तो क्लेरिक

साहब अपनी लम्बी, पतली अंगुलियों में जलती सिगरेट थामे 'कामदिया' के वे सारे सर्ग सुनाते चले गए, जिनमें दान्ते और उनके प्रिय शिक्षक का सम्भाषण ग्रथित है। पूरी सिगरेट कब जल गई, क्लेरिक साहब को इसका ध्यान ही नहीं रहा। उस रात उनके मुंह से सुनी कवि स्टेटियस की ये पंक्तियां, जो उसने दान्ते की ओर से कही हैं, आज भी मेरे कानों में गूंज रही हैं: 'जो नाम इस विश्व में चिरकाल तक सम्मान के साथ लिया जाता रहेगा, मैं उसी-के सहारे प्रसिद्धि के सोपान पर चढ़ा हूं। जो सहस्रों को अपने पावन प्रकाश से आलोकित करती रही है उसी दिव्य ज्योति ने मेरी कवि-प्रतिभा को भी उद्भासित किया है। मेरा तात्पर्य है 'एनीड' से, जो मेरे कवि की माता और सम्पोषिका रही है।'

क्लेरिक साहब की विद्वत्ता और उनके काव्यानुराग का मैं प्रशंसक था अवश्य, परन्तु अपनी योग्यता और सामर्थ्य का भी मुझे खूब भान था और यह जानता था कि मैं कभी उनकी तरह साहित्य-शास्त्र का पण्डित न हो सकूंगा। भावनाओं और कल्पनाओं के क्षेत्र में मैं कभी अपने-आपको देर तक भुलाए नहीं रख सकता था। विचार-तरंगें मुझे उठाकर तुरत ठोस, नंगी भूमि पर और उसपर बसे लोगों के बीच पटक आती थी। क्लेरिक साहब के नये बिम्बों, नई उत्प्रेक्षाओं और नये रूपों को समझने की कोशिश में मैं जी-जान से लगा होता कि मन भटककर भूतकाल के व्यक्तियों और स्थानों में चला जाया करता था। सूर्य बिम्ब के सामने खड़े उस हल की आकृति के समान उन लोगों और स्थानों की स्पष्ट और सजीवन, सरल और सशक्त आकृतियां एकदम मेरे मानस-पटल पर उभर आती थीं। नये भाव-बोध को ग्रहण करने के मेरे सारे प्रयत्नों का जैसे वे उपसंहार बन जाती थीं। जेक और ओटो और रूसी पीटर मेरी स्मृतियों के पूरे आकाश में इस कदर छा गए थे कि वहां दूसरी बातों के लिए कोई स्थान ही नहीं बचा था। मैं अपनी इस विवशता पर झुंझला उठता, खिन्न हो जाता। लेकिन नये भाव-बोध को ग्रहण करने की प्रक्रिया में एक बात सदैव होती थी। आत्मा के हर संस्कार के साथ वे सारे पुराने संस्मरण भी निखर जाया करते थे और मेरे हर नये अनुभव के वे सहभागी और साथी होते थे। मेरे अन्दर वे इस तरह जीवित और जागृत थे कि मैंने कभी यह सोचा ही नहीं कि मुझसे बाहर भी

कहीं वे जीवित हैं और यदि हैं तो किस रूप में !

२

दूसरे वर्ष में था तब की बात है। मार्च के महीने में एक दिन शाम को भाजन के बाद अपने कमरे में अकेला बैठा था। दिन-भर बर्फ पिघलती रही थी; आंगन में दलदल हो गई थी और सड़कों में गंदले पानी के नाले बह चले थे। मेरी खिड़की खुली थी और सौंधी मिट्टी की गन्ध से भरी हवा का स्पर्श मुझे उद्विग्न कर रहा था। प्रेरी के छोर पर, जहां सूरज अभी डूबा ही था, पश्चिमाकाश ऐसे नील सरोवर की तरह लग रहा था, जिसमें स्वर्णिम प्रकाश तरंगित हो रहा हो। उधर पश्चिम के ही एक निरभ्र कोने में सन्ध्या तारा उग आया था, मानो रुपहली डोरियों से चांदी का आकाशदीप लटका दिया हो; या मन में नई आकांक्षाएं जगाने और नये स्वर्ग बसानेवाली पुरानी लातिनी पोथियों के मुखपृष्ठ पर अंकित दीपिका हो। तारे को उदित होते देख मुझे ख़याल आ गया कि खिड़की बन्द करने और बत्ती जलाने का समय हो गया है। मैंने बड़ी अनिच्छा से दोनों ही काम किए। कमरे में धुंधला प्रकाश भर गया और अन्दर की सब वस्तुएं अंधेरे से उजाले में आकर सदा के परिचित वातावरण की सृष्टि करने लगीं।

पुस्तक खोलकर मैं बेचैनी से 'ज्यार्जिक्स' का वह पृष्ठ पढ़ने लगा जहां से कल का पाठ पढ़ाया जाने को था। लिखा था : 'ऑप्टिमा डाईज़···प्राइमा फ्युजिट'—मानव-जीवन में अच्छे दिन क्षणिक होते हैं, आते ही पलायन कर जाते हैं। बड़ा ही विषण्ण करनेवाला भाव था कवि का। मैंने पन्ने पलटकर वह जगह निकाली जहां से पुस्तक का तीसरा खण्ड शुरू होता था और जिसे हमने आज ही सवेरे कक्षा में पढ़ा था। लिखा था : 'प्राटेमस इगो इन पैट्रियाम मे कम···डेडुकाम मूसाज़।'—यदि जीवित रहा तो अपने देश में वाग्देवता को लानेवाला मैं पहला व्यक्ति हूंगा। क्लेरिक साहब ने बताया था कि यहां 'पैट्रिया' से कवि का आशय पूरे राष्ट्र अथवा प्रदेश से भी नहीं,

केवल मिन्सियों के समीपवर्ती उस ग्रामीण क्षेत्र से है जहां कवि का जन्म हुआ था। यह कवि की गर्वोक्ति नहीं विनय से भरी प्रबल आशा थी कि वह वाग्देवता को (जो यूनान के बादल छाये पहाड़ों से उतर कर इटली में आई ही थी) राजधानी रोम के प्रासादों में नहीं, अपने छोटे-से देहाती इलाके में, नदी तक फैले अपने पिता के खेतों और अवनत फुनगियों वाले कुरंज वृक्षों को धारण करनेवाली धरती पर लाएगा।

क्लेरिक साहब का कहना था कि ब्रिण्डिसी में जब कवि वरजिल अपनी अन्तिम सांसें गिन रहा था तो यह पंक्ति अवश्य उसके मन में घूम रही होगी। इस कटु सत्य को जान लेने के बाद कि 'एनीड' को पूरा किए बिना ही उसे इस संसार से कूच कर जाना होगा, और इस घोषणा के बाद कि देवताओं और मनुष्यों की गाथाओं का वर्णन करनेवाली इस अधूरी कृति को उसके बाद जलाकर नष्ट कर दिया जाए, कवि का मन शैली-शिल्प और वर्ण्य विषय के मणि-कांचन-योग वाली अपनी प्रौढ़ और सम्पूर्ण कृति 'ज्यार्जिक्स' की ओर अवश्य ही अभिमुख हुआ होगा और उसने किसी भी शुभ कर्म करने वाले व्यक्ति की भांति कृतज्ञ भाव से अपने-आप से कहा होगा, 'अपने देश में वाग्देवता को लानेवाला मैं प्रथम व्यक्ति हूं।'

पीरियड खत्म हो गया और कक्षा के हम सब छात्र चुपचाप बाहर निकल आए। एक महान अनुभूति के साक्षात्कार ने हम सबको पूरी तरह अभिभूत कर लिया था। लेकिन क्लेरिक साहब कक्षा में पढ़ाते-पढ़ाते किन भावनाओं में तल्लीन हो गए थे, इसे अकेला मैं ही जान सका था। शाम को जब किताब खोलकर बैठा तो उसके निर्जीव पृष्ठों में से मुझे उनकी वाणी की गूंज सुनाई देने लगी थी। मैं सोचने लगा, न्यू इंग्लैंड के जिस पथरीले समुद्र-तट के बारे में वे मुझसे कहते रहे हैं कहीं वही तो क्लेरिक साहब का पैट्रिया-प्रदेश नहीं है। मैंने फिर पढ़ने में मन लगाया ही था कि दरवाज़ा खटखटाए जाने की आवाज़ सुनाई दी। जल्दी से जाकर दरवाज़ा खोला तो अंधेरे गलियारे में एक औरत खड़ी थी।

"जिम, तुमने शायद मुझे नहीं पहचाना?"

आवाज़ तो परिचित-सी लगी, लेकिन बोलनेवाली को मैं तभी पहचान सका जब वह अंधेरे में से मेरे दरवाज़े के उजाले में आकर खड़ी हो गई—

वह थी लेना लिंगार्ड ! ठीक शहराती औरतों की तरह इस ठाठ से कपड़े पहने हुए थी कि सड़क चलते पास से गुज़र जाने पर भी मैं उसे पहचान न पाता। काला सूट उसके शरीर पर खूब फब रहा था और उसके पिंगल केशों पर काले फीतों का हैट था, जिसमें 'फारगेट-मी-नाट' के पीले-नीले फूल लगे हुए थे।

मैंने उसे लाकर क्लेरिक साहब वाली कुर्सी पर बिठा दिया। घर में वही एक ढंग की कुर्सी थी, और फिर घबराया हुआ-सा उसकी कुशल-क्षेम पूछने लगा।

उसने मेरी व्यग्रता को देखकर भी नहीं देखा। वह तो विस्मय में भरी बड़े भोलेपन से अपने चारों ओर देख रही थी। "जगह तो तुम्हारी काफी अच्छी है, क्यों है न ? अब मैं भी लिंकन में रहने आ गई हूं। अपना ही धंधा शुरू कर दिया है। ओस्ट्रीट पर रैंले ब्लाक में सिलाई की मेरी अपनी दुकान है। काम अच्छी तरह चल निकला है।"

"लेकिन लेना, तुम यहां आईं कब ?"

"सर्दियां लगते ही आ गई थी। क्या तुम्हारी दादीजी ने लिखा नहीं ? बहुत दिनों से तुमसे मिलना चाह रही थी, लेकिन यह सोचकर रह जाती थी कि तुम ठहरे पढ़ने-लिखनेवाले आदमी, तुम्हारे पास हमारे जैसों के लिए समय ही कहां होगा ? और यह अन्देशा भा था कि पता नहीं, तुम मिलना चाहोगे भी, या नहीं। और वह बड़े सहज-भाव से एक मीठी हंसी हंस दी। उसकी वह हंसी सरल और निष्कपट थी या गूढ़, मैं कुछ भी निश्चय नहीं कर पाया। "पहले से कुछ बड़े हो गए हो; और तो तुममें कोई परिवर्तन दिखाई नहीं देता। क्या मैं कुछ बदली हुई लग रही हूं ?"

"विशेष नहीं; केवल पहले से कुछ ज़्यादा खूबसूरत लग रही हो, या यह शायद तुम्हारे कपड़ों का प्रताप है। क्योंकि खूबसूरत तो तुम हो ही।"

"मेरा नया सूट पसन्द आया ? इस धंधे में बढ़िया कपड़े-लत्तों के बिना काम नहीं चलता।"

उसने कोट उतार दिया और आराम से बैठ गई। कोट के नीचे वह महीन मुलायम रेशम का ब्लाउज़ पहने थी। इत्मीनान से बैठी वह मुझे बताती रही कि धन्धा खूब चल निकला है और कुछ पैसा भी बचा लिया है। लेना में एक खूबी थी। कहीं भी क्यों न रहे और विषय कोई भी क्यों न हो,

झिझक और संकोच तो वह जानती ही नहीं थी।

"इस बार गर्मियों में मैंने अम्मां के लिए नया मकान बनवाने का फैसला कर लिया है। पूरा पैसा तो नहीं है, लेकिन ज़्यादा दिन टालना भी ठीक नहीं। बुढ़ापे में नया घर मिला तो किस काम का? तब उसका कोई सुख उठा न पाएंगी। मकान बन जाने के दूसरे साल नया फरनीचर और कालीन वगैरह खरीद दूंगी। बस, अम्मां खुश हो जाएंगी और खुशा-खुशी सर्दियां काट लेंगी।"

उस कुर्सी में बैठी सन्तुष्ट, प्रसन्न और सुखी लेना को देखकर मुझे वह लेना याद आ गई जो सर्दियों में नंगे पांव बर्फ पर दौड़ा करती थी और पगली मेरी खुला छुरा लिए खेतों-खलिहानों में जिसका पीछा करती रहती थी। उस लड़की का दुनियादारी में इतनी सफलता प्राप्त करना क्या आश्चर्य की बात नहीं थी? और यह स्वयं उसने अपने प्रयत्नों से किया था, वह किसीका सहारा लेकर नहीं, अपने बल-बूते दुनिया में आगे बढ़ी थी।

"लेना, तुम्हें अपने-आप पर गर्व होना चाहिए।" मैंने हार्दिक प्रसन्नता से कहा, "और एक मैं हूं, आज तक एक डालर भी नहीं कमाया; और पता नहीं आगे भी कभी कमा सकूंगा या नहीं।"

"वह टोनी तो तुम्हारे बारे में बड़ी-बड़ी डींगें हांका करती है; कहती है, जिम आगे चलकर बहुत अमीर होगा, मिस्टर हार्लिंग से भी ज़्यादा अमीर।"

"अरे हां, टोनी के बारे में तो बताओ; वह कैसी है?"

"बहुत मज़े में है। आजकल मिसेज़ गार्डनर के होटल में काम करती है। बुढ़िया ने सारा इन्तज़ाम अब उसीको सौंप दिया है। खुद तो बीमारी और बुढ़ापे के कारण कुछ कर नहीं पाती। अब हर काम में टोनी उसका दाहिना हाथ है। मिसेज़ हार्लिङ्ग से भी उसका समझौता हो गया है। असल में नीना ने समझौता करवाया। वह नन्ही गुड़िया टोनी पर जान देती है, इसलिए मिसेज़ हार्लिङ्ग ने सारी पुरानी बात आई-गई कर दी।"

"लारी डानओवान के साथ उसका मामला अब भी चल रहा है क्या?"

"बहुत ज़ोरों से। मुझे तो लगता है कि दोनों की सगाई हो गई। टोनी उसके बारे में इस तरह बातें करती है मानो वह रेल कम्पनी का अध्यक्ष हो।

लोग सुन-सुनकर हंसते हैं, लेकिन उसे जैसे परवाह ही नहीं। अपने ही हाल में मस्त हैं। ज़िद्दिन तो दुनिया-भर की है, सो तुम जानते ही हो। देखें डान-ओवान के खिलाफ कोई कुछ कह तो दे! बहुत ही भोली और साफ दिल लड़की है।"

मैंने कहा, "मुझे तो वह लारी फूटी आंखों नहीं सुहाता।"

लेना मुस्कराई तो उसके गालों में गड्ढे पड़ गए। फिर बोली, "हम बहुत समझाते हैं, पर वह किसीकी नहीं सुनती। पता नहीं, लारी ने ऐसी क्या भुरकी डाल दी है। जो कहता है, आंख मूंदकर मान लेती है। यही तो बड़ी खामी है एण्टोनिया में; जो एक बार उसके मन चढ़ गया उसके खिलाफ फिर किसीका कुछ नहीं सुनती।"

"तब तो एक बार मुझीको जाकर उसे समझाना पड़ेगा।" मैंने कहा।

"ज़रूर जाओ।" लेना ने मेरी ओर कौतुकपूर्ण दृष्टि से देखते हुए कहा, "इतना ज़रूर अच्छा हुआ कि हार्लिगों से उसकी फिर दोस्ती हो गई। लारी मिस्टर हार्लिंग से डरता है! वे बेशुमार गल्ला लदाते हैं और सारी रेल कम्पनी में उनकी धाक है। अच्छा, देखें, क्या पढ़ रहे हो?" उसने मेज़ पर कोहनी टेककर एक किताब अपनी ओर खींच ली। सुगन्धित पाउडर की लपट सीधी मेरे नाक में आ घुसी। "अच्छा, तो लैटिन है। बड़ी मुश्किल ज़बान लगती है। तुम नाटक देखने भी तो जाते हो न? मैंने तुम्हें वहां दो-एक बार देखा है। मेरी तरह नाटक देखने का शौक तो तुम्हें भी ज़रूर होगा, जिम! क्यों है न? अपने तो ये हाल हैं कि शहर में नाटक खेला जा रहा हो तो फिर घर में बैठा नहीं जाता। जिन शहरों में नाटक खेले जाते हों वहां रहने के लिए कमर तोड़ मेहनत भी क्यों न करनी पड़े, मैं तैयार हूं।"

"चलो, किसी दिन साथ चलेंगे। तुमसे मिलने के लिए तुम्हारे यहां आ तो सकता हूं न?"

"सच? आओगे? बड़ी खुशी से आओ! छः बजे के बाद मैं काम बन्द कर देती हूं और नौकरानियों की छुट्टी तो साढ़े पांच बजे ही कर देती हूं। समय बचाने की दृष्टि से खाना होटल में खाती हूं, लेकिन कभी-कभार खुद भी पका लिया करती हूं! अगर तुम आए तो ज़रूर पो-पकाकर खिलाऊंगी। बहुत मज़ा आएगा। अच्छा!" उसने अपने सफेद दस्ताने पहनते हुए कहा,

"अब चलती हूं। तुमसे मिलकर बहुत खुशी हुई, जिम।"

"अरे, बैठो! ऐसी क्या जल्दी है? अभी तुमने बातें तो कुछ की ही नहीं।"

"जब मेरे यहां मिलने आओगे तो जी भरकर बातें करेंगे। यहां तो तुमसे कोई औरत या लड़की मिलने के लिए आती नहीं होगी। नीचेवाली बुढ़िया मुझे ऊपर आने ही नहीं देती थी। जब कहा कि तुम्हारे गांव की हूं और तुम्हारी दादी के कहने से मिलने के लिए आई हूं तो बड़ी मुश्किल से आने दिया। मिसेज़ बरडन को लिखूंगी तो वे कितनी खुश होंगी।" लेना ने उठते हुए मधुर कोमल हंसी के साथ कहा।

मुझे टोप उठाते देख उसने सिर हिला दिया, "नहीं, आज तुम्हें अपने साथ नहीं ले जाना चाहती। बड़ी दुकान में कुछ स्वीडों से मिलने की बात पहले से तय हो चुकी है। तुम्हें उनकी सोहबत पसन्द नहीं आएगी। मैं तो सिर्फ तुम्हारा कमरा देखने चली आई थी, जिससे टोनी को लिखकर बता सकूं कि तुम कहां और किस तरह रहते हो और उसे यह भी बता देना चाहती हूं कि तुम्हें अपने कमरे में किताब पढ़ता हुआ ही छोड़ आई हूं। उस बेचारी को हमेशा यह डर लगा रहता है कि कहीं तुम्हें कोई उड़ा न ले जाए।" मैं उसका कोट थामे रहा, जिसे उसने अपनी रेशमी बांहें डालकर पहना, सिलवटें ठीक कीं और आराम से बटन लगाती रही। मैं दरवाज़े तक साथ पहुंचाने गया। "जब कभी मन उकताने लगे तो ज़रूर चले आना। लेकिन मन क्यों उकताएगा? दोस्तों की तो कमी होगी नहीं? दिल लगानेवाले दोस्त भी तो होंगे!" अपना मुलायम गाल मेरी ओर करती हुई वह चुहल-भरे स्वर में फुसफुसाकर बोली, "दिल लगानेवाले दोस्त भी तो होंगे न?" और दूसरे ही क्षण वह अंधेरी सीढ़ियां उतरकर अलोप हो गई।

लौटकर कमरे में आया तो वह मुझे पहले से ज़्यादा बड़ा, सुखद और सुहावना लगा। लेना वहां दीये की रोशनी में स्नेह और सौख्य-भरा कुछ छोड़ गई थी। उसकी हंसी को फिर से सुनने का अवसर पाकर मैं कितना मुदित और आह्लादित हुआ था। बड़ी कोमल, प्रसन्न, शान्त और सहृदयता-पूर्ण होती थी उसकी हंसी—हर प्रसंग को आह्लादपूरित कर देती थी। मैंने आंखें मूंद लीं तो उन सबकी सम्मिलित हंसी सुनाई दी—डेन लाण्ड्री में

काम करनेवाली लड़कियों की और तीनों बोहेमी मेरियों की चांदी की घण्टियों जैसी टुनटुनाती और खिलखिलाती हंसी। लेना आज उन हंसियों की सौगात लेकर मेरे पास आई थी। और आज पहली बार मुझे वरजिल की कविता और वे लड़कियां एक सूत्र में पिरोई हुई दिखाई देने लगी थीं। लगता था, जैसे कविता ऐसी लड़कियों की ही आभारी है; यदि विश्व में ऐसी लड़कियां न हुई तो कविता भी न हो सकेगी। आज पहली बार यह बात इतने स्पष्ट रूप से मेरी समझ में आ पाई थी। मैं इस उपलब्धि को कसकर छाती से लगाए रहा कि कहीं यह सहसा ही अलोप न हो जाए!

अन्त में जब पुस्तक खोलकर पढ़ने बैठा तो लेना के सम्बन्ध में मेरा पुराना स्वप्न—ऊंचा स्कर्ट पहने नाज कटे खेत में चलकर आती हुई लेना—मुझे एक वास्तविक घटना की स्मृति की तरह लगा। किताब के पूरे पृष्ठ पर वह सारा दृश्य जैसे झिलमिला रहा था और उसके नीचे ये विषाद-भरी पंक्तियां उभरी हुई थीं: 'ऑप्टिमा डाईज़··प्राइमा फ्युजिट'—अच्छे दिन क्षणिक होते हैं, आते ही पलायन कर जाते हैं।

३

लिंकन में नाटकों का मौसम ज़रा देर से शुरू होता था। सभी अच्छी-अच्छी कम्पनियां पहले न्यूयार्क और शिकागो में नाटक खेलती थीं और फिर उनमें से कोई दो-चार दिन के लिए यहां रुक जाती थी। उस साल वसन्त में लेना ने मेरे साथ दो नाटक देखे—एक तो 'रिपवान विंकल', जिसमें जोसेफ जेफरसन ने अभिनय किया था, और दूसरा कोई युद्ध-सम्बन्धी नाटक, 'शेनाण्डोह'। अपना टिकट उसने खुद खरीदा, मुझे नहीं खरीदने दिया; बोली कि मैं अब काम करती हूं और एक विद्यार्थी से अपने लिए पैसा खर्च नहीं कराऊंगी। लेना के साथ नाटक देखने का अपना ही आनन्द था। नाटक को वह नाटक के रूप में नहीं, जीवन की सच्ची घटना के रूप में देखती थी और हर चीज़ उसे अद्भुत और अच्छी लगती थी। उसके साथ नाटक देखने

जाना ऐसे व्यक्ति के साथ धार्मिक अनुष्ठान में शरीक होना था, जिसका हर बार दीक्षा-संस्कार किया जाए। अभिनेताओं के अभिनय से उसका पूरा तादात्म्य हो जाता था और वह शुरू से अन्त तक उनके साथ हंसती, रोती आशा से उत्फुल्लित और निराशा से विषण्ण होती रहती थी। पात्रों की वेशभूषा और नाटक की दृश्यावलियों को भी वह बहुत अधिक महत्त्व देती थी और इन दोनों चीज़ों का उसपर मुझसे कुछ ज़्यादा ही प्रभाव पड़ता था। 'राबिनहुड' में तो वह सारे समय मंत्रमुग्ध-सी बैठी और 'ओह, प्रामिज़ मी !' गानेवाले की तान पर झूमती रही।

इधर मैं सूचनापट्ट रोज़-रोज़ देखने लगा था। अप्रैल महीने की आखिरी तारीखों में वहां सफेद चमकीले पोस्टर पर नीले गोथिक अक्षरों में दो नाम लिखे दिखाई दिए—एक किसी अभिनेत्री का सुना हुआ नाम और दूसरा 'कामिले'।

शनिवार की शाम को मैं लेना के यहां रैंले ब्लाक गया और वहां से हम दोनों साथ-साथ नाटकघर पहुंचे। मौसम थोड़ा गरम और उमस-भरा था और हम दोनों छुट्टी के दिन की तरह मस्त, प्रसन्न और निश्चिन्त थे। हम ज़रा जल्दी पहुंच गए थे, क्योंकि लेना को अन्दर बैठकर दर्शकों को प्रवेश करते देखना अच्छा लगता था। आनुषंगिक संगीत के सम्बन्ध में कार्यक्रम में यह उल्लेख था कि वह इसी नाटक की कहानी पर आधारित 'ट्रा वियाटा' नामक गीति नाट्य में से लिया गया है। नाटक हम दोनों ने ही नहीं पढ़ा था, इसलिए उसके विषय-वस्तु के बारे में कुछ भी मालूम नहीं था; मैंने कहीं सिर्फ इतना सुना था कि इस नाटक के अभिनय में बड़ी-बड़ी अभिनेत्रियां अपने जौहर दिखा चुकी हैं। अलैक्जेंडर ड्यूमा का लिखा 'दि काउण्ट आफ माण्टे क्रिस्टो' मैंने उसी साल सर्दियों में देखा था और उसमें जेम्स ओ'नील ने अभिनय किया था। 'कामिले' का लेखक अलैक्जेंडर ड्यूमा का पुत्र था और अधिक से अधिक मैं यही अनुमान कर सकता था कि पिता-पुत्र की कृतियों में कहीं न कहीं तो साम्य होगा ही। बाकी तो मैं और लेना नाटक के विषय-वस्तु के सम्बन्ध में उतने ही अनभिज्ञ थे जितने कि प्रेरी के मैदान में दौड़ने वाले खरहे, जो आनेवाले संकट के बारे में कुछ भी नहीं जानते।

परदा उठने के साथ ही हमारी उत्सुकता बढ़ती गई। रंगमंच पर आग

के सामने बैठा चिड़चिड़ा वरविले नेनाहन से सवाल-जवाब कर रहा था। इस संवाद का अपना अलग ही रंग था। मैंने किसी नाटक में इतना जानदार और प्रभावोत्पादक संवाद नहीं सुना था। मारगुराइट के मित्रों के प्रवेश करने तक उसके और वरविले के बीच यह नोक-झोंक चलती रही। फिर दूसरा शानदार और लुभावना दृश्य शुरू हुआ। मैंने अभी तक मंच पर शैम्पेन की बोतलों को खोले जाते नहीं देखा था—सच तो यह है कि मंच पर ही क्यों, कहीं भी किसीको शराब पीते नहीं देखा था। और जिस ठाठ का भोज हुआ उसकी याद से आज भी मेरे मुंह में पानी भर आता है। और उस समय तो मेरे जैसे होटल में खानेवाले विद्यार्थी के लिए उस शानदार भोज को देखते रहना एक तरह की सज़ा ही थी। सफेद दस्तानों और मोज़ों में सजे नौकरों ने बड़ी फुर्ती से मेजें और चमचमाती कुर्सियां लगा दी थीं। मेज़ों पर सफेद बुर्राक मेजपोश बिछाये गए, चमकते गिलास और चांदी की तश्तरियां रखी गईं; बीच में फलों का एक बड़ा-सा बरतन भी था और यहां-वहां शोभा और सुगन्ध के लिए लाल-सुर्ख गुलाब के गुलदस्ते भी। फिर धृष्ट युवक और सुन्दरी युवतियां हंसते और बातें करते हुए कमरे के अन्दर आ घुसे। युवक तो नाटक जिस काल से सम्बन्धित था उस ज़माने के कपड़े पहने थे, लेकिन युवतियों की पोशाकें नाटक के युग के अनुरूप नहीं थीं। लेकिन इस विसंगति की ओर मेरा ध्यान नहीं गया। उनकी सारी बातचीत जिस अनोखी और शानदार दुनिया में वे रहते थे उसीसे सम्बन्धित थी—हर वाक्य सुननेवाले की बुद्धि के कपाट खोल देता और हर परिहास श्रोता के ज्ञान को विस्तारित कर देता था। दर्शक बिना किसी संकोच के भोज्य पदार्थों की बहुलता और छककर एवं ठूंस-ठूंसकर खाने के मज़े को अनुभव कर सकता था। जब सभी पात्र एकसाथ बोल उठते और मैं किसी-के किसी वाक्य को सुन न पाता तो मन ही मन बड़ा दुःखी हो जाता था। मैं आंखें गड़ाए और कान लगाए उनके एक-एक शब्द को सुन नहीं रहा था, बल्कि पी रहा था।

मारगुराइट का अभिनय करनेवाली कुछ पुराने ढंग की पर प्रख्यात अभिनेत्री थी। वह डेली की सुप्रसिद्ध न्यूयार्क कम्पनी में काम कर चुकी थी और उसीके निर्देशन में नाम भी कमा चुकी थी। अभिनय-कौशल तो वह

कभी सीख न सकी, परन्तु उसमें कुछ ऐसी सहज प्रतिभा और नैसर्गिक शक्ति थी जिससे वह सीधी-सादी जनता को अपने साथ बहा ले जाती थी। वह बूढ़ी हो चली थी, चेहरे की सुन्दरता लोप हो गई थी और हाथ-पांव अकड़ने लगे थे। चलने में भी उसे कष्ट होता था, शायद लंगड़ाती थी, जिसका कारण रीढ़-सम्बन्धी कोई विकार बताया जाता था। उसके मुकाबले अरमाण्ड का अभिनय करनेवाला छरहरे बदन का बड़ा ही सुन्दर और सजीला जवान था और साथ ही बहुत घबराया हुआ भी। लेकिन इससे क्या? अपने प्रेमी को लुभाए रखने की उस अभिनेत्री की सामर्थ्य और उसके भड़कीले सौन्दर्य पर मुझे पूरा विश्वास था। उसकी युवती-उचित वासनाओं, आकांक्षाओं और लालसाओं में मुझे तनिक भी सन्देह नहीं था। यदि मेरा बस चलता तो मैं कूदकर रंगमंच पर पहुंच जाता और छरहरे बदनवाले अरमाण्ड की ओर से उसे यह विश्वास दिलाने की पूरी कोशिश करता कि दुनिया में श्रद्धा और निष्ठा, ईमानदारी और भक्ति अब भी विद्यमान है। राग-रंग के बीच जब वह सहसा बीमार हो गई, उसका चेहरा पीला पड़ गया, उसने मुंह पर रूमाल रखकर हंसी के कहकहों के बीच अपनी उभरती खांसी को दबाने की कोशिश की और गैस्टन ने पियानो पर मन्द स्वर में करुण रागिनी छेड़ दी तो मेरा कलेजा मसोस उठा। लेकिन बाद में जब वह अपने प्रेमी के साथ मूर्खतापूर्ण विवाद में उलझ गई तो मुझे उससे कोई सहानुभूति नहीं रही। 'ट्राविआटा' के संगीत की झनकारों में बेचारा वह ईमानदार युवक उसे मनाता रहा और वह शंकालु औरत उसे बराबर झिड़कती रही। और परदा उस समय गिरा जब वह प्रमत्त होकर दूसरों के साथ नाच रही थी और अरमाण्ड फूलों का गुलदस्ता लिए वहां से उलटे पांव लौटा दिया गया था।

दो अंकों के बीच के अवकाश में भी नाटक के आयोजकों ने न तो कथा-सूत्र को विच्छिन्न होने दिया और न वातावरण को क्षति पहुंचने दी। 'ट्राविआटा' का करुण, मधुर, और हृदयग्राही संगीत मन्द स्वर में बराबर झंकृत होता रहा। दूसरे अंक के बाद लेना तो आंसू-भरी आंखों से छत की ओर ताकने लगी और मैं उसे वहीं बैठा छोड़ सिगरेट पीने के लिए दीर्घा में निकल आया। अच्छा ही हुआ कि मैं लिंकनवासिनी किसी लड़की के साथ नाटक

देखने नहीं आया, नहीं तो मध्यान्तर के समय वह नाच की मजलिसों और कैंडिटों के कैम्प के सम्बन्ध में पूछ-पूछकर सारा मज़ा ही किरकिरा कर देती। लेकिन लेना अब छिछोरी लड़की नहीं, नारी थी और मैं भी पुरुष हो चला था।

फिर शुरू हुआ मारगुराइट और ज्येष्ठ डुवाल के प्रेम-चोचलों का दृश्य। लेना इस सारे दृश्य में लगातार रोती रही; और मैं उन चोचलों को रोकने में असमर्थ, विवश बैठा आशंकित होता रहा कि कहीं वह युवक लौट न आए और उसका उत्कट आनन्द ही उसके पतन का कारण न बन जाए!

जिस पुरानी अभिनेत्री ने मुझे ड्यूमा की इस मनमोहिनी नायिका से पहले-पहल परिचित कराया उसमें और ड्यूमा की नायिका में ज़मीन-आसमान का अन्तर था। दोनों के व्यक्तित्व, बोली-बानी और स्वभाव में ज़रा भी साम्य नहीं था। अपने पात्र की चारित्रिक विशेषताओं को वह ज़रा भी आत्मसात् नहीं कर पाई थी। आवाज़ उसकी भारी और कड़ी थी। शब्दों और अक्षरों पर इतना अनावश्यक ज़ोर देकर बोलती थी कि भावों का गला घुट जाता था। उसके अभिनय में सहजता और लयबद्धता तो नाम को भी न थीं। हर समय पश्चात्ताप की खिन्नता से अवसन्न रहती थी। और जब ज़ोर से 'अरमाण्ड' कहकर पुकारती तो लगता था जैसे अदालत का चपरासी आरोपी को इजलास में हाज़िर होने के लिए पुकार रहा हो। गला क्या था फटा बेसुरा बांस ही था। लेकिन धन्य है ड्यूमा की लेखनी। उसने पंक्ति-पंक्ति में शब्दों और भावों का ऐसा अनूठा कौशल भर दिया था कि इस अभिनेत्री के मुंह में भी वाक्य सजीवन हो उठता था। उसके उच्चारण की समस्त खामियों के बावजूद पात्र की चारित्रिक विशेषताएं उभरकर सामने आ जाती थीं।

अन्त में ओलिम्पे की शराब की दुकान वाला चौथा अंक आरम्भ हुआ। रात का समय था। मारगुराइट और वरविले ने जिस निर्दय दुनिया में पुनः प्रवेश किया उसकी तड़क-भड़क और उच्छृंखलता पहले से कहीं अधिक बढ़ गई थी। छत से बड़े-बड़े हण्डे लटक रहे थे। भड़कीली वर्दियों में नौकर हाथ बांधे खड़े थे। ताश खेलने की मेज़ों पर बाज़ी लगाने के लिए स्वर्ण-मुद्राओं के ढेर लगे थे। लोगों के आने-जाने के लिए एक सीढ़ी लगी हुई थी।

सारे जुआरी मेज़ों पर जा बैठे, कनिष्ठ डुवाल को उसके विवेक ने सतर्क कर दिया, और तब मारगुराइट वरविले के साथ सीढ़ियां उतरकर नीचे आई—कितने बढ़िया थे उसके कपड़े-लत्ते, कितना सुन्दर था उसके हाथ का पंखा, कैसे जगमगाते आभूषण, और उसका वह चेहरा ! देखते ही उसके मन के भावों का पता चल जाता था। और जब अरमाण्ड ने इन विकट शब्दों के साथ, 'सुनें सब देखनेवाले, मेरा इस औरत से कोई वास्ता नहीं' स्वर्ण-मुद्राएं और नोट मूर्च्छितप्राय मारगुराइट पर फेंके तो लेना मेरे पीछे दुबक गई और उसने दोनों हाथों में अपना मुंह ढंक लिया।

अब शयनकक्ष का दृश्य सामने आया। इस समय तक व्यथा ने मुझे पूरी तरह झकझोर डाला था और रुलाने के लिए सिर्फ नेनाहन की कसर रह गई थी। नेनाहन के लिए मेरे हृदय में आदर-भरा प्यार था और गेस्टर के लिए भी—कितना भला था वह बेचारा ! नव वर्ष के उपहार अधिक नहीं थे, हो सकते भी नहीं थे; बात यहां तक बिगड़ गई थी कि वह किसी भी तरह बन नहीं सकती थी। मैं फूट-फूटकर रोने लगा। कोट के ऊपर की जेब में शोभा के लिए रखा रहनेवाला रूमाल भी आंसुओं से तर हो गया और उधर वह मरणासन्न औरत अपने प्रेमी की बांहों में ऐसी समाई कि फिर कभी उठ न सकी।

हम नाटकघर के बाहर आए तो पानी बरस रहा था। मैंने समझदारी की कि मिसेज़ हार्लिङ्ग से दीक्षान्त समारोह के उपहार में मिला छाता लेता आया था। झड़ी के बावजूद लेना को उसके घर तक पहुंचाने में कोई कठिनाई नहीं हुई। जब वहां से शहर के दूसरे छोर पर अपने घर की ओर चला तो वर्षा रुक गई थी। आंगनों में खिले लाइलैक पुष्पों की गन्ध उनकी नई पत्तियों की भीनी सुगन्ध के साथ वर्षा से धुली हवा में घुल-मिलकर मेरे चेहरे पर कभी हौले और कभी ज़ोर से थपकियां-सी देने लगी। मैं सड़क के डबरों में छपाछप करता और टपकते वृक्षों के नीचे से होता चला जा रहा था। मारगुराइट गौथियर के लिए मन में बड़ी पीड़ा थी, मानो वह अभी कल ही मरी हो। १८४० की उस करुणान्तिका के लिए रह-रहकर मुंह से आह निकल जाती थी। इतने वर्षों में कइयों ने उसे देख-सुनकर इसी तरह जाने कितनी बार आहें भरी होंगी। अनेक वर्षों और अनेक भाषाओं को पार करती,

एक-दो दुर्बल बूढ़ी अभिनेत्री के माध्यम से वह मुझ तक तो अभी उस रात ही पहुंच पाई थी। कालजयी करुणा थी वह; मनोवेगों का ऐसा व्यापार जिसे परिस्थितियां झुठला नहीं सकतीं। उस नाटक को कहीं भी और कभी भी क्यों न खेला जाए, हर महीना अप्रैल हो जाएगा।

४

जिस छोटे-से बेरौनक कमरे में बैठकर लेना का इन्तज़ार किया करता था, उसकी याद मुझे कभी नहीं भूलेगी। उस कमरे में घोड़े के बालों से भरे कड़े गद्दोंवाला जो फर्नीचर था, उसे किसी नीलाम में खरीदा गया था। एक लम्बा कांच था और दीवालों पर फैशन के नमूनोंवाले चित्र लगे थे। वहां चाहे क्षण-भर ही क्यों न बैठूं, धागे और रंगीन रेशमी कपड़ों की कतरनें मेरे लिबास में ज़रूर चिपक जाती थीं। लेना की सफलता देखकर आश्चर्य होता था। बड़ी मस्त-मौला लड़की थी। व्यवसाय में उन्नति करने के लिए जितनी भाग-दौड़ और जैसा प्रखर व्यक्तित्व चाहिए उसका तो उसमें लेश भी नहीं था। देहात की लड़की, मिसेज़ टामस के किन्हीं दूर के रिश्तेदारों के नाम मामूली-सा परिचय-पत्र लेकर लिंकन चली आई थी और अब ठाठ से 'दुल्हिनों के कपड़े' सी रही थी। असल में इस काम में उसकी स्वाभाविक रुचि थी। उसीके शब्दों में कहें तो वह जानती थी कि 'लोग कैसे और किस काट के कपड़ों में फबते हैं।' रात-दिन फैशन का नया-नया साहित्य देखती रहती थी। कई बार शाम को जब उससे मिलने जाता तो वह अकेली, अपनी दुकान में, मॉडल पर तरह-तरह से कपड़े लपेटकर दूर-पास से देखने में जुटी होती थी। उस समय उसके चेहरे पर संतोष और आनन्द की अवर्णनीय आभा छिटकी रहती थी। लेना को किशोरावस्था तक अपना तन ढांपने के लिए ढंग के कपड़े नहीं मिले थे, शायद इसीलिए मानव-शरीर को ढांपने की दिशा में उसके मन में इतना उत्साह और लगन थी और वह सुबह से शाम तक इस काम में जुटी रहती थी। उसके सभी गाहक कहते थे कि "भई, लेना

अपने फन में उस्ताद है; उसके काम की अपनी खूबी और खासियतें हैं और उसकी अपनी निराली शैली है।" और यही कारण था कि वे उसकी वादाखिलाफियों को देखा-अनदेखा कर देते थे। यह तो मैं भी जानता था कि वादे पर उसने कभी कोई काम पूरा करके नहीं दिया और 'मैटीरियल' पर गाहक की गुंजाइश से ज़्यादा खर्च कर देती थी। एक दिन जब मैं शाम को उसके यहां छः बजे के लगभग पहुंचा तो वह एक मां-बेटी से निपटकर चुकी ही थी। बेटी की उम्र काफी हो गई थी और वह संकोच से गड़ी जा रही थी। मां बेचैन लगती थी। जब लेना उन्हें पहुंचाने आई तो मां ने बेटी को बाहर निकल जाने दिया और आप दरवाज़े पर ठिठककर अनुनय-भरे स्वर में लेना से कहने लगी, "देखना, मिस लिंगार्ड, इतनी मेहरबानी करना कि पचास से बढ़ने न पाए ! अभी लड़की के बढ़ने की उम्र है, ज़्यादा महंगा कपड़ा और महंगी सिलाई बेकार ही होगी; मगर मैं जानती हूं कि तुम हुनरमन्द हो और सस्ते में भी ऐसी पोशाक बना दोगी कि बिटिया खिल जाएगी और फूली न समाएगी। पर पचास से बढ़ने मत देना, हां !"

"ठीक है, ठीक है, मिसेज़ हेरन ! आप फिक्र न करें। काम बहुत बढ़िया हो जाएगा, आप निश्चिन्त रहें।" लेना ने बड़े ही मधुर स्वर में उस गाहक को निश्चिन्त करके विदा कर दिया था।

गाहकों के साथ उसके व्यवहार और बोलने-बतियाने का ढंग बहुत ही अच्छा था। मैं अक्सर सोच-सोचकर विस्मित हुआ करता कि देहातिन लेना ने यह सब कहां और कब सीख लिया और इतनी आत्मनिर्भरता उसमें कहां से आ गई।

कभी सवेरे की कक्षा से लौट रहा होता तो लेना मुझे बाज़ार में मिल जाती थी। मखमल का सूट पहने, छोटी काली हैट लगाए, चेहरे पर जाला डाले वह वासन्ती उषा की तरह प्रफुल्लित लगती थी। कभी उसके हाथ में डैफोडिल का गुच्छा होता तो कभी हाइसिन्थ का स्तबक। अपने खरीदे फूलों को बड़ी कोमलता से उठाए वह घर लौट रही होती थी। साथ चलते हुए जब हम किसी मिठाई की दुकान के सामने पहुंचते तो उसकी चाल धीमी हो जाती और वह कहने लगती, "जिम, मुझे अन्दर मत जाने देना; यहीं से खींचकर आगे ले चलो।" मिठाई की वह बहुत शौकीन थी, पर डरती

भी थी कि ज़्यादा मीठा खाकर कहीं मोटी न हो जाए !

रविवार के दिन सवेरे मैं लेना के साथ, उसीके यहां, नाश्ता करता था। कितने मनोरम होते थे वे सवेरे ! उसकी दुकान के पीछेवाले हिस्से में एक बड़ी-सी बरोठेदार (छज्जेनुमा) खिड़की थी। उस बरोठे में इतनी जगह थी कि वहां एक कौच और लिखने-पढ़ने की मेज़ आराम से आ गई थी। हम यहीं बैठकर नाश्ता करते थे। परदा खींच देते, जिससे कटिंग की मेज़ें, औरतों के माडल, दीवाल पर टंगी तैयार पोशाकें आदि छिप जाती थीं। छज्जे में सवेरे की धूप सीधी आती और मेज़ पर रखी हर चीज़ चमक उठती थी और सूरज की किरनों में स्पिरिट के चूल्हे की लौ दिखाई तक नहीं देती थी। लेना का घुंघराले बालों वाला काला स्पेनियल कुत्ता प्रिन्स भी हमारे साथ नाश्ता करता था। वह लेना के साथ कौच पर बैठ जाता और बड़ी शालीनता का व्यवहार करता था। लेकिन जब लेना का पड़ोसी पोली वायोलिन-शिक्षक रियाज़ करने लगता तो प्रिन्स को गुस्सा आ जाता और वह गुर्राने लगता था। यह कुत्ता लेना को उसके बूढ़े मकान-मालिक कर्नल रैले ने दिया था। लेना बचपन से ही पशुओं की देख-भाल करती आई थी, इसलिए कुत्ता पाकर उसे ज़रा भी प्रसन्नता नहीं हुई और शुरू-शुरू में तो वह उसकी उपेक्षा भी करती रही। लेकिन प्रिन्स काफी समझदार कुत्ता था, और उसने शीघ्र ही लेना का मन जीत लिया। नाश्ते के बाद मैं प्रिन्स को तरह-तरह के करतब सिखलाता—दम साधकर मुर्दे की तरह लेटना, हाथ मिलाना और पिछले पांवों के बल सिपाही की तरह खड़े होना। हम उसके सिर पर फौजी टोपी रख देते थे—विश्वविद्यालय में मुझे फौजी कवायद करनी पड़ती थी—और उसके अगले पांवों में लेना की दर्ज़ीगिरी का गज़ थमा देते थे। प्रिन्स ये सारे करतब इतनी गम्भीरता से करता कि हम दोनों हंसते-हंसते लोट-पोट हो जाते थे।

लेना के बात करने का ढंग मुझे बहुत पसन्द था। वह जिन लोगों के बीच रहती उनके लहजे और उनकी भाषा को तुरत अपना लेती थी। एण्टोनिया में यह बात नहीं थी। अंग्रेज़ी सीख लेने के बाद भी उसके उच्चारण और बोली-बानी का विदेशी ढंग बना रहा। लेकिन लेना ने मिसेज़ टामस की दुकान में काम सीखते हुए अंग्रेज़ी बोली की कस्बाती विशेषताओं को

इस निपुणता के साथ आत्मसात किया था कि उसके मुंह से सुनते ही बनता था। हर कस्बे की अपनी बोली, अपने मुहावरे और अपनी भाषा-सम्बन्धी विशेषताएं होती हैं। लेना के मधुर, कोमल और गूंज-भरे स्वर में ये सारी विशेषताएं और भी उभरकर चित्ताकर्षक हो जाती थीं। लेना बोली-बानी में प्रकृति की ही तरह स्पष्ट और निश्छल थी और उसके मुंह से 'लैग' (टांग) के लिए 'लिम्ब' (अवयव) और 'हाउस' (मकान) के लिए 'होम' (आवास) सुनकर तबीयत बाग-बाग हो जाती थी।

नाश्ते के बाद हम लोग कॉफी बहुत देर तक और धीरे-धीरे पीते थे और धूप में बैठे रहते थे। सवेरे के समय लेना का रूप-सौन्दर्य और भी खिल जाता था। वह हर दिन नया निखार लेकर जागती थी और उसकी आंखों का रंग सवेरे के नये खिले नील पुष्पों जैसा स्वच्छ, निर्मल और चटकदार होता था। रविवार के सवेरे पूरा समय मैं उसकी रूप-माधुरी को निहारने में ही बिता देता था। ओल बेनसन का किशोरी लेना के पीछे दीवाना बनकर घूमते रहने का रहस्य अब मेरी समझ में आने लगा था।

"ओल की नीयत में ज़रा भी खोट नहीं थी और न उसने मुझे कभी तकलीफ देने की कोशिश की।" लेना ने एक बार कहा था, "लोग बेकार ही उसके पीछे पड़ गए। बेचारा आकर बैठ जाता, मुझे देखा करता और इस तरह अपनी बदकिस्मती को भुलाने की कोशिश करता था। मुझे भी अच्छा लगता था। रात-दिन जानवरों से घिरे रहना पड़े तो आदमी का सहवास किसे अच्छा नहीं लगता—फिर वह आदमी कैसा ही क्यों न हो!"

"लेकिन वह तो शायद घुन्ना था। लोग कहते थे कि हर समय मुंह चढ़ाए बैठा रहता और एक अक्षर भी नहीं बोलता था।" मैंने कहा।

"नहीं, घुन्ना तो नहीं था। नार्वी भाषा में बोलता था और खूब बातें करता था। किसी अंग्रेजी जहाज़ पर मल्लाह रह चुका था और कई देश घूम आया था। बड़े अजीब गुदने गुदा रखे थे उसने अपने बदन पर। हम लोग घंटों बैठे देखा करते—वहां और देखने को था भी क्या? ओल तसवीरों की जीती-जागती किताब की तरह था। उसके एक हाथ पर जहाज़ और स्ट्राबेरी बीनती हुई लड़की का गुदना था और दूसरे हाथ पर छोटे-से घर के आगे खड़ी एक लड़की गुदी थी। घर के चारों ओर बागुड़ और बागुड़ में आने-

जाने के लिए दरवाज़ा भी था और वह लड़की वहां खड़ी अपने प्रियतम की बाट जोह रही थी। उसी हाथ की बांह पर ज़ो गुदना था उसमें लड़की का परदेस गया नाविक पति लौट आया था और अपनी प्रियतमा को चूम रहा था। ओल ने उस गुदने का 'नाविक का गृहागमन' या ऐसा ही कुछ नाम बताया था।"

मैंने कहा, "अगर घर में शंखिनी औरत हो तो ओल क्या, कोई भी आदमी मौका पाकर खूबसूरत लड़की के पास बैठना और उसे देखते रहना चाहेगा।"

"तुम्हें शायद नहीं मालूम कि ओल ने मेरी से शादी क्यों की थी ?" लेना ने भेद की बात बताते हुए कहा, "उसका खयाल था कि वह स्थिरचित्त है और उसे नियन्त्रण में रख सकेगी। ओल में एक बड़ी कमज़ोरी थी। किनारे पर उतरते ही उसके संयम का बांध टूट जाता था। आखिरी बार वह दो साल की समुद्री-यात्रा के बाद लिवरपूल के बन्दरगाह पर उतरा तो रातों-रात सारा पैसा, घड़ी और कुतुबनुमा तक गंवाकर नंगा फकीर हो गया। कुछ औरतों के चक्कर में ऐसा फंसा कि तन-बदन की भी सुध न रही। एक छोटे यात्री-जहाज़ पर खलासीगिरी करता किसी तरह अपने देश पहुंचा। मेरी उसी जहाज़ पर परिचारिका थी। वह उसे रास्ते-भर सुमार्ग पर आने का उपदेश देती रही। ओल ने सोचा कि यह औरत है जो मेरी नकेल अपने हाथ में रख सकेगी और उसके दामन में जा गिरा। बेचारा ओल ! मेरे लिए अपने घोड़े के तोबरे में छिपाकर शहर से मिठाई लाया करता था। लड़कियों के लिए उसकी जान भी हाज़िर रहती थी—कोई कुछ भी मांगे वह मना नहीं कर सकता था। उसका बस चलता तो वह अपने गुदने भी उतारकर किसी लड़की को दे देता। गांववालों में मुझे सिर्फ उसीके लिए रंज है।"

कभी लेना के यहां रात में देर हो जाती तो पोली वायलिन-शिक्षक अपने कमरे में से बाहर आ खड़ा हो जाता और मुझे सीढ़ियां उतरते देख जाने क्या अंट-शंट बड़बड़ाने लगता। मैं बड़ी मुश्किल से अपना गुस्सा रोक पाता था और डरता था कि किसी दिन झगड़ा न हो जाए। एक दिन लेना ने उससे कह दिया था कि आचार्यजी, आप बहुत बढ़िया बजाते हैं, सुनकर तबीयत

खुश हो जाती है; बस उस दिन से आचार्यजी अपने कमरे का दरवाज़ा खुला और लेना के यहां आने-जानेवालों पर निगाह रखने लगे थे।

लेना के ही कारण इस पोल और मकान-मालिक में खासा मन-मुटाव हो गया था। कर्नल रैले बूढ़ा आदमी था और केनटकी से लिंकन आया था। विरासत में उसे काफी पैसा मिला था। उसने वह सारा पैसा तेज़ी के ज़माने में मकान खरीदने में लगा दिया था। अब रोज़ अपने दफ्तर में बैठा सोचा करता कि सारा पैसा कहां चला गया। और जो पैसा जायदाद में फंस गया है उसे कैसे निकाला जाए ! बीवी उसकी बहुत पहले ही मर चुकी थी और इस दूरस्थ पश्चिमी शहर में बेचारा स्नेह, सहानुभूति और महिलाओं की सोहबत के लिए तरसा करता था। लेना की आवाज़ उसे बहुत पसन्द थी; कहता था कि सुनकर दाक्षिणात्यों की आवाज़ याद आ जाती है, और इसीलिए लेना से बोलने-बात करने के मौके ढूंढ़ा करता था। बसन्त ऋतु में उसने लेना के कमरे का रंग-रोगन और वाल-पेपर लगाने का काम खुद किया और स्नानघर में टिन का जो बायटब था उसके बदले चीनी मिट्टी का नया बायटब लगवा दिया। जब तक मरम्मत का काम चलता रहा बूढ़ा कर्नल अवसर-कुअवसर का खयाल छोड़ लेना के पास आ धमकता और उससे सलाह-मशविरा करने लग जाता था—सब आपके लिए है इसलिए आपकी पसन्द-नापसन्द को तरजीह तो देनी ही होगी। इसी बीच एक दिन पोली संगीताचार्य ओरडिन्स्की साहब लेना के यहां तशरीफ लाए और फरमाया कि अगर मकान-मालिक बदतमीजी से पेश आ रहा हो और उसकी हरकतें हद से गुज़र रही हों तो बस हुक्म की देर है, उसके होश यों ठिकाने लगा दिए जाएंगे। यह किस्सा सुनाते हुए लेना हंसी के मारे दुहरी हो गई थी।

फिर वह सिर हिलाते हुए बोली थी, "समझ में नहीं आता था कि क्या करूं ! आचार्यजी इस तरह ताव-पेच खा रहे थे, मानो कर्नल को कच्चा ही चबा जाएंगे। वे कर्नल से उलझें, यह मैं कभी नहीं चाहती। बूढ़ा चिपकू ज़रूर है, पर अकेला है इसलिए दया भी आती है। और फिर ओरडिन्स्की को वह समझता ही क्या है। कह रहा था कि पड़ोसी किरायेदार से कोई शिकायत हो या वह दिक करे तो बेझिझक बता देना, चुटकियों में सीधा करके रख दूंगा।"

एक बार शनिवार की रात को मैं लेना के यहां खाना खा रहा था कि दरवाज़ा खटखटाने की आवाज़ सुनाई दी। किवाड़ खोलकर देखा तो ओरडिन्स्की सिर्फ कमीज़ पहने और कालर लगाए वहां खड़ा था। प्रिन्स का पोल से जनम का बैर ठहरा। देखते ही शिकारी कुत्ते की तरह गुर्राने लगा। उधर आचार्यजी माफी मांग-मांगकर गुज़ारिश कर रहे थे कि इस तरह बेढंगे कपड़ों में आना वाजिब तो नहीं, मगर मजबूरी है, लेना साहिबा, अगर चन्द सेफ्टी पिनें हों तो मांगे देने की मेहरबानी कीजिए।

"आप पहले अन्दर तो आइए मिस्टर ओरडिन्स्की। देखूं तो सही कि बात क्या है ?" लेना ने उसे अन्दर लेकर दरवाज़ा बन्द करते हुए कहा और फिर मुझसे बोली, "जिम, पहले प्रिन्स को चुप करो।"

मैंने प्रिन्स की थूथन पर मार-मारकर उसे चुप किया। इस बीच ओरडिन्स्की लेना को बतलाता रहा कि आज बहुत दिनों के बाद उसका जलसा है और वहां जाने के लिए वास्कीट पहन रहा था तो वह पीठ में से फट गया; इस समय रात में दर्ज़ी से तुरत मरम्मत तो करवा नहीं सकता, इसलिए सोचा कि अभी पिनों से टांककर काम निकाल लिया जाए।

लेना ने उसे घुमाकर देखा तो हंसते-हंसते लोट-पोट हो गई। वास्कीट का कपड़ा पीठ में से कोई बित्ता-भर चिर गया था। वह बोली, "पिनों से बात बनेगी नहीं, मिस्टर ओरडिन्स्की। काफी समय तक तहाकर रखा रहा, इसलिए शिकन खा गया और ज़रा-सा ज़ोर पड़ते ही चिर गया है। आप उतार दीजिए। मैं अभी, दस मिनट में अन्दर से पैबन्द लगाकर ठीक किए देती हूं।" वह वास्कीट लेकर अपनी दुकान में चली गई और हम दोनों को एक-दूसरे से निपटने के लिए छोड़ गई। ओरडिन्स्की दरवाज़े के सामने, छाती पर हाथ बांधे, अपनी तिरछी भूरी आंखों से मुझे घूरता लकड़ी की मूरत की तरह खड़ा था। उसका सिर चाकलेट की बूंद की तरह लम्बोतरा था और उसपर घास की रंगत के रूखे बाल उगे हुए थे। मेरे जाते समय वह अभी तक केवल बड़बड़ाता ही रहा था इसलिए जब अभी उसने मुझे सम्बोधित किया तो मेरे आश्चर्य की सीमा न रही।

'मिस लिंगार्ड की' उसने बड़ी मगरूरी के साथ कहा, "मैं इज़्ज़त, बहुत ही ज़्यादा इज़्ज़त करता हूं।"

"मैं भी करता हूं।" मैंने उतने ही रूखेपन से जवाब दिया।

उसने जैसे मेरी बात को सुना ही नहीं। उसी तरह हाथ बांधे अपने कमीज़ की आस्तीनों पर तेज़ी से अंगुलियां चलाने लगा और तब छत की ओर ताकता हुआ बोला, "रहम-ओ-करम, इज़्ज़त-ओ-नफासत वगैरह खसूसियतों को यहां समझता ही कौन है? तमीज़ और कल्चर का यहां मज़ाक उड़ाया जाता है। कालेज के नासमझ और मगरूर लौंडे ही-ही हा-हा भले ही कर लें, नफासत को क्या समझें?"

गुस्सा तो इतना आया कि उठाकर दे मारूं, परन्तु जब्त कर गया और शान्त मन से गम्भीरतापूर्वक बोला, "मिस्टर ओरडिन्स्की, अगर आपका इशारा मेरी ओर है तो बता देना अपना कर्तव्य समझता हूं कि मैं मिस लिंगार्ड को बहुत दिनों से जानता हूं और उनके विचारों की कद्र करता हूं। हम दोनों एक ही गांव के रहनेवाले हैं और साथ छोटे से बड़े हुए हैं।"

छत में अटकी उसकी आंखें धीरे-धीरे उतरती हुई मेरे चेहरे पर आकर थम गईं। वह बोला, "क्या मैं समझूं कि तुमको इस खातून की इज़्ज़त-आबरू का पूरा खयाल है और तुम इसके सीधेपन का नाजायज़ फायदा उठाना नहीं चाहते?"

"मिस्टर ओरडिन्स्की, हम इस तरह के शब्दों का प्रयोग नहीं करते, क्योंकि ऐसे तुच्छ विचार हमारे मन में आते ही नहीं। हमारे यहां कोई भी कमानेवाली लड़की किसी भी कालेज-विद्यार्थी को खाने पर बुला सकती है, और कोई इसे बुरी बात नहीं समझता। ऐसी और भी कई बातें हैं जिन्हें हमारे यहां आम समझा जाता है और उन्हें कोई तूल नहीं दिया जाता।"

"फिर तो गलतफहमी हो गई, जिसकी माफी चाहता हूं।" उसने क्षमा-याचनापूर्वक सिर झुकाते हुए कहा, "मिस लिंगार्ड बहुत भोली हैं, हर किसी पर आसानी से एतबार कर लेती हैं। ज़िन्दगी की सख्तियों से उन्होंने कोई सबक नहीं सीखा। लोग आसानी से उन्हें गुमराह कर सकते हैं। जहां तक मेरा और आपका ताल्लुक है, हम लोग शरीफ हैं और हमारी शराफत का तकाज़ा है कि उन्हें लुच्चों से आगाह करें और उनके फेर में पड़ने से बचाएं। इसके बाद वह आंखें सिकोड़कर मुझे घूरने लगा।

लेना वास्कीट लिए लौट आई और बोली, "जब जाने लगिए तो ज़रा

यहां भी होते जाइएगा मिस्टर ओरडिन्स्की। मैंने आपको जलसे के लिबास में कभी नहीं देखा है।" और उसने दरवाज़ा खोलकर संगीताचार्य जी को विदा कर दिया।

थोड़ी ही देर बाद ओरडिन्स्की सज-धज कर आ पहुंचा। गले में मोटा-सा मफलर लपेटे था, दुबले-पतले हाथों में मोटे-मोटे ऊनी दस्ताने पहने और वायलिन का बक्सा लिए था। लेना ने थोड़ी तारीफ कर दी तो फूलकर कुप्पा हो गया और वहां से ऐसे उस्तादी ठठके से चला कि हमारे लिए हंसी रोकना मुश्किल हो गया। आखिर दरवाज़ा बन्द कर ठठा ही पड़े। लेना ने सहानुभूति-भरे स्वर में कहा, "गरीब है बेचारा और भावुक भी। बात तो इस कदर लगती है कि कुछ न पूछो।"

उसके बाद से ओरडिन्स्की बड़े दोस्ताना ढंग से पेश आने लगा, मानो हममें कोई समझौता हो गया हो। एक बार उसने बड़ा गरमागरम लेख लिखा और उसमें नागरिकों की संगीत-सम्बन्धी रुचि और उनके संगीत-ज्ञान की खूब खबर ली। फिर उसने मुझसे 'इल्तिजा' की कि उसका वह लेख स्थानीय दैनिक पत्र के सम्पादक को दे आने की हमेरबानी करूं। 'और देखिए, अगर एडीटर शाया करने से इनकार करे तो बिलाशक कह दीजिए कि जनाब ओरडिन्स्की साहब के रूबरू जवाबदेही करनी होगी। और हां, यह भी कि एक हरुफ भी कम नहीं किया जाएगा, कोई मुजायका नहीं अगर सारे सीखने वाले छुट्टी कर जाएं। बात उसूल की है और उसूल के सवाल पर समझौता गैर मुमकिन है।' खैर साहब, लेख छप गया और जैसा था वैसा ही छपा, यानी छापे की अशुद्धियां ढेरों थीं, जिसके बारे में ओरडिन्स्की का कहना था कि सम्पादक ने जान-बूझकर गलतियां रहने दीं। लेकिन उस लेख का न कहीं चर्चा हुआ और न किसी ने जिक्र किया; फिर भी ओरडिन्स्की प्रसन्न और सन्तुष्ट था। उसे विश्वास हो गया कि उसने नागरिकों को 'वहशी' कहकर जो लताड़ा तो उनके होश ठिकाने आ गए और सिर नीचा करके बैठ गए। उसने मुझसे कहा भी था, 'देख लिया न आपने, जांबाज़ से सभी खौफ खाते हैं और बहादुरी के वगैर खुद्दारी गैर-मुमकिन है।' अब वह सड़कों पर और भी मगरूरी से सीना तानकर चलता, लोगों को तुच्छता की दृष्टि से देखता और अपने शिष्यों के घर

जाता तो उनकी बरसातियों के ज़ीने ज़्यादा इत्मीनान से चढ़ता और उनके दरवाज़े की घंटियां ज़्यादा आत्मविश्वास से बजाता था। एक बार लेना से उसने कहा था कि जब चारों ओर से 'बेभाव की पड़ रही थी' तो जिम साहब ने इमदाद की उसे ताज़िन्दगी नहीं भूलेगा।

लेकिन यहां खुद मेरे पांव डगमगाने लगे थे। लेना ने मेरा चित्त उचाट कर दिया था। पढ़ने-लिखने में ज़रा भी मन नहीं लगता और क्लास में कोई रुचि नहीं रह गई थी। सारा समय लेना से हंसी-मज़ाक, प्रिन्स से खेलने और उसे करतब सिखाने, पोल संगीताचार्य से गप-शप लगाने और कर्नल साहब के साथ बग्घी की सैर करने में बीतने लगा था। इधर-उधर कर्नल साहब जहां भी मुझे देखते अपने साथ पकड़ ले जाते थे; कभी सैर कराते और कभी लेना और कभी जवानी में जिन 'अनुपम सुन्दरियों' के सम्पर्क में आए थे उनके किस्से सुनाया करते। असल में हम तीनों—मैं, कर्नल और पोल—लेना के प्यार में गले तक डूबे हुए थे।

मई के ही महीने में क्लेरिक साहब के पास हारवर्ड कालेज की ओर से 'इंस्ट्रक्टरशिप' का प्रस्ताव आया, जिसे उन्होंने स्वीकार कर लिया। वे चाहते थे कि मैं भी शरद् ऋतु में वहीं चला जाऊं और अपनी शेष पढ़ाई हारवर्ड में ही पूरी करूं। लेना के प्रति मेरे प्यार की बात उन्हें मालूम हो गई थी। मैंने नहीं बताया, पर वे जाने कैसे जान गए और एक दिन उन्होंने मुझे बिठाकर खूब समझाया।

"यहां अब तुम कुछ भी नहीं कर पाओगे। या तो पढ़ाई छोड़कर किसी काम-धन्धे में लग जाओ, या किसी दूसरे विश्वविद्यालय में जाकर फिर शुरू से मन लगाकर पढ़ो। जब तक इस खूबसूरत नार्वी लड़की के चक्कर में पड़े रहोगे, तुमसे कुछ न होगा। इनकार मत करो, मुझे सब मालूम है। कई बार तुम दोनों को साथ-साथ नाटकघर में देख चुका हूं। वह जितनी खूब-सूरत है उतनी ही गैर जिम्मेवार भी। मेरी तो उसके बारे में यही राय है।"

क्लेरिक साहब ने दादाजी को भी पत्र लिखा कि वे मुझे अपने साथ पूरब ले जाना चाहते हैं। दादाजी ने इजाजत दे दी कि यदि मैं जाना चाहूं तो जा सकता हूं। जिस दिन उनका यह पत्र मिला हर्ष और विषाद दोनों ही हुए। उस दिन शाम को मैं घर से बाहर ही नहीं निकला। कमरे में बैठा

इसी विषय पर सोचता रहा। अन्त में इस निर्णय पर पहुंचा कि शायद लेना के मार्ग में बाधक हो रहा हूं, मुझे कुछ उदार होना चाहिए; यदि मन बहलाने को मैं न रहा तो वह शादी कर लेगी और उसका भविष्य सुनिश्चित हो जाएगा।

दूसरे दिन शाम को मैं लेना से मिलने गया। वह बरोठेवाली खिड़की में पांव पर पट्टी बांधे कौच पर पड़ी थी। उसने एक छोटी नासमझ रूसी लड़की को अभी-अभी ही नौकर रखा था। यह प्रसाद उसीका दिया हुआ था। हड़बड़ी में उसने जो इस्त्रा उठाई तो लेना के अंगूठे पर गिरा दी। कौच के पास वाली मेज़ पर ग्रीष्मकालीन फूलों का एक गुलदस्ता था। ओरडिन्स्की को जैसे ही इस दुर्घटना का पता चला वह 'खैराफियत' पूछने आया और फूलों का यह गुलदस्ता रख गया था। लेना के घर में अगर पत्ता भी खड़कता तो उस बन्दे को मालूम हो जाता था।

लेना अपनी किसी ग्राहक का मज़ेदार किस्सा सुना रही थी कि मैंने गुलदस्ता उठा लिया और उसे बीच में रोककर कहा, "किसी न किसी दिन बुढ़ऊ तुमसे ज़रूर शादी का प्रस्ताव करेंगे।"

"करेंगे क्या, कई बार कर चुके हैं।" उसने मुस्कराकर कहा।

"अच्छा, तुम्हारे मना कर देने के बाद भी?"

"मना करने का कोई असर नहीं होता। उलटे उन्हें खुशी होती है। बूढ़ों के हाल तो तुम जानते ही हो। बड़े आशिक-मिज़ाज होते हैं और प्रेम करने को कोई मिल जाए तो फूले नहीं समाते हैं।"

"कर्नल तो तुमसे अभी, इसी क्षण शादी कर ले। लेकिन मेरा अनुमान है कि तुम बूढ़े से शादी नहीं करोगी, चाहे वह कितना ही अमीर क्यों न हो!"

लेना ने करवट बदलते हुए मुझे विस्मय से देखा और बोली, "शादी तो मैं किसीसे भी नहीं करूंगी। क्या तुम इस बात को भूल गए?"

"यह सब बकवास है लेना। हर लड़की यही कहती है और शादी कर लेती है। तुम्हारे-जैसी खूबसूरत लड़की तो कभी क्वांरी रह नहीं सकती।"

उसने ज़ोर से सिर हिलाकर कहा, "औरों की तो नहीं जानती, पर मैं शादी नहीं करूंगी।"

"क्यों नहीं करोगी? आखिर कोई कारण?" मैंने ज़ोर देकर पूछा।

लेना हंस दी, "पहली बात तो यह कि मुझे पति नहीं चाहिए। पुरुष मित्र के रूप में तो फिर भी गनीमत है, लेकिन शादी करके जहां पति बना कि झक्की बूढ़े बाप की तरह आचरण करने लगता है। अच्छे-अच्छों को देख चुकी हूं। बस, सलाहों का और वह भी नेक सलाहों का पुलिन्दा खोलकर बैठ जाएंगे, यह करो, वह करो; यह अच्छा है, वह बुरा है, आदि-आदि। और फिर यह चाहेंगे कि तुम घर से पांव बाहर मत निकालो। उनका बस चले तो खूंटे से बांधकर रखा करें। मुझे यह सब पसन्द नहीं। अपनी मौज से रहना चाहती हूं। जब जितनी चाहे बेवकूफियां करूं, किसीके आगे जवाबदेही न करना पड़े।"

"लेकिन एक दिन आएगा जब अकेलापन अखरने लगेगा। तुम थक जाओगी और चाहने लगोगी कि अपना भी कोई परिवार होता।"

"मुझे अकेलापन कभी नहीं अखर सकता। यहां तो अकेले रहना खूब पसन्द है। मिसेज़ टामस के यहां काम पर लगी तो उन्नीस बरस की थी, लेकिन तब तक एक भी रात अकेले नहीं सोई थी, कम से कम तीन बच्चे तो साथ सोने वाले होते ही थे। जब ढोर चराने जाती तब ज़रूर कोई रोकने-टोकने वाला न होता, बाकी तो कोई क्षण अपना न होता था।"

आमतौर पर लेना अपने देहात के जीवन की चर्चा कम ही करती थी। कभी व्यंग्य में तो कभी उदासीनता से एक-आध वाक्य कहकर किस्सा खत्म कर देती थी। लेकिन आज न जाने कैसे उसका मन भटककर पुराने दिनों की याद में खो गया था। वह अपने बचपन के उन दिनों का हाल बताने लगी जब उसे हर समय किसी भारी बच्चे को अपनी गोद में लादे रहना पड़ता था, भाई-बहिनों को नहलाने-धुलाने में मां का हाथ बंटाना पड़ता था और उनके ठण्ड से फटे हाथ-पांव और चेहरों को साफ रखना पड़ता था। होश संभालने के बाद से ही वह ये सारे काम करती आई थी। घर और परिवार के बारे में उसकी कुल जमा मीठी या कड़वी स्मृति इतनी ही थी : चिल्ल-पौं मचाते हुए ढेर सारे बच्चे, गुस्से में भरा एक आदमी और गले तक काम में डूबी एक बीमार औरत !

"मां बेचारी का कोई कसूर नहीं। उसका बस चलता तो हमें फूलों की सेज सुलाती और तिनका भी न तोड़ने देती। अभी धरती में से उगी भी

नहीं थी कि कमरतोड़ काम का बोझ मेरे सिर आ पड़ा। बचपन के खेल-कूद के दिन क्या होते हैं, मैंने जाना ही नहीं। ढोरों को चराने और गाय-भैंस को दुहने काबिल क्या हुई, खुद भी ढोर बन गई; फिर तो जानवरों की बू-बास में ऐसी सनी कि कभी छुटकारा न मिला। नीचे पहनने के जो दो-एक कपड़े थे मैं उन्हें बिस्कुट के डिब्बे में रखती थी। शनिवार की रात को अगर ज़्यादा थकी न होती तो सबके सो जाने के बाद नहा लेती थी। पवनचक्की से दो बार में जाकर पानी लाना पड़ता था। चूल्हे पर कपड़े उबालने के बरतन में पानी तपाती। जब तक पानी गरम होता, गुफा में रखा नहाने का टब लेने जाती और उसे रसोईघर में रखकर नहाती थी। उसके बाद साफ कपड़ा पहिनकर जिस बिस्तरे में सोने जाती वहां बू-बास भरे दो बच्चे पहले से सोये होते। अगर मैं उन्हें न नहलाऊं तो वे कभी नहा नहीं सकते थे। यह है पारिवारिक जीवन, जिसे मैं खूब भोग चुकी हूं। और अब इसके पास भी नहीं फटकना चाहती।"

"सब ऐसा थोड़े ही होता है।" मैंने आपत्ति की।

"कमोबेश यही होता है। सबसे बुरी बात यह है कि तुम्हें किसीकी अधीनता में रहना पड़ता है। लेकिन तुम इतने आग्रह से कह और पूछ क्यों रहे हो ? कहीं यह डर तो नहीं सता रहा है कि मैं तुम्हें किसी दिन अपने से शादी करने के लिए मजबूर न करने लगूं ?"

तब मैंने उसे बताया कि मैं यहां से जा रहा हूं।

"क्यों जा रहे हो, जिम ? क्या मैंने तुम्हारे साथ अच्छा व्यवहार नहीं किया ? क्या तुम मुझसे नाराज़ हो ?"

"तुम्हारा व्यवहार तो बहुत ही अच्छा रहा है लेना।" मैं फूट पड़ा, "इतना अच्छा कि मैं दूसरा कुछ सोच ही नहीं सकता। और जब तक तुम्हारे साथ रहूंगा दूसरी कोई बात सोच भी न सकूंगा। यहां रह गया तो न कुछ कर पाऊंगा और न कहीं जम पाऊंगा। और शायद तुम भी इस बात को जानती हो ?"

मैं धम्-से उसके पास बैठ गया और मुंह लटकाकर ज़मीन की ओर तर्क भूल गया हूं।

ताकने लगा। बुद्धि एकदम कुण्ठित हो गई थी और लगता था जैसे सारे

लेना ने मुझे अपने पास खींच लिया और जब बोली तो उसके स्वर में सन्देह, आशंका, हिचक आदि चोट पहुंचाने वाली कोई बात नहीं थी।

"मुझे यह नौबत आने ही नहीं देनी चाहिए थी।" उसने अस्फुट स्वर में कहा, "अपने-आप पर संयम रखना चाहिए था। तुमसे मिलने आना बुरा हो गया। लेकिन अपने को रोक भी तो नहीं सकती थी। सच तो यह है कि तुम्हारे लिए दीवानी हो उठी थी। कब तुम्हारी ओर आकर्षित हुई, कह नहीं सकती। शायद एण्टोनिया के बराबर बरजते रहने के कारण ही तुम्हें पाने और अपना बनाने के लिए इतनी उद्विग्न हो गई थी। वैसे मन को बहुत मारती रही हूं और दिनों तक मैंने तुम्हें अपने प्यार की भनक भी नहीं पड़ने दी है। क्यों सच है न ?"

जिन्हें भी प्यार करती थी लेना लिंगार्ड कभी उनसे कोई बात छिपाती नहीं थी। प्यार-भरे भोलेपन से सब-कुछ बता देती थी।

अन्त में उसने मुझे एक मीठा, प्यारा और आत्मोत्सर्ग से भरा चुम्बन देकर विदा कर दिया।

"मैं तुमसे मिलने के लिए आई, इसका तुम्हें अफसोस तो नहीं है न ?" उसने फुसफुसाकर कहा, "तुम इतने नन्हे-मुन्ने, प्यारे-प्यारे और निर्दोष लगते थे कि बरबस तुमपर प्यार उमड़ आया और तुम्हारी पहली प्रियतमा बनने के लिए मेरा जी बेकरार हो उठा। मुझे तो यह सब स्वाभाविक ही लगता है।"

वह हमेशा इस तरह उदास और गम्भीर होकर चूमती थी, मानो सदा के लिए विदा दे रही हो।

मेरे लिंकन छोड़ने से पहले हम दोनों इसी तरह बार-बार विदा देते और लेते रहे; लेकिन एक बार भी उसने मुझे रोकने या मेरे मार्ग की बाधा बनने की कोशिश नहीं की। हर बार वह यही कहती थी, "अरे, तुम अभी गए नहीं ? हर बार जाने-जाने कहते हो और अभी यहीं हो !"

और मेरा लिंकन वाला अध्याय अकस्मात् ही समाप्त हो गया। दादाजी से मिलने घर गया, फिर वहां से विरजीनिया अपने रिश्तेदारों के पास चला गया और उधर से ही क्लेरिक साहब के पास बोस्टन पहुंच गया। उस समय मैं उन्नीस बरस का था।

चौथा भाग

लिंकन छोड़ने के दो वर्ष बाद मैंने हारवर्ड में अपना विश्वविद्यालयीय अध्ययन पूरा किया। लॉ कालेज में भर्ती होने से पहले, गर्मियों की छुट्टियों में, मैं घर गया था। जिस दिन घर पहुंचा, उस रात मिसेज़ हार्लिङ्ग, फ्रान्सिस और सैली मेरे यहां मुझसे मिलने आई थीं। सब कुछ पहले की ही तरह लग रहा था। दादाजी और दादीजी की उम्र तो काफी हो गई थी, लेकिन वे फिर भी ज़्यादा बूढ़े नहीं लगते थे। फ्रान्सिस हार्लिङ्ग की शादी हो गई थी और वह और उसका पति ब्लैकहॉक में मिस्टर हार्लिङ्ग के कारबार की देख-भाल करते थे। जब हम सब दादीजी के कमरे में बैठे तो लग रहा था जैसे मैं यहां से कहीं गया ही नहीं था। लेकिन एक विषय ऐसा था जिससे हम बराबर कतराते रहे।

मिसेज़ हार्लिङ्ग को उनके दरवाज़े तक पहुंचाने के बाद जब मैं और फ्रान्सिस लौट रहे थे तो उसने सहज भाव से कहा, "उस बेचारी एण्टोनिया के बारे में तो तुम्हें मालूम हो ही गया होगा।"

बेचारी एण्टोनिया! मेरा मन इस विचार से खट्टा हो गया कि अब तो हर कोई उसे बेचारी एण्टोनिया कहकर दया दिखाया करेगा। दादीजी ने मुझे पत्र लिखकर बताया था कि किस तरह एण्टोनिया लारी डानओवान से शादी करने गई थी, कैसे वह उसे छोड़कर भाग गया और अब एण्टोनिया एक बच्चे की मां थी। बस, कुल जमा इतनी ही बात मुझे मालूम थी और यह मैंने फ्रान्सिस को बता दी।

तब फ्रान्सिस ने कहा, "लारी ने उससे शादी की ही नहीं। जबसे लौटकर आई है मैंने उसे नहीं देखा। घर पर ही रहती है और कस्बे आने का नाम भी नहीं लेती। एक बार अम्मां को अपनी बच्ची दिखलाने लाई थी। लगता है कि जनम-भर के लिए अम्ब्रोश की गुलाम हो गई है।"

सब सुनकर एण्टोनिया पर बड़ा गुस्सा आया। उसके बारे में क्या सोचा था और उसने यह क्या कर डाला! कहां से कहां जा गिरी और अब लोगों की दया की पात्र बनी ज़िन्दगी के दिन काट रही है! और एक लेना लिंगार्ड है। लोग उसे तितली और अलल बछेरी और जाने क्या समझते थे और हर कोई यही कहता था कि गुलछर्रों में गला फंसाकर ज़िन्दगी तबाह कर लेगी। वही लेना लिंकन की सबसे चलती हुई सिलाई-कटाई की दुकान की मालकिन है और सारा ब्लैकहॉक उसकी इज़्ज़त करता है। दिल लेना भी देती है, लेकिन दिमाग को काबू में रखकर, वह मुहब्बत में होश-हवास नहीं खोती, प्यार को अपने काम और धन्धे के आड़े नहीं आने देती और इस दुनिया में इज़्ज़त-आबरू के साथ जी रही है।

उन दिनों लोग-बाग लेना की जितनी तारीफ करते थे टीनी सोडरबाल की उतनी ही निन्दा। वह कोई साल-भर पहले अपना भाग्य आज़माने के लिए पश्चिम की ओर चली गई थी। ब्लैकहॉक का कोई युवक हाल में ही सीटल से लौटा था और बता रहा था कि टीनी वहां योंही जोखिम उठाने नहीं, किसी खास उद्देश्य से और एक निश्चित योजना के साथ गई थी। मिसेज़ गार्डनर के होटल में अक्सर एक घुमन्तू व्यापारी आकर ठहरा करता था। सीटल के समुद्रतट पर उसके कई मकान खाली पड़े थे। वहां उसने टीनी को एक खाली मकान कारोबार करने के लिए दे दिया और अब वह सीटल में मल्लाहों का होटल चला रही थी। लोगों का कहना था कि अब टीनी की तबाही के दिन दूर नहीं। दुनिया-भर के लुच्चे और लम्पट मल्लाहों का होटल चलाकर वह अपने-आपको कितने दिन बचाए रख सकेगी। आज भले ही वह जगह अच्छी हो, लेकिन कल का क्या भरोसा और बदनामी होते कितनी देर लगती है! मल्लाहों के होटल सब एक-से बुरे और बदनाम होते हैं।

टीनी के बारे में यह सब सुनकर खयाल आया कि मैं उसे दूसरी लड़कियों

की तुलना में कभी ठीक से समझ नहीं पाया था। उसकी मुझे इतनी ही याद है कि वह ऊंची एड़ी के जूते पहने, बड़ी-सी किश्ती में कई सारी तश्तरियां उठाए, मिसेज़ गार्डनर के होटल में इठलाती-बलखाती तेज़ी से चला करती और बांके-सजीले गाहकों की ओर बड़ी तत्परता से एवं मामूली लोगों की ओर इतनी ही उपेक्षा से देखती थी; और बेचारे सामान्य कोटि के गाहक उससे इतना डरते थे कि जो एक बार परोस देती बिना सिर-पूंछ हिलाए चुपचाप खा लिया करते थे, कभी कुछ और मांगने की हिम्मत नहीं करते थे। मैंने सोचा कि अब शायद मल्लाह भी उससे उतना ही भय खाते होंगे। फ्रान्सिस हार्लिङ्ग के मकान की सामनेवाली बरसाती में बैठे हम टीनी के बारे में बातें कर रहे थे; लेकिन उस समय हममें से किसीको भी क्या पता था कि उसका कैसा और क्या भाग्योदय होने जा रहा है। ब्लैकहॉक के लड़के-लड़कियों में उसीका जीवन सबसे साहसपूर्ण रहा और उसे ही सबसे अधिक सम्पदा और सांसारिक सफलता भी मिली।

टीनी के भाग्योदय की कहानी संक्षेप में इस प्रकार है:

वह सीटल में मल्लाहों का होटल चला रही थी कि अलास्का में सोने की खदानें मिलने की बात मालूम हुई। उत्तर से ठट्ठ-के-ठट्ठ खनिक और मल्लाह सोने की थैलियां भरे चले आ रहे थे और हर किसीकी ज़बान पर सोना पाने की अद्भुत और रोमांचकारी कहानियां थीं। टीनी ने उस सोने को अपनी सगी आंखों से देखा और हाथों से छूकर उसके भारीपन का अन्दाज़ भी लगाया। वह लोगों की बातों को सुनती और उनपर विचार भी करती रही। आखिर खतरा मोल लेने और नया साहस करने की उमंग उसमें भी जाग पड़ी। एक बढ़ई और उसकी पत्नी को उसने साथ चलने के लिए राज़ी किया, अपना कारबार बेचकर नकद जेब में रखा और तीनों व्यक्ति सरकल सिटी की ओर चल पड़े। बर्फीले अन्धड़ में वे लोग स्कागुए पहुंचे, चिलकूट का दर्रा उन्होंने कुत्तों की स्लेज गाड़ी में पार किया और चपटे तल की डोंगियों में युकोन नदी के पार उतर गए। अभी सरकल सिटी में पहुंचकर दम भी नहीं ले पाए थे कि कुछ सिवाश इण्डियनों ने आकर खबर दी कि नदी के ऊपर की ओर क्लोण्डाइक क्रीक नामक जगह के आस-पास सोने की बहुत बढ़िया खदानों का पता चला है। दूसरे ही दिन

टीनी और उसकी मित्र-मण्डली और सरकल सिटी के लगभग सभी निवासी क्लोण्डाइक क्रीक की ओर दौड़ पड़े। टीनी ने जिस स्टीमर से युकोन नदी पार की वह यात्रियों को पार उतारनेवाला अन्तिम स्टीमर था, क्योंकि उसके बाद नदी जम गई। इस अन्तिम स्टीमर के यात्रियों ने ही डासन सिटी की नींव डाली। कुछ ही सप्ताहों में वहां पन्द्रह हज़ार की आबादी वाला तम्बुओं का अच्छा-खासा शहर खड़ा हो गया। टीनी और बढ़ई की पत्नी ने उन लोगों के लिए एक तम्बू में खाना पकाने का काम शुरू कर दिया। खनिकों ने उसे थोड़ी ज़मीन दे दी और बढ़ई ने उस ज़मीन पर लकड़ी के लट्ठों की एक होटल खड़ी कर दी। उस होटल में टीनी ने एक-एक दिन में डेढ़-डेढ़ सौ आदमियों तक को खाना खिलाया। बीस-बीस मील के फासले से खनिक बर्फ के जूते पहने टीनी के होटल में आते और सोना देकर ताज़ी रोटियां खरीद ले जाते थे।

सर्दियों में टीनी ने अपने होटल में एक ऐसे स्वीड को शरण दी जिस की दोनों टांगें बर्फ के तूफान में ठिठुर गई थीं; वह रात में अपनी खदान से अपने झोंपड़े को लौट रहा था कि तूफान में भटक गया और सदा के लिए दोनों टांगें गंवा बैठा। ऐसी विपत्ति में अपनी भाषा बोलने वाली औरत सेवा-चाकरी के लिए मिल गई तो इसे उसने अपना सौभाग्य ही समझा। जब डाक्टरों ने बताया कि दोनों पांव काटने पड़ेंगे तो बेचारा हताश हो गया और कहने लगा कि इससे तो मर जाना अच्छा; दोनों पांव खोकर मेरे-जैसा मज़दूर इस कठोर दुनिया में कैसे जी सकेगा! आखिर वह ऑपरेशन के दौरान ही मर गया। लेकिन मरने से पहले हंकर क्रीक की अपने कब्ज़े की खुदाई की ज़मीन टीनी सोडरबाल के नाम वसीयत करता गया। टीनी ने अपना होटल बेच दिया; जो पैसा आया उसका आधा डासन शहर में मकान बनाने की ज़मीनों में फंसाया और शेष से अपने कब्ज़े की ज़मीन में खानों की खुदाई शुरू करवा दी। अब वह रहने के लिए भी वहीं मौके पर चली गई। हतोत्साहित हो जाने वाले खनिकों के टुकड़े खरीदने और कमीशन पर खदान योग्य ज़मीनों के क्रय-विक्रय का काम भी उसने शुरू कर दिया।

दस बरस क्लोण्डाइक में बिताने के बाद टीनी मालामाल होकर

सैनफ्रांसिस्को में रहने चली आई। १९०८ में, साललेक सिटी में उससे मेरी भेंट हुई थी। अब वह दुबले-पतले शरीर और सुते हुए चेहरे वाली प्रौढ़ महिला थी। कपड़े बहुत बढ़िया पहनती, मितभाषिणी थी और लोगों से ज्यादा मेल-जोल नहीं बढ़ाती थी। उसे देखकर मुझे मिसेज़ गार्डनर की याद हो आती थी, वही मिसेज़ गार्डनर जिसके यहां वह ब्लैकहॉक में किसी ज़माने में नौकरी करती थी। वह मुझे उन बड़ी-बड़ी जोखिमों के बारे में बताती रही जो उसने सोने के लिए उस इलाके में उठाई थीं। लेकिन अब वह आवेग और रोमांच रह नहीं गया था। बड़ी ईमानदारी से उसने मेरे आगे यह स्वीकार किया कि अब तो उसकी सारी दिलचस्पी पैसे से पैसा बनाने और पैसे को बढ़ाने में है। सारी दुनिया में सिर्फ दो व्यक्तियों के लिए उसके मन में स्नेह था : एक तो जानसन नाम का वह स्वीड जो विरासत में उसे खदानों वाली ज़मीन दे गया था, और दूसरी लेना लिंगार्ड। लेना को उसने सैनफ्रांसिस्को बुला लिया था और वहीं कारबार करने के लिए राज़ी कर लिया था।

"लिकन उसके रहने काबिल जगह थी भी नहीं।" टीनी ने मुझसे कहा, "वहां वह लोगों की निन्दा-कुत्सा से बच नहीं सकती थी। फ्रिस्को उसके लिए बहुत उपयुक्त जगह है। यहां उसने बढ़िया ग्राहकी जमा ली है। लेकिन आदतें वैसी ही हैं जैसी पहले थीं। हद दर्जे की लापरवाह ! इतनी गनीमत है कि अपना आपा नहीं खो देती; मन को बराबर काबू में रखती है। हमेशा मस्त रहती है और बुढ़ाने का तो जैसे नाम भी नहीं जानती। जितने भी लोगों को जानती हूं, उनमें एक उसीकी जवानी सदा बहार है। उसके यहां आ जाने से मुझे बड़ा आराम हो गया है। कभी दो क्षण हंस-बोल लेती हूं। ईर्ष्या उसमें नाम को भी नहीं। मेरे वैभव से जलती नहीं, उलटे खुश है। मुझे हमेशा सजा-संवारकर रखती है। मेरे बदन पर पुराने फैशन के कपड़े उसे ज़रा भी नहीं सुहाते। जब ज़रूरी समझती है नये ढंग की पोशाक बनाकर भेज देती है और साथ में उसका बिल भी, जो अक्सर बहुत तगड़ा होता है।"

टीनी चलने में कुछ लंगड़ाने लगी थी। हंकर क्रीक की ठण्ड ने उसे भी थोड़ी प्रसादी चखा दी थी। एक दिन जानसन की तरह वह भी बर्फीले

तूफान में फंस गई, परन्तु गनीमत हुई कि एक पांव की सिर्फ तीन अंगुलियां ही ठिठुरीं और उन्हें कटा देना पड़ा। ब्लैकहॉक की सड़कों पर धारीदार मोज़ों और नुकीले स्लीपरों में ठुमुक-ठुमुककर चलनेवाले उसके दोनों खूबसूरत पांव एक क्षण के लिए मेरी आंखों के आगे नाच गए। लेकिन टीनी को इसका कोई रंज-गम नहीं था। उसने अपने अंग-भंग की बात इतनी तटस्थता से बताई मानो किसी ओर के पांवों की अंगुलियों के बारे में बता रही हो। अपनी सफलता से वह सन्तुष्ट थी, अनुचित गर्व उसे नहीं था। इतराने और फूलकर कुप्पा होने की उसकी वृत्ति ही मर गई थी।

२

गर्मियों की उस बार की छुट्टियों में मैं दादा-दादी के पीछे फोटू खिंचवाने के लिए ऐसा पड़ा कि अन्त में उन्हें राज़ी कर ही लिया। जब वे तैयार हो गए तो एक दिन सवेरे फोटोग्राफर के यहां बात पक्की करने गया। उस समय वह अपने डार्करूम में काम कर रहा था। मैं समय काटने के लिए दीवालों पर टंगे फोटू देखने लगा: दीक्षान्त समारोह के कपड़े पहने लड़कियां थीं, देहाती दुल्हे-दुलहिनें एक दूसरे का हाथ पकड़े खड़े थे, और तीन पीढ़ियों के पारिवारिक जमघट के फोटू थे। सहसा मेरी निगाहें गोल-गोल आंखोंवाली एक बच्ची की तसवीर की ओर उठ गई, जो भारी-भरकम फ्रेम में मढ़ी हुई थी। इस तरह के एनलार्जमेंट आम तौर पर किसान लोग अपनी बैठकों के लिए तैयार करवाते थे। मैं सोच ही रहा था कि यह तसवीर किस लड़की की हो सकती है कि इतने में फोटोग्राफर बाहर आया और खिसियानी-सी हंसी हंसकर बोला:

"टोनी शिमरडा की लड़की की फोटू है यह। आपको याद तो होगा ही; हार्लिगों की टोनी के नाम से मशहूर थी यहां। बहुत बुरा हुआ बेचारी के साथ। मगर अपनी बच्ची पर बड़ा नाज़ है उसे। सस्ती फ्रेम को तो यह छूना भी नहीं चाहती थी। शनिवार को उसका भाई लेने के लिए आएगा।"

वहां से मैं इस निश्चय के साथ लौटा कि चलकर एण्टोनिया से मिल ही आना चाहिए। उसकी जगह दूसरी लड़की होती तो ऐसे बच्चे के लिए लज्जित होती और उसे लोगों की निगाहों से दूर रखती, मगर टोनी ने उसका फोटू ही नहीं खिचवाया, तसवीर बड़ी करके और सुनहरी फ्रेम में उसे मढ़वाकर फोटोग्राफर की दुकान में सबके देखने के लिए रखे रही। इतनी हिम्मत केवल एण्टोनिया ही कर सकती थी। अगर उसने उस निकम्मे आदमी को गले न लगाया होता तो मैं ज़रूर उसे माफ कर देता।

लारी डानओवान वैसे तो रेल कम्पनी में यात्रियों का कण्डक्टर था, लेकिन अपने-आपको अफसरों का भी अफसर समझता था। यात्रियों के लिए खिड़की खोलने या बन्द करने जैसे कामों को वह अपनी शान के खिलाफ समझता था। अगर कभी कोई यात्री कह भी देता तो वह चुपचाप घण्टी के बटन की ओर इशारा कर देता, जिसका मतलब होता था कि आप पोर्टर को बुला लीजिए, यह काम उसका है, मेरा नहीं। रेल के डिब्बों की खिड़कियां खोलने और बन्द करने का कुछ ऐसा आतंक उसके मन में बैठ गया था कि कस्बे की सड़कों पर भी बड़े चौकन्नेपन और पूरे अफसरी रोब से चलता था कि कहीं कोई छोटा-मोटा काम सौंपकर उसकी बेइज़्ज़ती न कर दे। ड्यूटी के बाद रेल की नीली वर्दी में वह एक क्षण भी रहना पसन्द नहीं करता था। जहां ड्यूटी खत्म हुई कि कण्डक्टरवाली टोपी उतारकर झोले में रख लेता और सड़क पर पहननेवाला टोप लगाकर यात्रियों के साथ रेल में से इस तरह उतरता था मानो रेल से उसका दूर का भी नाता न हो। पुरुषों से वह काफी तना हुआ रहता, परन्तु औरत कोई भी क्यों न हो, तुरत घुल-मिल जाता था। बड़े तपाक से उनसे हाथ मिलाता, स्नेह-भीगी कोमल दृष्टि उनके मार्ग में बिछा देता और चुटकी बजाते आत्मीयता पैदा कर लेता था। विवाहित और अविवाहित सभी औरतों से एकदम दोस्ती गांठ लेता और उन्हें अपना दुखड़ा सुनाने लगता था। औरतें भी झट से उसपर लट्टू हो जातीं और चांदनी रात में साथ घूमने चली जातीं। आम तौर पर वह सभी औरतों से एक ही बात कहा करता था कि दफ्तर के बजाय चेकरी-कण्डक्टरी शाखा में आकर उसने कितनी बड़ी भूल कर डाली और डेनवर के उस गधे जनरल पैसेंजर एजेण्ट

के मुकाबले वह कितना काबिल आदमी है और कायदे से वह जगह उसे मिलनी चाहिए। कोमल-हृदय नारियों के आगे अपने दुखड़े रोना ही उसकी सफलता का मूल मन्त्र था और यही कारण था कि कुछ मूर्खाएं उससे सहानुभूति जतलाते-जतलाते प्रेम करने लग जाती थीं।

उस दिन फोटोग्राफर के यहां से घर लौटा तो मिसेज़ हार्लिङ्ग अपने आंगन में एक पेड़ की क्यारी गोड़ रही थीं। मौसम सूखी गर्मियों का था और घर में उनका हाथ बंटानेवाला कोई लड़का नहीं था। चार्ली उस समय किसी युद्धपोत पर कैरीबियन समुद्र में गश्त लगा रहा था। मैंने फाटक खोला और अन्दर चला गया। किशोरावस्था में इस फाटक को खोलना और बन्द करना मुझे कितना प्रिय था! आज भी छूते ही रोमांचित हो उठा। अन्दर जाकर मैंने कुदाली मिसेज़ हार्लिङ्ग के हाथ में से ले ली और क्यारी में जमी मिट्टी को खोदने लगा। वे मकान की सीढ़ियों पर बैठ गईं और उस कांचन पक्षी के बारे में बतलाने लगीं जिसने उसी पेड़ पर घोंसला बनाकर बच्चे दिए थे।

सहसा मैं पूछ बैठा, "मिसेज़ हार्लिङ्ग, क्या आप बता सकती हैं कि एंटोनिया की शादी क्यों गड़बड़ा गई?"

"भई, मुझे तो सारी बात मालूम नहीं है। स्टीवेन्स की विधवा को सब कुछ मालूम है। एण्टोनिया की शादी के लिए जाने से लेकर और आने और बच्चा जनने तक वह बराबर साथ रही है और हर काम में मदद करती रही है। वह तुम्हें सारा हाल अथ से लेकर इति तक बता सकती है। बात खूब जमाकर करती है और याददाश्त भी उसकी बहुत अच्छी है। तुम उसीके पास चले जाओ।"

३

अगस्त महीने की दूसरी या तीसरी तारीख को मैं घोड़ागाड़ी से स्टीवेन्स की विधवा से मिलने के लिए खेत पर चला गया। गेहूं की कटनी तो हो

चुकी थी और गाह्नी के भाप से चलनेवाले यन्त्र मैदान में यहां-वहां धुआं उगल रहे थे। लोगों ने चरनोई की अधिकांश ज़मीनें फाड़कर गेहूं और मक्का के खेत बना लिए थे और प्रेरी की लाल घास गायब हो चली थी। इलाके की पूरी शक्ल ही बदलती जा रही थी। जहां मिट्टी के कच्चे घर हुआ करते थे वहां अब लकड़ी के मज़बूत मकान, फलों के छोटे-छोटे बगीचे और लाल रंग के बड़े-बड़े बखारघर थे। इसका स्पष्ट मतलब था भरे-पूरे, सुखी-सम्पन्न परिवार—किलकारियां लगाते बच्चे, प्रसन्न-संतुष्ट महिलाएं और श्रम की सार्थकता एवं जीवन की सफलता के बोध से उमंगित पुरुष। बसन्त की हवाओं ने और गर्मियों की चिलचिलाती धूप ने उस पठार को उर्वर और कृषियोग्य कर दिया था; जितना भी मानवी प्रयत्न और परिश्रम उस धरती में लगा था वह सब इस समय क्षितिज तक फैले उपजाऊ खेतों के रूप में प्रतिफलित हो रहा था। अपने बचपन की धरती का यह परिवर्तन मुझे रुचिकर और एक अनोखे सौंदर्य से मण्डित लगा। ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो मैं किसी महापुरुष अथवा महान विचार को उदित और विकसित होते देख रहा हूं। वहां का एक-एक पेड़, एक-एक रेतीला किनारा और प्रत्येक ढाल और तराई मेरी जानी-पहचानी थी और मैं उन सबसे एक बार फिर परिचित होता जा रहा था। धरती का वह रूप-परिवर्तन आज भी इस तरह याद रह गया है जिस तरह मानवी मुखाकृतियों के माडल याद रहते हैं।

जैसे ही मैंने अपनी पुरानी पवनचक्की के पास जाकर गाड़ी रोकी स्टीवेन्स की विधवा मेरी अगवानी के लिए घर में से बाहर आ गई। उसका रंग इंडियन औरतों की तरह भूरा था; कद उसका लम्बा और काठी काफी मज़बूत थी। बचपन में मुझे उसका भारी-भरकम सिर पुराने रोम के सिनेटरों-जैसा लगता था। वहां पहुंचने के साथ ही मैंने उसे अपनी यात्रा का प्रयोजन भी बता दिया।

"रात-भर तो ठहरोगे न? ठहर जाओ तो अच्छा रहेगा जिम? रात के खाने के बाद बातें करेंगे। जब सब काम निपट जाता है तो मैं ज़्यादा इत्मीनान से बातें कर पाती हूं। काम रहने से मन दुचित्ता हो जाता है। खाने में गरम बिस्कुटों से तो तुम्हें कोई एतराज़ नहीं है न? इधर कुछ लोग

बहुत नकचढ़े हो गए हैं, इसलिए पूछ रही हूं।"

मैं घोड़े को बांध रहा था तो मुर्गे की बांग सुनाई दी। मैंने घड़ी की ओर देखा, तीन बजे थे। मुंह से एक आह निकल गई, हाय, छः बजे तो यह मेरे पेट में समा जाएगा !

भोजन के बाद मैं और मिसेज़ स्टीवेन्स ऊपरवाले बैठके में चले आए। उनका गम्भीर रहनेवाला चुप्पा भाई तलघर में ही बैठा खेती-किसानी के अखबार पढ़ता रहा। ऊपर बैठके की सब खिड़कियां खोल दी गई थीं। बाहर ग्रीष्म की श्वेत चांदनी छिटकी थी और मन्द हवा में पवनचक्की का पंखा हौले-हौले घूम रहा था। मेरी मेज़बान ने लालटेन कोने में एक तिपाई पर रख दी और गर्मी के कारण उसकी जोत को मन्दा कर दिया। वे अपने थके पांवों को स्टूल पर रखकर आराम से झूलन-कुर्सी में बैठ गईं और प्रसन्न स्वर में बोलीं, "अब बुढ़ापा दुःख देने लगा है जिम !" उन्होंने दोनों हाथ अपनी गोद में एक-दूसरे के ऊपर इस तरह रख लिए थे मानो किसी बैठक में भाग ले रही हों।

"अच्छा तो तुम हमारी प्यारी एण्टोनिया का हाल जानना चाहते हो ? बिलकुल सही जगह और सही व्यक्ति के पास आए हो ! वह मेरे आगे पेट-जाई बेटी की तरह रही है और मुझे उसका राई-रत्ती सारा हाल मालूम है।

"उस बार, शादी से पहले, गर्मियों में, विवाह के जोड़े सीने घर आई तो रोज़ यहां आया-जाया करती थी। शिमरडों के यहां तो सिलाई की मशीन है नहीं। उसने शादी के सब कपड़े यहीं सीये थे। काटना, सीना, फिटिंग करना और झालर टांकना आदि सब मैंने ही उसे सिखाया। खिड़की के पास वह जो सीने की मशीन रखी है न वह वहां बैठ जाती थी। और इतने ज़ोर से उसे दौड़ाने लगती थी कि तोड़ ही डालेगी। ताकत थी कितनी उसमें ? मशीन चलाती जाती और जाने कैसे-कैसे बोहेमी गीत गाया करती। लगता था, जैसे दुनिया का सारा सुख उसीको मिल गया है।

" मैं कहती, 'एण्टोनिया, बहुत उतावली हो रही है, क्यों ? लेकिन मशीन को इतना तेज़ दौड़ाने से तो विवाह का दिन पास नहीं आएगा !'

"वह हंसकर थोड़ी देर के लिए चाल धीमी कर देती, लेकिन फिर तुरंत ही भूल जाती और पहले की तरह मशीन को तेज़-तेज़ दौड़ाती हुई गीत गाने लगती। इतनी लगन से शादी की तैयारियां करते मैंने तो किसी लड़की को देखा नहीं। और घर-गिरस्ती की हर चीज़ जुटा ली थी उसने। मिसेज़ हार्लिङ्ग ने बढ़िया-बढ़िया मेज़पोश दिए थे और लेना ने भी लिंकन से बहुत अच्छी-अच्छी चीज़ें भेजी थीं। हम दोनों ने मिलकर सारे मेज़-पोशों, तकिये के गिलाफों और काफी सारी चादरों में गोट लगाई थी। बाडिस वगैरह के लिए उसकी मां ने जाने कितने गज़ लैस-जाली बुन दी थी। टोनी की बड़ी साध थी अपने घर को सजा-संवारकर रखने की और वह अक्सर मुझसे कहा करती थी कि उसके यहां किसी चीज़ की कमी न रहेगी। चांदी के चम्मच और कांटे वह पहले ही खरीद लाई थी और उन्हें अपने बक्स में रख लिया था। डाकखाने जाने के लिए हमेशा मेरे भाई की चिरौरी किया करती। वह निकम्मा पत्र तो उसे अलग-अलग जगहों से अवश्य ही लिखा करता था।

"एक बार जब उसने अपनी बदली होने की बात बताते हुए लिखा कि अब हमें डेनवर में रहना पड़ेगा तो बेचारी बहुत घबरा गई थी। 'गांव की लड़की हूं और शहर में घर-गिरस्ती कैसे क्या चला पाऊंगी! मैं तो सोचती थी कि वहां जाकर मुर्गियां पाल लूंगी और हुआ तो एक गाय भी रख लूंगी।' लेकिन तुरत उसकी उदासी दूर भी हो गई और वह गुनगुनाती हुई अपने काम में लग गई।

"फिर वह पत्र भी मिला जिसका वह इतनी बेकरारी से इन्तज़ार कर रही थी। यहीं, इसी कमरे में, लिफाफे की मुहर तोड़कर उसने वह पत्र पढ़ा था और उस समाचार ने एक क्षण तो उसे विह्वल ही कर दिया था। तभी मुझे पता चला कि रास्ता देखते-देखते बेचारी की छाती ही बैठ चली थी, हालांकि उसने अपने मुंह से कभी कुछ नहीं बताया था।

"अब उसके जाने की तारीख तय हो गई थी और वह ज़ोर-शोर के साथ सारा सामान बटोरने-बांधने के काम में लग गई। जहां तक याद पड़ता है महीना मार्च का था। सड़कें कीचड़ से इस बुरी तरह लथपथ और फिसलनी हो रही थीं कि समझ में नहीं आता था, उसका सामान

कस्बे तक पहुंचाया कैसे जाए। यहां अम्ब्रोश की तारीफ करनी पड़ेगी। कीचड़-गारा खूंदता हुआ ब्लैकहॉक गया और बहिन की नई मान-मर्यादा के अनुरूप चांदी के झोल चढ़े बरतन गुलाबी मखमल के बक्से में रखवाकर एण्टोनिया के लिए ले आया। इतना ही नहीं, तीन सौ डालर नकद भी दिए। चेक खुद मैंने अपनी आंखों से देखा है। बहिन के नौकरी के दिनों की सारी तनख्वाह वह साल के साल जमा करता गया था, और यह उसने अच्छा ही किया। इसी कमरे में मैंने उसकी पीठ ठोककर शाबाशी दी थी, 'वाह अम्ब्रोश, काम तो तुमने तारीफ के काबिल किया; भाई हो तो ऐसा! मैं बहुत खुश हुई, बेटे !'

"उस दिन कड़ाके की ठण्ड और तीखी-तेज़ हवाएं थीं, मगर अम्ब्रोश बहिन को सही-सलामत, उसकी तीनों पेटियों सहित, ब्लैकहॉक के स्टेशन से डेनवर जानेवाली रात की गाड़ी में बिठा आया। बाकी सामान तो पहले ही भेज दिया गया था। जाते-जाते उसने गाड़ी यहां रोकी और वह मुझसे विदा होने के लिए अन्दर दौड़ी आई। मुझसे लिपटकर उस पगली ने चुम्बनों की झड़ी लगा दी और गद्‌गद स्वर में धन्यवाद देती रही। इतनी खुश थी कि एक ही साथ हंसती भी जाती थी और रोती भी जाती थी। उसके गुलाब-से लाल गाल आंसुओं से तर हो गए थे।

"उसकी बलैयां लेते हुए मैंने कहा था, 'मुई, कहीं तुझे नज़र न लग जाए! कितनी सुन्दर लग रही है, हाय! जो भी देखेगा मोहित हो जाएगा।'

"वह पागलों की तरह हंस दी और अस्फुट स्वर में बोली, 'विदा, प्यारे घर, विदा!' और फिर दौड़कर गाड़ी में सवार हो गई। उसका मतलब तुमसे और तुम्हारी दादीजी से था और मुझसे तो खैर था ही। यह बात मैं इसलिए कह रही हूं कि हर हारे-गाढ़े में यह घर उसके लिए सहारा था।

"थोड़े दिनों बाद उसकी पहुंच का पत्र भी आ गया। लिखा था, सही-सलामत डेनवर पहुंच गई हूं; और वे स्टेशन पर लेने आ भी गए थे। यह भी लिखा था कि तरक्की के लिए कोशिश कर रहे हैं और जैसे ही तरक्की हुई कि शादी कर लेंगे। यह बात मुझे अच्छी नहीं लगी, पर मैंने कुछ कहा नहीं। कड़वी घूंट की तरह पीकर चुप हो रही। दूसरे हफ्ते युल्का के नाम

लिखा एक पोस्टकार्ड आया, जिसमें सिर्फ कुशल समाचार थे। उसके बाद कोई पत्र नहीं आया। जब पूरा एक महीना हो गया तो बेचारी मिसेज़ शिमरडा घबराने लगीं। और अम्ब्रोश मुझसे इस कदर नाराज़ हो उठा, मानो मैंने ही लड़का ठीक करके उसकी बहिन को यहां से चलता किया हो !

"एक रात मेरा भाई विलियम आया और बोला कि खेतों से लौट रहा था तो कस्बे की कोई किराये की गाड़ी पश्चिम की ओर जाती दिखाई दी। एक ट्रंक कोचवान के पास रखा था और गाड़ी के अन्दर एक औरत कपड़ों में लिपटी-लिपटाई बैठी थी। बैठने के ढंग से तो लगता था कि एण्टोनिया शिमरडा या अब तो कहना चाहिए कि एण्टोनिया डानओवान ही थी।

"दूसरे दिन मैं शिमरडों के यहां भाई के साथ घोड़ागाड़ी में बैठकर गई। अब पहले की तरह चला नहीं जाता, थक जाती हूं और दम फूलने लगता है। रविवार नहीं था फिर भी शिमरडों के घर के सामने की तमाम रस्सियों पर धुले कपड़े सूख रहे थे। पास जाकर देखा तो छाती ही बैठ गई— इतनी मेहनत करके एण्टोनिया के लिए हम दोनों ने मिलकर जितने कपड़े सीये थे वे सभी हवा में फरफरा रहे थे। युल्का और तसला-भर धुले कपड़े लिए चली आ रही थी। मुझे देखा तो फुर्ती से घर में गोता मार गई, मानो मेरे सामने पड़ना नहीं चाहती। भीतर गई तो एण्टोनिया धुलाई के बड़े बरतन के पास खड़ी थी। सारी धुलाई पूरी करके वह अभी चुकी ही थी। मिसेज़ शिमरडा मन ही मन बड़बड़ाती हुई अपने काम में लगी थीं। उन्होंने तो मेरी ओर आंख उठाकर भी नहीं देखा, बक-झक करती अपने काम में लगी रहीं। टोनी ने एप्रन से गीले हाथ पोंछे, मुझसे हाथ मिलाया और अपलक उदास आंखों से मेरी ओर देखने लगी। जब मैंने उसे बांहों में भरना चाहा तो पीछे खिसक गई और बोली, 'नहीं, मिसेज़ स्टीवेन्स, मुझे रोना आ जाएगा, और मैं रोना नहीं चाहती।'

"मैंने धीरे से उसके कान में कहा कि आओ, बाहर चलें। मैं जानती थी कि वह अपनी मां के सामने खुलकर बात नहीं कर पाएगी। वह नंगे सिर मेरे साथ बाहर आ गई और हम दोनों बगीची की ओर चली गईं।

"उसने बड़ी ही शान्ति और सहज भाव से कहा, 'मिसेज़ स्टीवेन्स, मेरी शादी नहीं हुई है, जबकि मुझे शादी-शुदा होना चाहिए।'

"मैंने कहा, 'हाय मेरी बच्ची, तेरे साथ यह क्या जुल्म हुआ! जो भी हुआ तो मुझे निडर होकर बता।'

"वह नीचे तराई के किनारे पर बैठ गई और बोली, 'वह मुझे छोड़कर भाग गया। मुझसे शादी वह शायद करना ही नहीं चाहता था।'

"मैंने कहा 'क्या कह रही हो तुम? नौकरी छोड़कर क्या देश से ही भाग गया?'

"एण्टोनिया ने बताया, 'नौकरी में वह था ही नहीं। यात्रियों से किराये का पैसा लेकर खा जाने के अपराध में निकाल दिया गया था। मुझे यह बात मालूम नहीं थी। यही समझी कि ठीक से इलाज-विलाज नहीं हुआ है। मैं पहुंची तो वह बीमार था और अभी-अभी अस्पताल से खारिज हुआ था। जब तक मेरा पैसा खर्च नहीं हो गया वह मेरे साथ रहा और फिर ऐसा गया कि लौटकर नहीं आया। यह तो बाद में पता चला कि काम-काज वह कुछ भी नहीं खोज रहा था। मैं रोज़ स्टेशन पर उसे ढूंढ़ने जाया करती थी। वहीं एक भले-से आदमी ने मुझे बताया कि क्यों बेकार उसे ढूंढ़ रही हो, छोड़ो उसका नाम और जाओ अपने घर। वह बदमाश लारी अब लौटकर आने का नहीं। मेरा खयाल है कि वह मेक्सिको की ओर निकल गया है। वहां सुनते हैं कि कण्डक्टरों के पौबारह हैं। यात्रियों को आधे किराये में निकाल देते हैं और सारा पैसा जेब में रखकर कम्पनी को ठेंगा बता देते हैं। इस तरह अमीर बननेवालों के किस्से वह अक्सर सुनाया करता था।'

"मैंने पूछा, 'तुमने जाते ही सिविल मैरेज के लिए ज़ोर क्यों नहीं दिया? इस तरह तुम्हारा उसपर कुछ तो दबाव रहता।' उस बेचारी ने माथा ठोककर कहा, 'मुझे यह सब कहां मालूम था मिसेज़ स्टीवेन्स? इन्तज़ार करते-करते थक गई थी और फिर यह भी सोचा कि इसे सुख पहुंचाऊंगी तो छोड़कर कहीं जाएगा नहीं।'

"जिम्मी, सच कहती हूं, मुझे रोना आ गया और उसके पास बैठकर बच्चों की तरह फूट-फूटकर रोने लगी। यह समझ लो कि छाती भर गई थी और रुलाई रोके नहीं रुकती थी। बड़ा सुहावना दिन था; मई का मौसम, मस्त हवा चल रही थी और बछड़े चरागाहों में कुलेलें

कर रहे थे, लेकिन मुझे कुछ भी अच्छा नहीं लग रहा था; दुःख में डूबी सिर धुनती हुई ज़ार-ज़ार रो रही थी। भली और भोली मेरी एण्टोनिया, जिसने दुनिया में किसीका कुछ भी नहीं बिगाड़ा, कलंक का टीका लगाए घर लौट आई; और वह लेना लिंगार्ड, जिसे सारी दुनिया लबार कहती थी, तुम्हें बुरा लगे तो लगे, रानी बनी घूम रही है; हर साल गर्मियों में रेशम साटन से लदी अपने घर आती है और बूढ़ी मां के लिए जाने कितना कुछ कर जाती है। जो बात तारीफ के काबिल है उसकी तारीफ तो तुम जानो कि करनी ही पड़ेगी। लेकिन दोनों लड़कियों के विचारों और सिद्धान्तों में बड़ा अन्तर है, जिम बरडन। और जिसमें अच्छाई है उसी बेचारी को मुसीबत उठानी पड़ रही है। मैं उसे क्या दिलासा देती, आप ही रो रही थी। पर वह शान्त बैठी थी। धन्य है उसका धीरज ! वहां से उठकर घर की ओर चलीं तो रास्ते में रुककर उसने कपड़ों को छूकर देखा कि सूख गए या गीले हैं। लगता था जैसे उसे उन कपड़ों की सफेदी पर नाज़ हो। उसने बताया कि वह ईंटों के मकान में रहती थी और वहां कपड़े धोने का अच्छा इन्तज़ाम नहीं था।

"दुबारा मैंने एण्टोनिया को देखा तो वह मक्का के खेत में हल चला रही थी। उस बार की बसन्त और गर्मियों में वह खेतों में आदमियों की तरह काम करती रही। मानी हुई बात थी कि यहां आने पर खेती-बाड़ी का काम उसे करना ही होगा। अम्ब्रोश ने इस बार एक भी आदमी को मजूरी पर नहीं लगाया। उसने एण्टोनिया को ही बैल की तरह जोत दिया। मारेक बहुत उत्पात करने लगा था, इसलिए उसे पागलखाने भेजना पड़ा। टोनी ने फिर अपने बढ़िया कपड़े नहीं पहने। सहेज-संभालकर पेटियों में ऐसे रखे कि आज तक निकालने की नौबत नहीं आई। चिन्ता-व्यथा मन में रही हो तो वही जाने। ऊपर से तो शान्त और स्थिर ही लगती थी। लोग उसकी इज़्ज़त करते और उसके परिश्रमी स्वभाव की सराहना और इस तरह पेश आते, जैसे कुछ हुआ ही न हो। निन्दा-कुत्सा तो अब भी होती थी, मानव-स्वभाव है, लेकिन उतनी नहीं। गलती करके दीदा-दिलेरी करने वाले को लोग नहीं छोड़ते। घमण्डी का सिर सभी झुकाना चाहते हैं। लेकिन जो आप ही सिर झुकाकर चले उसे कोई क्या कहेगा। वह बेचारी

कहीं आती-जाती भी नहीं थी। काम भला और अपना घर भला। सारी गर्मियां बीत गईं, पर मेरे यहां भी नहीं आई। पहले तो मुझे बुरा लगा; क्या मैं इतनी गैर हो गई कि टोनी मुझसे भी कतराने लगी? लेकिन सोचा तो समझ में आया कि बेचारी इस घर में आए तो कैसे? सारी पुरानी बातें याद आ-आकर उसके कलेजे को मथ नहीं डालेंगी? फिर मैं ही उससे मिलने के लिए उसके यहां जाने लगी। जब भी समय मिल जाता चली जाती थी। लेकिन उसे फुर्सत कहां? और जब वह खाली होती तो मैं यहां काम में बझी होती। अपने सुख-दुःख की बात तो यह करती ही नहीं थी। मौसम, फसल, खेती और अनाज-पानी की ही बातें किया करती, जैसे दुनिया में इसके सिवा और कुछ है ही नहीं। मैं रात में कभी मिलने जाती तो वह थककर चूर जम्हाइयां ले रही होती। दांत का दर्द अलग बेचारी के गले गल गया। एक-एक कर कई दांतों में पीप पड़ गई और मुंह सूजकर फुटबाल रहने लगा। जान-पहचान वालों से भेंट हो जाने के डर से ब्लैक-हॉक में डाक्टर को दिखाने भी नहीं जाती थी। बहिन के प्रति अम्ब्रोश का वह नेह छोड़ जाने कहां चला गया, हर वक्त तेवर बदले रहता। एक बार मैंने कह ही तो दिया कि उस बेचारी से इतना काम क्यों लेता है, क्या मार ही डालेगा? बस, लाल-गुलाल होकर भभक पड़ा, 'बरगलाने आती हो उसे! खबरदार जो अब आई।' मैंने भी उस दिन से वहां जाने की कसम खा ली।

"अब पहले-सा बचपन और मन का उतना खुलापन नहीं था, फिर भी एण्टोनिया बेहिचक लोगों के यहां कटनी और गाहनी की मजूरी पर जाती रही; और अपनी फसल की कटनी-दंवरी तो खुद उसीने अकेले की। मैं तो उसकी शक्ल को भी तरस गई। शरद में जब वह अम्ब्रोश के ढोर चराने लगी तब कहीं जाकर मिलना-जुलना होने लगा। कोई तीसेक जानवर होंगे और सूखे के कारण घास कम हुई थी इसलिए अपने चौपाये लेकर वह यहां से उत्तर, जो बड़ी कुत्ता-बस्ती है उधर, खुले में निकल आती थी। अगर घर के आस-पास काफी घास होती तो वह यहां तक ढोरों को कभी न लाती।

"मौसम काफी खुला और सुहावना था और उसे अकेले बैठे रहना अच्छा लगता था। जानवर चरागाह में चरा करते और वह घास के किसी

उभरे हुए टुकड़े पर बैठी घण्टों धूप सेका करती। जब वह इधर पास में होती तो मैं कभी-कभी उससे मिलने चली जाया करती थी।

"एक दिन उसने कहा था, 'दिल चाहता है कि मैं भी लेना की तरह बुनाई या करोशिये का काम किया करूं। कई बार कोशिश भी की, लेकिन मन नहीं लगता; आंख उठाकर अपने चारों ओर देखते ही सब कुछ भूल-भाल जाती हूं। थोड़े ही दिन पहले की तो बात है: जिम बरडन के साथ यहां, इसी मैदान में खेला-कूदा करती थी। यहां बैठकर उन सब जगहों को चीन्ह लेती हूं जहां मेरे बापू घूमा करते थे और जहां-जहां खड़े होकर वे देखा-सोचा करते थे। कभी लगता है कि अब ज़्यादा जीऊंगी नहीं, इसलिए हर चीज़ को जी भरकर देख लेना और हर क्षण का सुख पा लेना चाहती हूं।'

"फिर सर्दियां शुरू हो गईं। अब वह आदमियों का लम्बा कोट, आदमियों के बड़े बूट जूते और आदमियों की ही चौड़ी किनारी की फेल्ट हैट लगाकर ढोर चराने के लिए जाने लगी। मैं यहां से उसे आते और जाते देखा करती; और मैंने पाया कि धीरे-धीरे उसके पांव भारी होते जा रहे थे। दिसम्बर के महीने की बात है। उस दिन खूब जमकर बर्फ गिर रही थी। शाम को मैंने देखा तो एण्टोनिया अपने चौपायों को हांककर धीरे-धीरे घर की ओर ले जा रही थी। बर्फ की बौछार सीधे उसके चेहरे पर पड़ रही थी और वह उससे बचने के लिए झुकी-झुकी चल रही थी। उस सूने मैदान और बर्फ की बरसात में वह मुझे ऐसी लग रही थी, मानो सारी दुनिया में उसका कोई भी न हो और निपट अकेली चली जाती हो। मैंने मन ही मन कहा, हाय, बेचारी को देर हो गई; ढोरों को बाड़े में बांधते-करते अंधेरा हो जाएगा। मैंने सोचा, ठण्ड, थकान और दुःख के मारे उठने को उसका जी न चाहा होगा और इसीलिए आज इतनी देर हो गई।

"उसी रात उसके बच्चा हुआ। घर पहुंचकर उसने पशुओं को बाड़े में बांधा, फिर रसोईघर के पीछे वाले अपने कमरे में जाकर भीतर से दरवाज़ा बन्द कर लिया। वह चुपचाप बिस्तर पर लेट गई और बगैर आह-ऊह किए और बिना किसीकी मदद के, प्रसव की सारी पीड़ा झेलकर, उसने अपने से ही बच्चे को जन दिया।

"मैं रात में खाना परोस ही रही थी कि मिसेज़ शिमरडा भागी हुई आईं। वे चार-चार सीढ़ियां लांघती हुई एकदम नीचे तलघर में उतर आईं और चिल्लाकर बोलीं तो उनका दम फूला हुआ था।

"'बच्चा हुआ ! बच्चा हुआ ! अम्ब्रोश बुरी तरह आपे से बाहर।'

"विलियम भैया के शान्त स्वभाव को तो तुम जानते ही हो। सारा दिन खेतों में खटकर आए थे और निवाला मुंह में रखने जा ही रहे थे कि चुपचाप उठ खड़े हुए। एक भी शब्द बोले बिना बखारघर में गए और घोड़ागाड़ी जोतकर ले आए। इतनी जल्दी से उन्होंने हमें वहां पहुंचाया है कि तुमसे क्या कहूं। मैं जाते ही एण्टोनिया की सार-संभाल में लग गई, लेकिन उसने कोई ध्यान नहीं दिया, आंखें मूंदे पड़ी रही। बुढ़िया बच्चे को नहलाने के लिए एक तसले में गरम पानी ले आई। मैंने देखा तो वह कपड़े धोने का पीला साबुन बच्चे की देह में लगाने जा रही थी। मुझे गुस्सा आ गया। बिगड़कर बोली, 'मिसेज़ शिमरडा, यह क्या कर रही हो ? उस साबुन को बच्चे से दूर रखो, उसकी कोमल देह में फफोले पड़ जाएंगे।'

"अब एण्टोनिया पहली बार बोली, 'मिसेज़ स्टीवेन्स, मेरे ट्रंक की ऊपर की दराज़ में नहाने का बढ़िया साबुन रखा है।'

"बच्ची को नहला-धुलाकर और कपड़ों में लपेटकर मैं उसे अम्ब्रोश को दिखाने ले गई। वह अंगीठी के पीछे बैठा भुनभुना रहा था। उसने देखने से इनकार कर दिया और बोला, 'ले जाकर घूरे पर फेंक दो, मेरी बला से।'

"मुझे तैश आ गया। डपटकर बोली, 'अभी तो हमारे मुल्क में कायदा-कानून है। तू अपने-आपको समझता क्या है ! मैं इस बात की गवाह हूं कि बच्ची जीती-जागती और सही-सलामत पैदा हुई है। कल को इसे कुछ हो गया तो समझ लो कि तुम्हारी खैर नहीं।' बस, मेरी एक घुड़की में तो अम्ब्रोश का पित्ता ठण्डा हो गया।

"बच्चों में तुम्हारी कोई दिलचस्पी नहीं हो सकती, यह मैं समझती हूं; मगर एण्टोनिया तो अपनी बच्ची पर जान निछावर करती है। पहले ही दिन से, ऐसी हिफाज़त से पाल-पोस रही है, मानो अंगूठी का नगीना हो। और लज्जित तो बिलकुल नहीं है। अब तो वह बच्ची डेढ़ बरस की

होने आई और बिलकुल राजकुमारियों की तरह पाली-पोसी जा रही है। एण्टोनिया है भी जन्मजात मां। अगर शादी हो जाए तो बच्चों से घर भर देगी, मगर अब बेचारी से कौन शादी करेगा ?"

उस रात मैं उसी कमरे में सोया जहां बचपन में सोया करता था। खेतों में पके अनाज की सुगन्ध-भरी मस्त हवा के झोंके खिड़कियों की राह अन्दर आ रहे थे। मैं देर तक पड़ा जागता और बखारघर, गंजियों और तालाब पर छिटकी चांदनी को देखता रहा। पुराने दिनों की ही तरह नीले आसमान में पवन चक्की की दैत्याकार काली छाया सिर उठाए खड़ी थी।

४

दूसरे दिन तीसरे पहर के समय मैं पैदल ही शिमरडों के यहां गया। युल्का ने मुझे बच्ची को दिखलाया और बतलाया कि एण्टोनिया दक्षिण-पश्चिम वाले कोने में गेहूं का गट्ठा लगा रही है। मैं तुरत उस ओर चल पड़ा। टोनी ने मुझे दूर से आते देखा। वह पंजे (जन्त्रा) की टेक लगाकर गट्ठे के पास खड़ी हो गई और मुझे देखने लगी। पुराने गीत की तरह हुआ हमारा मिलन—आंसू ढारते हुए तो अवश्य नहीं परन्तु चुपचाप उसने ललक कर मेरा हाथ पकड़ लिया।

"मैं जानती थी जिम कि तुम आओगे। कल रात ही पता चल गया था कि तुम मिसेज़ स्टीवेन्स से मिलने के लिए आए हो। मैं आज सारा दिन तुम्हारा इन्तज़ार करती रही।"

वह पहले से कुछ दुबली लग रही थी और जैसा कि मिसेज़ स्टीवेन्स ने बताया था, "काम की मार से पिट गई थी।" लेकिन साथ ही उसका चेहरा एक नई शक्ति से मंडित हो गया था और स्वास्थ्य एवं उमंग की वही पुरानी लाली अब भी उसपर छिटकी हुई थी। और उसके और मेरे

जीवन में इतना सब हो जाने के बाद भी वह मुश्किल से चौबीस वरस की थी !

एण्टोनिया ने पंजा ज़मीन में गाड़ दिया और हम दोनों जाने किस अन्तर्प्रेरणा से प्रेरित सड़क के उस चौराहे की ओर चले जहां मिस्टर शिमरडा की कब्र बनी थी। धरती का वह अनजुता टुकड़ा ही हम दोनों को मन की बातें करने का उपयुक्त स्थान लग रहा था। दुनिया से मिस्टर शिमरडा की कब्र को अलग करनेवाली तार की उस झिलंगी बागुड़ के पास हम बैठ गए। वहां की लम्बी लाल घास को कोई काटता नहीं था। सर्दियों में वह मर जाती थी और बसन्त में फिर अपने-आप उग आया करती थी। इस प्रकार बार-बार सूखकर गिरने और उगने से वह घास घनी झाड़ी की तरह जटाजूट हो गई थी। मैंने उसे अपनी सारी बातें बता दीं : क्यों मैं कानून पढ़ना चाहता हूं और क्यों मां के न्यूयार्क सिटी वाले रिश्तेदार के दफ्तर में काम करना चाहता हूं; मैंने उसे गेस्टन क्लेरिक के बारे में भी बताया कि उनका मेरे जीवन पर कितना प्रभाव पड़ा, कैसे पिछली सर्दियों में निमोनिया में उनकी मृत्यु हो गई और उनके मरने से मुझे कितना दुःख हुआ। वह मेरे मित्रों, मेरे रहन-सहन के तरीके और मेरी आशा-आकांक्षाओं के बारे में भी जानना चाहती थी, जो सब मैंने उसे बता दिया।

"इसका मतलब यह हुआ कि तुम हमारे पास से सदा के लिए चले जा रहे हो।" उसने एक लम्बी सांस लेकर कहा, "लेकिन कहीं भी क्यों न जाओ, रहोगे सदा मेरे पास ही। मेरे बापू को ही देखो। मरे कई बरस हो गए और हमने यहां सुला भी दिया, परन्तु आज भी मेरे मन में जीते-जागते बैठे हैं। अकेले वे ही हैं, जो मेरे अपने हैं और हमेशा मेरे साथ बने रहते हैं। हर मुसीबत और हर हारे-गाढ़े में मैं उनसे सलाह ले लिया करती हूं। जैसे-जैसे मेरी उमर बढ़ती जाती है मैं उन्हें ज़्यादा अच्छी तरह पहचानती और समझती जाती हूं।"

फिर उसने पूछा कि क्या तुम्हें बड़े शहरों में रहना अच्छा लगता है और क्या तुम वहां रहने का तौर-तरीका सीख गए हो ? "मुझे तो शहर ज़रा भी अच्छा नहीं लगता। इतना सूना-सूना और अकेला-अकेला लगता

है कि घबरा उठती हूं। मुझे तो वहीं रहना पसन्द है जहां की हर चीज़—पेड़, पौधा, गंजी-गट्ठा, धरती-आकाश—मेरी जानी-पहचानी हो। मैं तो यहीं जीना और यहीं मरना चाहती हूं। फादर केली का कहना है कि इस दुनिया में हर आदमी कुछ न कुछ करने के लिए भेजा गया है। मैं जानती हूं कि मुझे क्या करना है। मैं इस बात की पूरी कोशिश करूंगी कि मेरी बिटिया को वे सब तकलीफें न उठानी पड़ें जो मुझे भोगनी पड़ी हैं। उसकी सुख, सुविधा और तरक्की के लिए मैं कुछ भी उठा न रखूंगी, जिम। अपनी बिटिया का मैं अच्छी तरह लालन-पालन करूंगी।"

मैंने कहा, "हां एण्टोनिया, मुझे तुमसे यही उम्मीद है और मैं जानता हूं कि तुम अपनी बच्ची के लिए कुछ भी उठा नहीं रखोगी। और सुनो एण्टोनिया, यहां से जाने के बाद मुझे सबसे अधिक तुम्हारी ही याद आती रही है। तुम मेरे प्राणों की प्राण और मेरे जीवन का अंश बन गई हो। पुरुष के लिए नारी का जो भी रूप हो सकता है—प्रेयसी, पत्नी, मां अथवा बहिन—उसमें से किसी भी रूप में तुम्हें पाकर मैं अपने को धन्य समझता। सच मानो एण्टोनिया, तुम यहां मेरे हृदय में बैठी मेरे हर कार्य, हर विचार और मेरी हर रुचि को प्रभावित और संचालित करती हो और मैं जान भी नहीं पाता।"

वह अपनी बड़ी-बड़ी चमकीली और विश्वास-भरी आंखें उठाकर मेरी ओर देखने लगी और उसकी उन आंखों में आंसू भर आए। फिर वह बोली, "यह मेरे लिए कितनी बड़ी बात है जिम, कि इतने लोगों के रहते भी तुम्हें मेरी याद आती है, जबकि मैं तुम्हें इस कदर निराश कर चुकी हूं! सुनकर सचमुच आश्चर्य होता है। यहां कितने अधिक लोगों को तुम जानते हो, पर याद करते हो मुझे, केवल मुझीको। धन्य हो गई मैं कि तुमने अपने मन में जगह दी और हमें बचपन में साथ रहने का मौका मिला। काश, आज मेरी बिटिया बड़ी होती और मैं उसे यह सब बता पाती और वह सब भी जो हम बचपन में किया करते थे। मेरा विश्वास है कि तुम जब भी कभी अपने बचपन के बारे में सोचोगे तो तुम्हें मेरी भी याद ज़रूर आएगी। क्यों जिम, आएगी न? और मेरा खयाल है कि बचपन की याद तो सभी को आती है—सुखी से सुखी आदमी को भी।"

हम वहां से खेतों की राह घर लौटे तो पश्चिमाकाश में डूबता हुआ सूरज सोने के बड़े भारी गोले के रूप में क्षितिज की कोर पर टंगा हुआ था। देखते ही देखते पूरब में गाड़ी के पहिये जितना बड़ा चन्द्रमा उग आया—झिलमिलाते पाण्डुर-वर्ण में गुलाबी आभा समेटे वह साबुन के बुलबुले जैसा पारदर्शी और पतला लग रहा था। पांच या शायद दस मिनट तक प्रकाश के वे दोनों बिम्ब इस दुनिया के दो विपरीत छोर पर और आकाश में एक-सी ऊंचाई पर आमने-सामने खड़े रहे!

उनके सम्मिलित प्रकाश में क्या पेड़ और क्या पौधे, गेहूं के गट्ठों से लेकर सूरजमुखी के तने और हिमपर्वतिका (स्नो ऑन दि माउण्टेन) के ठूंठ तक सभी कुछ एकदम साफ-साफ दिखाई दे रहा था, यहां तक कि खेतों के अन्दर की हर लीक और मिट्टी का हर ढेला भी उस उजाले में उभरकर ऊपर आ गया था। धरती का वही पुराना आकर्षण, चांदनी रात में उन खेतों में से उठने वाला वही सम्मोहनकारी जादू मुझे अपनी ओर खींचने लगा। जी चाहने लगा कि फिर से छोटा बच्चा बन जाऊं और मेरे मार्ग का यहीं अन्त हो जाए!

चलते हुए हम खेत की मेड़ पर आए जहां से हमारे रास्ते अलग-अलग होते थे। मैंने उसके दोनों हाथ पकड़ लिए और उन्हें सीने से लगा लिया—बड़े अच्छे, स्नेह-भरे और शक्तिशाली थे वे हाथ और मुझे आराम पहुंचाने के लिए उन हाथों ने बहुत कुछ किया था। बहुत देर तक मैं उन्हें अपने हृदय पर रखे रहा। चारों ओर अंधेरा घिरता जा रहा था और अब बहुत प्रयत्न करके ही मैं उसकी शक्ल देख सकता था; खूब ध्यान से देखकर मैं उस चेहरे को अपने मन में उतार लेना चाहता था जो मेरे लिए इतना प्रिय, इतना वास्तविक और मेरा इतना अपना था और जो मेरी स्मृति के अन्तराल में सभी नारियों के चेहरो की छाया तले सदा-सदा के लिए अंकित रहनेवाला था।

"मैं लौटकर फिर आऊंगा।" उस घिरते आते अन्धकार में मैंने सच्चे दिल से कहा।

"आ भी सकते हो···" उसकी मुस्कराहट को मैं देख तो नहीं पाया, सिर्फ अनुभव कर सका, "लेकिन नहीं भी आए तो भी बापू की तरह यहीं

रहोगे, यहां मेरे दिल में और मैं कभी अकेली नहीं हूंगी।"

उस सदा की जानी-पहचानी सड़क पर जब मैं अकेला लौट रहा था तो ऐसा लगा मानो उस घास में खिलखिलाती और कनबतियां करती बचपन की हमारी छायाओं की तरह एक लड़का और एक लड़की मेरे आगे-आगे दौड़े जा रहे हों।

पांचवां भाग

मैंने एण्टोनिया से कहा था कि मैं फिर आऊंगा, लेकिन विघ्न पर विघ्न आते गए, और अपना वचन पूरा करने में मुझे पूरे बीस बरस लग गए। यों समय-समय पर मुझे उसके समाचार मिलते रहे थे : मेरे आने के तुरत बाद ही उसने एक युवक बोहेमी से, जो एण्टन जेलीनेक का चचेरा भाई था, शादी कर ली थी; फिर पता चला कि बहुत गरीबी में उनके दिन बीत रहे हैं और बाल-बच्चे भी बहुत-से हो गए हैं। एक बार जब विदेश गया हुआ था तो बोहेमिया भी गया और प्राग से मैंने एण्टोनिया को उसके जन्म गांव के कुछ फोटू भेज दिए थे। कई महीनों बाद उसका एक पत्र मिला, जिसमें उसने अपने सभी बच्चों के नाम और उनकी उम्र लिखी थी, और कोई खास बात उस पत्र में नहीं थी। अन्त में दस्तखत उसने इस तरह किए थे : 'तुम्हारी पुरानी मित्र एण्टोनिया कुज़ाका' फिर जब टिनी सोडर-बाल से साल्ट लेक में भेंट हुई तो उसने बताया कि एण्टोनिया ने अच्छी तरह देख-भाल कर शादी नहीं की; उसका पति ज़्यादा दमदार आदमी नहीं है और उनके दिन अच्छे नहीं जा रहे हैं। अपने काम-धन्धे के कारण मुझे साल में कई बार पश्चिम जाना पड़ता था और हर बार मन में यह बात रहती थी कि कभी नेब्रास्का उतरकर एण्टोनिया से मिलने जाऊंगा। लेकिन हमेशा मैं इस काम को अगली बार के लिए टाल जाता था। असल में इस डर से जाने की हिम्मत नहीं होती थी कि कहीं एण्टोनिया बूढ़ी और जर्जर न हो गई हो ! ज़िन्दगी के हलचल-भरे बीस बरसों में आदमी की बहुत-

सी भ्रान्तियां मिट जाती हैं, परन्तु मैं बचपन की भ्रान्तियों को खोने के लिए तैयार नहीं था। कुछ यादें असलियत बन जाती हैं और बाद की कोई भी घटना उनकी तुलना में ठहर नहीं पाती।

आखिर मैं एण्टोनिया से मिलने गया, जिसके लिए लेना लिंगार्ड का कृतज्ञ हूं। दो साल पहले सैनफ्रांसिस्को गया हुआ था तो लेना और टिनी सोडरबाल भी वहीं थीं। टिनी का अपना मकान है और लेना की दुकान, वहां से कुछ ही दूर, किराये की जगह में है। उस बार मन में यही आया कि दोनों से एक साथ ही क्यों न मिला जाए, बरसों से देखा भी नहीं था। टिनी अक्सर लेना के हिसाब-किताब की जांच किया करती है और अपना पैसा भी उसके कारबार में लगा देती है; और लेना पूरी सतर्कता से इस बात की देखभाल करती है कि टिनी कहीं बहुत कंजूस न हो जाए। उसने टिनी की उपस्थिति में मुझसे कहा था, 'कोई अमीर औरत फटीचर हालत में रहे, यह मुझसे बर्दाश्त नहीं होता।' इसपर टिनी ने गम्भीरतापूर्वक हंसते हुए कहा था, 'लेना न फटीचर होगी और न अमीर।' 'होवे मेरा ठेंगा।' लेना ने बड़ी शान से कहा था।

उसके बाद लेना ने विस्तार से मुझे एण्टोनिया के हालचाल बतलाए और आग्रह करती रही कि मुझे उससे मिलने के लिए ज़रूर जाना चाहिए।

'ज़रूर जाओ, जिम ! उसे बड़ी खुशी होगी। टिनी की बकवास पर ध्यान मत दो। कुज़ाक में कोई बुराई नहीं है, तुम्हें आदमी पसन्द आएगा। दबंग ज़रूर नहीं है, लेकिन कर्रे मिज़ाज का आदमी टोनी के उपयक्त हो भी नहीं सकता था। बच्चे टोनी के बहुत अच्छे हैं—अब तक मेरा खयाल है कि पूरे दर्जन तो हो ही गए होंगे। मेरी तो इससे चौथाई बच्चों में ही जान निकल जाए, लेकिन टोनी बहुत खुश है और उसके लिए ठीक भी है। जाओगे तो बड़े प्रेम से तुम्हें दिखाएगी।"

वहां से पूरब की ओर चला तो नेब्रास्का में हेस्टिंग्स नामक स्थान पर रुक गया और किराए पर एक खुली बग्घी लेकर कुज़ाक के फार्म का पता लगाने के लिए चल पड़ा। चलते-चलते दाहिनी ओर थोड़ी ऊंचाई पर, खेतों के बीच एक चौड़ा-सा मकान देखकर लगा कि शायद अपने गन्तव्य पर पहुंच गया हूं। उस मकान की ऊंचाई से बड़ी सड़क के ढाल तक की ज़मीन में

लाल रंग का बखारघर, एश वृक्षों का कुंज और पशुओं का बाड़ा आदि बने थे। घोड़ों की रास खींचकर वहां खड़ा सोचने लगा कि क्या यही जगह है और यहां अन्दर जाना ठीक रहेगा ? तभी मुझे धीमी-धीमी आवाज़ें सुनाई दीं। देखा तो सामने, सड़क के किनारे, बेरी की एक झाड़ी में दो लड़के एक मरे हुए कुत्ते को देख रहे थे। छोटा लड़का पांचेक बरस का रहा होगा। वह दोनों हाथ बांधे, उकड़ूं बैठा था और उसका कटे बालोंवाला नंगा सिर विषण्णता से झुका हुआ था। दूसरा उसके कन्धे पर हाथ रखे पास ही खड़ा एक ऐसी भाषा में दिलासा दे रहा था, जिसे मैंने इधर कई बरसों से नहीं सुना था। जब मैंने अपनी बग्घी ठीक उनके सामने जाकर रोकी तो बड़ा लड़का अपने छोटे भाई का हाथ पकड़े मेरे पास आकर खड़ा हो गया। वह भी उदास था। उनके साथ ज़रूर कोई दुःखद घटना घटी थी।

मैंने पूछा, "क्या तुम मिसेज़ कुज़ाक के लड़के हो ?"

छोटा तो इतना अधिक उदास था कि उसने मेरी ओर आंख उठाकर भी नहीं देखा। बड़े भाई ने अपनी कुशाग्र भूरी आंखों से मुझे देखा और बोला, "जी हां।"

"क्या वे यहां इस पहाड़ी पर रहती हैं ? मैं उन्हींसे मिलने आया हूं। आओ, तुम लोग भी बग्घी में बैठ जाओ और मेरे साथ चलो।"

लड़के ने अपने विमनस्क भाई की ओर देखा और कहा, "जी नहीं, हम पैदल ही आएंगे; पर चलिए, आपकी बग्घी के लिए फाटक खोल दें।" मैं घर की ओर जानेवाली सड़क पर मुड़ा और वे धीरे-धीरे चलते हुए मेरे पीछे आने लगे। जब पवनचक्की के पास जाकर रुका तो नंगे पांव और घुंघराले बालोंवाला एक लड़का बखारघर में से मेरे घोड़ों को बांधने के लिए दौड़ा आया। खासा दिखनौटा था गोरी चमड़ीवाला वह लड़का। उसके बदन पर कहीं-कहीं चित्ती उभर आई थी, गाल लाल थे और भेड़ के दुम्बे की तरह जटाजूट बालों की लटें गरदन पर बिखरी हुई थीं। फुर्ती से दो फन्दे मारकर उसने घोड़ों को बांध दिया और जब मैंने पूछा कि क्या तुम्हारी अम्मां घर के अन्दर हैं तो सिर हिलाकर स्वीकृति जतलाई। मुझे देखकर उसका चेहरा खुशी से खिल उठा और गालों में गड्ढे पड़ गए। फिर वह एकदम गिलहरी की तरह फुर्र-से पवनचक्की के बुर्ज पर चढ़ गया।

उसके इस तरह चढ़ने में मेरे प्रति स्पष्ट ही अवज्ञा का भाव था। जब मैं घर के अन्दर गया तो वह अपनी ऊंचाई से मुझे बन्दर की तरह देख रहा था।

बतखें और कलहंस आवाज़ें करते हुए रास्ते में डोल रहे थे। बरसाती की सीढ़ियों पर रखे पीले कछुओं के बीच सफेद बिल्लियां टांगें पसारे धूप खा रही थीं। तार की जाली के पार बड़े-से रसोईघर के अन्दर का हिस्सा साफ नज़र आ रहा था; वहां काफी प्रकाश था और फर्श एकदम सफेद। बीच में एक लम्बी मेज़ रखी थी और लकड़ी की कुर्सियां दीवाल के सहारे कतार बनाए खड़ी थीं। कोने में चमचमाती अंगीठी थी। दो लड़कियां हंसती और चिड़ियों की तरह चहचहाती हुई 'सिंक' पर तश्तरियां धो रही थीं। एक छोटी बच्ची बालापोश (पीनाफोर) बांधे स्टूल पर बैठी कपड़े की गुड़िया से खेल रही थी। जब मैंने लड़कियों से उनकी मां के बारे में पूछा तो एक लड़की हाथ का टावेल छोड़, नंगे पांव, चुपचाप वहां से भागकर दूसरे कमरे में चली गई। दूसरी बड़ी लड़की ने, जो पांव में जूते, मोजे पहने थी, आगे बढ़कर मेरे लिए दरवाज़ा खोला। यह लड़की काफी हृष्ट-पुष्ट, शान्त और संयत स्वभाव की लगती थी; इसकी आंखें कजरारी और बालों का रंग काला था।

"अन्दर आ जाइए; अम्मां अभी आती हैं।"

मैं अभी कुर्सी पर बैठ भी नहीं पाया था कि एण्टोनिया आकर मेरे सामने खड़ी हो गई और मुझे क्षण-भर को लगा जैसे दिल की धड़कन ही रुक जाएगी। ऐसे ही होते हैं मिलन के शान्त निराले क्षण, जिनका सामना करने के लिए शोरगुल-भरे जीवन की अपेक्षा कहीं अधिक शक्ति और स्थिरता की आवश्यकता होती है। एण्टोनिया मेरे सामने खड़ी थी—हट्टी-कट्टी सपाट छातियोंवाली, भूरे रंग की औरत, जिसके भूरे घुंघराले बाल कुछ धूसर हो चले थे। देखकर चोट-सी लगी। अनेक वर्षों के बाद और खास तौर पर एण्टोनिया की तरह घोर कष्टों और कठिनाइयों में जीवन बितानेवाले, पुराने परिचितों से मिलने पर मन को आघात लगता ही है। कुछ देर हम एक-दूसरे की ओर देखते हुए खड़े रहे। जो उत्सुक आंखें मेरी ओर देख रही थीं वे सिर्फ एण्टोनिया की और अद्वितीय थीं। उन आंखों

को अन्तिम बार देखने के बाद से हज़ारों मानवी चेहरे देख चुका था, लेकिन वैसी आंखें मुझे कहीं भी नहीं दिखाई दी थीं। देखते-देखते नाक-नक्शे का वह परिवर्तन धुंधला हो गया और उसमें से एण्टोनिया की परिचित आकृति स्पष्ट से स्पष्टतर होती हुई उभरने लगी—उसका वही शक्तिशाली व्यक्तित्व सामने खड़ा था, जो समय और कष्टों की मार से आहत ज़रूर हो गया था, लेकिन पिटा और मिटा नहीं था। फिर मेरी ओर देखती हुई वह जिस भारी और गुनगुनाती आवाज़ में बोली वह मेरी सदा की जानी-पहचानी थी।

"मेरे पति तो घर पर नहीं हैं। बताइए, क्या काम है?"

"एण्टोनिया, तुम मुझे पहचान भी न पाई? क्या मैं इतना बदल गया हूं?"

उसने एक क्षण धूप में आंखें सिकोड़कर देखा; सूरज की तिरछी किरणों ने उसके भूरे बालों को एकदम ललछौंहा कर दिया था। दूसरे ही क्षण उन आंखों में परिचय का आलोक जगमगा उठा और उसका चेहरा खिल गया। उमगकर उसने अपने दोनों कड़े परिश्रमी हाथ मेरी ओर बढ़ा दिए।

"अरे, तुम हो जिम! अन्ना, युल्का, यह तो जिम बरडन है।" लेकिन दूसरे ही क्षण उसने आशंकित होकर पूछा, "क्या हुआ? कोई मर तो हनींगया?"

मैंने उसकी बांहों को थपथपाते हुए कहा, "नहीं अन्ना, कोई मरा नहीं है। सिर्फ तुम्हीं से मिलने और तुम्हारे परिवार को देखने के लिए मैं हैस्टिंग्स में ट्रेन से उतरकर यहां आया हूं।"

मेरे हाथ छोड़कर वह चारों ओर नाचने लगी। "एण्टन, युल्का, नीना, कहां तो तुम सब? अन्ना, ज़रा दौड़कर लड़कों को तो खोज लाओ। उस कुत्ते को ढूंढ़ रहे होंगे कहीं। और लियो को भा पुकार लेना। कहां होगा वह लियो!" घर के कोनों-अन्तरों में से वह बच्चों को इस तरह खींच-खांचकर लाने लगी जिस तरह बिल्ली अपने बिलौटों को ले आती है। "तुम तुरत तो नहीं जा रहे हो न, जिम? मेरा बड़े वाला लड़का यहां नहीं है। अपने बापू के साथ विल्बर के मेले में गया है। मैं तुम्हें जाने नहीं दूंगी। रनडोल्फ और उसके बापू से मिले बिना तुम जाने नहीं पाओगे, सो कहे देती हूं।" उसने आग्रह-भरे स्वर में मुझसे कहा और याचना-भरी दृष्टि से

मेरी ओर देखने लगी।

मैंने उसे यह कहकर आश्वस्त कर दिया कि तुरत तो नहीं ही जा रहा हूं, घबराने की ज़रूरत नहीं, काफी समय ठहरूंगा। इस बीच बाहर से नंगे पांवों वाले लड़के चुपचाप रसोईघर में आकर और उसे घेरकर खड़े हो गए थे।

"अब इनके नाम और हरएक की उम्र बताओ।"

नाम तो उसने सबके ठीक-ठीक बता दिए, लेकिन उम्र कइयों की गलत बताई, जिसे सुन सभी बच्चे कहकहे लगाने लगे। अन्त में जो लड़का पवनचक्की के बुर्ज पर चढ़ गया था उसे दिखलाते हुए बोली, "यह है लियो, इसकी इतनी उम्र तो हो ही गई है कि समझदारी और सलीके का व्यवहार करे।"

उस लड़के ने छोटे भेड़े की तरह हंसी-हंसी में अपने घुंघराले सिर से मां को टक्कर मारी। लेकिन जब बोला तो स्वर कुछ क्रोध और उद्दण्डता से भरा हुआ था। "भूल गई न! तुम हमेशा मेरी उम्र भूल जाती हो। बुरी बात है मां। बता दो न, मेरी उम्र भी बता दो।" दोनों हाथों की मुट्ठियां कसे वह अपनी मां की ओर उग्रता से देख रहा था।

एण्टोनिया ने उसकी पीली लट को अपनी तर्जनी में लपेटकर खींचा और उसकी ओर देखते हुए बोली, "अच्छा, तुम्हीं बताओ, क्या उम्र है तुम्हारी?"

"बारह साल का हूं।" उसने हांफते हुए अपनी मां की ओर देखकर कहा, "ईस्टर के दिन मेरा जन्म हुआ था और पूरे बारह का हो गया हूं।"

उसने सिर हिलाते हुए मुझसे कहा, "ठीक कह रहा है। ईस्टर के ही दिन जन्मा था यह।"

सब बच्चों की निगाहें एक साथ मेरी ओर उठ गईं। उन्हें अपेक्षा थी कि मैं इस जानकारी पर आश्चर्य अथवा प्रसन्नता व्यक्त करूंगा। स्पष्ट ही उन्हें अपनी संख्या और एक-दूसरे पर गर्व था। जब सबका परिचय दिया जा चुका तो जिस अन्ना ने दरवाज़ा खोलकर मुझे अन्दर लिया था, उसने सबको हौले से वहां से विदा कर दिया; फिर वह जाकर एक सफेद एप्रन ले आई और अपनी मां की कमर में बांधते हुए बोली, "अब अम्मां,

तुम बैठ जाओ और मिस्टर बरडन से बातें करो ! हम चुपचाप तश्तरियां धोती रहेंगी और तुम्हारी बातों में बाधक न होंगी ।"

एण्टोनिया ने अपने चारों ओर देखकर खोए हुए स्वर में कहा, "हम बैठके में ही जाकर क्यों न बैठें बेटा ? अब तो हमारे घर में एक अच्छा-सा बैठका भी हो गया है ।"

लड़की एक मधुर हंसी हंस दी और मेरे हाथ से हैट लेती हुई बोली, "अम्मां, यहां बैठकर बातें करोगी तो मैं और युल्का भी सुन सकेंगी। बैठका इन्हें बाद में दिखा लाना ।" उसने मुस्कराकर मेरी ओर देखा और अपनी बहिन के साथ तश्तरियां धोने में जुट गई। गुड़िया वाली नन्ही लड़की एक ज़ीने की सबसे नीचेवाली सीढ़ी पर बैठ गई और उत्सुकता से हमारी ओर देखने लगी।

"यह नीना है ।" एण्टोनिया ने बताया, "नीना हार्लिङ्ग के नाम पर मैंने इसका नाम रखा है। देखो, इसकी आंखें नीना की आंखों-जैसी ही हैं न ? जिम, सच मानो, मुझे तुम सब बच्चों से इतना ही प्यार था जितना अपने इन बच्चों से है। इन बच्चों को तुम्हारी, चार्ली और सैली की हर बात मालूम है, मानो साथ ही बड़े हुए हों। लो, सब भूल गई कि तुमसे क्या कहने जा रही थी। तुम्हारे आने से मन इतना हरख उठा है कि क्या कहूं कुछ सोच भी नहीं पाती। फिर अंग्रेज़ी भी भूल गई हूं। यहां अंग्रेज़ी बोलने का काम ही नहीं पड़ता। बच्चों से कहती हूं कि कभी धड़ल्ले से अंग्रेज़ी बोला करती थी तो इन्हें विश्वास नहीं होता। ये सब तो घर में बोहेमी बोलते हैं। छोटे अंग्रेज़ी बिलकुल नहीं बोल सकते। मदरसे में जाकर ही अंग्रेज़ी सीखते हैं।

"विश्वास ही नहीं होता कि यहां मेरे रसोईघर में तुम बैठे हुए हो। मुझे तो तुम पहचान भी न पाते। इतना बदल गई हूं ! लेकिन तुम तो वैसे ही हो, बिलकुल जवान। आदमी तो वैसे भी बहुत दिनों तक जवान रहता है, उसका बुढ़ापा जल्दी नहीं आता। मरण तो हम औरतों का है। मेरा एण्टन भी बिलकुल जवान धरा है, शादी के पहले दिन-जैसा। पूरी बत्तीसी बरकरार है, जबकि मेरे बहुत-से दांत गिर भी गए। मगर बदन में तेज़ी और फुर्ती और कस-बल अब भी पहले जैसा ही है और खूब डट

कर काम कर सकती हूं। हां, अब पहले की तरह कड़ी मजूरी नहीं करनी पड़ती। हम दोनों का हाथ बंटानेवाले बहुत हो गए हैं। अच्छा, जिम, तुम्हारे कितने बाल-बच्चे हैं?"

जब मैंने कहा कि एक भी नहीं तो वह कुछ अकुला गई और बोली, "यह तो बहुत बुरी बात है। मेरे किसी बुरे बच्चे को गोद क्यों नहीं ले लेते? वह लियो है न, वह सब में शैतान है, उसीको तुम ले जाओ।" फिर मेरी ओर झुककर मुस्कराते हुए बोली, "शैतान है इसीलिए उसे सबसे ज़्यादा प्यार करती हूं।"

"अम्मां!" बरतनों की धुलाई करती हुई उन दोनों लड़कियों ने कुछ शिकायत-भरे स्वर में कहा।

एण्टोनिया खिलखिलाकर हंस पड़ी और बोली, "इसमें किसीका कोई बस नहीं चलता। सभी जानते हैं कि मैं उसे सबसे ज़्यादा प्यार करती हूं। शायद ईस्टर के दिन जन्मा है इसलिए, या यह भी हो सकता है कि हर समय कोई न कोई शैतानी करता रहता है इसलिए।"

और मैं उसकी ओर देखते हुए सोच रहा था कि दांत गिर गए तो क्या हुआ, जीवन की उमंग और उत्साह तो इसमें अब भी लबालब भरा हुआ है। मैं ऐसी कई औरतों को जानता हूं जिन्होंने रूप और यौवन को तो बनाए रखा, पर जीवन के रस और उमंग को सूख जाने दिया। इसके विपरीत एण्टोनिया का बहुत कुछ चला गया था, परन्तु ज़िन्दगी का जोश उसमें अब भी बरकरार था। त्वचा उसकी भूरी और कड़ी ज़रूर हो गई थी, परन्तु सूखने नहीं पाई थी। अन्तर का रस सूख जाने से चमड़ी में जो थलथलाहट आ जाती है वह एण्टोनिया में नाम को भी नहीं थी।

हम बातें कर रहे थे कि सबसे छोटा लड़का जेन वहां आया और नीना के पास सीढ़ी पर चुपचाप बैठ गया। वह पजामे पर जिघम का जामे-जैसा एक एप्रन पहने था और उसके बाल इतने महीन तराशे हुए थे कि सिर एकदम मुड़ा हुआ और सफेद लगता था। वह अपनी बड़ी-बड़ी भूरी उदास आंखों से हमारी ओर देखता जा रहा था।

"अम्मां, कुत्ता उन्हें मरा हुआ मिला और यही वह उससे कहना चाहता है।" अन्ना ने अलमारी की ओर जाते हुए अपनी मां से कहा।

एण्टोनिया ने इशारे से लड़के को अपने पास बुलाया। वह उसके घुटनों पर कुहनियों के सहारे झुककर खड़ा हो गया और अपनी पतली अंगुलियों से एप्रन की डोरियों को लपेटता हुआ बोहेमी भाषा में कुछ कहने लगा। कहते-कहते उसकी आंखों में आंसू भर आए और लम्बी बरौनियों में मोती की तरह अटक गए। मां सुनती और मधुर-कोमल स्वर में दिलासा देती रही; फिर उसने कुछ कहा जिसे सुनते ही बच्चे के आंसू-भरे चेहरे पर प्रसन्न मुस्कराहट फैल गई। लड़का वहां से हटकर नीना के पास चला गया और उससे सटकर बैठ गया। उसके बाद मुंह पर हाथ रखकर वह नीना को धीमे स्वर में रहस्य की कोई बात बताने लगा।

काम पूरा करके अन्ना ने हाथ धोए और अपनी अम्मां की कुर्सी के पीछे आकर खड़ी हो गई। "अम्मां, मिस्टर बरड़न को फल रखने का अपना नया तलघर दिखलाने ले चलो न?"

हम उठे और आंगन पार करके तलघर की ओर चल दिए। छोटे बच्चे हमारे पीछे हो लिए। लड़के पवनचक्की के पास खड़े मरे हुए कुत्ते के बारे में बातें कर रहे थे। वे तलघर का दरवाजा खोलने के लिए आगे दौड़ गए। जब हम उतरने लगे तो वे सभी हमारे पीछे-पीछे नीचे उतर आए। लड़कों को भी अपने इस तलघर पर लड़कियों से कम नाज़ नहीं था।

जो अम्ब्रोश मुझे नीचे बेर की झाड़ियों के पास से ऊपर घर तक लाया था वह ईंट की मजबूत दीवालें और सीमेंट का फर्श दिखाते हुए बोला, "जी हां, घर से दूर तो ज़रूर है, लेकिन सर्दियों में हममें से कोई न कोई यहां आकर सामान ले ही जाता है।"

अन्ना और युल्का ने मुझे तीन छोटे-छोटे पीपे दिखलाए, एक में शतपर्णी का, दूसरे में कतलों का और तीसरे में तरबूज के छिलकों का अचार था।

"इतने बड़े परिवार के खाने-पीने के लिए जितनी चीज़ें चाहिए उसका तुम अन्दाज़ भी नहीं लगा सकोगे, जिम!" उनकी मां ने मुझसे कहा, "बुधवार और शनिवार के दिन हम जितनी बड़ी रोटी पकाते हैं उतनी बड़ी तुमने कहीं देखी भी न होगी। बेचारा बाप अमीर हो कहां से! हमारे लिए चीनी खरीदते-खरीदते ही उसका दिवाला खिसक जाता है। गेहूं तो खैर, घर

में ही हो जाता है और अपना ही गेहूं पिसाते हैं, पर फिर ज़्यादा बेच जो नहीं पाते।"

नीना और जेन और लूसी नाम की एक और छोटी लड़की मुझे चुपके-चुपके इशारों से पटियों पर रखे कांच के मरतबान दिखाने लगीं। मुंह से तो उन्होंने कुछ नहीं बताया, लेकिन ऊपर अंगुलियों से रेखाएं बनाकर अन्दर की रसभरियों, सेबों आदि की जानकारी कराती गईं और मुंह के मीठे संकेतों से उन चीज़ों के स्वाद का आभास देती रहीं।

"अम्मां, इन्हें वह मसालेदार बेर भी दिखाओ न।" एक बड़े लड़के ने कहा, "वही 'कोलाच' जो तुम बनाती हो। अमरीकियों ने तो कभी काहे को खाया होगा।"

इसपर लियो ने धीरे-से बोहेमी भाषा में जाने क्या फब्ती कसी।

मैंने फौरन उसकी ओर मुड़कर कहा, "जनाब, ऐसा मत सोचिए कि मैं 'कोलाच' के बारे में कुछ नहीं जानता। जिस ईस्टर को आपका जन्म हुआ उसके कई वर्ष पहले आपकी माताजी के हाथ के ढेरों 'कोलाच' खा चुका हूं।"

"यह लियो हमेशा ही अनाड़ीपना करता है।" अम्ब्रोश ने नाराज़ होकर कहा।

लियो तुरत अपनी मां के पीछे दुबक गया और वहां से खीसें निपोर-कर मुझे देखने लगा।

तलघर में से मैं और एण्टोनिया सबसे पहले ज़ीना चढ़कर बाहर आए। बच्चे खड़े अपनी बारी का इन्तज़ार करते रहे। जब हम दोनों ऊपर आकर खड़े हो गए और बातें करने लगे तो बड़े और छोटे, सन-जैसे और सुनहले और भूरे बालोंवाले, और चमकीली नंगी टांगोंवाले सब बच्चे एक साथ दौड़ते हुए इस तरह बाहर निकले मानो अंधेरी गुफा के अन्दर से धूप में जीवन का वैविध्यपूर्ण विस्फोट हुआ हो। एक क्षण तो मैं चकराया-सा देखता ही रह गया।

फिर लड़के हमें घर के अगवाड़े की ओर ले गए, जिसे मैंने अभी तक नहीं देखा था। जरूरत भी नहीं पड़ी थी, क्योंकि किसान-घरों में आने-जाने का सारा काम पिछवाड़े के दरवाज़े से ही लिया जाता है। इधर छत

का ढाल इतना तीखा और नीचा था कि हालीहाक के लम्बे पौधे ओलतियों से कुछ नीचे रह गए थे। यह बात मुझे मालूम थी कि बोहेमी लोग अपने घरों के आसपास हालीहाक खूब बोते हैं। इस समय हालीहाक में बीज आ गए थे और वे भूरे हो चले थे। घर के सामनेवाला आंगन कंटीली झाड़ी की बागुड़ से घेरा गया था। फाटक पर दोनों ओर मिमोसा जाति का एक-एक रुपहला पेड़ खड़ा था। यहां से नीचे जानवरों का बाड़ा, पशुओं के पानी पीने के दो लम्बे पोखरे और खूतरोंवाला एक लम्बा-चौड़ा खेत दिखाई देता था। मुझे बताया गया कि उस खेत में गर्मियों में राई बोई गई थी।

मकान के पिछवाड़े कुछ हटकर एश वृक्षों का एक कुंज और फलों के दो बगीचे थे। एक बगीचे में चेरी, बेरी के पेड़-पौधे और उनकी कतारों के बीच किशमिश के लता-मण्डप थे। दूसरे बगीचे में सेब के पेड़ थे, जिसके चारों ओर गरम हवाओं से बचाव के लिए ऊंची-ऊंची झाड़बन्दी की हुई थी। बड़े बच्चे तो झाड़बन्दी के पास से ही लौट गए, लेकिन जेन, नीना और लूसी एक छेद की राह अन्दर जा घुसे और शहतूत की झाड़ियों में छिपकर बैठ गए।

सेब के बगीचे में पेड़ मूंगिया रंग की लम्बी घास के बीच में उगे हुए थे और एण्टोनिया हर पेड़ के पास रुक-रुककर और उनके तनों को प्यार से थपथपाती हुई मुझे हरएक का इतिहास बताती जाती थी, "ये पेड़ मुझे आदमियों की तरह प्यारे हैं। जब हम यहां रहने आए तो एक भी पेड़ नहीं था। सारे पेड़ हमने लगाए और हरएक को पानी ला-लाकर सींचा। दिन-भर खेतों में काम करते और रात में दूर से पानी लाकर इन्हें पिलाते। एण्टन अक्सर हिम्मत हार जाया करता, शहर का रहनेवाला है न इसलिए। पर मैं जुटी रहती थी। थकान और निराशा अपन जानते ही नहीं। सूखे के समय भी मुझे इनपर झुंझलाहट नहीं आती थी। रात में जब एण्टन सो जाया करता तो मैं चुपके से उठ आती और इन्हें पानी ला-लाकर पिलाया करती। बिलकुल पेट के बच्चों की तरह मैंने इन्हें पाल-पोसकर बड़ा किया है। आज उतना ही सुख और फल भी दे रहे हैं। एण्टन फ्लोरिडा में नारंगियों के बगीचों में काम कर चुका है और उसे कलम लगाना खूब

आता है। आज तो हमारे-जैसा सेब का बगीचा अड़ोस-पड़ोस में किसीके भी नहीं है। टोकरों से फल उतरते हैं हमारे यहां।"

बगीचे के बीचोबीच अंगूर का एक लता-मण्डप था। उसके नीचे एक मेज़ पड़ी थी और चारों ओर बैठकें बनी हुई थीं। तीनों बच्चे यहां बैठे हमारा इन्तज़ार कर रहे थे। उन्होंने लजाते हुए मेरी ओर देखा और बोहेमी में अपनी माता से कुछ कहा।

"तुम्हें यह बतलाने के लिए कह रहे हैं कि स्कूल की अध्यापिका हर साल यहां अपने छात्रों को वन-भोजन के लिए लाती हैं। अभी ये स्कूल नहीं जाते इसलिए उसे वन-भोजन और सैर-सपाटा ह' समझते हैं।"

अंगूर के लता-कुंज को मैने खूब अच्छी तरह घूम-फिरकर देख लिया, जी भरकर उसकी सराहना कर दी. उसके बाद तीनों बच्चे वहां से एक खुली जगह चले गए और एक डोरी लेकर उस जगह को इधर-उधर से नापने लगे।

"जेन उस जगह अपने कुत्ते को दफनाना चाहता है।" एण्टोनिया ने कहा, "मैंने मंजूरी दे दी है। यह लड़का बिलकुल नीना हार्लिङ्ग की तरह है। तुम्हें तो याद होगा ही कि वह ज़रा-ज़रा-सी बात में किस तरह रूठ जाया करती थी? यह भी वैसा ही झक्की है।"

हम वहां बैठे उन बच्चों को नाप-जोख करते देखते रहे। एण्टोनिया आराम से मेज़ पर कुहनियां टिकाए बैठी थी। बड़ी गहन शान्ति थी उस बगीचे में। तीन-तीन बागुड़ों से घेरा गया था वह—एकदम बाहर की ओर कंटीले तारों की बागुड़ थी, उसके बाद कटीली झाड़ियों की बाढ़ और तब शहतूत की झाड़बन्दी। यह झाड़बन्दी गर्मियों में लू से सेब के पेड़ों की रक्षा करती थी और सर्दियों में बर्फ झेल लिया करती थी। और इतनी ऊंची थी कि हम जहां बैठे थे वहां से न तो बखारघर की छत दिखाई देती थी और न पवनचक्की का बुर्ज ही—केवल नीला आसमान दीख रहा था। सूरज की किरनें अगूर की सूखी पत्तियों में से छन-छनकर हमारे ऊपर पड़ रही थीं। सारा बगीचा धूप-भरे कटोरे की तरह लगता था और हवा में पके हुए सेबों की सुगन्ध भरी थी। रुपहली चमकवाले लाल-गुलाबी सेब ढेर के ढेर माला के मनकों की तरह टहनियों से लटके हुए थे। कुछेक

मुर्गियां और बतखें झाड़बन्दी के किसी छेद में से अन्दर आ घुसी थीं और नीचे गिरे हुए सेबों पर चोंचें मार रही थीं । नर बतखों की शोभा और सुंदरता देखते ही बनती थी। उनके गुलाबी झाईंवाले भूरे शरीरों पर बिलकुल मोर की गर्दन-जैसी हरी-नीली गर्दन और सिर था। उन्हें देखकर एण्टोनिया को बचपन में अपने देश में देखे वर्दीधारी सैनिकों की याद हो आती थी।

हम कस्बे में रहने के लिए गए उससे पहले, गर्मियों में, मैं और एण्टोनिया साथ-साथ चिड़ियों का शिकार करने जाया करते थे। इस बात की याद दिलाते हुए मैंने उससे पूछा, "इधर अब भी बटेर मिलते हैं या नहीं ?" और फिर मैंने कहा, "निशाना तुम भी खूब लगा लेती थीं। याद है, मेरे और चार्ली हार्लिंग के साथ बतखों के शिकार में जाने के लिए तुम कितनी उत्सुक रहा करती थीं ?"

"हां, याद है। लेकिन अब तो बन्दूक हाथ में लेते डर लगता है।" उसने एक नर बतख को गोद में उठा लिया और उसकी ताऊसी रंग की गरदन को अपनी अंगुलियों से सहलाते हुए आगे बोली, "जब से बच्चे हुए हैं किसी-को मारने का जी नहीं करता। बूढ़े कलहंस को भी जिबह करना पड़े तो मेरी जान पर आ बनती है। कितनी विचित्र बात लगती है, जिम ?"

"विचित्र तो नहीं, हां, स्वाभाविक ज़रूर है। इटली की महारानी ने भी ठीक यही बात एक बार मेरे एक दोस्त से कही थी। कभी वह बहुत शिकार खेला करती थी और शिकारी औरतों में प्रसिद्ध थी। लेकिन अब तुम्हारी तरह मुर्गे को भी नहीं मार सकती। दिल बहलाने के लिए केवल मिट्टी के कबूतरों पर निशाना साधा करती है।"

इसपर एण्टोनिया ने प्रसन्न होकर कहा, "तब तो वह ज़रूर एक बहुत अच्छी मां है।"

फिर वह उन दिनों का हाल बताती रही जब वह अपने पति के साथ इस नये इलाके में आई थी। तब ज़मीन सस्ती थी और सुविधा से मिल जाती थी। शुरू के दस साल तो उन्हें घोर संघर्ष करना पड़ा। उसके पति को खेती-बाड़ी का ज़रा भी ज्ञान नहीं था और वह अक्सर हिम्मत हार जाया करता था। "अगर मुझमें इतना कस-बल न होता और भगवान ने

इतनी अच्छी तन्दुरुस्ती न दी होती तो हमारी यह गाड़ी कभी पार न लगती। बच्चा होने के दिन तक मैं बराबर उसके साथ खेतों में डटी रहती थी। फिर बच्चे ही नये बच्चे को संभाल लेते थे और इसलिए जच्चगी के बाद मैं जल्दी ही फारिग हो जाती थी। मार्था, मेरी पहलौठी, जिसे तुमने बचपन में देखा था, हर काम में मेरा हाथ बंटाती थी। और अब अन्ना है, जिसे मार्था ने सिखा-पढ़ाकर अपनी ही तरह होशियार कर दिया है। मार्था की तो शादी हो गई और अब उसके एक बच्चा भी है। दिन जाते क्या देर लगती है जिम !

"हां, हिम्मत मैंने कभी नहीं हारी। एण्टन मेरा अच्छा-भला आदमी है और मैं अपने बच्चों को दिलोजान से प्यार करती हूं; और मुझे पूरा विश्वास है कि सभी बच्चे आगे चलकर योग्य साबित होंगे। मेरी जगह खेत और खलिहान में है, शहर और कस्बे में नहीं। यहां मुझे कभी अकेलापन नहीं अखरता। कस्बे में तो अक्सर उदास हो जाया करती थी और बड़ा सूना-सूना लगता था और कारण समझ में नहीं आता था। अब बात समझ में आई कि वहां मन उड़ा-उड़ा क्यों रहता था। काम से मैं नहीं घबराता, कितना ही कड़ा क्यों न हो, बस मन उदास नहीं होना चाहिए।" वह हाथ पर ठुड्डी रखे बैठी थी और बगीचे के पार पश्चिमाकाश में उस ओर देख रही थी जहां सूरज ने सोना बिखेरना शुरू कर दिया था।

"तुम्हें कस्बे में जाना ही नहीं चाहिए था टोनी।" मैंने कुछ सोचते हुए कहा।

वह उछाह-भरे स्वर में बोली, "नहीं जिम, गई सो ठीक ही किया। वहां गए बगैर खाना-पकाना और गिरस्थी संभालना कभी सीख न पाती। हार्लिगों के यहां मुझे बहुत कुछ सीखने को मिला और उसीका प्रताप है कि अपने बच्चों का इतनी अच्छी तरह पालन-पोषण कर पाती हूं। दूसरे देहाती बच्चों के मुकाबले कितने सुघड़ और सलीकेदार हैं यह तो तुम भी देख ही रहे हो ! अगर मिसेज़ हार्लिग ने सिखाया-समझाया न होता तो इन बच्चों को सिवा जंगली खरहों के और क्या बना पाती ? मुझे तो इस बात की खुशी है कि सीखने का मौका मिला और भगवान को धन्यवाद देती हूं कि मेरी लड़कियों को मेरी तरह किसीकी नौकरी-चाकरी नहीं

करनी पड़ेगी। गलती यही हुई जिम, कि मैं भोली और लोगों पर आसानी से विश्वास करनेवाली थी और यह तो सोच भी नहीं सकती थी कि जिसे प्यार करती हूं वही धोखा देगा और नुकसान पहुंचाएगा।"

बातों के दौरान एण्टोनिया मुझसे बार-बार कहती रही थी, " 'जाने की जल्दी मत करो, रात यहीं रह जाना।' अब बोली जगह की कोई कमी नहीं है। दो लड़के तो गर्मियों-भर बखारघर में पुआल के ढेर पर सोते हैं, लेकिन तुम्हें वहां सोने की ज़रूरत नहीं। लियो हमेशा उनके साथ सोने की ज़िद करता है और अम्ब्रोश भी उसकी निगरानी के लिए वहीं चला जाएगा। तुम घर में सो रहना।"

मैंने लड़कों के साथ पुआल के ढेर पर सोने की इच्छा ज़ाहिर की।

वह बोली, "जैसी तुम्हारी इच्छा हो—एक कम्बल ले लेना। सर्दियों के लिए हमने पूरी पेटी भरकर साफ कम्बल रख छोड़े हैं। अब चलूं, लड़कियां अकेले काम कर रही होंगी। और तुम इतने दिनों बाद आए हो तो तुम्हें अपने हाथ से पकाकर तो खिलाऊं!"

हम घर लौट रहे थे तो रास्ते में अम्ब्रोश और एण्टन मिल गए। वे दूध दुहने के बर्तन लिए गायों की तलाश में जा रहे थे। मैं उनके साथ हो लिया। लियो ने देखा तो वह कब चूकनेवाला था। दूर-दूर रहता हुआ वह भी साथ चलने लगा। कभी आगे निकल जाता और किसी झाड़ी की ओट हमें डराता, 'होः खरगोश!' या 'फूंः काला नाग!'

मैं दोनों लड़कों के बीच में चल रहा था। दोनों ही ऊंचे-पूरे, सीधे, सुडौल, समझदार और भले थे। वे अपने स्कूल, नई शिक्षिका, खेत-खलिहान, फसल-मौसम और ढोर-डांगर के बारे में बताते जा रहे थे। वे इस तरह खुलकर बातें कर रहे थे मानो मैं परिवार का पुराना मित्र और उनका हमजोली हूं। उनके अपनेपन और सहज व्यवहार ने जैसे मुझे भी किशोर बना दिया और बचपन की बहुत-सी स्मृतियां और भूली हुई अभिरुचियां सहसा जाग उठीं। डूबते सूरज की धूप में, महीन कटी घास पर अपनी छाया को दाहिने रख, कंटीले तारों की बागुड़ के साथ-साथ संध्या की लाली से प्रतिबिम्बित पोखरे की ओर जाना मुझे बड़ा ही स्वाभाविक लग रहा था।

"क्या अम्मां ने आपको वे तसवीरें दिखाईं जो आपने उन्हें बोहेमिया से

भेजी थीं ?" अम्ब्रोश ने पूछा, "तसवीरें पाकर अम्मां बहुत खुश हुई थीं। हमने उन्हें जड़वाकर बैठक में लगा दिया है।" उसके शब्दों में कृतज्ञता की स्पष्ट ध्वनि थी। मन चाहने लगा, काश, मैंने कुछ और भी भेजा होता।

मैंने उसके कन्धे पर हाथ रखकर कहा, "जानते हो, हम लोग तुम्हारी अम्मां को कितना प्यार करते थे ? बहुत ही खूबसूरत थीं वे।"

"जी हां, जानते हैं।" दोनों एक साथ कह उठे, मानो कह रहे हों कि वाह, यह भी भला कोई बताने की बात है। फिर बोले, "उन्हें तो सभी चाहते हैं, पूरा हार्लिङ्ग परिवार और आपकी दादीजी, और कस्बे के सभी लोग उन्हें प्यार करते हैं।"

"कई बार लड़कों को यह खयाल भी नहीं हो पाता है कि उनकी अम्मां किसी समय जवान और सुन्दर भी थीं।" मैंने कहा।

"लेकिन हम तो जानते हैं।" फिर दोनों ने एक साथ कहा और तब अम्ब्रोश बोला, "अब भी ऐसी कुछ बूढ़ी नहीं हुई हैं; आपसे तो छोटी ही हैं।"

"यहां आने पर पाता कि तुम उन्हें दिक कर रहे हो, तो सच मानो, छड़ी उठाकर सभीको एक सिरे से धुन डालता। तुम्हें उनके साथ बुरा सलूक करते देख मुझे बहुत गुस्सा आता। मैं कभी तुम्हारी अम्मां को बहुत प्यार करता था और दावे के साथ कह सकता हूं कि उनके-जैसी औरत इस सारी दुनिया में दूसरी नहीं है।"

दोनों लड़के खिलखिलाकर हंस पड़े और थोड़े सकुचा भी गए।

फिर एण्टन ने कहा, "यह तो उन्होंने कभी बताया नहीं। हां, किस्से वे आपके खूब सुनाती हैं और आपकी सोहबत में, जो अच्छे दिन बीते उनकी बातें भी रोज़ करती हैं। आपकी एक तसवीर भी उनके पास है, जिसे उन्होंने शिकागो के किसी अखबार में से काटकर रख लिया था। वह तसवीर देखे रहने के ही कारण तो लियो आपको झट पहचान गया। अजीब ढंग है उस लड़के का भी; कभी-कभी तो हम सबके कान काटता है।"

गायों को घेर-घारकर हम बखारघर के पास ले आये और दोनों लड़के बैठकर उन्हें दुहने लगे। रात घिरने लगी थी और वातावरण में देहात का रंग घुलता जा रहा था : सूरजमुखी और वरनोनिया की ओस-भीगी तेज़

गन्ध आ रही थी, ऊपर स्वच्छ नीला-सुनहरा आसमान छाया हुआ था, सन्ध्या-तारा उग आया था, बरतनों में दूध की धारें घर्र-घर्र गिर रही थीं और सूअर दाने-चारे के लिए छीना-झपटी करते हुए खूं-खूं और चीं-चीं की आवाज़ें कर रहे थे। सूना और एकाकीपन मुझपर हावी होने लगा था—किसान लड़के का वही एकाकीपन जब शाम हो जाती है और लगता है जैसे दुनिया बहुत दूर चली गई हो और पशुओं को दुहने-सहेजने और उनके चारे-दाने का कभी न खत्म होनेवाला क्रम अपनी मन्थर गति से चलता रहता है।

खाने बैठे तो पूरी मेज़ भर गई थी। एण्टोनिया मेज़ के सिरे पर बैठी थी और दोनों ओर की लम्बी कतारों में बच्चे। दीए की रोशनी में उनके चंचल सिर हिल रहे थे और सबकी उत्सुक आंखें एण्टोनिया पर टिकी थीं; और वह खाना परोस-परोसकर तश्तरियां उनकी ओर बढ़ाती जा रही थी। बच्चों को बिठाने का भी एक क्रम था; दो छोटे बच्चों के बीच में एक बड़े बच्चे को बिठाया गया था, जिससे छोटों की देखभाल की जा सके और खाना उन तक पहुंचता रह सके। अन्ना और युल्का को 'कोलाच' और दूध के बरतन लाने के लिए बार-बार उठना पड़ता था।

भोजन के बाद हम लोग बैठके में गए और वहां युल्का और लियो ने मुझे वाद्य-संगीत सुनाया। बैठके में सबसे पहले एण्टोनिया ने लैम्प के साथ प्रवेश किया। इतनी कुर्सियां नहीं थीं कि सब बैठ सकें, इसलिए छोटे बच्चे खाली फर्श पर ही बैठ गए। लूसी ने मुझे चुपचाप कान में बता दिया कि अगर इस बार गेहूं के दाम नब्बे सेंट मिल गए तो बैठके के लिए कालीन खरीद लिया जाएगा। लियो ने बड़े आडम्बर के साथ अपना दिलरुबा निकाला। यह वही पुराना, मिस्टर शिमरडा का दिलरुबा था, जिसे एण्टोनिया संभालकर रखे हुए थी। लियो के मान से यह दिलरुबा काफी बड़ा था, लेकिन उसने बजाया बहुत अच्छा। उसे किसीने सिखाया नहीं था, अपने-आप सीख गया था। युल्का उतना अच्छा नहीं बजा सकी। जब वे बजा रहे थे तो नीना उठकर बीच में आ खड़ी हुई और नंगे पांव तख्तों पर नाचने लगी। काफी सुन्दर नाच दिखाया उसने। लेकिन किसीने उसकी ओर ध्यान नहीं दिया। नाच खत्म करके वह फिर अपने भाई के पास कोने

में जा बैठी।

एण्टोनिया ने लियो से बोहेमी भाषा में कुछ कहा। उसने भौंहें सिकोड़-कर मुंह बिचका दिया। मुंह बिगाड़ने की कोशिश में उसके गालों में गड्ढे पड़ गए। दिलरुबा की खूंटियों को काफी देर तक उमेठने के बाद उसने कुछ बोहेम की धुनें बजाईं और काफी अच्छी बजाईं। वह इतना अस्थिर और उतावला (चंचल) था कि मैं एक बार भी उसके चेहरे को ध्यान से देख नहीं पाया था। अब मौका मिला तो उसके बारे में मेरी पहले की धारणा और दृढ़ ही हुई। पीछे से उसका सिर एकदम सपाट था और सन-जैसे घने घुंघराले बाल नीचे ठेठ गरदन तक उगते चले गए थे। इससे उसकी शक्ल बहुत कुछ हिरनों जैसी लगती थी। आंखें उसकी दूसरे बच्चों की तरह बड़ी-बड़ी और पूरी खुली हुई नहीं, अन्दर घुसी हुई थीं और पुतलियां हरी-सुनहरी, और रोशनी से उसे तकलीफ होती थी। एण्टोनिया ने बताया कि वह अक्सर चपेट खा जाया करता था। शैतान इतना था कि बिना सधाए बछेरों पर सवारी कर उन्हें दौड़ाने की कोशिश करता, फीलमुर्ग को छेड़ता और सांड को लाल कपड़ा दिखा-दिखाकर भड़काता और कुल्हाड़ी की धार तो हमेशा ही परखा करता। ऐसे में चोट-चपेट न लगे तो क्या हो।

संगीत का कार्यक्रम समाप्त हो जाने के बाद एण्टोनिया फोटोग्राफों का एक पूरा डिब्बा उठा लाई : एक फोटू में वह और एण्टन शादी के कपड़े पहने एक-दूसरे का हाथ पकड़े खड़े थे; एक फोटू उसके भाई अम्ब्रोश और उसकी मोटी-तगड़ी भावज का था। एण्टोनिया ने बताया कि भाभी अपने खेत की मालकिन है और हमेशा भाई साहब की कनेठी किया करती है। सुनकर मुझे खुशी हुई। तीनों बोहेमी मेरियों और उनके बाल-बच्चों के फोटू भी थे।

एण्टोनिया ने बताया, "तीनों लड़कियां खूब अच्छी तरह जम गई हैं और तीनों का ही कारबार बहुत अच्छा चल निकला है। मेरी स्वोबोडा के मक्खन की तो इस पूरे इलाके में धूम है। इन्तजाम भी कमाल करती है। उसके बच्चों को आगे बढ़ने के बहुत मौके मिलेंगे।"

एण्टोनिया फोटू दिखा रही थी और उसके बड़े बच्चे कुर्सी के पीछे खड़े रस लेकर देख रहे थे। नीना और जेन ने इधर-उधर से देखने की

कोशिश की, जब सफलता नहीं मिली तो चुपचाप एक कुर्सी उठा लाए, उसपर चढ़कर खड़े हो गए और देखने लगे। जेन का सारा संकोच जाता रहा था और वह परिचित चेहरों को देख-देखकर मुस्कराने लगा था। एण्टोनिया को घेरकर खड़े उस समूह में मुझे एक प्रकार का सामंजस्य दिखाई दे रहा था जैसे वह पूरा एक शरीर हो और हर बच्चा उसका एक अविभाज्य अवयव। तभी तो वे इधर-उधर से झुककर देख रहे थे और किसीपर गिरने या किसीको छूने का उन्हें कोई भय अथवा संकोच नहीं था। फोटू देखकर उनके चेहरों पर परिचय की प्रसन्न मुस्कराहटें खिल जाती थीं। अपनी अम्मां के लड़कपन के लोगों को वे प्रशंसा-भरी निगाहों से देख रहे थे, मानो वे कोई अद्‌भुत व्यक्ति हों। जो छोटे बच्चे अंग्रेज़ी नहीं बोल सकते थे वे अपनी पुरानी सम्पन्न भाषा में ही टिप्पणी करते जाते थे।

एण्टोनिया ने लेना की एक तसवीर दिखाई, जो उसने पिछले साल क्रिसमस पर इन लोगों को भेजी थी; और पूछा, "क्या वह अब भी इस तसवीर-जैसी ही है? इधर तो छह बरसों से घर नहीं आई है।" "हां," मैंने कहा, "बिलकुल इस तसवीर की तरह सी है लेना; ऐसी ही दिखनौटी, पहले से ज़रा-सी मोटी, हैट भी पहले से कुछ बड़ा पहनती है, लेकिन आंखें वैसी ही अलसाई हुई और गालों में अब भी वैसे ही गड्ढे पड़ते हैं।"

एक तसवीर फ्रान्सिस हार्लिङ्ग की भी थी। वह घुड़सवारी की बटनदार पोशाक पहने खड़ी थी। "शानदार है न?" लड़कियों ने कहा और सभी ने अपनी सहमति प्रकट की। साफ लग रहा था कि पारिवारिक चरितावली में फ्रान्सिस का स्थान सर्वोपरि वीरांगना का है। लेकिन लियो पर इस प्रशंसा का कोई असर नहीं हुआ।

"और ये हैं मिस्टर हार्लिङ्ग, अपना बड़ा-सा फर कोट पहने। क्यों अम्मां, बहुत मालदार थे न वे?"

"रॉक फेलर तो नहीं थे।" लियो ने धीरे-से कहा, जिसे सुनकर मुझे मिसेज़ शिमरडा का बरसों पहले सुना स्वर याद हो आया, जब उन्होंने मेरे दादाजी के बारे में कहा था, "यीशू तो नहीं हैं वे।" उसका यह अविश्वास, लगता था, जैसे बुढ़िया से विरासत में मिला हो।

"बकबक बन्द।" अम्ब्रोश ने उसे घुड़क दिया।

लियो ने उसे ज़बान निकालकर चिढ़ाया, लेकिन दूसरे ही क्षण अगली तसवीर देखकर खिलखिला उठा। वह तसवीर कहीं मेले-ठेले में किसी सड़क-छाप फोटोग्राफर ने खींची थी। दो आदमी बड़ी असुविधा से बैठे हुए थे और उनके बीच में एक बौड़म-सा लड़का ढीले-ढाले कपड़े पहने खड़ा था। वह तसवीर मेरी और जेक और ओटो की थी। हम लोग जब पहली बार चौथी जुलाई का उत्सव देखने ब्लैकहॉक गए थे तो वह फोटो खिंचवाया गया था। जेक की हंसी और ओटो की डरावनी मूंछें देखकर मुझे बड़ी खुशी हुई। वे बच्चे उन दोनों से बहुत अच्छी तरह परिचित थे।

"दादाजी का ताबूत इसी आदमी ने बनाया था न ?" एण्टन ने पूछा।

"कितने भले थे वे लोग, क्यों जिम ?" कहते-कहते एण्टोनिया की आंखें भर आईं, "आज भी यह याद करके शर्म से गड़ जाती हूं कि मैं जेक से इतनी बुरी तरह झगड़ पड़ी थी। बहुत ही उद्दण्डता का व्यवहार किया था मैंने उससे और मुंह में जो आया बेलगाम बकती चली गई थी, बिलकुल तेरी ही तरह लियो। काश, किसीने मुझे मना किया होता !"

"आपका यही नहीं, और भी फोटू हैं।" बच्चों ने मुझसे कहा और वह फोटू निकाला जो मेरे कालेज में जाते समय खिंचवाया गया था—धारीदार पतलून और पुआल की टोप पहने एक लम्बा, छरहरा, बांका और खुशदिल जवान खड़ा था।

"मिस्टर बरडन", चार्ली ने कहा, "ज़रा यह तो बताइए कुत्ता बस्ती में आपने जो सांप मारा था, वह कितना बड़ा था। अम्मां को ठीक से याद नहीं रहा, कभी कहती हैं छह फुट था और कभी कहती हैं पांच फुट।"

इन बच्चों का एण्टोनिया से ठीक वही रिश्ता था जो वर्षों पहले हार्लिङ्ग परिवार के बच्चों का था। इन्हें उसपर वैसा ही नाज़ था और हमारी ही तरह ये भी उससे कहानियां सुना और अपना मनोविनोद किया करते थे।

अन्त में जब बच्चों के साथ अपना ओढ़ना-बिछौना लेकर बखारघर में सोने चला तो रात के ग्यारह बज चुके थे। उनकी मां मुझे घर के दरवाज़े तक छोड़ने आई और हम लोग वहां क्षण-भर ठिठककर पशुओं के बाड़े की सफेद ढलुआं छत, चांदनी में निःस्पन्द पड़े दोनों पोखरों और तारों-भरे आकाश-तले दूर तक फैले चरागाह को देखते रहे।

लड़कों ने कहा कि पुआल के ढेर पर आपको जो जगह पसन्द हो वहां सो जाइए। मैंने एक बड़ी खिड़की के पासवाली जगह पसन्द की, जो खुली हुई थी और जहां से बाहर आसमान में तारे दिखाई दे रहे थे। अम्ब्रोश और लियो, औलतियों के नीचे पुआल की एक खोह-सी थी उसमें घुसकर सो गए और खिलखिल करते हुए कनफुसकियां करने लगे। वे एक-दूसरे को गुदगुदाते हुए पुआल में धमा-चौकड़ी मचाते रहे और फिर एकदम मुर्दे की तरह शान्त हो गए। खिलखिल और खर्राटे की नींद के बीच मुश्किल से एक मिनट का समय रहा होगा।

मैं काफी देर तक जागता पड़ा रहा। चांद आसमान में तैरता हुआ मेरी खिड़की के आगे से गुज़र गया। मैं एण्टोनिया और उसके बच्चों के बारे में सोच रहा था : अन्ना अपनी मां की कितनी फिक्र रखती है, अम्ब्रोश अपनी मां को कितनी गहनता से प्यार करता है, लियो पशु की तरह कितना ईर्ष्यालु है। जब वे सब एक साथ तलघर के अंधेरे में से निकलकर बाहर धूप में आ रहे थे, तो वह ऐसा दुर्लभ दृश्य था जिसे देखने के लिए कोई भी आदमी दुनिया के अन्तिम छोर तक चलता चला जाएगा। और एण्टोनिया तो मन पर ऐसी छवियां अंकित कर देती है जो कभी धुंधली नहीं पड़तीं, बल्कि समय के साथ गहरी और अमिट होती जाती हैं। पहली प्राइमर के छापों की तरह मेरे मानस-पटल पर एक के बाद एक ऐसी कई छवियां अंकित थीं। सांप को मारकर हम विजय-दर्प से घर लौट रहे हैं और एण्टोनिया मेरे टट्टू पर बैठी अपनी नंगी टांगों से उसे एड़ें मार रही है। बर्फीले तूफान में एण्टोनिया काला शॉल ओढ़े और फरवाली टोपी लगाए अपने बापू की कब्र के पास खड़ी है; घिरती आती सांझ में एण्टोनिया अपने घोड़ों के साथ घर लौट रही है। अपनी उपस्थिति मात्र से वह मानवी अंतश्चेतना में जिन शाश्वत मनोभावों को जगा देती वे सार्वलौकिक भी हैं और सत्य भी। मैंने समझने में भूल नहीं की थी। वह अब पहले-जैसी सुदर्शन तरुणी नहीं थी। समय के क्रूर हाथों ने उसे क्षत-विक्षत कर दिया था, लेकिन दूसरों की कल्पना को अनुप्राणित और मन को उमंगित करने की सामर्थ्य और केवल दृष्टि-निक्षेप अथवा संकेत मात्र से सामान्य वस्तुओं को विशिष्ट अर्थवत्ता से मण्डित कर देने की क्षमता अभी भी उसमें विद्यमान थी।

उसके बगीचे में खड़े होकर सेब के वृक्ष पर हाथ रखकर सेब फल की ओर देखने-मात्र से पौधा रोपने, पेड़ की संवर्द्धना करने और फल उतारने तक की समस्त प्रक्रियाओं का माहात्म्य उजागर हो जाता था। उसके हृदय की सारी अच्छाइयां उसके शरीर में आ जाती थीं—उस शरीर में जो शुभ आवेगों और पवित्र मनोभावों की अभिव्यक्ति के लिए सतत परिश्रमशील रहता था।

मानव-जाति के आरम्भिक संस्थापकों की तरह वह प्राण और जीवन-शक्ति का अखूट भण्डार थी और यही कारण था कि उसके बेटे इतने लम्बे, सुडौल, सरल, निश्छल और भले थे।

२

जब सवेरे नींद खुली तो ढेर-सारी धूप खिड़की में भर आई थी और इक्की-दुक्की किरणें औलतियों के नीचे, जहां दोनों लड़के सोए थे वहां भी पहुंच गई थीं। लियो जाग गया था और पड़ा-पड़ा एक तिनके से अपने भाई के पांव में गुदगुदा रहा था। अम्ब्रोश ने ज़ोर से पांव फटकारा और करवट लेकर लेट रहा। मैंने आंखें मूंद लीं और नींद का ढोंग किए पड़ा रहा। लियो पीठ के बल लेट गया और एक पांव उठाकर उसकी उंगलियों को चलाने लगा। फिर उसने उंगलियों और अंगूठे में कुछ सूखे फूल और तिनके दबाए और उन्हें धूप में हिलाता रहा। जब इससे जी भर गया तो एक कुहनी के सहारे उठकर वह पहले सावधानी से और बाद में सूक्ष्मता से मेरा निरीक्षण करने लगा। धूप से उसकी आंखें चौंधिया रही थीं, इसलिए वह बार-बार पलकें टिमटिमाता जाता था। अन्त में उसके चेहरे दर व्यंग्य-भरी मुस्कराहट फैल गई, जो मानो कह रही थी, "हुं-हूं, बुढ़ऊ दूसरे लोगों जैसा ही है। इसे मेरा भेद क्या मालूम !" वह शायद इस बात को जानता था कि उसमें आनन्दोपभोग की क्षमता दूसरों से अधिक है। उसकी चपल बुद्धि उसे सोचने-विचारने का अवसर ही नहीं देती थी। बात मन में

आने के साथ ही वह उसे कर गुज़रता था।

कपड़े पहनकर मैं बाहर आया और पवनचक्की पर ठण्डे पानी से मुंह धोया। रसोईघर में गया तो नाश्ता तैयार था, और युल्का जाली पर एक तरह का केक सेक रही थी। तीनों बड़े लड़के जल्दी ही खेतों में काम करने चले गए। लियो और युल्का अपने पिता और भाई को, जो विल्बर से दोपहरवाली ट्रेन में लौट रहे थे लाने के लिए कस्बे जा रहे थे।

"दोपहर को मामूली-सा खाना बनेगा।" एण्टोनिया ने कहा, "मुर्गा शाम को, जब भाई और उसके बापू आ जाएंगे, तब पकाया जाएगा। काश, आज मेरी मार्था भी यहां होती तो तुमसे मिलने आ पाती। अब उसके पास अपनी फोर्ड गाड़ी है और वह जब चाहे आ सकती है। लेकिन उसका घर-वाला काम-काज का बड़ा पाबन्द है और सिर्फ रविवार के दिन छुट्टी रखता है। दिखनौटा जवान है और एक दिन ज़रूर मालामाल हो जाएगा। उसके हाथ में ऐसी बरकत है कि जिस चीज़ को छू देता है सोना हो जाती है। अपने बच्चे को वे लोग बिलकुल राजकुमारों की तरह रखते हैं और मार्था तो उसपर अपनी जान छिड़कती है। इस खूबी से लालन-पालन करती है कि कोई सीखी-पढ़ी नर्स भी क्या करेगी। जब वह ससुराल जाने लगी तो मुझे इतना रोना आया कि तुमसे क्या कहूं। यही लगता था, जैसे बेटी को ताबूत में लिटा रही हूं। बाद में भी कई दिनों तक रोती रही। अब तो खैर वह बात नहीं है, बेटी की जुदाई सहने की आदत पड़ गई है।"

उस समय रसोईघर में मैं, टोनी और अन्ना सिर्फ तीन ही व्यक्ति थे। अन्ना मथनी में क्रीम डाल रही थी। वह मेरी ओर देखकर बोली, "हां, अम्मां बहुत रोई थीं। हम तो लाज से गड़कर रह गए। मार्था खुश, हम खुश, सभी खुश; घर में हंसी-खुशी और अम्मां हैं कि रोए जा रही हैं। जीजा ने भी कितना समझाया, पर कौन सुनता है! आखिर बेचारे जीजाजी मन मारकर बैठ रहे। क्यों अम्मां, याद है न?"

एण्टोनिया ने मन ही मन मुस्कराकर कहा, "सब याद है और यह भी जानती थी कि बेवकूफी है, पर मन किसी तरह मानता नहीं था। चाहती थी कि वह यहीं रहे। जन्मी तब से एक दिन भी मुझसे जुदा नहीं रही थी और अब मुझे छोड़कर जा रही थी। मन कैसे मानता? एण्टन ने भी

हमेशा उसे सगी बेटी ही समझा; न कभी उसको लेकर झगड़ा किया और न यही कहा कि इसे अपनी मां के पास छोड़ आओ। अगर कहता तो मैं उससे हर्गिज़ शादी न करती।"

"जो से उसकी सगाई हो जाने के बाद ही मुझे पता चला कि मार्था मेरी सगी बहन नहीं है।" अन्ना ने कहा।

दो-ढाई बजे के लगभग गाड़ी फाटक पर लगी और उसमें से मेले गए बाप-बेटे उतरे। मैं उस समय बगीचे में बैठा तम्बाकू पी रहा था। उठकर उनसे मिलने चला तो एण्टोनिया भी घर में से निकलकर उनकी ओर दौड़ी गई और दोनों को इस तरह ललककर गले लगा लिया, मानो बरसों बाद घर लौटे हों।

एण्टोनिया के पति मुझे देखते ही पसन्द आ गए। नाटे, दुबले, मुख्तसर-से आदमी थे और कद में अपने कई बेटों से भी छोटे। बूट की एड़ियां घिस गई थीं और अपना एक कन्धा हमेशा ऊंचा रखते थे। लेकिन चलते गज़ब की फुर्ती से थे और सदा प्रसन्न और हंसमुख रहा करते थे। गहरा ललछौंहा रंग था, घने काले बाल, जो धूसर हो चले थे; घुंघराली मूंछें और लाल होंठ थे। मुस्कराते तो सफेद, मज़बूत दांतों की पंक्तियां, जिनपर उनकी पत्नी को इतना नाज़ था, दिखाई दे जाती थीं। उनकी मुस्कराती हुई जानदार आंखें कह रही थीं कि उन्हें मेरे बारे में सब कुछ मालूम है। कुल मिलाकर वे एक ऐसे हंसोड़ दार्शनिक की तरह लगते थे जो जीवन का सारा बोझ अपने एक कन्धे पर लिए, जब भी मौका मिल जाए वे मौज-मज़ा करता हुआ, अपनी राह चला जा रहा हो। उन्होंने आगे बढ़कर बड़े तपाक से मुझसे हाथ मिलाया, तो मैंने पाया कि उनका हाथ धूप में तपकर लाल और कड़ा हो गया था और हथेली की पीठ पर घने बाल उगे हुए थे। वे रविवार के कपड़े पहने थे, जो मौसम के लिहाज से बहुत मोटे और काफी गरम थे, बगैर कलफवाले सफेद कमीज़ पर वे बड़ी-बड़ी सफेद बुंदकियोंवाली नीली नेकटाई को बच्चों की तरह गठान खूब कसकर बांधे हुए थे। कुज़ाक ने आते ही मेले की बातें शुरू कर दीं, शिष्टाचार के नाते वे अंग्रेज़ी में बोल रहे थे।

"अरे भई, रात में सड़क पर तार बांधकर वह औरत उस तार पर

क्या नाची है कि कमाल ! नीचे से उसपर रोशनी डाली जा रही थी और वह अधर में चिड़िया की तरह मंडराती हुई मालूम पड़ती थी। इतनी खूबसूरती से थिरक रही थी कि वाह। पुराने देश की तरह एक बड़ा-सा रहंट (डांसिंग बीयर) था, दो-तीन चक्कर झूले थे, लोग गुब्बारों में उड़ रहे थे और वह बहुत बड़ा गोल पहिया था, क्या कहते हैं, उसे रुडोल्फ ?"

"फेरीज़ व्हील।" रुडोल्फ ने अपनी बुलन्द आवाज़ में कहा। वह छह फुट दो इंच लम्बा भीमकाय आदमी था और उसकी छाती जवान लुहार की तरह चौड़ी-चकली थी। "अम्मां, शराबखाने के पिछवाड़े जो नाचघर है न, हम लोग कल रात वहां नाचने गए थे और मैं एक-एक लड़की के साथ नाचा और बापू भी नाचे। एक साथ और एक जगह इतनी सारी खूबसूरत लड़कियां मैंने पहले कभी नहीं देखी थीं। ज़रूर बोहुंक लोगों का जमघट था। इन्तजाम करनेवालों के अलावा हमने सड़क पर किसीके मुंह से अंग्रेज़ी का एक भी शब्द नहीं सुना। क्यों बापू, ठीक कह रहा हूं न ?"

कुज़ाक ने सिर हिलाकर हामी भरी और तब बोले, "कई लोगों ने तुम्हें याद किया और सन्देशे भी भेजे हैं, एण्टोनिया। माफ कीजिएगा," उन्होंने मेरी ओर देखकर कहा, "ज़रा इन्हें बता दूं।" और घर की ओर जाते हुए वे उसे बोहेमी भाषा में, आसानी से और जल्दी-जल्दी बोलते हुए, मेले की घटनाएं और सन्देशे बताने लगे। मैं थोड़ा पीछे रह गया और उन दोनों के पारस्परिक सम्बन्धों के बारे में सोचने लगा। कुछ-कुछ हंसी-मजाक लिए बहुत ही सहज और मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध लग रहा था उन दोनों में। स्पष्ट ही वह शक्ति थी—संवेग और आवेग दोनों ही, और ये उसके वाहक भी थे और नियन्त्रक भी। चलते-चलते वे तिरछी निगाहों से उसकी तरफ यह पता लगाने के लिए देखते जाते थे कि उनकी बात वह समझी भी है या नहीं और उसपर क्या असर हुआ। बाद में मैंने इस बात को लक्ष्य किया कि घोड़े की तरह तिरछी निगाहों से लोगों को देखना उनकी आदत हो गई थी। जब रसोईघर में आमने-सामने बैठकर हम बातें करने लगे तब भी वे घड़ी या चूल्हे की ओर मुंह करके मेरी ओर तिरछी निगाहों से देखते जाते थे। लेकिन उस दृष्टि में काइयांपन, दुराव-छिपाव या धोखाधड़ी नहीं थी, सरलता, स्पष्टता और भलापन ही था। बस, घोड़े की तरह आदत हो गई थी।

मेले से वे एण्टोनिया के संग्रह के लिए अपना और रुडोल्फ का फोटू खिचवा लाए थे और बच्चों के लिए कागज़ की थैलियों में बहुत-सी मिठाई। जब एण्टोनिया ने उन्हें मिठाई का वह बड़ा डिब्बा बताया, जो मैं डेनवर से बच्चों के लिए लेता आया था तो वे थोड़ा-सा चौंके। मेरी लाई हुई सारी मिठाई वैसी की वैसी रखी थी, एण्टोनिया ने रात में किसीको उसमें हाथ भी नहीं लगाने दिया था। अपनी मिठाई उन्होंने जब अम्मां खुश हों खिलाने के लिए अलमारी में रख दी और मेरेवाले डिब्बे को देख हर्षित होकर बोले, "तो आपको पता चल गया था कि मेरा परिवार छोटा नहीं, काफी बड़ा है।"

कुज़ाक अंगीठी के पीछे बैठ गए और अपनी पत्नी, लड़कियों और छोटे बच्चों को बड़े कौतुक से देखने लगे। वे सब उन्हें अच्छे भी लग रहे थे और एक दिल्लगी थी। वे मेले में जवान लड़कियों के साथ नाचकर लौटे थे और यह बात साफ भूल गए थे कि स्वयं बूढ़े हैं। अब अपने परिवार को देखकर वे चकित थे और शायद सोच रहे थे कि इतने बच्चों का बाप होना वास्तविकता तो नहीं, एक मज़ाक ही होना चाहिए। एक-एक कर छोटे बच्चे उनके पास पहुंचते जा रहे थे और वे अपनी जेबों में से निकाल-निकालकर किसीको गुड़िया, किसीको लकड़ी का खिलौना और किसीको सीटी बजानेवाला सूअर का फुग्गारा आदि देते जा रहे थे। फिर उन्होंने छोटे लड़के जेन को इशारे से अपने पास बुलाया, धीरे-से उससे कुछ कहा और कागज़ का सांप इतनी सावधानी से उसके हाथ में थमाया कि कहीं वह डर न जाए। तब लड़के के सिर के ऊपर से मेरी ओर देखते हुए उन्होंने कहा, "यह बड़ा संकोची है और अक्सर चीज़-बस्त पाने से रह जाता है।"

कुज़ाक मेले में से कुछ बोहेमी अखबार भी लेते आए थे। उन्हें खोलकर बैठ गए और अपनी पत्नी को खबरें सुनाने लगे, जिनमें से अधिकांश एक ही व्यक्ति के बारे में प्रतीत होती थीं। बार-बार एक ही नाम 'वासाकोवा वासाकोवा' दुहराए जाते देख मुझसे रहा न गया और पूछ ही बैठा, "क्या आप लोग प्रसिद्ध गायिका मारिया वासाक के बारे में तो बातें नहीं कर रहे हैं।"

"आप उसे जानते हैं ? तब तो आपने उसका गाना भी सुना होगा ?"

उन्होंने संदिग्ध भाव से पूछा। मेरे "हां" कहने पर उन्होंने तसवीर की ओर इशारा करते हुए बताया कि आस्ट्रिया में आल्प्स पहाड़ पर चढ़ते हुए वासाक की टांग टूट गई और अब वह अपने इकरारों को पूरा नहीं कर सकेगी। उन्हें यह जानकर बड़ी प्रसन्नता हुई कि मैंने वासाक को लन्दन और विएना में सुना था। बातचीत का पूरा मज़ा लेने के लिए उन्होंने अपना पाइप जला लिया था। वह प्राग के उसी हिस्से की रहनेवाली थी जहां वे रहते थे। जब वह पढ़ती थी तो उनके पिताजी उसके जूतों की मरम्मत किया करते थे। फिर कुज़ाक मुझसे खोद-खोदकर पूछने लगे कि उसका रूप-रंग कैसा है, उसकी आवाज़ कैसी है और वह कितनी लोकप्रिय है। वे यह बात विशेष रूप से जानना चाहते थे कि क्या मेरा ध्यान उसके नन्हे-नन्हे पांवों की ओर भी गया था और क्या उसने कुछ बचाकर रखा भी है ? फिज़ूलखर्च तो वह ज़रूर थी लेकिन फिर भी उनका खयाल था कि सब-कुछ नहीं ही उड़ा दिया होगा, बुढ़ापे के लिए कुछ न कुछ तो ज़रूर ही बचाया होगा। जवानी के दिनों में जब वे विएना में काम करते थे तो ऐसे कई कलाकारों को देखा था जो बुढ़ापे में बिलकुल गरीब हो गए थे और सारी शाम बीयर के एक गिलास पर गुज़ार दिया करते थे। कितनी बुरा बात है यह।"

जब लड़के गायों को दुहकर और जानवरों की सानी-पानी कर आ गए तो हम सब खाना खाने बैठे। दो भूरे कलहंस सेब भरकर पकाए गए थे। एण्टोनिया काट-काटकर परोसती गई और उसके पास बैठा रुडोल्फ तश्तरियों को आगे बढ़ाता रहा। जब सबको खाना परोस दिया गया तो उसने मेरी ओर देखा।

"क्यों मिस्टर बरडन, क्या आप अभी हाल में ब्लैकहॉक गए थे ? और यदि गए थे तो क्या आपने वहां कटर-दम्पति के बारे में भी कुछ सुना था ?"

मुझे कुछ भी मालूम नहीं था।

"तब तो बेटे, इन्हें ज़रूर बताओ। हालांकि खाते समय खून-खराबे की बातें करना अच्छा नहीं है, लेकिन यह बात तो इन्हें ज़रूर बता दो। अच्छा, सब बच्चे चुप हो जाएं। रुडोल्फ भैया हमें हत्या का किस्सा सुनाएंगे।"

"अहा-हा ! खून और हत्या का किस्सा !" बच्चे खुश हो गए और मन लगाकर सुनने लगे।

रुडोल्फ ने बहुत विस्तार से सारा किस्सा सुनाया। बीच-बीच में उसके माता-पिता उसकी भूल सुधारते जाते थे।

विक कटर और उसकी बीवी उसी पुराने मकान में और उसी पुराने ढर्रे पर जिए जा रहे थे। दोनों बहुत बूढ़े हो गए थे। कटर तो सूखकर सोंठ हो गया था और अपने सिर-दाढ़ी के पीले बालों की वजह से एकदम पीला बन्दर लगता था। मिसेज़ कटर का चेहरा-मोहरा तो वैसा ही था—वैसी ही बड़ी-बड़ी डरावनी आंखें और लाल-गुलाल मुंह, परन्तु अब एक बात यह हो गई थी कि जहां पहले कभी-कभार कांपती थी वहां अब हर समय कांपने और झटके खाने लगी थी। हाथ इस बुरी तरह हिलने लगे थे कि चीनी मिट्टी के बरतनों पर कूंची तक नहीं चला पाती थी। बुढ़ापे के साथ-साथ उनके झगड़े भी बढ़ते गए। झगड़ा आम तौर पर जायदाद के हिस्से को लेकर होता था। राज्य में हाल ही में एक नया कानून बना था, जिसके अनुसार पति के मरने के बाद पत्नी उसकी जायदाद के एक-तिहाई की हकदार तो हर सूरत में हो ही जाती थी। कटर के लिए यह कानून जी का जंजाल हो गया। बेचारे को रात-दिन यह चिन्ता सताने लगी कि बीवी ज़रूर ज़्यादा जीएगी और उसकी सम्पत्ति का उपभोग बीवी के मैके वाले करेंगे, जिन्हें वह जी-जान से नफरत करता था। धीरे-धीरे इस झगड़े ने इतना उग्र रूप धारण कर लिया कि सड़क चलते लोगों को भी सुनाई देने लगा।

दो साल पहले, एक दिन सवेरे-सवेरे कटर लौहखण्ड (हार्डवेअर) की दुकान में पिस्तौल खरीदने गया। कारण उसने यह बताया कि एक कुत्ते को मारना है और साथ ही यह भी कहा कि "उसके पहले एक बूढ़ी बिल्ली को भी निशाना बनाना चाहूंगा।" (यह सुना तो सब बच्चे धीरे से हंस पड़े।)

पिस्तौल खरीदकर कटर दुकान के पिछवाड़े चला गया और वहीं थोड़ी देर निशाने साज़ी करता रहा। घण्टे-भर के अभ्यास के बाद वह घर चला गया। उसी दिन शाम को छह बजे कटर के घर के सामने से जो लोग गुज़र रहे थे उन्होंने पिस्तौल चलने की आवाज़ सुनी। वे ठिठककर आश्चर्य से

एक-दूसरे के सामने देख ही रहे थे कि दूसरी गोली से ऊपरवाली खिड़की का कांच फूटने की आवाज़ सुनाई दी। लोग लपकते हुए अन्दर चले गए तो पाया कि विक कटर अपने ऊपरवाले सोने के कमरे में एक सोफे पर पड़ा था। उसका गला कटा हुआ था और सिर के नीचे रखी चद्दरें खून से तर होती जा रही थीं।

"आइए, आइए !" उसने कमज़ोर आवाज़ में लोगों का स्वागत करते हुए कहा, "मैं अभी जिन्दा हूं, यह तो आप देख ही रहे हैं न ! अच्छा तो इसकी सनद कीजिए। आप इस बात के गवाह हैं कि मैं अपनी बीवी के बाद भी ज़िन्दा हूं। वह अपने कमरे में पड़ी है। मेहरबानी करके ज़रा उसे भी देख आइए, ताकि किसी शक या गलती की गुंजाइश न रहे।"

एक पड़ोसी ने डाक्टर को टेलीफोन किया और बाकी सब लोग मिसेज़ कटर के कमरे में देखने गए। वह बिस्तरे में नाइट गाउन पहने और चादर ओढ़े पड़ी थी और गोली उसके कलेजे के पार निकल गई थी। तीसरे पहर जब वह सो रही होगी पति ने कमरे में आकर उसके कलेजे में गोली मार दी। बारूद से उसके नाइट गाउन का कलेजे के पास का कुछ हिस्सा झुलस भी गया था।

डरे और घबराए हुए पड़ोसी कटर के पास दौड़े आए। उसने आंखें खोलकर बहुत ही स्पष्ट शब्दों में कहा, "आप लोगों ने देख लिया न कि मिसेज़ कटर तो मर गई, परन्तु मैं अभी भी अपने होश-हवास में हूं। मेरा हर काम ठीक-ठाक है।" और उसके बाद जैसा कि रुडोल्फ ने कहा, "उसने दम तोड़ दिया।"

उसकी मेज़ पर कोरोनर को एक पत्र मिला जिसपर उस दिन की तिथि और सायंकाल पांच बजे का समय पड़ा था। उसमें लिखा था कि मैंने अपनी पत्नी को गोली मार दी है और उसने गुप्त रूप से जो भी वसीयत-नामा किया होगा वह रद्द समझा जाए क्योंकि मैं अभी ज़िन्दा हूं। उसने यह भी लिखा था कि मैं अपने-आपको छः बजे गोली मार लूंगा और अगर ताकत रही तो खिड़की में गोली चलाकर सड़क चलनेवालों को आगाह कर दूंगा, जिसमें वे मेरे खत्म होने से पहले यहां आकर सारी बात अपनी आंखों से देख लें और सनद कर दें।

"आदमी इतना बेरहम भी हो सकता है, यह तो मैं कभी सोच भी नहीं सकती।" किस्सा पूरा हो जाने के बाद एण्टोनिया ने मुझसे कहा, "मरने के बाद वह उसके पैसे का इस्तेमाल न कर सके इसलिए दुष्ट ने औरत को पहले ही मार डाला। हत्यारा कहीं का।"

"डाह में आकर कोई अपने को ही मार डाले, ऐसा भी क्या आपने कहीं सुना है, मिस्टर बरडन?" रुडोल्फ ने पूछा।

स्वीकार करना पड़ा कि मैंने नहीं सुना। घृणा-प्रेरित अपराधों और अनुचित कार्यों की बात तो प्रायः हर वकील जानता है और यह भी कि घृणा कितना प्रबल मनोवेग है, लेकिन अपने कानूनी जीवन की समस्त घटनाओं में मुझे ऐसा एक भी उदाहरण खोजे नहीं मिला। जब मैंने पूछा कि जायदाद कितने की रही होगी, तो रुडोल्फ ने बताया कि लाख डालर से कुछ ज़्यादा की ही कूती गई थी।

कुज़ाक ने मेरी ओर तिरछी निगाहों से देखते हुए कहा, "वकीलों ने ज़रूर खूब माल काटा होगा उसमें से।" और वे हंस दिए।

एक लाख डालर! सूदखोर, कंजूस कटर ने लोगों का खून चूस-चूसकर इतनी दौलत जमा कर ली थी और अन्त में उसी पैसे के कारण खुद भी मरा!

भोजन के बाद मैं और कुज़ाक कुछ देर बगीचे में चहलकदमी करते रहे और फिर पवनचक्की के पास तम्बाकू पीने बैठ गए। अब कुज़ाक ने अपनी पूरी जीवन-कहानी मुझे सुना दी, मानो जान लेना मेरे लिए परमावश्यक हो।

उसका पिता मोची था और चाचा बालदार खालों को पकाने और बेचनेवाला। परिवार में सबसे छोटा लड़का होने के कारण कुज़ाक को उसके चाचा के धंधे में डाला गया। लेकिन रिश्तेदारों के यहां काम करनेवाले की कोई तरक्की नहीं होती और न इज़्ज़त, इसलिए काम सीख-साखकर वह विएना चला गया और वहां फर की एक बड़ी दुकान में काम करने लगा, और काफी पैसा भी कमाया। लेकिन विएना में शौकीन आदमी कुछ बचा नहीं सकता। जितना दिन में कमाओ, रात में वह सब खर्च हो जाता है। विएना में राग-रंग की क्या कमी! वहां तीन साल बिताने के बाद वह

न्यूयार्क आ गया। यहां लोगों ने उलटी पट्टी पढ़ाई तो हड़ताल के समय फर के कारखाने में काम पर चढ़ गया। तनख्वाह तो अच्छी मिली, लेकिन जब मज़दूरों की जीत हुई तो उसका नाम गद्दारों की काली सूची में लिख दिया गया। इस बीच उसने कुछ डालर बचा लिए थे और सोचा करता था कि नारंगी का बगीचा लगाना फायदे का रोज़गार है और वह इस काम को कर भी सकता है। इसलिए वह नारंगी का बगीचा लगाने के इरादे से फ्लोरिडा चला गया। दूसरे साल इतना ज़बर्दस्त पाला पड़ा कि नारंगी के सारे पौधे जल गए और उसे मलेरिया भी हो गया। वह अपने चचेरे भाई एण्टन जेलीनेक से मिलने नेब्रास्का चला आया; साथ में यह खयाल भी था कि अगर इधर कोई काम जमता हो तो उसे भी देख ले। जांच-पड़ताल करते-करते उसे एण्टोनिया मिल गई। ठीक ऐसी ही लड़की की उसे जीवन-संगिनी के रूप में तलाश थी। तुरत शादी हो गई, यद्यपि वह बिलकुल खाली हाथ था और दुलहिन के लिए अंगूठी भी उसे अपने चचेरे भाई से कर्ज़ लेकर खरीदनी पड़ी थी।

"इस ज़मीन को फाड़ना और खेती के लायक बनाना बहुत मुश्किल काम साबित हुआ। जिस तरह खून-पसीना एक करके हमने यहां पहली फसल उगाई है, हमीं जानते हैं।" उन्होंने टोप को पीछे खिसकाने और अपने धूसर बालों को खुजलाते हुए कहा। "मैं तो अक्सर हताश हो जाया करता था और यहां से भाग जाना चाहता था, लेकिन मेरी बीवी डटी रही और मुझे भी थामे रही। फिर बच्चे इतनी जल्दी-जल्दी हो रहे थे कि कहीं जाना मुश्किल ही लगता था। आखिर बीवी का हिम्मत से डटे रहना काम आया और आज हम सारा कर्ज़ा बेबाक करके यहां आराम से बैठे हैं। उस समय हमने यह जगह बीस डालर प्रति एकड़ के हिसाब से खरीदी थी, अब लोग मुझे सौ डालर प्रति एकड़ दे रहे हैं। दस बरस पहले हमने एक टुकड़ा और खरीद लिया था और उसका कर्ज़ा भी करीब-करीब बेबाक कर दिया है। लड़के हमारे काफी हैं और हम बहुत-सी ज़मीन जोत-बो सकते हैं। यह तो डंके की चोट कहना होगा कि एण्टोनिया गरीब घर की सुजान बहू है। शील-स्वभाव भी उसका लाखों में एक है। मुझपर सख्ती करना और नाराज़ होना तो जैसे जानती ही नहीं। कभी कस्बे से ज़्यादा पी-पा आता

हूं तो भी कुछ नहीं कहती। न कुछ पूछती-पाछती है और न सवाल-जवाब करके तंग ही करती है। वही मुहब्बत और लगाव जो पहले था, अब भी है। पति-पत्नी के रिश्ते में आज भी कोई फर्क नहीं पड़ा है। बच्चों को लेकर भी हममें दूसरों की तरह झगड़ा नहीं होता।" उन्होंने दूसरा पाइप जलाया और बड़े सन्तोष के साथ पीने लगे।

कुज़ाक मुझे कुल मिलाकर भले और साथ उठने-बैठने लायक आदमी लगे। वे मुझसे मेरी बोहेमिया यात्रा के बारे में और विएना, रिंग स्ट्रासी और वहां के नाटकघरों के बारे में भी बहुत से प्रश्न पूछते रहे।

"लड़कों के खेती-बाड़ी संभालने लायक हो जाने पर मैं वहां एक बार फिर जाना चाहता हूं। आज भी वहां का कोई अखबार पढ़ता हूं तो जी चाहता है कि उड़कर चला जाऊं।" वे हंस दिए और बोले, "यहां इस तरह जम जाऊंगा, यह तो कभी सोचा भी नहीं था।"

जैसा कि एण्टोनिया का कहना था, स्वभाव और रुचि से, वे अब भी शहराती थे। दिन-भर की मेहनत के बाद वे नाटक देखना, संगीत सुनना, बिजली के उजाले में जगमगाती सड़कों पर चहलकदमी करना और मित्रों के साथ बैठकर डोमिनो खेलना पसन्द करते थे। अर्थोपार्जन की प्रवृत्ति से उनकी सामाजिकता कहीं प्रबल थी। रात हो या दिन, हर समय जन-समूह के साथ उसकी आशा-आकांक्षाओं और उत्साह-उमंगों में सहभागी होकर रहना उन्हें अच्छा लगता था। लेकिन इस सबके बावजूद पत्नी ने उन्हें इस सुनसान और अकेली जगह में इस फार्म पर रोक लिया था और एक तरह से बांधे हुए थी।

एक क्षण को मेरी आंखों के सामने एक ऐसे मुख्तसर-से आदमी की तसवीर घूम गई जो रोज़ रात में पवनचक्की के पास बैठा पाइप पिया करता है और रात के सन्नाटे को और उसे भंग करनेवाली पम्प की सन-सनाहट, सूअरों की खुड़खुड़ाहट और चूहे से डरी-घबराई मुर्गियों की कुड़कुड़ाहट की आवाज़ों को सुना करता है। मुझे ऐसा लगा मानो कुज़ाक एण्टोनिया के विशिष्ट उद्देश्य को पूरा करने का माध्यम हो। निस्सन्देह बहुत अच्छा था यह जीवन, लेकिन जिस तरह वे रहना चाहते थे वैसा अवश्य नहीं था। और, मैं सोचने लगा कि जिस तरह का जीवन एक के लिए उपयुक्त है क्या

वह कभी दो के लिए भी उतना ही उपयुक्त हो सकता है !

फिर मैंने कुज़ाक से पूछा कि क्या आपको यहां हंसी-मज़ाक करनेवाले मित्रों का अभाव खलता नहीं है ? उन्होंने एक खम्भे से अपना पाइप ठोककर जला हुआ तम्बाकू नीचे गिराया, लम्बी सांस ली और पाइप को जेब के हवाले कर सच-सच बता दिया, "शुरू-शुरू में तो अकेलापन काटने को दौड़ता था और मैं करीब-करीब पागल हो उठता था। लेकिन एण्टोनिया की प्यार-भरी सेवाओं ने हमेशा मुझे सहारा दिया। मुझे सुख और सुविधाएं पहुंचाने में उसने अपनी ओर से कुछ भी उठा नहीं रखा। अब उतना बुरा नहीं लगता। और लड़के भी बड़े हुए, जिनसे हंस-बोलकर मैं अपना जी बहला लिया करता हूं।"

घर की ओर चले तो कुज़ाक ने अपना टोप सिर पर एक ओर को तिरछा कर लिया और चांद की तरफ देखकर, नींद से सहसा जागे हुए आदमी की तरह उनींदे स्वर में बोले, "अरे, ऐसा तो लगता ही नहीं कि उस देश से यहां आए छब्बीस बरस हो गए !"

३

दूसरे दिन दुपहर के खाने के बाद मैं कुज़ाक परिवार से विदा लेकर हेस्टिंग्स लौट आया। वहां से मेरा विचार ट्रेन से ब्लैकहॉक जाने का था।

एण्टोनिया और उसके सभी बच्चे मेरी बग्घी को घेरकर खड़े हो गए थे। बड़ों की तो बात ही क्या, छोटे-छोटे बच्चे भी मेरी ओर बड़े ही मैत्रीपूर्ण ढंग से देख रहे थे। जब चला तो लियो और अम्ब्रोश बग्घी के आगे-आगे गली का फाटक खोलने के लिए दौड़े आए। पहाड़ी के नीचे पहुंचा तो मैंने एक क्षण मुड़कर पीछे की ओर देखा। अभी तक पूरा परिवार पवनचक्की के पास खड़ा मुझे देख रहा था और एण्टोनिया अपना एप्रन हिला रही थी।

फाटक पर अम्ब्रोश बग्घी के पहिये पर हाथ रखे ठिठका खड़ा रहा।

लियो बागुड़ की राह चरागाह में जा घुसा था।

"हमेशा वह ऐसा ही करता है।" उसके भाई ने कन्धे सिकोड़कर कहा, "लड़का बड़ा पागल है। आपके जाने का उसे रंज भी हो सकता है और ईर्ष्या भी ! अम्मां अगर किसी पर ज़रा-सा भी ध्यान देने लगें तो इसे फौरन उस आदमी से ईर्ष्या हो जाती है, यहां तक कि पादरी साहब से भी।"

मधुर स्वर, प्रशस्त कपाल और सुन्दर आंखों वाले इस लड़के से विदा होते मन ही मन पीड़ा का अनुभव करने लगा। मेरी बग्घी के पहिये पर हाथ रखे वह पुरुषोचित शोभा से खड़ा था। सिर उसका नंगा था और हवा के कारण उसकी भूरी गरदन और कन्धों पर से कमीज़ फरफरा रही थी।

"याद रहेगा न, कि अगली गर्मियों में तुम्हें और रुडोल्फ को मेरे साथ न्योब्रारा में शिकार खेलने चलना है ?" मैंने कहा, "फसल घर में आ चुकने के बाद तुम लोगों को भेजने के लिए तुम्हारे पिताजी राज़ी हो गए हैं।"

उसने मुस्कराकर कहा, "जी हां, याद रहेगा ! आप बुला रहे हैं तो आएंगे क्यों नहीं ! ज़रूर आएंगे। आपकी मेहरबानी कि हम पर इतने खुश हैं; बाकी हममें तो ऐसा कोई गुण है नहीं।" अन्तिम वाक्य उसने शरमाते हुए कहा।

"हैं भाई, बहुत गुण हैं तुम लोगों में।" मैंने कहा और रास खींचकर घोड़ों को चलने का इशारा किया।

उसने मेरी इस बात का कोई जवाब नहीं दिया। हार्दिक प्रसन्नता और अमित स्नेह-श्रद्धा से मुस्कराता निरन्तर दूर होती मेरी बग्घी को चुप खड़ा देखता रहा।

ब्लैकहॉक में तो निराशा ही हाथ रही और दिन भी बड़ी मुश्किल से बीता। पुराने मित्रों में से अधिकांश या तो मर गए थे या वहां से कहीं दूसरी जगह रहने चले गए थे। हार्लिङ्गों के घर के सामने से गुज़रा तो उनके बड़े अहाते में जो बच्चे खेल रहे थे मैं उन्हें जानता-पहचानता भी नहीं था। उनके आंगन में पहाड़ी एश का जो विशाल और शानदार पेड़ था वह कट चुका था और फाटक पर के लम्बे लम्बार्डी चिनार की जगह सिर्फ एक अंकुराया हुआ ठूंठ खड़ा था। मैं जल्दी-जल्दी वहां से आगे बढ़ गया। फिर

सारा सवेरा मैंने एण्टन जेलीनेक के साथ उसके शराबखाने के पिछवाड़े-वाले आंगन में श्वेत चिनार की छाया में बैठकर बिताया। दुपहर के समय होटल में खाना खाने गया तो वहां पुराने ज़माने के एक वकील साहब से भेंट हो गई, जो अब भी वकालत करते थे। वे मुझे दफ्तर में ले गए और कटर-दम्पति वाला मामला सुनाते रहे। उसके बाद मेरे लिए समय काटना दूभर हो गया, क्योंकि जाने के लिए गाड़ी रात में थी।

मैं कस्बे के बाहर उत्तर दिशा में दूर तक निकल आया। इधर चरा-गाहों की ऊबड़-खाबड़ ज़मीन थी और यहां की धरती ने हल के स्पर्श को जाना भी नहीं था। इस ओर के सभी टीलों पर और तराइयों में वही पुरातन लम्बी लाल घास उगी हुई थी, और बरसों-बरस बिन कटे उगते रहने के कारण झाड़ियों की तरह जटाजूट हो गई थी। ऊपर शरद का नीला, निरभ्र, चमकीला आसमान छाया हुआ था। दक्षिण की ओर नदी के श्यामवर्ण धौरे दिखाई दे रहे थे, जो कभी मुझे बहुत बड़े लगा करते थे। चारों ओर मक्का के खेत फैले थे, जिनमें सुनहरे पौधे सूख रहे थे। भट-कटैया की कंटीली झाड़ियां हवा में उड़-उड़कर तार की बागुड़ों में उलझती जा रही थीं। पशुओंके आने-जाने के रास्तों के किनारे उगी कनक शलाकाओं के गुच्छे धूप से धूसर हो गए थे और उनके मखमली भूरे रंग में सुनहरी तार चमक रहे थे। छोटे कस्बों में मन पर जो एक तरह का अवसाद छा जाया करता है वह यहां खुले में आने के बाद तुरत दूर हो गया और मेरा मन भविष्य की सुखद कल्पनाओं में विचरने लगा। मैं उन सब यात्राओं के बारे में सोच गया जहां दोनों कुज़ाक लड़कों को साथ लेकर जानेवाला था—बैंड लैण्ड्स और स्टिंकिग वाटर आदि सब कहीं। इनके बाद भी कुज़ाक लड़कों की कमी नहीं थी और उनके साथ की जानेवाली भावी यात्राओं का भी टोटा नहीं था। सब लड़कों के बड़े हो जाने के बाद साथ यात्रा करने के लिए मिस्टर कुज़ाक तो हमेशा थे ही। बिजली से जग-मगाती शहर की चहल-पहल-भरी सड़कों पर उनके साथ मीलों चहल-कदमी करने की मनोरम योजना भी मैंने उसी समय लगे हाथों बना डाली।

उन ऊबड़-खाबड़ चरागाहों में भटकते हुए मुझे सौभाग्य से पहले की पुरानी सड़क का वह टुकड़ा मिल गया ,जो ब्लैकहॉक से उत्तर दिशा में

मेरे दादाजी के खेतों तक और वहां से शिमरडों के घर और उससे भी आगे नार्वी बस्ती तक जाता था। किसी ज़माने में यह पुरानी सड़क प्रेरी के खुले मैदान में अपने मन की मौज से, बिना किसी बाधा-बन्धन के टीलों पर चढ़ती, टेकरियों का चक्कर लगाती, तराइयों में उतरती शिकारी कुत्तों के आगे चक्कर लगाते और बगटुट भागे जाते खरहे की तरह घूमती-घामती दौड़ी जाती थी। बड़ी सड़कों के सर्वेक्षण के समय इस सड़क का अधिकांश हलों के फाल के नीचे आ गया और अब बचा रह गया था बागुड़ से घिरे चरागाह के अन्दर का सिर्फ यह आधा मील का टुकड़ा।

समतल भूमि पर इस रास्ते की लीकें प्रायः खो जाती थीं—घास में एक आभास-सा रह जाता, जिसे कोई अजनबी तो चीन्ह भी न पाता। लेकिन तराई में इस रास्ते को पाने में कोई कठिनाई नहीं होती थी; वहां गाड़ी के पहियों से लीकें इतनी गहरी हो जातीं कि वर्षा का कीचड़ भी उन्हें ढंक न पाता था। ढाल पर इस रास्ते की लीकें भूरे रीछ के पंजों से नुचे मांस की तरह लगती थीं, क्योंकि वहां घोड़ागाड़ियां खोदरों में से झटके के साथ ऊपर चढ़ती थीं और इतना खिंचाव पड़ता था कि घोड़ों के नितम्बों की मांसपेशियां गोल-गोल उभर आती थीं। मैं बैठ गया और सूरज की तिरछी किरनों में घास की गंजियों को रक्ताभा से मंडित होते देखता रहा।

उस रात एण्टोनिया और मैं, ब्लैकहॉक के स्टेशन पर रेलगाड़ी में से उतरकर, इसी सड़क पर चलते हुए आए थे। अपनी-अपनी गाड़ियों में पुआल के अन्दर दुबके हम चकित-विस्मित बच्चों को यह ज़रा भी मालूम नहीं था कि कहां, किस गन्तव्य पर ले जाए जा रहे हैं। अपने चतुर्दिक छाए अपरिचित वातावरण से घबराकर मैं आंखें मूंद लेता था और अंधेरे में खड़खड़ाती गाड़ियों की आवाज़ सुनने लगता था और आंखें खोलते ही फिर वही नया-अनजाना वातावरण मुझे विह्वल करने लगता था। सहसा उस रात की वह अनुभूति इतनी तीव्र और सजीवन हो उठी मानो अभी बीते क्षण की ही बात हो, लगा, जैसे घूम-घामकर अपने-आप में लौट आया हूं और यह प्रतीति भी हुई कि मनुष्य के अनुभव का क्षेत्र कितना सीमित है। मेरे और एण्टोनिया के लिए तो यह रास्ता नियति का मार्ग

था। यही पथ तो हमें बचपन के आकस्मिक संयोगों की पगडण्डी पर चलाता हुआ वहां तक ले आया जहां हम आज खड़े थे। दूर-दूर थे, लेकिन यह रास्ता तो हमें एक-दूसरे के पास पहुंचानेवाला, हमारा मिलन करानेवाला रास्ता था। और आज पुनः यह बात समझ में आ रही थी कि यह रास्ता फिर हमारा मिलन कराएगा। हम बहुत कुछ खो चुके थे, लेकिन साथ बिताए अपरिवर्तनशील भूतकाल की सम्पदा हम दोनों के पास थी। इसे हमसे कोई छीन नहीं सकता था, इसे पाकर हम दोनों सम्पन्न थे और दूर-दूर होकर भी एक-दूसरे के कितने निकट और कितने अपने !

◇ ◇ ◇